अमरीकी संगीतकारों की जीवन कहानियाँ

लेखक

केथेराइन लिटिल बेकलेस

अनुवादक

कृष्ण गोपाल एम० ए०, एल एल बी० डी० पी० ए०

प्रकाशक

प्रेमी जासूस कार्यालय,

१२४, चक, इलाहाबाद—२

विषय-सूची

प्रस्तावना

इस पुस्तक में संगीतकारों के चुनाव की समस्या हुई है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनकी यह राय है कि यदि कोई संगीतकार संयुक्त राज्य अमरीका में न पैदा हुआ हो तो उसे इस गेलरी में सम्मिलित ही न किया जाय। फिर भी विक्टर हर्बर्ट और ईर्विंग बर्लिन ऐसे दो संगीतकार हैं जिनमें से एक आइरलैण्ड और दूसरा रूस में पैदा हुआ लेकिन उनके बारे में यह कहना संभव नहीं है कि वे अमरीकी के अलावा कुछ और भी हैं। अतः यही सर्वोत्तम समझा गया कि ऑस्कर थॉम्पसन ने **इण्टरनेशनल सालोपीडिया ऑफ म्यूजिक एण्ड म्यूजीशियन्स** में अमरीकी संगीतकार की जो परिभाषा की है, उसे ही स्वीकार कर लिया जाय। मिस्टर थॉम्पसन का विचार है, अमरीकी संगीत वह संगीत है जिसे अमरीकियों ने लिखा हो, चाहे वे वहाँ के मूल निवासी हों या जिन्होंने अमरीकी नागरिकता अपना ली हो। उत्तरी अमरीका के इण्डियनों (मूल निवासियों) का संगीत, अमरीका के नीग्रों का संगीत, उन अमरीकियों का संगीत जिन्होंने विदेश में अध्ययन किया हो और जो योरुप की किसी-न-किसी परम्परा से बंधे हुये है, अधुनातम कंजरवेटिवों का संगीत और अतिवादी विचारधारा के लोगों का सभी प्रकार का संगीत, "हिली ब्लीज्" का संगीत तथा 'टिन पैन एली' का संगीत अमरीकी संगीत है। अमरीकी संगीत में ऐसा सभी संगीत सम्मिलित कर लिया जाता है जो जाति-[illegible] भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से अमरीका का है।"

दक्षिण अथवा केन्द्रीय अमरीका के देश के नागरिक अपने को दक्षिणी अमरीकी अथवा केन्द्रीय भागों के अमरीकी कह सकते हैं जबकि संयुक्तराज्य अमरीका के नागरिक स्वयं संयुक्त राज्य अमरीकी नहीं कह सकते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका के नागरिक कहे जाने का अपना शानदार तरीका है कि वहाँ नागरिक को केवल अमरीकी कहा जाता है और यह विचार सभी जगह

माना जाता है। सभी कुछ विचार करके यही सबसे अच्छा मार्ग लगा है कि इस पुस्तक में केवल संयुक्त राज्य अमरीका का संगीत और संगीतज्ञों पर विचार किया जाय।

बहुत पहिले कई संगीतकारों ने अमरीका के संगीत में बहुमूल्य योगदान दिया जिन्हें इस पुस्तक में सम्मिलित कर सकना भी संभव नहीं है। यह प्रसन्नता की बात है कि आज अनेक संगीतकार अपनी [illegible] में लगे हुये हैं। वे संगीत की मौलिक रचनाएं ही नहीं करते बल्कि अमरीकी रचनाओं को जनता तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। यह संभव नहीं है कि उन सभी के बारे में लिखा जाय, मैंने उन सभी के लिये संगीतकारों के संबंध में पुस्तकों की सूची सम्मिलित कर ली है जो यह जानना चाहते हैं कि हमारे अन्य संगीतकार कौन-कौन हैं और उन्होंने क्या कर लिया है या वे इस समय क्या कर रहे हैं? प्रत्येक संगीतकार की सभी रचनाओं का उल्लेख नहीं हो सका है क्योंकि उनकी कृतियों की पूरी सूची अन्यत्र उपलब्ध है।

मैं हृदय से उन सभी का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के लिखने में सहायता की है, विशेषकर मिसेज़ एडवर्ड मेक्डोवल, मिस्टर जॉन एल्डन कारपेंटर, मिसेज रॉय हेरिस, मिस्टर एरन कोपलैंड, मिस्टर जेरोम कर्न, मिस्टर ओटो हर्बेश, मिस्टर इरा जर्शविन, मिस्टर इर्विंग र्बालिन, मिस्टर और मिसेज़ लाऊ पेली, मिस्टर डब्लू० सी० हैण्डी, मिस्टर अर्नेस ओबरहोल्जर, मिस्टर फिलिप कर्वी, मिस मेरियन बाउयर, मिस मारग्यूराइट ग्रिफ़्स, मिस्टर गिराई कुरियर, न्यूयार्क स्थित हार्वर्ड क्लब के पुस्तकाध्यक्ष, कोर्नेल यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष और संगीत-शास्त्र के प्रोफेसर डाक्टर ओटो किनकेलडे, संगीत की पुस्तकाध्यक्षा मिस डोरोथी लाउटन, न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी के सरकुलेशन डिपार्टमेण्ट की मिस मेरी ली डेनियल्स, वाशिंगटन डी० सी० की लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस का स्टाफ, येल म्यूज़िक स्कूल लाइब्रेरी की मिसेज़ फिलिप बिशप, येल विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के चेयरमैन प्रोफेसर

ब्रून साइमंड्स, पिट्सबर्ग के कार्नेगी पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष, हैरिस बर्ग स्थित पेन्सिलवेनिया स्टेट लाइब्रेरी और हैरिस बर्ग पब्लिक लाइब्रेरी के पुस्तकाध्यक्ष।

मिस्टर ऐबे नाइल्स ने 'हैण्डी' पर लिखे गये अध्याय और लोकप्रिय संगीत में बदलते हुये फैशन वाले अध्याय को दोहराने की कृपा की है। स्मिथ सोनियन इन्स्टीट्यूशन अमेरिकन मानव-प्रकृति-विज्ञान का ब्यूरो है, वहाँ की कोरेबोरेटर मिस फेंसिस डेन्समोर ने रैडमेन पर लिखे गये पृष्ठों को देखने की कृपा की है। मिस्टर एडवर्ड ने पहिले ही चार्ल्स ग्रिफस और उनके संगीत के सम्बन्ध में अपनी आगामी पुस्तक के लिये कई वर्षों से अध्ययन कर रखा था। उन्होंने भी बड़ी सहृदयता से समय और तत्सम्बन्धी सूचनाएँ दीं। मैं मेकमिलन कम्पनी का भी आभारी हूँ कि उन्होंने गैली फार्म में डब्लू० सी० हैण्डी की आत्मकथा **दी फादर ऑफ दी ब्लूज** के पढ़ने की मुझे अनुमति दी।

.....

ग्रेट हिल
मई, १९४१

के० एल० बी०

मैं अमरीकी-गायन सुनता हूँ।
मैं विविध प्रकार के केरल्स सुनता हूँ।
मेकेनिक्स के गीत.......
प्रत्येक के गीत सुनता हूँ।
बढ़ई......
राज.......
मल्लाह.......
मोची......
लकड़हारे और किसान के गीत......
माँ की मधुर लोरियाँ......
प्रत्येक से उनका अपना गीत सुनता हूँ......
उनसे किसी अन्य का गीत नहीं....बल्कि
उन्ही के सशक्त और मधुर गीत।
उन्हीं के उन्मुक्त कण्ठ से गाते सुनता हूँ।

वाल्ट ह्विट मैन।

संयुक्त राज्य अमरीका में संगीत

मूल निवासियों का संगीत

हरी-शान्त घाटी में
सरिता के सुहाने किनारे रहता था गायक वहाँ,
नाम था नवेदाहा ।
चरागाह-खेतों से घिरा था वह गाँव,
सुदूर पार फैला था जंगल......
ऐसे में रहता था गायक वह—
ट्वेसेन्था की घाटी में
हरी-शान्त घाटी में ।

—लाँग फेलो
दि साँग ऑफ हियावाथा

इस बारे में कल्पना ही की जा सकती है कि गोरों के आने से पूर्व उत्तरी अमेरिका कैसा था । फिर भी हम सचमुच उस युग के शानदार जंगलों, लहराते और हरे-भरे घास के मैदानों तथा निर्मल जल के नालों से भरपूर विशाल भूमि का अपने मानसिक पटल पर सजीव चित्र अंकित कर सकते हैं। उस समय वहाँ चिमनियाँ, स्मोक स्टैक और कारखाने न थे और न कभी पहियों के चलने की आवाज़ सुनाई पड़ती थी। नालों पर बाँध ऊद-बिलाव (बीवर) द्वारा ही बनाए जाते थे। नदी-नालों के किनारे ऊँचे और पुराने पेड़ों में यत्र-तत्र वहाँ के मूल निवासियों (रेड मैन) के शिविर थे। समस्त महाद्वीप में जानवर, पक्षी और इण्डियन ही रहते थे। वह मूल निवासियों, रेड मैन, के लिये सचमुच अदन का बाग रहा होगा। और अदन के बाग के समान ही उसका सदैव के लिये बना रहना संभव नहीं था।

इण्डियनों के अनेकानेक विभिन्न प्रकार के कबीले थे फिर भी वहाँ स्थान की कमी न थी। वे प्राकृतिक जीवों की भाँति निर्द्वन्द्व और स्वच्छन्द विचरण करते थे। वे असभ्य होने के कारण सभ्य पुरुषों की महत्वाकांक्षाओं से रहित थे अतः उनके संगीत में कलात्मकता न थी। उनके संगीत को उपयोगी-संगीत कह सकते हैं। प्राकृतिक ढंग पर विकसित मनुष्य होने के नाते चूँकि वे संगीत से प्यार करते थे इसलिए उनके जीवन में प्रत्येक अवसर पर काम आने योग्य संगीत उनके पास था।

मानव-जाति का विकास और बच्चे का बढ़कर मनुष्य बनना—इन दोनों में बहुत अन्तर नहीं है। बच्चे का सबसे पहिला कार्य, जिसमें संगीत का कोई तत्व पाया जाता है, झुनझुने से खेलना है अथवा उसे धरती पर इस प्रकार पटकना है जैसे आप ढोल (ड्रम) थपथपाते हैं; और यहीं से रिद्म (लय) का प्रारंभ हो जाता है। प्रत्येक वस्तु में रिद्म है—जैसे दिल की धड़कन में, चलते समय दायें-बायें पाँवों के पड़ने में, रात-दिन के बदलने और ऋतुओं के निरंतर आवर्तन में। इसलिये रिद्म ही वह प्रथम स्थिति है जिसे व्यक्ति महसूस कर सकता है और अन्य व्यक्तियों को प्रेषित करने की इच्छा कर सकता है। इण्डियन झुनझुनों और ढोलों को रिद्म उत्पन्न करने के लिये प्रयोग करते थे। वे अपने संगीत में बाँसुरियों और सीटियों का प्रयोग भी करते थे तथा अपने गीतों को बहुत महत्ता देते थे।

संगीत प्रत्येक इण्डियन के जीवन का एक अंग था या हम यह भी कह सकते हैं कि वह उसके उस विचार का, जिसके लिये वह उसे (संगीत) प्रयुक्त करना चाहता था, एक भाग था, जिसे वह यों ही नहीं प्रकट कर सकता था। उसके लिये गीत गाना अथवा नृत्त करना अनिवार्य न था जैसे यदि वर्ष की फसल-कटाई का समय नहीं होता था तो वह फसल-कटाई के गीत नही गाता था। न ही वह बिना मतलब के प्रेम-गीत गाने लगता था। इण्डियनों को जादू में विश्वास था और वे अपने प्रेम-गीत हृदय जीतने के लिये उपयोग करते थे। वे संगीत को स्वास्थ्यप्रद भी मानते थे। चिकित्सकों के अपने विशेष गीत थे जिन्हें वे रोगी के उपचार के लिये सुनाते थे। खेल-

कूद में गाये जाने वाले गीतों से विजय का आह्वान किया जाता था। वे ऐसे गीतों और नृत्यों का आयोजन करते थे जिनकी विशेष उत्सवों में आवश्यकता होती थी जैसे किसी शिकार की तैयारी के लिए अथवा युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय। माताएं बच्चों को लोरियाँ सुनाती थीं। लोगों को स्वप्नों में जादुई शक्ति के गीतों का भान होता था। कभी-कभी मोहक और स्वास्थ्य-प्रद गीत उन इण्डियनों को सिखाए जाते थे जो इस विशेषाधिकार को प्राप्त करने की कीमत दे सकते थे। जब कोई इण्डियन सुदूर यात्रा और अन्य कबीलों से मुलाकात करके लौटता था तब उससे पहिला प्रश्न यही किया जाता था कि "क्या तुमने नए गीत सीखे हैं ?"

संगीतकारों की जीवन-कहानियों के पढ़ने से यह लगता है कि व्यक्ति बचपन में जो स्वर और संगीत सुनते हैं, उनसे उनकी भावी रचनाओं के प्रकार और गुणवत्ता पर अधिक प्रभाव पड़ता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि वह जो कुछ ग्रहण करता है, उसी का अधिक प्रभाव उसकी अभिव्यक्ति में परिलक्षित होता है। इण्डियनों ने जंगल का शोर, पक्षियों का कलरव और जानवरों की चीख-पुकार सुनीं। प्रकृति ने उनके प्रारंभिक संगीत को प्रभावित किया हो अथवा न किया हो फिर भी उनके संगीत में असंस्कृत रूप और अशिष्टता की गंध व्याप्त थी। कोई भी लेखक जिसने इण्डियनों के म्यूज़िक का अध्ययन किया है, यह महसूस नही करता कि प्राकृतिक ध्वनियों ने उनके गीतों के रूप प्रभावित किये हैं। गोरों की संगीत-रचना के नियमों के अनुकूल बनाने के लिये उनकी मेलोडीज (संगीत-ध्वनियों) में जो अनधिकृत हस्तक्षेप किया गया उससे उनके रूप में वह बात नहीं रही जो पहिले थी। कुछ अमरीकी संगीत-कारों ने इण्डियन मेलोडीज़ को अपने संगीत में आत्मसात करने का प्रयत्न किया और संभवतः उनकी रचनाओं में गोरों को इस बात का आभास मिले कि इण्डियन संगीत कैसा रहा होगा लेकिन कोई भी इण्डियन उस संगीत को अपना संगीत स्वीकार नहीं कर सकता। अमेरिका के मूल निवासियों का संगीत उनके लिये वैयक्तिक और गंभीर विषय था। मनुष्य के मन के समान ही वह संगीत भी मायावी था। उस संगीत को मुक्त करना था। मूल निवा-

सियों के बारे में लिखना जितना सरल था उतना उनके संगीत को किसी संगीत-शाला (कँन्स्टंहॉल) में स्वर-बद्ध करना आसान न था।

योरुप से प्रथम गौरों द्वारा लाया गया धार्मिक संगीत
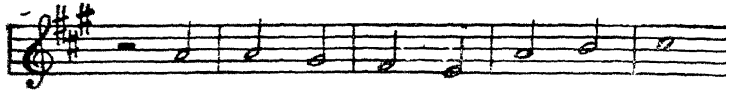
प्रेज गॉड फ्रोम हूम ऑल ब्लेसिग्ज फ्लो

साम ट्यून से संकलित—(**ओल्ड हण्ड्रेडथ**)

इण्डियन जब एक ओर भैंसों के झुण्ड के पीछे इधर-उधर फिरा करते थे तो दूसरी ओर उस समय इस दशा से कहीं भिन्न समुद्र पार गौरों के जीवन की अपनी कहानी थी। सभ्यता के विकास की कहानी स्वयं एक के बाद एक असंतोष की झलक प्रस्तुत करती है। आखिरकार एक ऐसा दिन आया जब स्वतंत्रता की खोज में गोरों का एक दल न्यू इंग्लैण्ड के समुद्री तट पर आ पहुँचा। वे व्यक्ति अपने देश में स्वतंत्रता न पा सकने के कारण असंतुष्ट थे।

उनका **मैफ्लोर** नामक छोटा जहाज उस निर्जन खाड़ी में उस स्थान तक पहुँचा जहाँ समुद्री तट तक जंगल थे। उन्होंने लगभग तीन महीने समुद्र में काट दिये और उसके बाद आखिरकार वे एक बड़े पत्थर पर होकर धरती पर पहुँचे। उस समय उन्होंने कितना अधिक आनंद महसूस किया होगा! वह पत्थर प्लीमथ, मेसाच्युसेट्स में अभी तक सुरक्षित है।

परन्तु इतना नीरव और पीछे तक सुदूर फैले रहस्यमय घने जंगल वाला यह विचित्र स्थान क्या था? जल-समुद्री तट से हिलोर खा रहा था और यदा-कदा जंगल के वृक्षों में सरसराहट होती थी—केवल ये स्वर ही सुनाई देते थे। उन जंगलों में क्या था?

उन्हें अपनी इस नई धरती के बारे में कुछ ज्ञात न था। ऐसी कौन-सी चीज थी जिससे कि उन्होंने अपने इंग्लैंड के सुन्दर घर छोड़ दिये, वे हालैण्ड गये और अन्त में वे अज्ञात महासागर पार करके ऐसे स्थान पर आ पहुँचे जहाँ उन्हें कठिनाइयों और भय का सामना करना पड़ा।

उनके अपने विचार थे और यही उनकी कठिनाई थी। हमारे विचार ही हमें कुछ करने के लिए विवश करते हैं। पिलग्रिमों (प्यूरिटन सम्प्रदाय के लोग) के धार्मिक कर्मकाण्ड के बारे में अपने विचार थे जिनके कारण वे अपनी मातृभूमि 'चर्च ऑफ इंग्लैंड' से धीरे-धीरे अलग होते गये। केवल इंग्लैण्ड में ही धार्मिक उथल-पुथल नहीं हो रही थी वल्कि सारे योरुप में यही दशा थी। इस धार्मिक उथल-पुथल के पीछे जो राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा काम कर रही थी उससे ये प्यूरिटन लोग असहमत थे और इसका प्रभाव तत्कालीन संगीत पर भी पड़ा। ऐसी बातें सदा ही संगीत को प्रभावित करती हैं। चूँकि हम इस उथल-पुथल के साथ संगीत का संबंध तत्कालीन धार्मिक पक्ष के अन्तर्गत ही देख सकते हैं इसलिये हम अपनी दृष्टि धार्मिक पक्ष के विवेचन तक सीमित रखेंगे और अन्य पक्षों के अध्ययन के लिये उन वर्षों का इतिहास पढ़ना आवश्यक है जबकि जेम्स प्रथम इंग्लैण्ड का शासक था और महाद्वीप में थर्टी इयर्स वॉर (तीस वर्षीय युद्ध) चल रही थी। वह संकटपूर्ण काल था। फ़्रांस के प्रोटेस्टेंट ईसाइयों में धार्मिक बेचैनी थी। प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जीवित रहना कठिन हो गया था।

जब प्यूरिटन ऐसे देश की बंजर भूमि पर आ गये जहाँ उनसे कोई यह कहने वाला न था कि परमात्मा की पूजा किस प्रकार की जाय, उन्होंने आखिरकार वह स्वतंत्रता प्राप्त कर ली जिसे वे चाहते थे। लेकिन विशेषकर पहली बार इसे निभाना कठिन काम था क्योंकि वे अग्रणी निवासी थे; और सबसे पहिले रहने का अर्थ यह है कि जब तक उस रहन-सहन के लिये कोई काम न किया जाय तब तक कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्हें 'नए सिरे से' ही जीवन का प्रारंभ करना था।

उन्हें अपने सोने के लिये केबिन बनाने से पूर्व वृक्षों को काटना था, लट्ठे चीरने थे और जगह साफ करनी थी। उन्हें रोटी प्राप्त करने के लिये सबसे पहिले भूमि ठीक करनी थी। रोटी का प्रश्न तभी हल हो सकता था जब वे पेड़ों, जड़ों और पत्थरों को उखाड़कर खेत की सफाई कर लेते। इसके बाद उन खेतों को जोतना था और उनमें गेहूँ बोना था। गेहूँ को उगना था, उसे

पकना था और उसे काटना भी था। गेहूँ को गहाना और उसाना था और फिर आटा पीसना था। जब यह सभी कार्य पूरा हो जाता तब वह अग्रणी व्यक्ति यह सोच सकता था कि उसे रोटी मिल सकती है। यह समझना सरल है कि उस अग्रणी व्यक्ति को ऐसी दशा में संगीत-रचना के लिये अवसर न था। इसके अतिरिक्त उन्हें यह भी भय बना रहता था कि जंगलों में से कोई न कोई आ जायगा तो वे उससे बचने के लिये एकत्र हो जाते थे।

वे इण्डियन थे। उन लोगों का रंग लाल मिश्रित बादामी (रेडिश ब्राउन) था, वे जानवरों की खाल और फर पहिने हुये थे तथा शोभा के लिए पक्षियों के पर लगाये हुये थे। कुछ इण्डियन मित्र-भाव रखने लगे थे लेकिन उनमें से कोई भी अंग्रेजी नहीं बोल पाता था। कुछ ऐसे भी इण्डियन थे जो द्वेषभाव रखते थे अतएव उन्होंने गोरों का रहना कठिन कर दिया था। फिर भी इण्डियनों को कौन दोषी ठहरा सकता है? वे इन पीत वर्ण आगन्तुकों से भयभीत थे जो अथाह महासागर पार कर ऐसी बड़ी नौका से आये थे जिसे उन्होंने पहिले कभी न देखा था। इण्डियनों का यह सोचना स्वाभाविक था कि वहाँ के वृक्ष और जानवर उन्हीं के अपने वृक्ष और जानवर हैं। इन अजनबी पीत वर्ण व्यक्तियों के आ जाने से उन्हें यह महसूस हुआ कि उनके अधिकार क्षेत्र पर अतिक्रमण हो गया है।

कुछ लेखकों का यह विचार है कि प्यूरिटन संगीत प्रेमी न थे और उन्होंने संगीत की ओर ध्यान नही दिया लेकिन इस तथ्य की पुष्टि के लिये अभिलेख नहीं मिलते और इस बारे में कोई भी व्यक्ति प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कह सकता तथा किसी के लिये ऐसा कहना भी अप्रिय है। इस बात की अधिक संभावना है कि उन्हें संगीत उस समय तक प्रिय था जब तक कि वह उनके धार्मिक विचारों के अनुकूल रहता था। जहाँ तक संगीत को केवल मनोरंजन के लिये ही उपयोग में लाने की बात है, उसके लिये गोरों के पास फालतू समय न था चाहे उनकी उस संगीत के प्रति कितनी ही रुचि क्यों न रही हो। उनका सारा दिन भूमि को ठीक बनाने के कठोर कार्य में व्यतीत होता था और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें इस बात के लिये

भी सतर्क रहना पड़ता था कि कहीं इण्डियनों का ध्यान उनके संगीत की ओर आकर्षित न हो जाय। वे इस स्थिति से बचना चाहते थे। यदि आप किसी विशाल जंगल में अकेले हों और लोगों की बस्तियों से भी बहुत दूर हों फिर आप मौन रहना पसन्द करेंगे चाहे आपको संगीत कितना ही प्रिय क्यों न हो; आप अपने चारों ओर की आवाजें ही सुनेंगे तथा आप इस बात से बचेंगे कि आपकी आवाज विचित्र और अज्ञात जीवों के कान में न पड़ सके।

फिर भी एक समय निश्चित था जब प्यूरिटन गाते थे और कुछ आदमी इण्डियनों से उनकी रक्षा के लिये पहरा दिया करते थे। यह वह समय था जब वे गिरजाघर जाया करते थे। वे अपने गायन को बहुत पसन्द करते थे अतएव वे अपने पुराने देश से साल्टर (भजन-संग्रह) साथ ले आये थे। वे अपने चर्च-म्यूजिक (गिरजाघर के संगीत) के लिये अधिक नियमित थे और उन्होंने निश्चय ही चर्च ऑफ इंग्लैण्ड के सुन्दर संगीत से अपने को बिल्कुल अलग कर लिया था। उन्होंने आराधना-संगीत में क्वायर सिंगिंग (गाने-बजाने वालों के समूह-गान) को एक अंग के रूप में स्वीकृति नहीं दी। उनकी दृष्टि में ऐसा संगीत केवल रंगमंच से संबंधित था अतएव वे उसको मनोरंजक संगीत के नाम से पुकारते थे और वे यह मानते थे कि इस संगीत का गिरजाघर में कोई स्थान नहीं है। उनके दृष्टिकोण से गिरजाघर में केवल वही संगीत अपनाया जा सकता था जो सब मिलाकर स्वरमेल से गा सकें। उन्होंने सोचा कि चर्च सर्विस (गिरजाघर के आराधना-संगीत) में सोलो (एकक संगीत) ट्रेण्ड क्वायर (प्रशिक्षित नाचने-गाने-बजाने वाली मण्डली) और प्रशिक्षित वाद्य-वादकों के संगीत-कार्यों जैसे नाटकीय कार्यों के लिये कोई स्थान नहीं था। वे यह मानते थे कि गिरजाघर में गायन उनकी ऐसी सर्विस थी जिसमें सभी को भाग लेना चाहिये था इसलिये संगीत इतना सरल होना चाहिए था कि प्रत्येक व्यक्ति उसे प्रयोग में ला सके। ऐसे संगीत का तात्पर्य यह था कि एक ही स्वरारोह या ताल पर ध्वनित होने की स्थिति में गायन चलता रहे। इसके कारण बाद में संगीत की कठिनाइयाँ उठीं जिनका उन्हें पूर्वाभास न हो सका। जहाँ तक हम कह सकते हैं, साम सिंगिंग (भक्ति-गान) ही एक

मात्र ऐसा संगीत था जिसे न्यू इंग्लैंड में लगभग सौ वर्षों से अपनाया गया था।

प्यूरिटन सम्प्रदायी (पिलग्रिम) उन साम्स (धर्मगीतों) को ऐसे छन्दबद्ध कर लेते थे कि वे सब मिलकर सरलता से गा सकते थे। उनके इस अज्ञात संसार में आने से कुछ वर्ष पूर्व ही उनकी संगीत की पुस्तक हालैण्ड में छपी थी।

पिलग्रिम-ट्यून की **ओल्ड हण्ड्रेडथ** नामक पुस्तक ही उन साम्स (धर्म-गीतों) की वह प्रथम पुस्तक है जिसमें ऐसी ट्यूनें हैं जिन्हें आज भी हम जानते हैं और गाते हैं। इस पुस्तक का यह नाम इसलिये दिया गया कि उन्होंने सौवें साम के मीटर के क्रम के अनुसार उसे रखा था। अब इस पुस्तक को स्तुति के लिये (डाक्सोलाजी के लिये) प्रयोग में लाते हैं। यदि आप उन साम्स को स्वयं गायें तो आपको ऐसा लगेगा कि इनमें रिद्म नहीं है। यह मोडल साम ट्यून है। इसका अर्थ यह है कि यह बहुत पुराना संगीत था जिसे पिलग्रिमों ने अपनाया था और जिसका उद्भव मध्यकालीन युग के प्लेन चेण्टे (स्पष्ट राग) से हुआ था। उस समय केवल यही संगीत था जिसे लिपिबद्ध किया गया था (जिससे आज हम उसका अध्ययन कर सकते हैं) और गिरजाघर में लोग इस संगीत का उपयोग करते थे। प्रारंभ में पादरियों का यह विश्वास था कि रिद्म का गिरजाघर में कोई स्थान नहीं है। उनके लिए रिद्म सांसारिक थी और उनकी मूल प्रवृति संभवतः ठीक ही हो क्योंकि जब हम विशेष रिद्म को सुनते हैं तो इसके प्रभाव से नाचने का मन होता है, हम अपने पैरों को थपथपाने लगते हैं और अपने कंधों को हिलाने लगते हैं (और यदि आप पिलिग्रम फादर के संबंध में ऐसा करते हुये अनुमान करें तो आप हंस उठेंगे।)

एक अभिलेख से ऐसा विदित होता है कि साम-सिंगरों (धर्मगीत गायकों) के एक छोटे दल ने जो संगीत अपनाया था, उसको किसी पिलग्रिम (प्यूरिटन सम्प्रदायी) ने ही लिपिबद्ध किया था। इस बात का सहज अनुमान हो सकता है कि उन सभी के लिये वह समय कितना गंभीर था जब वे डचों के लीडिन

नगर के बन्दरगाह पर **मेफ्लोर** जहाज में अज्ञात महासागर पार करने के लिये सवार हुये थे और उन्होंने अपनी परिचित मातृभूमि को छोड़ दिया था तथा वे उस अज्ञात नये संसार को चल दिये थे जहाँ से उन्हें लौटने की आशा नहीं थी। जब कभी लोग कहीं जाने के लिये अलग होने वाले होते हैं तो वे सदा एक दूसरे से मिला करते हैं। ये पिलग्रिम भी चलते समय अपने मित्रों से मिले। उनमें से किसी ने इस अवसर की झांकी प्रस्तुत की है:

> जब जहाज हमें ले जाने के लिये तैयार था, उस समय हमारे उन भाई-बंधुओं ने जो हमारे साथ नहीं जा रहे थे, हमें पादरी के घर में दावत दी। पादरी का घर काफी बड़ा था। हम लोगों ने वहाँ आराम किया। हमने उस विदा की वेला में आँखों में आँसू भरकर साम गीत गाये। इन गीतों को मधुर कण्ठ से गाकर ही प्रसन्नता नहीं मिली बल्कि हमारे हृदय में आनन्द भर गया। पहिले न जाने कितनी बार अच्छे गीत गाये गये होंगे लेकिन उस समय वस्तुतः वह मेलोडी सबसे अधिक मधुर प्रतीत हुई जिसे हमने कभी न सुना था।

गायकों के मन में कई सन्देह और अनिष्ट की शंकाएँ उत्पन्न हुई होंगी क्योंकि उन्होंने अपने साहस बटोरने के लिये ही गीत गाये। मानवीय हृदय के प्रति संगीत की भाषा कितनी समीप और व्यक्तिगत होती है—यह ऐसी भाषा है जो शब्दों के अर्थों के परे एक विशेष प्रभाव डालती है।

जब मूर्तियों के उपासक व्यक्ति अपने देवी-देवताओं के आगे नाचे तो संगीत केवल अन्तः स्फूर्ति की भाषा थी। यही कारण है कि पुराने पादरी रिद्म में विश्वास नहीं करते थे क्योंकि ईसाइयों के गिरजाघरों में नृत्य करना धार्मिक कर्म नहीं समझा जाता था। यदि शुरू के गोरों को हमारे समुद्री तट पर सुदूर इण्डियन के ढोल धपधपाने के स्वर सुनाई दे जाते तो वे उसे अपने लिये अभिशाप और अशुभ मानते। उन्हें इतने समय तक इस बात की ट्रेनिंग दी गई थी कि कौन सा संगीत सही है और कौन-सा गलत। वे इसके इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जैसा कि हमने देखा है कि वे भूल गये थे कि कबीलों

में रहने वाले लोगों के लिये रिद्म स्वाभाविक अभिव्यक्ति है और रिद्म का उनके लिये वही महत्व था जैसा कि बच्चों के लिये।

उस समय पुस्तकों का अभाव था, पादरी वाक्यांशों को रेखाबद्ध कर देते थे और सामूहिक रूप से धर्मगीत गाने वाले गीत की एक कड़ी गा लेने के बाद अपने पादरी की इस बात की प्रतीक्षा कर उठते थे कि वह उन्हें अगली कड़ी का माडेल प्रस्तुत करेगा। यह बहुत कुछ ऐसा ही तरीका है जब छात्रों ने संगीत का अध्ययन करना न सीखा हो और उन्हें अध्यापक गीत सिखाये। वे छात्र पहिले गीत को रटकर सीखते हैं और उसके बाद उसे स्वरबद्ध करते हैं।

गोरों को यहाँ आने पर कठिनाइयों और खतरों का सामना करना पड़ा। यदि उन पर विचार किया जाय तो यह महसूस करते हुये अधिक आश्चर्य होता है कि उन्होंने सामान से लदी बहती नौका के आने के पन्द्रह वर्ष बाद मेसाच्यूसेट्स में उत्तरी अमरीका का प्रथम कालेज ही स्थापित नहीं किया बल्कि पहिला मुद्रणालय भी लगाया। उन्होंने तीस वर्ष में अपनी **बे साम बुक** छापी। उसमें पहिले गीत ही थे। और पचास वर्ष बाद उन्होंने अपनी 'साम' पुस्तकों में गीतों के साथ संगीत के संकेत भी छापे। **बे साम** बुक का उपयोग केवल न्यू इंग्लैण्ड के गिरजाघरों में ही नहीं किया जाता था अपितु इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में भी इस पुस्तक की बहुत प्रतियाँ बिकीं।

लगभग सौ वर्ष अथवा इससे कुछ कम या अधिक समय तक न्यू इंग्लैण्ड में केवल 'प्यूरिटन सामोडी' का संगीत ही प्रचलित रहा। उसके बाद अन्य लोग आये, वे अपने साथ वाद्ययंत्र लाये और जगह-जगह पर बसते गये। उन्हें संगीत के लिये अधिक समय और सुविधा मिलने लगी। कुछ ऐसे विचारहीन व्यक्ति हैं जो इतिहास को नहीं मानते। उनका कहना है कि अमरीका में संगीत नहीं था। ऐसा कहने का अर्थ यह है कि वे अमरीका की योरुप से तुलना करते हैं। यदि व्यक्ति को इतिहास के बारे में कुछ भी ज्ञान हो जाय और दोनों महाद्वीपों के मनुष्यों की कहानी का कुछ भी पता हो सके तो अमरीका को संगीतहीन मानना मूर्खतापूर्ण विचार है।

आज भी कण्ट्री कम्युनिटी (समुदायों) में जनता के लिये ऐसे अवसर नहीं हैं कि वे किसी प्रकार की कला की रचना कर सकें। एक किसान सुबह से लेकर काफी रात तक अपने खेतों में काम करता है अथवा अपने जानवरों की देखभाल करता है। संयुक्त राज्य अमरीका में सर्व प्रथम आने वाले व्यक्ति केवल कण्ट्री या ग्रामीण समुदायों में ही नहीं रह रहे थे अपितु वे सभी बातों में अग्रणी भी रहे। उस समय उनके पास कलाओं का आनन्द उठाने का अवसर न था। किसी भी कला को समृद्ध करने अथवा जीवित रखने के लिये यह आवश्यक है कि उसका अधिकाधिक अभ्यास किया जाय। शुरू में अमरीकनों को कला में अभ्यास करने के लिये कोई अवसर न था। वे एक महान महाद्वीप के बसाने में लगे हुये थे।

किसी भी देश का संगीत प्रारम्भ में पूर्णरूपेण विकसित नहीं हुआ है। प्रारंभ में एक नये देश को संगीतात्मक संस्कृति अन्य स्थानों से लानी पड़ती है। योरुप के अन्य देशों ने अपनी संस्कृति में अन्य संस्कृतियों से आदान-प्रदान किया है। शायद फ़्रांस में यह आदान-प्रदान बहुत कम हुआ है। यदि प्रत्येक संस्कृति का अध्ययन करें तो यह लगता है कि प्रारंभ के गीतकारों ने गिरजाघर के संगीत के नोटेशन को स्वीकार किया। महान बैश के समय में जर्मनी के कोर्ट फ़्रान्स और इटली से संगीत लेकर अपना संगीत बनाते रहे। जर्मनी में गिरजाघर के संगीत के रूपों में परिवर्तन हुआ तथा धार्मिक सुधार से नवीन संगीत की रचना हुई। उसके बाद जर्मनी में अपने संगीत का विकास होने लगा। हेनरी परसेल से पूर्व ऐसा समय था जब योरुप में इंगलिश म्यूजिक की माँग थी।

पिलग्रिम फादर्स के आने के बाद १५० वर्षों तक अमरीकी उपनिवेशों के अधिकांश लोग कण्ट्री कम्युनिटी (ग्रामीण समुदायों) में बसते रहे। आगामी सौ वर्षों तक शुरू शुरू में आने वाले लोग पश्चिमी भागों में फैलने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों पूर्व वहाँ संगीत का विकास प्रारंभ हुआ है।

यह स्वाभाविक ही था कि इस देश में बसने वाले लोगों के साथ

योरुप से संगीत आया। न्यू इंग्लैण्ड ही एक ऐसा भाग था जहाँ ओल्ड इंग्लैण्ड से शिष्टाचार और संगीत आया और जहाँ सर्व प्रथम संगठित गायन होने लगा और वहीं से देश के अन्य भागों में संगीत फैलने लगा। पिलग्रिमों के आने के १५० वर्ष बाद अमरीका के अपने प्रथम "प्रमुख संगीतकार" उभरने लगे। लेकिन पिलग्रिमों के आने से बहुत पहिले योरुप में सभ्यता और कलाओं की अधिक प्रगति हो चुकी थी। वहाँ एक से अधिक सभ्यताएँ थीं। लोग शहरों में रहने लगे थे और कई पीढ़ियों तक कलाओं का अभ्यास करने के आदी हो चुके थे। योरुप में किन्हीं अर्थ प्रभावों के फलस्वरूप संगीत का विकास हो रहा था लेकिन ऐसे प्रभावों से अमरीका सदैव वंचित रहा। इन प्रभावों में गिरजाघर और कोर्ट के प्रभाव प्रमुख रहे।

प्यूरिटनों ने महान गिरजाघरों और कैथीड्रलों की उत्कृष्ट संगीत सर्विस की ओर से ध्यान हटा लिया। उस सर्विस में 'एन्थम' और सामूहिक पूजा गीतों के गायन का आयोजन होता था। कोर्ट एक ऐसा दूसरा साधन था जिससे संगीत को आश्रय मिल जाता था, लेकिन अमरीका में इस प्रकार संगीत को कभी आश्रय न मिला। राजाओं और रानियों के यहाँ रिवाज था कि उनके दरबार के लिये संगीत प्रस्तुत करने तथा रचनाओं के लिये सर्वोत्तम संगीतज्ञों को नौकरी दे दी जाती थी। यदि आप हेनरी परसेल की जीवनी के बारे में पढ़ें तो आपको यह विदित होगा कि इन्हीं दो साधनों से उसने अपना जीवन-यापन किया और यही ऐसे साधन थे जिनसे उसे सतत प्रेरणा मिलती रही। कभी-कभी कोई योरुपवासी संगीतकार अपना अधिकतम जीवन अपने आश्रयदाता के साथ ही बिता देता था जैसा कि हेडन ने किया। ऐसे संगीतकार अपने जीवन यापन के लिये किसी राजकुमार के आश्रय और संरक्षण में रहते थे और उनके मनोविनोद और ऐश्वर्य के लिये गीतों की रचना किया करते थे। अमरीका में कभी दरबारी जीवन नहीं रहा क्योंकि प्यूरिटन राजाओं और राजकुमारों की ओर से भी विमुख हो चुके थे।

अमरीका और अन्य देशों के संगीत में एक बहुत बड़ा अन्तर है जिसका आभास अमरीकी संगीत से मालूम होता है : इंग्लैण्ड में प्रत्येक अंग्रेज था; जर्मनी

में प्रत्येक जर्मन था; फ़्रांस में फ़्रांसीसी ही थे और इटली में इटेलियन। परन्तु अमरीकी कौन थे ? उनमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित था और जो कोई भी वहाँ पहुँचा, वह भी उनमें शामिल हो गया; अमरीका सभी के स्वागत के लिये उन्मुक्त था।

अमरीका एक ऐसा देश है जिसमें सभी राष्ट्रों के व्यक्तियों ने एक साथ मिलकर रहना सीख लिया है। यही कारण है कि अमरीका को ग्रेट मेलटिंग पॉट (बड़ा सम्मिश्रण केन्द्र) कहते हैं। ये लोग अपने साथ अपना संगीत लाये और एक दूसरे के साथ घुल मिल गये। अमरीका में सबसे अधिक प्रकार के लोग आकर एक दूसरे से मिले हैं। इसलिये यहाँ पर अन्य राष्ट्रों के जो भी लोग आये, उनके संगीत का समेकित संगीत ही अमरीका का संगीत बन गया या किसी संगीतज्ञ का यह भी कहना है कि अमरीका में अलग-अलग राष्ट्रों की अलग-अलग संस्कृतियों के सम्मिश्रण से संगीत की अनेक विधाओं (म्यूज़िक्स) की रचना हुई है।

जैसे जैसे समय बीतता गया, पेनसिलेवेनिया में लोग बसते गये, उन्हें संगीत प्रिय था, वे वेल्श, जर्मन और स्वीडन वासी थे और अपने साथ अपना अपना संगीत लाये थे। बोहेमिया योरुप का सबसे अधिक संगीत प्रिय प्रदेश है और वहाँ से मोरेवियन जाति के लोग आये। वे लोग पेनसिलेवेनिया के बेथलेहेम में जाकर बस गये। उन लोगों के संगीत का प्रभाव अभी तक विद्यमान है। लोग अब भी प्रतिवर्ष 'बेथलेहेम बेश क्वायर' सुनते जाते हैं।

वर्जीनिया उपनिवेश में शायद किसी प्रकार का संगीत रहा हो क्योंकि यह उपनिवेश पिलग्रिमों के न्यू इंग्लैण्ड में आने से पहिले ही बस चुका था किन्तु अभिलेखों से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। तथापि हम यह जानते हैं कि यह संगीत "सामसिंगिग यांनकीज़" की देन है। यद्यपि इन लोगों की संगीत में अधिक रुचि न थी फिर भी उनकी रुचि में प्रबलता, तत्परता और आत्मीयता थी जिसके फलस्वरूप सिंगिग सोसाइटीज (गायन-समितियाँ) और सिंगिग स्कूल (गायन-स्कूल) स्थापित होने लगे। और उन्हीं के माध्यम से संगीत देश के शेष भाग में पनप उठा।

प्यूरिटनों के संगीत को पहिले-पहल क्षति हुई। न तो उनके पास संगीत के लिये वाद्य-यंत्र ही थे और न उन्हें संगीत के लिये निर्देश ही मिल पाते थे इसलिये वे संगीत का अधिक विकास न कर पाये। एक-न-एक पुराने देश से वाद्य-यंत्र लाये गये और न्यू इंगलैण्ड-वासियों ने अपने गीतों की नवीन पुस्तकें तैयार कर लीं। वे इस बात को जानते थे कि उन्हें संगीत के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना है और उन्हें यह महसूस होने लगा कि उन्हें अपने 'नोट्स' पढ़ना सीखना चाहिये।

हमें यह विदित है कि पहिले उनकी **बे साम बुक** में संगीत को लिपिबद्ध करके छापा नहीं गया था क्योंकि लोग स्वरबद्ध संगीत को नहीं पढ़ पाते थे। धीरे-धीरे उनकी पुस्तकों में 'साम ट्यून' गाने के लिये हिदायतें शामिल होने लगीं। वे इन हिदायतों को **ग्राउंड्स एण्ड रूल्स आफ म्यूजिक** कहा करते थे। परन्तु कुछ समय के लिये इस स्थिति ने भी प्यूरिटनों को भ्रम में डाले रखा और उन्होंने कहा, "यदि हम एक बार नोट के आधार पर गीत गाने लगें तो हमें नियम के आधार पर प्रार्थना है करनी और प्रवचन देना है।" और यह सोचकर उन्हें यह आशंका होने लगी कि कहीं वे फिर अपने पुराने तरीकों पर ही न आ जायें, जिनसे वे असंतुष्ट हुये थे और जिनके कारण उन्हें आराधना के लिये अनेक नियमों का पालन करना पड़ा था। वर्ष बीतते गये, बात चलती रही और वे चिन्तित भी रहे। वे अधिक अच्छा गाना चाहते थे लेकिन यह नहीं जानते थे कि कैसे गावें। उन्होंने सावधानी से इस स्थिति को संभाला और उन्होंने उपयुक्त समय में ही संगीत के नियम बना लिये। वे संगीत के नोट पढ़ने लगे। उन्होंने इस प्रकार गाना-बजाना सीख लिया जिससे रविवार के दिन चर्च-संगीत (सण्डे-गो-टू-मीटिंग) से किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती।

१७७० में जर्मनी में बीथॉवन का जन्म हुआ और उसी वर्ष न्यू इंग्लैण्ड में प्रारंभिक गायन स्कूलों को संगठित किया गया। इन नये स्कूलों में बहुत समय तक अपने गीत नहीं गाये गये बल्कि ऐसे गीतों का चलन रहा जो नियम आदि का उल्लंघन किये बिना मीटिंग हाऊस में भी गाये जा सकते थे। उसी

वर्ष बोस्टन में **न्यू इंग्लैण्ड साम-सिंगर** नामक पुस्तक छपी। प्रारंभिक अमरीकी संगीतकारों में से विलियम बिलिंग्स नामक संगीतकार ने उस पुस्तक का संकलन किया। एक महानुभाव ने पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर चित्र बनाया जो आज भी पाल रेवेयर के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी ख्याति इसलिये नहीं हुई कि उन्होंने 'साम ट्यून बुक' का मुखपृष्ठ बनाया था बल्कि उन्हें लोग इसलिये जानते हैं कि उन्होंने इस रचना के पाँच वर्ष बाद एक रात को घोड़े की सवारी की थी और वह घटना उनके जीवन की अविस्मरणीय घटना है।

हमारे प्रथम अमरीकी संगीतकार

माई डेज हेव बीन सो वनडर्स फ्री

हम अपने देश में स्वावलम्बी और स्वतंत्र हो गये और समय के साथ हमें हमारा संगीतकार भी मिला। प्रथम अमरीकी संगीतकार का नाम फ़ान्सिस हापकिन्सन था और उसका जन्म फिलेडेलफिया में हुआ था। पाल रेवेयर ने 'साम ट्यून' के संकलन के पृष्ठ तैयार किये। उसके कुछ वर्ष पूर्व हापकिन्सन ने **ओड टू म्यूजिक** और **माई डेज हैव बीन सो वन्डर्स फ्री** नामक गीतों की रचना की। यह बात बिल्कुल ठीक लगती है कि हमारा पहिला संगीतकार जार्ज वाशिंगटन का मित्र ही होगा और वह भी स्वतंत्रता-घोषणा के गायकों में से एक गायक होगा। हमारे दूसरे प्रेसीडेंट जान एडम्स ने एक बार अपनी पत्नी को पत्र लिखा जिसमें उस संगीतकार के बारे में लिखा था। उन्होंने अपनी पत्नी को यह लिखा :

> होपकिन्सन...सुन्दर, नाटे, विलक्षण और मेधावी व्यक्तियों में से एक हैं। उसका सिर एक बड़े सेव से बड़ा नहीं है। मुझे प्रकृति में ऐसा अन्य कुछ भी नहीं दिखा है जिससे उसकी तुलना की जाय। उसके व्यक्तिगत साक्षात्कार से केवल मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि प्रसन्नता मिलती है। वह सभ्य और शिष्ट है और साथ ही अधिक मिलनसार है।"

प्रारंभिक गायकों में से दूसरा गायक विलियम बिलिंग्स था जो बोस्टन में चर्मकार था। वह स्वयं एक "चरित्र" का प्रतीक था। वह संगीत को

बहुत चाहता था और संगीत के प्रति उसका उत्साह था। निदान उसने अपन चर्मशोधन का रोजगार छोड़ दिया और संगीत को ही अपने जीवन-यापन के लिये व्यवसाय बना लिया, उन दिनों इस देश में कोई भी व्यक्ति केवल संगीत के सहारे जीविका नहीं कमा सकता था और बिलिंग्स निर्धन ही मर गया परन्तु न्यू इंग्लैण्ड में उसकी ख्याति फैल गई और उसका संगीत सुदूर फिलेडलफिया में प्रयोग में आने लगा। उसमें बजाने या गाने की क्षमता से कहीं अधिक संगीत के प्रति उत्साह था। वह एक आँख से अन्धा था, उसकी एक बाँह को लकवा लग गया था, उसके छोटे बड़े पैर थे और उसकी आवाज़ में कर्कशता थी। उसके कान ठीक थे। पाल रेवियर ने 'साम ट्यून' पुस्तक तैयार की। इसके अतिरिक्त बिलिंग्स ने ऐसी रचनाएँ कीं जिन्हें वह "स्वर संगत पद" (फ्यूग्यूयंग पीस) कहा करता था और जिनके बारे में उसका विचार था कि "उन रचनाओं में पुरानी रचनाओं की अपेक्षा बीस गुनी अधिक शक्ति है।" बोस्टन में एक कंसर्ट (संगीत समारोह) का आयोजन किया गया और उसके दो एन्थेम (गीत) प्रस्तुत किये गये। उस संगीत समारोह का समापन हेंडेल के **द मसीहा** से **हेलेल्युजा कोरस** गीत गाकर किया गया।

अमरीकी क्रान्ति की लड़ाई के कुछ वर्ष बाद संयुक्त राज्य अमरीका में ओरकेस्ट्रा के गीतों की पहिली पुस्तक प्रकाशित की गई। उसका नाम था—**दि डेथ सांग ऑफ एन इण्डियन चीफ।**

हमारे राष्ट्रीय गीतों का प्रकाशन

स्वीट लैण्ड ऑफ लिबर्टी, ऑफ दी आई सिंग"

लोगों ने स्वतंत्र होने के लिये अधिक परिश्रम किया और संकट सहे। इन लोगों के वारिसों को यह लगा कि उनकी स्वतंत्रता खतरे में है तो उन्होंने युद्ध करने की ठान ली। देश-भक्ति की भावना के जागृत होते ही लोगों ने संगीत से अपने मन की भावना को अभिव्यक्ति करना प्रारंभ कर दिया। यह स्वाभाविक ही था कि हमारे राष्ट्रीय गीतों की रचना उसी समय हुई जब हमारे देश-भक्ति में सच्चे उतरने की परीक्षा का समय सामने था।

फिर भी अमरीका की सबसे अधिक लोकप्रिय ट्यून इस समय न बनी। **यांकी डूडल** गीत की ट्यून कितनी सुहावनी और अजीब है और यह कहा जाता है कि राष्ट्रीय गीतों की रचना से पूर्व ही उसकी रचना हो चुकी थी। **यांकी डूडल** की ट्यून पुरानी है और शायद यही कारण है कि उस गीत की यह ट्यून अजीब लगती है।

जब ब्रिटिश सिपाहियों ने न्यू इंग्लैण्ड के किसानों का उपहास करने के लिये **यांकी डूडल** गीत गाया, उस समय यह गीत उतना ही सरल और असंस्कृत राष्ट्रीय गीत था जिसे हम आज भी उसी प्रकार जानते हैं। लेकिन ऐसा अनुमान किया जाता है कि एक हजार वर्षों से पूर्व इटली के गिरिजा-घरों में यह गीत गाया जाता था। उस समय यह गीत बहुत धीरे-धीरे गाया जाता था और उसके नोट्स एक ही टाइम-वेल्यू (समान आरोह-अवरोह) के होते थे। इसलिये उस गीत में रिद्म नहीं था। यदि हम इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लें तो यह ट्यून गिरजाघर से बाहर आ गई और दक्षिणी योरुप के अंगूर के खेतों में किसान इसे गाने लगे। यह स्वाभाविक बात थी कि इस ट्यून के अनुकूल गीत गाये जाने लगे। धीरे-धीरे यह ट्यून उत्तर में खिसक कर हालैण्ड में आ गई जहाँ 'जॉनी' के स्थान पर पुराना डच शब्द 'यांकर' प्रयोग किया जाता था। "डूडल" पुराना फ्रिशियन शब्द था जिसका अर्थ मन्दबुद्धि का व्यक्ति अथवा "डम्ब बेल" (गूंगी घण्टी) समझा जाता था। शताब्दियाँ बीततीं गई और यह ट्यून इंग्लैण्ड में पहुँच गई और वहाँ नर्सों ने बच्चों को यह ट्यून सुनाई और वे यह गीत गाने लगीं :

लूसी लॉकेट लॉस्ट हर पाकेट,
किटी फिशर फाउंड इट
नथिंग इन इट, नथिंग ऑन इट
बट द बाइंडिंग राउंड इट।

हम नर्सरी में जो ट्यून सीखते हैं, उसकी अपेक्षा अन्य कोई भी ट्यून इस गीत के समीप नहीं है। इंग्लैण्ड में 'कामन वेल्थ' स्थापित हुई और कुछ समय के लिये कोई भी सम्राट नहीं रहा, उस समय प्रोटेक्टर आलीवर

लंदन नगर में घोड़े पर चढ़कर घूमने लगा जिससे लोग उसे शासक समझें। उसने केंटिश पोनी (टट्टू) पर बैठकर केण्टरबरी से प्रस्थान किया। वह एक छोटा गोल टोप भी पहिने था जिसमें एक पंख लगा था और विनोदी स्वभाव के घुड़सवार उसके साथी जो उसका उपहास भी कर देते थे। वे उपहास में यह गीत गाते थे :

यांकी डूडल केम टू टाउन
अपोन ए केंटिश पोनी,
स्टक ए फेदर इन हिज़ हैट
एण्ड काल्ड हिम मेकेरोनी।

इटेलियन स्टाइल के बने हुये कसे कपड़ों को **मेकरोनी** कहा करते थे। उस समय युवक उसी फैशन के कपड़े पहिना करते थे।

सौ वर्ष बाद अमरीका में लोग ब्रिटेन के लाल कोट पहिनने लगे और उन्हें पहिनकर न्यू इंग्लैण्ड के किसानों का उपहास करने लगे। सरल स्वभाव के देहाती लोग बड़े आश्चर्य से ब्रिटिश सिपाहियों को उन चमकदार पोशाक में तोपों के साथ देखकर हैरान रह जाते थे। उन यात्रानुभवी सिपाहियों को ये किसान भी कितने विचित्र लगते थे। और लोगों का उपहास करना सबसे सरल काम है लेकिन यह निर्मम स्वभाव की बात है। जब न्यू इंग्लैण्ड के निवासी अपने गिरजाघरों में रविवार को अपनी साम ट्यून गाते तो ब्रिटिश सिपाही गिरजाघर के बाहर खड़े हो जाते और वे उनका मज़ाक उड़ाते तथा उनसे अधिक जोर में गाने की कोशिश करते। वे **यांकी डूडल** गीत गाते।

सन् १७७५ में अप्रैल की एक रात थी, उस रात को ब्रिटिश सिपाही बोस्टन से लेक्सिंगटन को प्रस्थान कर गये। वे कदम मिलाने के लिये **यांकी डूडल** गीत गा रहे थे। उनके आगे एक सचमुच ही यांकी था जिसका उन्हें कोई ज्ञान न था। उसका नाम पाल रेवेयर था और वह अपने पोनी पर सवार था। एक ऐसा दिन आया कि समय ही बदल गया और ब्रिटिश जनरल कॉर्नवालिस ने दुःखी होकर यार्क टाउन में आत्म-समर्पण कर दिया। ब्रिटिश बैण्ड ने पराजित होकर ठीक ही यह धुन बजाई : **द वर्ल्ड टर्न्ड अप**

साइड डाउन, लेकिन अमरीकी बैण्ड ने इसका समुचित उत्तर दिया और **यांकी डडल** गीत की ट्यून बजाई।

प्रथम अमरीकी संगीतकार के पुत्र का नाम जोसेफ हापकिन्सन था। वह उन दिनों अमरीका का सर्वोत्तम हार्प्सिकार्ड का वादक था और उसी ने **हेल कोलम्बिया** की रचना की थी। उसने यह कहानी बताई कि वह इस गीत की रचना किस प्रकार कर सका। यह वह समय था जब फ्रांस अमरीका को दुःख दे रहा था। उस समय जोन एडम्स दूसरे प्रेसीडेंट थे। राष्ट्रीय भावना फिर जोर पकड़ गई और दो राजनीतिक दल जमकर भाग लेने लगे। १७९८ की ग्रीष्म-ऋतु थी, शनिवार का दिन था और दोपहर के बाद का समय था। उस समय फिलेडलफिया में कांग्रेस अपनी समस्याओं पर वाद-विवाद कर रही थी। गायक गिल्बर्ट फॉक्स उसी समय हापकिन्सन से मिलने आये और वे स्कूल से ही हापकिन्सन को जानते थे।

मिस्टर फॉक्स दुविधा में फंसे थे। आगामी सोमवार की रात को उन्हें थियेटर से लाभ होने वाला था। उन्हें उस समय **प्रेसीडेंट मार्च** के लिये एक नया गीत प्रस्तुत करना था। उन्होंने हापकिन्सन को यह कठिनाई बताई कि थियेटर का कोई भी कवि गीत के अनुकूल शब्दों की कल्पना नहीं कर सकता। यह कठिन काम है कि ऐसा राष्ट्रीय गीत लिखा जाय जिससे किसी दल को दुःख न हो। शायद मिस्टर हापकिन्सन इस काम में उनकी सहायता कर सकेंगे। मिस्टर हापकिन्सन ने आश्वासन दे दिया और कहा कि वह यथाशक्ति इस सम्बन्ध में प्रयत्न करेंगे।

दूसरे दिन रविवार था, दोपहर के बाद का समय था और वह गायक फिर आया। मिस्टर हापकिन्सन ने उससे कहा कि 'गीत' तैयार है। उस गीत के शब्दों को देश-भक्ति की भावना से चुना गया है और उन शब्दों को इस प्रकार गीतबद्ध किया गया है कि दोनों दल वह गीत गा सकें। मिस्टर फॉक्स ने सोमवार की रात को वह गीत गाकर सुनाया और उसकी "भूरि-भूरि प्रशंसा" की गई और वह गीत उसी समय सभी का प्रिय गीत हो गया। दो दिन बाद

बेंजेमिन कर ने हेल कोलम्बिया गीत के लिये विज्ञापन दे दिया। मिस्टर कर अमरीका के संगीत के प्रथम स्टोर कीपर थे।

हमारे राष्ट्रीय गीत—दी स्टार स्पेंगल्ड बेनर—की रचना उस समय हुई है जबकि देश-भक्ति की भावना चरम सीमा पर थी। १८१२ से युद्ध हो रहा था और वह गीत १३ सितम्बर १८१४ को लिखा गया।

ब्रिटिश सिपाहियों ने एक अमरीकी डाक्टर को बन्दी बना लिया था और उसे बाल्टीमोर के बन्दरगाह से दूर लंगर डालकर ठहरे हुये जहाज में कैद कर रखा था। फ्रान्सिस स्काट की एक युवक वकील था और वह संधि-सूचक झण्डा लेकर वहाँ पहुँचा, और डाक्टर की मुक्ति के लिये निवेदन करने लगा। लेकिन ब्रिटिश सेना फोर्ट मेक्हेनरी पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रही थी और बॉल्टी-मोर के हड़पने की तैयारी में थे। उन्होंने जब तक वे आक्रमण न कर दें तब तक की को भी कई दिनों तक बन्दी बना लिया। की स्वयं १३ सितम्बर की रात को कैदी था जबकि उसने ब्रिटिश सेना की बम-वर्षा का प्रारंभिक दृश्य अपनी आँखों से देखा। उन्होंने उस जहाज को ऐसी जगह रोका था जहाँ से की को युद्ध का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अमरीकियों को गत सप्ताहों में काफी हानि उठानी पड़ी थी और दुश्मनों ने देश की राजधानी वाशिंगटन शहर तक जला दिया था। ब्रिटिश सेना को यह विश्वास था कि वे इस नये हमले से जीत जायेंगे। उन्हें यह आशा थी कि की को अपने देश के प्रति हुये घोर अपमान का दृश्य देखना पड़ेगा। वास्तव में वह रात उसके लिये बहुत भयानक रात थी। वह डेक पर चक्कर काटता रहा और सारी रात नहीं सो सका। वह यह देखता रहा कि किले पर कहाँ-कहाँ बम गिरे हैं। उसने रात के मद्धिम प्रकाश में किले के ऊपर तारों और धारियों का एक महान झण्डा (फ्लेग ऑफ स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स) लहराते हुये देखा। "क्या वह झण्डा उसे प्रातःकाल भी लहराता मिलेगा?"

धीरे-धीरे अंधेरा लोप होने लगा और पूर्व दिशा में प्रकाश की किरनें चमकने लगीं। पानी के ऊपर इतना अधिक कुहरा छाया हुआ था कि वह किला नहीं देख पा रहा था। रात में यकायक बम वर्षा रुक गई। उसे

आश्चर्य था कि ऐसा क्यों हुआ ? कोई समाचार नहीं मिला। वह यह भी देख नहीं पा रहा था कि कौन सा झण्डा लहरा रहा है ?

यकायक हवा का झोंका आया, कुहासा छटने लगा और उसने अपनी थकी आँखों से ऐसा दृश्य देखा जिसके लिये उसे आशा न थी। उस झण्डे के एक किनारे पर गोली लग गई थी और उसका एक स्टार गायब हो गया था फिर भी वह **स्टार स्पैंगलड बैनर** (झण्डा) शान से किले पर लहरा रहा था। उसने अपने मन में ही यह गीत गाया : **"ओ लांग मे इट वेव ओवर दी लैण्ड ऑफ द फ्री एण्ड द होम ऑव द ब्रेव।"**

मिस्टर की इतने भाव-विभोर हो चुके थे कि उन्होंने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाल लिया और वे वहीं अपने गीत के शब्द लिखने लगे जो उनके मन में आ रहे थे। जब वह बॉल्टीमोर पहुँचे तो उन्होंने वह गीत एक मुद्रक को दिया और वह गीत एक इश्तिहार की शक्ल में छप गया। उसी रात को बॉल्टीमोर की एक सराय में उस गीत को गाया गया। उस गीत को एक अंग्रेजी शराबी की ट्यून में गाया गया जो उन दिनों में बहुत लोकप्रिय थी। उसी समय से वह गीत अमरीकी गीत माना जाने लगा। वह गीत अमरीकी गीत क्यों न माना जाता ? अमरीकी कभी इंग्लैण्ड से ही आये थे। उसके शब्द, ट्यून और टाइम दिल हिलाने वाले थे और उस गीत को लगातार गाया जाने लगा। यहाँ तक कि वह अमरीकी राष्ट्रीय गीत (नेशनल एन्थम) बन गया।

अमेरिका नामक गीत राष्ट्रीय गीतों में से एक गीत है और उसका युद्ध से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह सचमुच नेशनल हिम्न (राष्ट्रीय गीत) है। सौ वर्ष से अधिक समय हुआ जब इस गीत की रचना सेम्युल फ्रान्सिस स्मिथ ने की थी। उसने भी बताया कि वह इस गीत को कैसे लिख सका।

एक सज्जन थे, वे योरुप से आये और अपने साथ जर्मन भाषा में कुछ संगीत की पुस्तकें भी लाये। उन्होंने वे पुस्तकें गीतकार लोवेल मेसन को दीं जो संगीत पढ़ सकता था किन्तु जर्मन भाषा नहीं जानता था। मिस्टर मेसन ने उन पुस्तकों को स्मिथ को दे दिया। स्मिथ गिरजाघर के वादक थे।

मिस्टर स्मिथ से यह निवेदन किया गया कि वह उन पुस्तकों को देख लें और यह बतायें कि संगीतज्ञ मेसन उन पुस्तकों में से क्या उपयोग कर सकेंगे ? मिस्टर स्मिथ ने कहा :

एक दोपहर के बाद मैं बड़े आराम से उन पुस्तकों को देख रहा था और "गाड सेव दी किंग" की ट्यून इतनी अच्छी लगी कि मैंने कलम निकाली और उसे लिखना प्रारंभ कर दिया. . . .वह गीत एक ही बार में लिख लिया गया और उस समय यह भी अनुमान न था कि उस गीत को कभी-न-कभी अधिक लोक-प्रियता मिलेगी. . . .उस गीत को प्रथम बार बच्चों के सामने गाया गया जबकि उस दिन अमरीकी स्वातंत्र्य दिवस का आयोजन था।

जैसे ही इतिहास बढ़ता जाता है और नई कहानियाँ बनती जाती हैं, यह कहना संगत प्रतीत होता है कि अमरीकी राष्ट्रीय गीत की ट्यून वैसी ही होनी चाहिये जैसी कि अंग्रेजी राष्ट्रीय गीत **गाड सेव दी किंग** की ट्यून है। फिर भी कितनी विचित्र बात है कि **स्टार स्पेंग्लड बेनर** गीत इंग्लिश लोकप्रिय गीत की ट्यून से ही गाया जाता है। मातृभूमि के गीत की ट्यून को अपनाने से यह लगता है कि जो बीत गई सो बीत गई और "अब हमें समीप आ जाना चाहिये।" शायद संगीत का अर्थ बन्दूकों के आघात से भी अधिक गहरा होता है। शायद हम इसलिये गाते हैं कि हम अतीत भूलकर फिर प्रेम से हाथ मिला सकें।

अमेरिका गीत की ट्यून **गॉड सेव दी किंग** गीत की ट्यून के समान ही नहीं है अपितु इससे अन्य कई राष्ट्रों के गीतों की ट्यूनों का भान होता है। वस्तुतः संगीत की भाषा में दो राष्ट्रों के विभाजन का प्रश्न ही नहीं उठता। काश सभी कानून गीत हो पाते तो सभी राष्ट्र आपस में सर्वथा मित्र बने रहते।

संयुक्त राज्य अमरीका में संगीत की वृद्धिः

अमरीकी हिम (गीत)

"सिंगिग आल-डे-एण्ड-डिनर-ऑन-द-ग्राउंड्स"

हमारा व्यस्त देश सदैव से ही व्यस्त रहा है। विलियम बिलिंग्स अजीब

शक्ल का आदमी था। वह संगीत में विशेष उत्साही था। वह बोस्टन नगर में चर्मकार का काम कर चुका था। वह संगीतक्षेत्र में पहिले-पहल उस समय सफल प्रयत्न में लगा था जब सुदूर जर्मनी में बीथोवन का जन्म हुआ था। बिलिंग्स ने गीतों की रचना की। इसके अतिरिक्त उसने 'सेक्रेड सिंगिंग स्कूल' का संगठन भी किया। वह स्कूल अब भी मौजूद है और उसे अब 'साउटन म्यूज़िकल सोसाइटी' कहते हैं। अब संगीत के कई स्कूल खोले गये और नई दुनिया के लिये वे संगीत के प्रमुख केन्द्र बने।

उनका सामाजिक रूप से विशेष महत्व था क्योंकि उनके माध्यम से गिरजाघर का संगीत फैलने लगा और लोगों का उससे मनोविनोद होने लगा चाहे वे गिरजाघर के व्यक्ति हों अथवा न हों। इन स्कूलों ने देश में एक नये व्यवसाय को जन्म दिया और इनकी सहायता से संगीत के अध्यापक बनने लगे। वे स्कूल एक नई सामग्री बनाने में भी हितकर सिद्ध हुये। यह ऐसी सामग्री थी जिसे खरीदा और बेचा जा सकता था। यह सामग्री प्रकाशित संगीत ही था। प्रथम संगीत अध्यापक संगीत के विक्रेता ही थे जिन्होंने 'साम ट्यून' की पुस्तकों का विज्ञापन दिया और उन्हें बेचा। समाचारपत्रों में भी संगीत के अध्यापकों और गीत संग्रहों के विज्ञापन दिये जाने लगे। इन विज्ञापनों में से दर्जनों विज्ञापन ऐसे नाच सिखाने वाले अध्यापक अथवा संगीतज्ञों के थे जो जर्मन फ्लूट, हार्प्सिकॉर्ड अथवा वायलिन बजाना सिखाना चाहते थे। अमरीका में वाद्य-यंत्र पहिले ही बनाये जाने लगे थे लेकिन सौ वर्षों तक उन वाद्य-यंत्रों को बजाने में सर्व साधारण ढंग से कौशल नहीं प्राप्त हो सका था और यह कुशलता तब तक न आ सकी जब तक कि रेल नहीं बनीं और आने-जाने के साधन न बढ़े। अमरीका में "रैगटाइम" की ट्यून (हब्शी संगीत की धुन) लोक-प्रिय हो गई और उसके बाद लोगों में संगीत वाद्य-यंत्रों का अधिक प्रचार हो गया।

गायन-समितियों का यह पहिला काम था कि वे गायकों को संगीत का पढ़ना सिखाती थीं। 'मोडाल साम ट्यून' की प्रथम पुस्तकों में संगीत की 'बार लाइन्स' न थीं और 'टाइम सिगनेचर' भी न थे। मोडाल म्यूज़िक में

रिथ्म का अभाव था इसलिये 'बार लाइन्स' और 'टाइम सिगनेचर्स' की आवश्यकता न महसूस हुई। लाल कोट पहिनने वाले अंग्रेजों ने न्यू इंग्लैण्ड के गिरजाघरों का संगीत सुना होगा और वह संगीत उन्हें अधिक 'प्रसन्न करने वाला संगीत' प्रतीत हुआ। इस बात की केवल कल्पना ही की जा सकती है कि सामूहिक रूप से किसी हिम्न (गीत)का गाना कितना कठिन काम था जबकि उस समय न तो कोई वाद्य-यंत्र ही था और न कोई ऐसा संगीतज्ञ था जो सामूहिक गीत का संचालन कर सके। उत्साही व्यक्तियों को अत्यन्त मार्मिक ढंग से ग्राम स्वर में अपना स्वर मिलाने का अधिक प्रयत्न करना होता होगा और उन्हें इस बात की अधिक कोशिश करनी होती होगी कि वे एक साथ गीत की पंक्ति शुरू करें और एक साथ ही गीत समाप्त करें। गायकों को बीच-बीच में केवल अनुमान से ही काम लेना होता होगा। गीत के उच्च स्वर और कोमल स्वर में गायक की वैसी ही दशा होती होगी जैसी कि एक सिपाही बनने वाला लड़का मार्च करते समय प्रायः यह सोचने लगता है कि सभी के कदम उठ चुके हैं और वही कदम नहीं उठा पाया है। फिर भी उन्होंने गंभीरता और सच्चाई से अपने कार्य में सफलता प्राप्त की।

योरुप में कई सौ वर्ष पूर्व नोट सिंगिग (गायन) का तरीका विकसित चुका था और लोग उससे आज भी परिचित हैं तथा जिसका प्रयोग आज स्कूलों में होता है। इन नोट्स में सिलेबिल्स (पदांश) जोड़ दिये जाते प्रत्येक को अपना डू रि मी गाना पड़ता था। इंग्लैण्ड के एक भाग में रि मी को मध्यम स्वर में उतारकर फा सोल ला (मी को अन्तरवर्ती ना करके) बना लिया गया और इन सिलेबिल्स (पदांश) को शेक्सपीयर समय गाया जाता था, उस समय एलिजाबेथ महारानी का राज्य था।
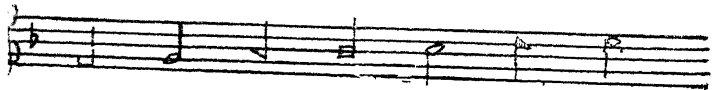
फा सोल ला फा सोल ला मी

जब संगीत के स्कूल खुले तो मुद्रित संगीत की आवश्यकता होने लगी और संगीत की ग्राउंड्स (बुनियादी बातों) अथवा नियमों के लिये अच्छी हिदायतों की जरूरत पड़ने लगी जिससे कि संगीत सीखने वालों को पुस्तकों का अधिकाधिक उपयोग कर मिले और साथ-ही-साथ अभ्यास तथा सामाजिक मनोरंजन के लिये प्रचुर आकर्षक संगीत प्राप्त हो सके। पुस्तक से गाकर सीखने की पद्धति को आसान बनाने के लिये यह जरूरी था कि नोट्स को भी आकृतियाँ दी जाने लगीं जिससे कि छात्र एक बार में ही देखकर यह कह सके कि वह नोट 'सोल' या 'फा' है। डोक्सोलॉजी का रूप इस प्रकार बन गया :

ओल्ड १००　　　　　　चीयरफुल

G ♭ C
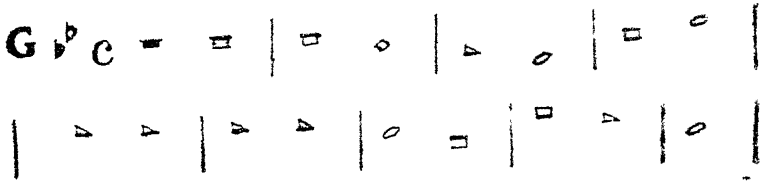
ओल्ड हण्ड्रेड्थ साम ट्यून प्रशंसा और प्रसन्नता के लिये 'साम' गीतों के संग्रह के रूप में माडल ट्यून की अकेली पुस्तक थी।

द **ईज़ी इन्स्ट्रक्टर** नाम की सबसे पुरानी परिचित शेष नोट बुक मे स्टाफ के लिये ट्यून इस प्रकार थी :

शार्प की ऑन ए

'मेजर की' को 'शार्प की' कहा जाता था और 'माइनर की' को "फ्लेट की' कहा जाता था। 'मोड्स' के बताने का कोई आसान तरीका न था क्योंकि जब वह सी मेजर तक पहुंच पाता, वे उसे 'सी' में शार्प की (तीव्र स्वर) कह उठते यद्यपि उस की में कोई तीव्रता नहीं होती थी।

संगीत के स्कूल 'स्वतंत्र संगीत की घोषणा' करने वाले स्थान समझे जाते थे अतएव उन्हें प्रायः सराय में आयोजित किया जाता था। संगीत गिरजाघर के बाहर भी फैल रहा था। गायक अपनी बत्तियाँ खरीद लाते और उन्हें अपनी बेंचों पर लगाकर उनकी मदद से पुस्तकें देखा करते। वे दो या तीन पंक्तियों में अर्ध वृत्ताकार होकर बैठते और वे दोपहर के बाद या सायंकाल अपने क्लेफ्स, नोट-वेलूज़ और उन सभी बातों को सीखने के लिये प्रतिदिन तीन-तीन घण्टे के सत्रों में चौबीस दिन तक अध्ययन करते जिन्हें अब लड़के और लड़कियाँ बड़े होने से पहिले सीखा करते हैं। इसका सबसे बड़ा उद्देश्य यह होता था कि पाठ्यक्रम की समाप्ति के अन्त में मीटिंग कक्ष में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता था और उस समय कक्षा यह दिखा सकती थी कि उसने क्या-क्या सीख लिया है। संगीत स्कूल का अध्यापक भ्रमण करता रहता था, वह किसी अन्य गाँव या क्षेत्र को जाता और वहाँ चौबीस पाठों की एक कक्षा का आयोजन कराता और गीत-संग्रह की पुस्तकों को अपने साथ ले जाता था। इन स्कूलों और समितियों के गीत गिरजाघरों की सरल और आसान ट्यून के गीतों की अपेक्षा धीरे-धीरे अधिक स्पष्ट और लम्बे होने लगे।

जब पूर्वी शहरों के गिरजाघरों में ऑरगन का चलन हो गया तो वहाँ संगीत स्कूलों के अध्यापकों की आवश्यकता न रही। योरुप से अच्छा संगीत और कुशल संगीतज्ञ आने लगे और वे अपने साथ वाद्य-यंत्र भी लाये। अमरीका में भी वाद्य-यंत्र बनाने के अपने कारखाने शुरू हो गये। 'शेप नोटर्स' सुदूर पश्चिम और दक्षिण को फ्रंटियर की तरह जाने लगे। योरुप से लाई गई अच्छी शिक्षा पद्धति प्रारंभ कर दी गई जिसमें **डू रे मी** का ज्ञान भी सम्मिलित था। 'फा सोला' से सिखाने वाले अध्यापक (जैसा कि उन्हें 'फा सोला टीचर्स'

कहा जाता था) उन स्थानों को जाया करते थे जहाँ व्यक्तियों को संगीत का कुछ अच्छा ज्ञान न था। इस प्रकार शेप नोट सिस्टम (नोट की आकृति बनाकर संगीत सिखाने की पद्धति) ने ऐसा प्रभाव डाला कि देहात और शहर का संगीत अलग-अलग होने लगा, और लोक संगीत कला संगीत से अलग हो गया। दक्षिण में समुद्री तट के किनारे शहरों और समुदायों में अधिक विकसित संगीत का रिवाज़ था। योरुप से आने वाले अतिथि कलाकार कंसर्ट (सामूहिक संगीत) का प्रदर्शन करते थे। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमें बड़े-बड़े किसान और गुलामों के मालिक रहा करते थे। जार्ज वाशिंगटन को सम्मिलित करके देश के सभी संभ्रान्त व्यक्ति अपने मिनिट्स (संगीत) के साथ नृत्य का आनन्द उठाने लगे थे और उनके रहन-सहन के तरीकों में शान-शौकत आ गई थी। लेकिन यदि पहाड़ियों और पर्वतीय क्षेत्रों के पीछे क्षेत्र में और ऐसे क्षेत्रों में जिनका खोज सकना कठिन था, फा सोला संगीत प्रचलित हो पाता तो वह संगीत वहां रह जाता। इन क्षेत्रों में अब भी यह सम्भव है कि 'फा सो ला संगीतज्ञ' मिल जायेंगे और उनके शेप नोटेशन 'बकव्हीट नोट्स' कहलाते हैं। अभी हाल ही में 'फा सो ला' गायकों का सम्मेलन आयोजित किया गया। जिस नगर में यह सम्मेलन हुआ उसमें दूर दूर से कई मील की यात्रा करके लोग इकट्ठे हुये। 'टीचर' के पास ट्यूनिंग फार्म के अलावा कुछ भी न था। उस जगह अमरीकी नीग्रों का यह गीत गाया गया "सिंगिंग-ऑल-डे-एण्ड-डिनर-ऑन-द-ग्राउंड्स।"

रेडियो और विक्ट्रोलास से नये संगीत का प्रसार हुआ। यह संदेहप्रद बात है कि ऐसे 'सिंगिंग्स' अधिक समय तक रह सकेंगे। पुरानी देहाती-शैली के बराबर घटते रहने की संभावना है, यहाँ तक कि वह बिल्कुल ही समाप्त हो जायेगी। अतीत में ही प्रमुख संगीत और अग्रणी संगीतकार मिलते हैं। वृद्ध लोग "सिंगिंग" को अब वैसा नहीं सुन पाते जैसा कि वे स्वयं अपनी युवावस्था में गा लेते थे और अपने सिर हिलाकर यह कह देते हैं :

अतीत का संगीत लुप्त हो गया है,
और फिर भी वह संगीत मधुर था,

वह संगीत मधुर गति से चलता था।

देहाती जिला में दूर-दूर तक "बकह्वीट नोट्स" सिखाये जाते थे, फिर भी संगीतज्ञ पूर्वी शहरों में बढ़ गये और कालेजों में अपने ही संगीतकार तैयार होने लगे। अमरीका में प्रथम बार जिस संगीत का अभ्यास किया गया, यदि उस संगीत के बारे में विचार किया जाय तो यह कहना स्वाभाविक है कि प्रथम अमरीकी संगीतकार हिम्न लेखक (गीतकार) रहे होंगे। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक के मित्र लोवेल मेसन ने **माई कण्ट्री इट्ज ऑफ दी** गीत लिखा और उन्होंने **नियरर माई गॉड टू दी** और **माई फेथ लुक्स अप टू दी** जैसे कई श्रेष्ठ गीतों की रचना की। इन गीतों को हम आज भी गाते हैं शायद इसी समय अमरीकी गीत-रचना के दो भाग हो गये। कुछ शानदार अच्छे गीत थे जैसे मेसन के लिखे गीत, परन्तु एक अन्य प्रकार के गीत भी शुरू हुये जिन्हें गोस्पेल हिम्न (गल्प-गीत) कहा जाने लगा। इन गीतों का प्रचार कैम्प की बैठकों, पुनरुद्धार करने वालों के आन्दोलनों और कुछ रविवार के स्कूलों में हुआ। इन गीतों का उद्देश्य यह था कि अधिकाधिक संवेग उत्तेजित किया जाय अतएव ये गीत वैयक्तिक और भावनात्मक रहे। गीतों के पुनरुद्धार की अवधि में रिद्म के प्रभावों की प्रशंसा की जाने लगी और वे अपने आप ही पसन्द आने लगे। देश तेजी से आगे बढ़ रहा था, नई नई खोज हो रही थी, रेल चलने लगी थीं और व्यक्ति संगीत को प्रसन्नता और विनोद का साधन समझने लगे थे। भावना प्रधान गीतों का फैशन हो गया। शाम के भोजन के बाद लोग बैठकों में आ जाते और पियानो बजाये जाते तथा परिवार के सभी सदस्य मिलकर भावना-प्रधान बेलेड गाया करते। यह बात केवल समय का साथ देने के लिये ही थी क्योंकि भावनाप्रधान गीतों को पसन्द किया जाने लगा था। यदि भावना सरल और सच्ची होती तो उससे अभिप्रेत गीत अधिक समय तक चलता। कभी-कभी इस प्रकार का गीत ऐसा संगीतज्ञ लिखा करता जो यह भी न जानता था कि मेलोडी की दृष्टि से शब्दों का किस प्रकार प्रयोग किया जाय। लेकिन ईसाई धर्म के हिम्न (स्तोत्र) और भावना-प्रधान गीत भुलाये नहीं गये। गोरे उपदेशकों से दक्षिणी नीग्रों ने गोस्पेल

हिम्न (गल्प गीत) सुने। इन गीतों में **शेल वी गेदर एट दी रिवर ?, विल दियर बी एनी स्टार्स इन माई क्राउन ?** और **ह्वेन दी रोल इज काल्ड अप योण्डर आई विल बी दियर** मुख्य गीत थे।

अफ्रीका से आये लोगों ने नीग्रों के धार्मिक गीतों की रचना की

"स्विंग लो, स्वीट चेरिऑट कमिन' फा' टू केरी मी होम।"

न्यू इंग्लैण्ड के पथरीले समुद्री तट पर साम-गायकों का एक छोटा दल **मेफ्लोर** नामक जहाज से आया। इससे एक वर्ष पूर्व अफ़्रीका से गुलामों का पहिला जहाज दक्षिणी समुद्रतट के समीप आ चुका था। गोरों ने नीग्रों को गुलाम के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया था। यह कितनी विडंबनापूर्ण बात है कि जिस देश में गोरे स्वतंत्र होने के लिये आये थे, उसी देश में काले लोग गुलाम बनाये जाने लगे। फिर वे गोरों से बिल्कुल भिन्न थे, वे नितान्त अशिक्षित थे तथा जंगली और कबीलों की जिन्दगी छोड़कर आये थे। सभ्य होने में समय लगता है। उन्हें सबसे पहिले गोरों की भाषा सीखनी थी और फिर उन्हें गोरों के लिये काम करना सीखना था। रेड मेन की अपेक्षा नीग्रों का स्वभाव मधुर था। वे व्यवहार में सरल थे और आदत तथा बोली से मधुर थे। वे सुख और दुःख दोनों ही सह सकते थे। वे गोरों के साथ रह सकते थे। इण्डियन रिजर्व स्वभाव के थे और अकेले रहते थे इसलिये गुलामी स्वीकार नहीं कर सकते थे। वे स्वतंत्र रहकर ही मरना चाहते थे।

नीग्रो जाति के लोगों को रिद्म और गीत के प्रति स्वाभाविक रुचि थी। वे अपने देश अफ़्रीका में नृत्य करते थे और ड्रम बजाते थे। उन्हें जो कुछ आता था, वे उसे अपने साथ ही लेते आये क्योंकि उनके यहाँ संगीत के लिखने की रिवाज़ नहीं थी, इसलिये उनके यहाँ संगीत की पुस्तकें नहीं थीं। उनका संगीत प्रारंभिक था और कबीलों से सम्बन्धित था।

नीग्रो के साथ सबसे बड़ी बात यह है कि वह किसी बाधा को स्वीकार नहीं करता और उसका मन दुःखी हो या सुखी हो, वह नाचना चाहे या गाना

चाहे—वह संगीत में खूब दिल लगा लेता है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उसमें अभिव्यक्ति की अपार शक्ति है।

गोरे उपदेशकों से नीग्रों ने गोरों के धर्म के बारे में बहुत कुछ सीखा और उन्होंने इस प्रकार गोस्पेल सांग्स (ईसाई मत के गीत) सुने। नीग्रों को ईसाई मत के गीत बहुत अच्छे लगे और उन्होंने उन गीतों को अपनी अलग शैली मे गाना शुरू कर दिया। कुछ गोरे संगीतकारों ने अधिक भावना-प्रधान और स्पष्ट होने के कारण बहुत सस्ते और भद्दे गीत लिखे। नीग्रो लोगों ने गीत नहीं लिखे क्योंकि वे संगीत कला से विशेष परिचित न थे। न तो वे पढ़ सकते थे और न वे लिख सकते थे। लेकिन वे महसूस कर सकते थे। उन्होंने गीतों की रचना नही की बल्कि उनके गीत उनके मन से स्वयं ही फूट पड़े। उन गीतों की सबसे अधिक विशेषता उनकी सरलता और सचाई थी। गुलाम अपने दिल से चीखते थे। उनका चीखना ही गीत हो जाता था और उसमें शुद्धता तथा सरलता होती थी। कुछ लेखकों ने यह कहा है कि नीग्रों ने अपने धर्म-गीतों को ईसाई मत के गीतों से कहीं-कहीं बहुत अच्छा बना लिया है। **शैल वी गेदर ऐट द रिवर, द ब्यूटीफुल, द ब्यूटीफुल रिवर ?"** के स्थान पर नीग्रो सिर्फ यही गाते थे—**रोल, जॉरडन, रोल। व्हेन द रोल इज काल्ड अप योन्डर आई विल बी दियर** जैसे आत्म सजग गीत की अपेक्षा नीग्रो यह गीत चिल्लाकर गाते—**आई वाण्ट टू बी रेडी, और डेसे बोन्स ग्वाइन टू राइज अगेन** अथवा **ऑन दैट ग्रेट गिटिन'-अप मोर्निंग।**

गोरे उपदेशकों ने नीग्रों को सिखाया। नीग्रो विश्राम के समय अपनी बैठकें आयोजित करते थे तथा उनके अपने ही उपदेशक हुआ करते थे। एक गोरी महिला ने दक्षिण में नीग्रों की आराधना सभा में भाग लिया और उसने उस सभा का वर्णन किया है। जब वह नीग्रों की "टूटे-फूटे मीटिंग हाऊस' में घुसी, तो उसने देखा कि नीग्रो लोग रविवार को मीटिंग में सम्मिलित होने के लिये सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुये थे।

'हमारे सर्विस में पहुँचने से पूर्व ही सर्विस प्रारंभ हो चुकी थी। वह जन-

समूह मौन और भक्तिभाव से बैठा था, उन्होंने बैठने में पंक्तियाँ बना ली थीं और वे सभी बिना पीठ की खुरदरी बेंचों पर बैठे हुये थ। उपदेशक ने उस जन समूह को प्रार्थना शुरू करने के लिये कहा और वे लोग अपनी बेंचों से कुछ हिले और फिर घुटनों पर झुके। उस समय प्रत्येक नीग्रो का काला सिर भक्तिभाव से झुका हुआ था। फिर उपदेशक ने थरथराती हुई आवाज में अपनी विनती प्रारंभ की। उन लोगों में से किसी की खांसी की आवाज सुनाई दे जाती क्योंकि खांसी का रोक सकना उसके लिये संभव न हो पाता था अथवा किसी बेचैन बच्चे की यकायक आवाज उठती, और फिर उच्चस्वर में अत्यन्त विनम्र भाव से 'ओ लार्ड !' अथवा बड़बड़ाते हुये 'आमीं', आमीं'—शब्द सुनाई देते। यह ऐसा वातावरण था कि प्रार्थना हो रही है और शायद ही इस प्रार्थना का अन्त हो। 'मिनिट' हुये, उनके लम्बे 'मिनिट' में कितनी विचित्र भाव-विभोरता थी। उनके बुदबुदाते शब्द और उच्च स्वर ऊँचे ही होते गये तथा अधिक नाटकीय होते गये, यहाँ तक कि यकायक मुझे यह महसूस हुआ कि विद्युत कम्पन के समान लोगों के मुख से रचनात्मक पंक्तियाँ फूटने लगी हैं। उन पंक्तियों को पूरा सुन सकना कठिन था, सारा वातावरण भावना प्रधान हो रहा था जैसे बादल इकट्ठे होकर मंडराने लगे हों—और तब ऐसा लगा कि कोई 'पापी' आत्मग्लानि और दुःख से पीड़ित होकर दयनीय भाव में गा रहा हो, ठीक इसी प्रकार नीग्रो भी रुंधे कण्ठ से कातर भाव से गाने लगे। उन झुके हुये नीग्रों की भीड़ से किसी ने उत्तर में आशु कविता जैसा स्वर दिया जो पहिले स्वर से उच्च था तथा उसमें अधिक अधीर कम्पन था, फिर अन्य स्वर भी उस स्वर में मिल गये और ऐसा लगने लगा कि संगीत की कड़ी बन रही है। इस प्रकार हमने कानों से एक नये गीत की रचना सुनी। यह गीत ऐसा लगा कि किसी ने उसी समय रचा है और संगीतबद्ध कर लिया गया है फिर भी वह गीत किसी एक व्यक्ति का ही न था बल्कि वह गीत सभी का गीत था।

नीग्रों के स्प्रिच्युअल (धर्म-गीत) की शुरूआत हुई। सरल स्वभाव के

उन लोगों ने बाइबिल की कहानियों को अपने अनुभव के अनुकूल बना लिया

अफ्रीका में कबीलों के उत्सवों के अवसर पर पुरुष और स्त्रियाँ अपने मन के अनुसार धार्मिक अथवा युद्ध जैसी क्रीड़ाओं में लग जाती थीं और उनका उद्देश्य कुछ ही क्यों न होता हो। वे ढोल थपथपाते तथा गीत गाते थे। संयुक्त राज्य अमरीका में वे आनन्दित होकर अपने गिरजाघर की मीटिंग में गाया करते थे। वे गिरजाघर की बेंचों को हटा देते और फिर एक कतार में कई घण्टे तक पग-ध्वनि करते रहते और गिरजाघर के कमरे का चक्कर लगाते रहते, वे इस प्रकार गाते और अपनी मध्यम चाल को नियमित करते रहते। वे अपने उपदेशक से बाइबिल की एक पंक्ति सुन लेते और उसी से पूरा गीत बना लेते, उसी को बार-बार दुहराते तथा अलग-अलग व्यक्ति उस गीत में कहीं-कही परिवर्तन भी कर देते थे। इन सर्विसेज़ को 'शाउटिन मीटिंग्स' भी कहा करते थे। बालक स्टीफेन फॉस्टर कभी-कभी नीग्रों के गिरजाघर में 'शाउटिन' सुनने जाया करता था।

नीग्रों के अपने गीत थे जो धार्मिक गीत नहीं थे। वे कपास चुनते, अनाज साफ करते, नाव चलाते और रेल की पटरियाँ बिछाते समय गीत गाते थे। वे केवल मनोविनोद के लिये संगीत उपयोग में लाते थे।

उनके बहुत से धार्मिक गीतों और व्यवहारिक गीतों की प्रारंभिक पंक्तियों को उनके नेता प्रारंभ करते थे और गीत की शेष पंक्तियाँ जनसमूह गाया करता था, जैसे नेता गाता था :

आई गॉट ए रोब,
यू गॉट ए रोब,

और प्रत्येक व्यक्ति गाया करता :

आल गॉड्स चिलन गॉट ए रोब,
व्हेन आई गेट टू हेब न,
गोना पुट ऑन माई रोब,
गोना शाउट ऑल ओवर गाड्स हेब'न !

मनोविनोद करने वाला संगीत : मिन्स्ट्रल शो

"टर्न एबाउट, एन' ह्वील एबाउट
एन' डू जीस सो,
एन' एवरी टाइम आई टर्न एबाउट
आई जम्प जिम क्रो।"

अमरीका के शहरों की संख्या बढ़ती गई और वे बराबर बढ़ते भी गये जिसके कारण वहाँ संगीत व्यावसायिक ढंग से चलने लगा। देश धनी हो गया और विदेशी संगीतज्ञ तथा कलाकार धन कमाने के लिए अपनी-अपनी चीजें बेचने अमरीका आ गये। कंसर्ट (संगीत गोष्ठियों) का आयोजन किया गया और सिम्फनी ओरकेस्ट्रा (पूर्ण वाद्य-वृन्द के साथ बजाये जाने वाले गान के ओरकेस्ट्रा) संगठित किये गये। कार्यक्रमों में योरुप का सर्वोत्तम संगीत प्रस्तुत किया जाने लगा और शहर के लोग कंसर्ट तथा गायक मण्डली के आयोजनों में जाने लगे। इस प्रकार अमरीकियों की संगीत के प्रति रुचि में परिष्कार हुआ तथा संगीत के स्तर में सुधार होने लगा।

जर्मनी में बीथॉवन की मृत्यु हो चुकी थी और उसके कुछ समय बाद मध्य योरुप सर्वोत्तम योरुपीय संगीत तैयार कर रहा था, उन्हीं दिनों में राजनीतिक अशान्ति के कारण विद्रोह हो उठा और जिसकी असफलता के कारण कई जर्मन इस देश में भाग आये। कुछ समय तक जर्मन लोगों का अमरीकी संस्कृति पर प्रभाव रहा और यह प्रभाव कुछ वर्षों तक इतना बढ़ता गया कि अमरीकियों ने यह महसूस किया कि उन्हें संगीत में सर्वोत्तम अनुदेश (इन्स्ट्रक्शन) प्राप्त करने के लिये जर्मनी जाना चाहिये। कई जर्मन संगीत अध्यापक अमरीका आये और उन्होंने स्वभाववश अपने छात्रों को अपने देश की प्रशंसा से अभिप्रेत किया। यही कारण है कि इस समय के अनेक प्रशिक्षित अमरीकी संगीतकारों की रचनाएँ योरुपीय संगीत परम्परा से प्रभावित होकर हुईं।

गोरे गायकों और नर्तकों ने नीग्रो शैली का संगीत मनोविनोद के लिये अपनाया। वे नाचते थे और मजाक करते थे। अब वे ऐसा तमाशा करने लगे जिसे 'नीग्रो मिन्स्ट्रेल' कहते थे। मनोविनोद का यह अमरीकी तरीका ही

था जिसका बाद में इंग्लैण्ड में चलन हो गया। नीग्रों और गोरों ने आपस में संगीत का आदान-प्रदान किया और उस संगीत को अपने-अपने स्वभाव के अनुकूल बना लिया और इस प्रकार अन्य प्रकार के 'संगीत' की रचना हुई। नीग्रों ने गोरों के वेलेट अपनी भाषा के अनुरूप बनाये क्योंकि उन्हें वे सभी गीत अच्छे लगते थे जिनमें कोई कहानी होती थी। उदाहरण के लिये **केसी जोन्स** का उल्लेख किया जा सकता है।

इन 'शो' (खेलों) में नीग्रो मिन्स्ट्रिल के रूप में गोरे ही रहा करते थे जो अपने मुँह पर कालिख पोतकर हूबहू नीग्रो जैसे दिखते थे। उन विनोद के कार्यक्रमों में प्रसन्न करने वाले और दुःखी करने वाले गीत, उपहास, नृत्य और अजीव-अजीव बातें सम्मिलित की जाती थीं। यह सभी कार्यक्रम नीग्रो की नकल मात्र था, उसके खुश मिजाज को अपनाया जाता था और उसके गीतों की विलक्षणता, उसका हास्य और उपहास भी स्वीकार कर लिया जाता था। एक अमरीकी ने **डिक्सी** नामक सबसे अधिक लोकप्रिय गीत की रचना की। इस गीत के रचयिता उत्तर के डेन एमिट थे और उन्होंने अपने **दी बिग फोर** खेल में इस गीत को उस मिन्स्ट्रिल के अनुरूप बनाया था जो खेल की रंगशाला में "चारों ओर चलते हुये" नजर आता था। पहिले मिन्स्ट्रिल ग्रुप बहुत छोटे-छोटे होते थे। डेन एमिट के 'बिग फोर' से तात्पर्य यह था कि उस ट्रूप में विनोद करने वाले चार पात्र हैं। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका में जैसे-जैसे प्रत्येक दिशा में विकास हुआ, उसी प्रकार 'मिन्स्ट्रिल' में भी प्रगति होती रही। स्टीफेन फॉस्टर के समय तक इन 'मिन्स्ट्रिल शो' में काफी उन्नति हो चुकी थी। स्टीफेन फॉस्टर हमारे सबसे महत्त्वपूर्ण प्रथम गीतकार थे और उन्होंने स्वयं चालीस मनोविनोद करने वालों के शो (खेल) देखे हैं। जब कोई शो नगर में आयोजित किया जाता तो यह विज्ञापन निकाला जाता था :

फोर्टी ! कांउंट एम ! फोर्टी।

बिग। सुपर्ब। कोलोसल। गरगेंनटअन !

(चालीस। उन्हें गिनिये। चालीस। विशाल। शानदार। उम्दा। गरगेंनटुअन।)

मनोविनोद करने वाले एक पंक्ति में या कभी-कभी दो पंक्तियों में कुछ

अर्धवृत्ताकार सर्किल में दर्शकों के सामने बैठ जाते थे। वे अपने चेहरे काले कर लेते थे। उनमें से कुछ कलाकार वाद्य-यंत्र बजाते थे, वे विशेषकर बेंजो बजाते थे और किनारे पर दो व्यक्ति बैठ जाते थे जो यदा-कदा परकुशन (थपकी देने) के लिये टेम्बुरीन और बोन्स बजा देते थे। उन्हें बोन्स और टेम्बो भी कहते थे।

इन मिन्स्ट्रिल की कहानी एक सौ वर्षों से अधिक पुरानी है। उस समय टॉमस डी० राइस नाम का एक 'नर्तक और गायक' रहना था और वे उसे 'डेडी' राइस भी कहते थे। वह लम्बे कद का एक अभिनेता था और कामेडियन था और वह उस समय सिनसिनाटी के एक थियेटर में लगा हुआ था। वह कहानी सुना सकता था, हार्न-पाइप बजा सकता था और इस प्रकार गा सकता था जिसमें अधिकाधिक मनोविनोद होता था। वह स्वभाव से सनकी था, तथा वह चीजों के देखने में सावधान रहता था और उन्हें ऐसी चतुरता से देखता था कि वह उन चीजों का दर्शकों के सामने अधिकाधिक प्रयोग करके उनका मनोविनोद कर लेता था।

एक दिन वह एक मुख्य सड़क पर मटरगश्ती कर रहा था, उसे एक क्षीणकाय और लंगड़ा स्टेज-ड्राइवर सड़क पर एक गीत गाकर कूदते नजर आया। वह गीत था : **जम्प जिम क्रो** जिसकी टेक इस चेप्टर (अध्याय) का शीर्षक है। 'डेडी' राइस ने ड्राइवर को देखा, उसने उस गीत और गाने के तरीके को उसी प्रकार समझ लिया जिस प्रकार वह नीग्रो उसे गा रहा था। 'डेडी' राइस ने सोचा कि यदि वह रंगमंच पर उस विचित्र प्रदर्शन की नकल कर सका, तो उसका स्टेज के लिये बहुत अच्छा 'काम' होगा। उसने यह विचार किया कि 'जिम क्रो' और काले चेहरे वाले अभिनेता का थियेटर जोन वालों पर वैसा ही असर पड़ेगा जैसा कि आइरिश लाल नाक वाले कोमेडियन को अपना गीत सुनाने से श्रोताओं पर प्रभाव होता है। लेकिन सिनसिनाटी में उसका काम लगभग समाप्त हो चुका था और वह पतझड़ के मौसम में ही अपने विचार को कार्यरूप में परिणित करने का अवसर पा सका।

फिर पिट्सबर्ग के ओल्ड ड्ररी थियेटर में उसे **जम्प जिम क्रो** प्रस्तुत करने का अवसर मिला।

कफ नाम का एक काला (नीग्रो) लड़का था और वह ग्रिफ्थ होटल में काम करके अपनी गुजर किया करता था। वह होटल थियेटर के पास था। वह नाव से यात्रियों के ट्रंक उठाकर होटल तक ले जाता था। इस काम में प्रतियोगिता करने वाला एक और नीग्रो लड़का था जिसका नाम जिजर था। कफ कभी-कभी कुछ अलग से आमदनी कर लेता था, वह यार्क ब्याय की तरह अपना मुँह खोले रहता था जिससे उसके मुँह में पेनी डाली जा सके। कफ ही ऐसे फटे-पुराने और कसे हुये कपड़े पहिना करता था जिनकी 'डेडी' राइस को अपने थियेटर के काम के लिये आवश्यकता होती थी। उन्होंने आपस में करार कर लिया था। कफ शाम को थियेटर जाता था, अपने कपड़े उतारता था और खेल के लिये अपने कपड़े दे देता था।

थियेटर की घण्टी बजती और प्रारंभ के संगीत के लिये राइस की बारी आती और राइस स्टेज पर मटक-मटक कर चलता। उसका मुँह जली हुई कार्क से काला पुता होता, वह फटा-पुराना कोट पहिने रहता और इतने फटे जूते पहिनता कि उसमें सूराख ही सूराख होते तथा उसमें पैबन्द लगे होते। वह फटा और झुका सा टोप पहन लेता और ऊनी विग लगा लेता। इस अजीब शक्ल और पोशाक का दर्शकों पर विचित्र ही प्रभाव पड़ता। राइस अपना गीत शुरू करता और अपना आत्म-परिचय देता :

ओह, जिम क्रो' ज़ कम टू टाउन,
एज यू ऑल मस्ट नो,
एन' ही व्हील एबाउट, ही टर्न एबाउट,
ही ड्र जिस सो,
एन' एवरी टाइम ही व्हील एबाउट,
ही जम्प जिम क्रो।

इसका तत्काल ही प्रभाव पड़ता। यह नया विचार सभी को अच्छा लगता और प्रारंभिक गीत की प्रशंसा में करतल ध्वनि हो उठती थी। राइ

के गीत से दर्शकों की उत्सुकता बढ़ने लगती और वह फिर अन्य गीत सुनाने लगता। इन गीतों की विषय सामग्री स्थानीय समाचार ही होते और वह नगर के लोकप्रिय व्यक्तियों के बारे में गीत सुनाया करता। दर्शक खुश हो जाते। उसकी इतनी अधिक प्रशंसा होती कि कहकहों से कुछ सुन सकना भी कठिन हो जाता। इससे पूर्व इतना भव्य प्रदर्शन कभी भी नहीं हुआ। कभी-कभी ऐसा लगता कि 'जिम क्रो' गीत सारी रात होता रहेगा।

'डेडी' स्टेज पर ही होता, वहाँ वह गीत गाता और नाचता जब कि कफ पर्दे के पीछे से सरक जाता क्योंकि वह किसी स्टीम बोट की सीटी की ओर अपना ध्यान लगाता था। वह यही सोचा करता था कि स्टीम बोट यात्रियों को लेकर आ रही होगी और जिजर किनारे पर पहुँच गया होगा और ट्रंक ढोने का सभी काम उसे मिल गया होगा। बेचारा कफ इस स्थिति को जितना टाल सकता था, टाल देता था और जब वह यह देखता कि राइस का 'काम' चल ही रहा है और दर्शकों की प्रशंसा का अन्त नहीं है तो वह इसे सहन न कर पाता था। वह 'दृश्य' के किनारे से अपना चेहरा निकालकर जोर से कानाफूसी करके कह उठता—

"मास्सा राइस, स्टीम बोट' ज कमिन' ! मस्ट हेव मा क्लोज !"

(मास्टर राइस, स्टीम बोट आ रही है। मेरे कपड़े वापिस कर दें।')

उसका अनुरोध बेकार हो जाता। राइस को सुनाई ही नहीं पड़ता। वह स्टेज के बाहर रहता और जैसे ही वह नगर के किसी अप्रिय अधिकारी का मजाक कर उठता कि जनता प्रसन्न होकर उन्मुक्त भाव से हंस पड़ती। कफ अपना सिर और बाहर करता और इस बार कहता :

"मास्सा राइस। मस्ट हेव मा क्लोज। स्टीम बोट 'ज़ कमिन्' !'

(मास्टर राइस। मेरे कपड़े वापिस कर दें। स्टीम बोट आ रही है।)

राइस ने उसे कभी नहीं सुना। लेकिन दर्शकों को वास्तविक अभिनय के पीछे अन्य 'अभिनय' भी दिखाई देने लगता और वे सभी उस कलाकार से अपरिचित ही थे। दर्शकों की ठट्ठा मारकर हंसी चलती रहती और भूरि-भूरि प्रशंसा से करतल ध्वनि होती रहती। विवश वह सामान ढोने वाला

लड़का अपने कुछ ही कपड़े पहिनकर स्टेज पर आ जाता और राइस के कन्धे को पकड़ लेता और चिल्लाता :

"मास्सा राइस, जिमी निगर' ज़ क्लोज़। स्टीम बोट 'ज़ कमिन' !"

(मास्टर राइस। मेरे कपड़े वापिस कर दें। स्टीम बोट आ रही है।)

यह घटना हाऊस के शोर को कम कर पाती। बत्तियाँ बुझा दी जातीं और तभी दर्शकों से बार-बार आग्रह किया जाता कि वे थियेटर छोड़ दें। और यह एक ऐसी कहानी है जो 'नीग्रो मिन्स्ट्रिल' के बारे में कुछ बातें बताती है। मनोविनोद के लिये संगीत का यह रूप वस्तुतः अमरीकी ही था।

राइस को इंग्लैण्ड में स्टेज पर अपना खेल दिखाने में अधिक सफलता मिली। उसने धन इकट्ठा कर लिया, वह अपनी सनक के कारण अपने को धनी दिखाने के लिये अपने कोट और वेस्टकोट में पाँच और दस डालर सोने के बटन लगा लेता था। वह प्रायः उन्हें अपने कोट से तोड़ लेता था और बड़ी उदारता से स्मारिका के रूप में अन्य व्यक्तियों को उपहार में दे देता था।

नीग्रो मिन्स्ट्रिल का यह ऐसा शो था जिसे स्टीफेन फॉस्टर ने पिट्सबर्ग में सौ वर्षों पहिले देखा था जबकि वह एक बालक था।

स्टीफेन कॉलिन्स फॉस्टर

लोकप्रिय अमरीकी गीतकार

सौ वर्षों से अधिक समय पूर्व की बात है। उस समय लड़के और लड़कियाँ अपनी आजीविका कमाने के लिए इतनी बड़ी नहीं हो पाती थीं जितनी कि आज वे बड़ी होकर अपनी आजीविका कमाती हैं। उस समय विलियम फॉस्टर नामक सोलह वर्षीय बालक पिट्सवर्ग में सौदागरों की फर्म में काम करने के लिए घर से निकल गया। उसका जन्म अमरीका में हुआ था। लेकिन उसके पुरखे और पिता अमरीकी संगीतकार एडवर्ड मेकडोवल के समान स्काटिश-आइरिश थे। उसके माता और पिता के अलग-अलग परिवारों में ऐसे सगे-संबंधी थे जिन्होंने रेवोल्यूशनरी वार (क्रान्तियुद्ध) में प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

उस समय पिट्सबर्ग एक प्रमुख नगर था। वह नगर गोरों की बस्तियों के समीप स्थित था और उसके सुदूर पश्चिम में इण्डियन वनों में रहते थे और मैदानों में भैसों के झुण्ड का पीछा किया करते थे। पूर्वीय समुद्री तट पर दो सौ वर्षों से पूर्व ही सबसे पहिले गोरों ने पदार्पण किया था। धीरे-धीरे वे रेडमेन के क्षेत्रों में पश्चिमी की ओर बराबर बढ़ते रहे और अधिक संख्या में एकत्र होते गये। यहाँ तक रेडमेन को वहाँ से भागना पड़ा।

युवक विलियम फॉस्टर ने जिस फर्म में काम करना शुरू किया था, वह फर्म बिसातखाने और आम चीजों का व्यापार करती थी। वे सभी प्रकार का सामान मोल लेते थे जिसे वे उन प्रमुख क्षेत्रों में रहने वालों के हाथ बेचा करते थे। उन दिनों में ऐसा नहीं था कि मुख्य मार्ग में जूतों, हैट और शक्कर की अलग-अलग दुकानें हों जैसे कि आज लोग मुख्य मार्ग में जूता खरीदने के लिए जूते की दूकान, हैट मोल लेने के लिए हैट की दूकान और शक्कर खरीदने के लिए परचूनी की दुकान में जाकर अपनी इच्छानुसार सामान खरीद सकते हैं। आज प्रत्येक वस्तु के लिए अलग-अलग स्टोर होते

हैं। प्रायः मुख्य मार्ग में एक ही स्टोर होता था और वहाँ आपको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी सामान मिल जाया करता था—आप कोयले से लेकर काफी तक एक ही स्टोर से खरीद सकते थे। ऐसे स्टोर में दक्षिण से काफी और शक्कर मंगाई जाती थी और न्यूयार्क तथा फिलेडेलफिया जैसे बड़े शहरों से बर्तन और पहिनने के कपड़े तथा ऐसे अन्य सामान यथा फ्राइंग पेन, जूते और टोप मंगाये जाते थे जो न्यू इंग्लैण्ड के कई छोटे-छोटे कारखानों में तैयार किये जाते थे।

पिट्सबर्ग एक बड़ी नदी के किनारे बसा हुआ था, फर्म का यह काम था कि वह आस-पास की बनी चीजों को नौकाओं में भरती थी। इन चीजों में फर, खाल और आटा जैसी वस्तुएँ होती थीं और उन्हें ओहियो तथा मिसीसिपी नदियों द्वारा न्यू ओरलीन्स को भेज दिया जाता था जहाँ सामान या तो धन लेकर बेच दिया जाता था या दक्षिण की बनी उन चीजों यथा कपास और शक्कर से विनिमय कर लिया जाता था जिनकी उत्तर में आवश्कता होती थी। विलियम फॉस्टर परिश्रमी लड़का था क्योंकि वह उन लोगों का भागीदार हो गया जिन्होंने उसे काम दिया था और वह वर्ष में कुछ बार ऐसी यात्राएँ करके अपना काम किया करता था।

भारी बोझ वाली नौकाओं को नदी के बहाव के साथ जाने में अधिक समय लग जाया करता था। पिट्सबर्ग लौटने के लिए दो संभव मार्ग थे और दोनों में ही अधिक समय लगता था। कभी-कभी फॉस्टर इण्डियन कण्ट्री-नार्थ केरोलीना, केनटकी और वेस्ट वर्जीनिया होकर थल-मार्ग से वापिस आता था। उस समय रेलगाड़ियाँ नहीं थीं और उसे घोड़े पर चढ़कर आना पड़ता था। वह स्थल-मार्ग से यात्रा तभी कर सकता था जबकि एक बड़ा दल उसी दिशा में एक साथ यात्रा कर रहा हो क्योंकि इण्डियन लोगों से डर बना रहता था। वे अपने साथ हथियार रखते थे और सदा सावधान रहते थे कि कहीं कोई अप्रत्याशित बात न हो जाय। कभी-कभी फॉस्टर नौका से अंध्रमहासागर के तट होकर न्यूयार्क तक यात्रा करता था। उस मार्ग में भी इस प्रकार की अप्रत्याशित बातें सामने आती थीं। एक बार वह जहाज में सवार था, उसे

समुद्री डाकुओं ने अपने काबू में कर लिया किन्तु सौभाग्य से उसी समय एक स्पेनिश युद्ध पोत वहाँ पहुँच गया और उसने डाकुओं को डराकर भगा दिया। यह ऐसी घटना थी जिसमें से वह बाल-बाल बचा था। जिसे वह वर्षो बाद भी याद कर लेता था। उन अग्रणी यात्राओं के प्रारंभिक दिनों में किसी लड़के अथवा लड़की को साहसिक सच्ची कहानियाँ अनायास मिल जाती थीं। उनके अपने जीवन भी ऐसी साहसिक घटनाओं से भरपूर थे। बच्चे प्रायः अपने माता-पिता के पास बड़े चाव से उन कहानियों को ध्यान-मग्न होकर सुनते थे जो उनके माता-पिता की युवावस्था की घटनाओं पर आधारित होती थी।

जब फॉस्टर नौका से उत्तर की ओर वापिस आता था तब वह न्यूयार्क और फिलेडलफिया से पिट्सबर्ग स्टोर के लिए सामान खरीद कर लाता था। पहिले घोड़ों की पीठ पर सामान लादकर पश्चिम ले जाया जाता था किन्तु बाद में वे कोन्स्टोगा वेगन प्रयोग में लाने लगे। उन 'प्रेरी स्कूनरों' अथवा बन्द वेगनों को अब केवल संग्रहालयों अथवा किसी चलचित्र में ही देखा जा सकता है। इन वेगनों को एक से अधिक घोड़े खींचा करते थे और हर एक घोड़े की गर्दन पर घण्टियों की लड़ी बंधी रहती थी। जब वेगनों की लम्बी कतार ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर चलती थीं तो इन वेगनों से खटपट और चरमराहट की आवाज उठती थी किन्तु उन पहाड़ी रास्तों में उस वातावरण को घण्टियों की आवाज सुखद और सुरीली बना देती थी। फॉस्टर अपने जीवन-पर्यन्त उन घण्टियों की आवाज नहीं भूल सका।

इन यात्राओं में से एक यात्रा में उसकी एक लड़की से भेंट हुई जिसका नाम एलिजा टामलिन्सन था जो फिलेडलफिया में अपनी (चाची) आंट से मिलने आई हुई थी। वह व्यापार के लिए आया था। फिर भी उसने मिस टामलिन्सन से भेंट करने का समय निकाल ही लिया और उसने मिस टामलिन्सन से भेंट करते समय उपहार-स्वरूप फूलों का एक गुलदस्ता भेंट किया। उसे यह पता लगा कि उस लड़की का घर विलमिंगटन, डिलेवियर में था और उसके पूर्वज इंग्लैण्ड से आये थे। वे आपस में जितनी अधिक बात करते,

उन्हें उतनी अधिक बात करने की सामग्री मिलती। जब उसने उस लड़की के सम्मुख निश्चित रूप से अपनाने का प्रस्ताव रखा तो उसने स्पष्ट रूप से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और बाद में चेम्बर्सबर्ग में एलिज़ा के किसी अन्य सम्बन्धियों के घर उन दोनों का विवाह हो गया।

उन दिनों में लड़कियों को अधिक साहसी होने की भी आवश्यकता थी। एलिज़ा को ही देखें तो उसे घोड़े पर सवार पहाड़ी मार्गों में से होकर तीन सौ मील की यात्रा के बाद एक ऐसे एकाकी स्थान पर पहुँचना था जहाँ वह कभी नहीं गई थी और वहाँ उसे अपनी सोहाग-रात मनानी थी तथा वहीं अपने शेष जीवन के लिए घर बनाना था। फॉस्टर को इस यात्रा में चौदह दिन लग गये और जब वे पिट्सबर्ग के निकट पहुँचे तो एलिज़ा यात्रा के अन्तिम दिन बहुत थक चुकी थी। यद्यपि पिट्सबर्ग शाम के धुंधलेपन में एलिज़ा को एक छोटा सा नगर लग रहा था लेकिन उसका कहना है कि वह उस नगर को शुरू से ही पसन्द करती थी। इसका अर्थ यह हुआ कि वह विलियम के प्रगाढ़ प्रेम में डूबी हुई थी।

वर्ष बीतते गये, विलियम फॉस्टर समृद्धशील हो गया और नगर के ऊँचे भाग में उसने भूमि का एक बड़ा प्लाट खरीद लिया। वहाँ उन्होंने एक घर बनाया। उन्होंने उस घर का नाम 'व्हाइट काटेज' रखा। वह घर पहाड़ी पर था तथा वहाँ से सुदूर नदी के उतार-चढ़ाव का सुहावना दृश्य दिखाई देता था। उसने एक नगर की नींव डाली और उस नगर का नाम लारेंसविले रखा तथा अपनी सम्पत्ति उस नगर को अर्पित कर दी। उसके दस बच्चे थे, नवाँ बच्चा ऐसा बच्चा था जिसमें हम सभी की अत्यधिक रुचि है। वह बच्चा चौथी जुलाई को पैदा हुआ। जिस दिन बड़े-बड़े उत्सव मनाये जा रहे थे।

वह विशेष चौथी तारीख थी क्योंकि उसी दिन संयुक्त राज्य अमरीका की पचासवीं वर्षगाँठ थी। फॉस्टर जन-सेवा भावना से ओत-प्रोत था और उसने अपने घर के पीछे के जंगल में उत्सव मनाया। बैण्ड पर **यांकी डूडल और हेल कोलम्बिया** गीतों की धुन बजाई गई और जनसमूह ने आवेग से गीत गाये। वहाँ भाषण हुए और बॉवरी डिनर के नाम से सहभोज भी हुआ। आजकल

उत्सवों पर आतिशबाजी छोड़ी जाती है लेकिन उस समय आतिशबाजी न होने के कारण कुछ लोगों ने अपनी बन्दूकें दागीं। दोपहर के समय राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया और चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई और झण्डे को तोप दाग कर सलामी दी गई। प्रत्येक व्यक्ति ने **दि स्टार स्पेंग्लिड बेनर** नामक राष्ट्र-गीत गाया। उन जंगलों में आमोद-प्रमोद और उत्साह से उत्सव मनाया जा रहा था, उसी समय 'व्हाइट काटेज' अपेक्षाकृत शान्तिमय उत्साह से ओतप्रोत थी क्योंकि उसी दोपहर को फॉस्टर का नवाँ बच्चा पैदा हुआ था। वह लड़का था। उन्होंने उसका नाम स्टीफेन कॉलिन्स फॉस्टर रख लिया।

उस दिन दोपहर के बाद देश के अन्य भागों में दो महान दिवंगत अमरीकियों की स्मृति में श्रद्धांजलियाँ अर्पित की जा रही थीं। इन महापुरुषों के नाम थॉमस जेफरसन और जॉन एडम्स थे। दोनों ही संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसीडेंट रह चुके थे और दोनों ने ही "स्वतंत्रता घोषणापत्र" पर हस्ताक्षर किये थे।

व्हाइट काटेज में रहने वाले उस बड़े परिवार में ओलिविया पिसे (जिसका उपनाम "लीव" पड़ गया) नामक नीग्रो "गुलाम लड़की" और टॉम नामक नीग्रो "गुलाम लड़का" शामिल हो गये। पेंसिलवेनिया को ऐसे राज्यों के साथ मिला दिया गया था जहाँ कानूनी ढंग से गुलाम-प्रथा प्रचलित थी लेकिन वह स्वयं एक स्वतन्त्र राज्य था। लीव और टॉम गुलाम नहीं थे किन्तु यह समझा जाता था कि जब तक वे बड़े नहीं हो जाते तब तक वे इस घर में रहने के बदले काम करेंगे।

लीव धार्मिक विचारों की लड़की थी और वह 'शाउटिन' नामक नीग्रो धार्मिक सभा के गिरजाघर जाया करती थी। कभी-कभी युवक स्टीव फॉस्टर अपने परिवार के साथ गिरजाघर नहीं जाता था, उस समय उसे यह अनुमति थी कि वह लीव के साथ उसके गिरजाघर चला जाया करे। फॉस्टर अपने जिस गिरजाघर जाता था वहाँ हिम (गीत) किताबों से पढ़कर गाये जाते थे लेकिन इसके विपरीत जब वह लीव के साथ उसके गिरजाघर में जाता था तो वहाँ

वह ऐसे गीत सुनता था जिनकी रचना पूरी सभा गाते-गाते कर लिया करती थी। इस संगीत का उस नवयुवक के हृदय पर विशेष प्रभाव पड़ा।

स्टीफेन फॉस्टर को संगीत के प्रति बचपन से ही विशेष प्रेम था। जब वह दो वर्ष का था और साफ बोल भी न सकता था, वह उस समय अपनी बहिन का गिटार उठा लेता था और उसे अपना "इट्ली पिजानी" कहा करता था। जब वह सात वर्ष का हुआ, वह एक दिन एक म्यूजिक स्टोर में गया और वहाँ उसने फ्लेग्योलेट (नफीरी) ली जो काउंटर पर पड़ी थी। उसने उसे ऐसे छुआ कि कोई देख न ले और यह भी देखा कि वह कैसे बजती है। कुछ ही मिनटों में उसने दर्शकों को उस पर हेल कोलम्बिया गीत की धुन बजाकर आश्चर्यचकित कर दिया। बाद में उसने फ्ल्यूट (बांसुरी) पियानो और यहाँ तक कि वाइलिन बजाना सीख लिया। 'लीव' के गिरजाघर में स्टीफेन ने नीग्रो के संगीत की भावना को हृदयंगम किया। जब 'लीव' और टॉम मिलकर घर के बाहर गीत गाया करते थे तो ऐसा लगता था कि उसने अवश्य ही कुछ पर्वतीय लोक-गीतों को भी सुना होगा। उसने **फ्राग वेण्ट ए-कोर्टिन** जैसे गीत भी सीख लिये होंगे। वह बड़े चाव से नीग्रों को नाव में सामान चढ़ाते और उतारते समय देखा करता था और घाट पर काम करने वाले मजदूरों के गीत सुना करता था। इनमें से कुछ गीत चेण्टीज़ में (मल्लाहों के सम्मिलित गीत) रहे होंगे। लेकिन इन गीतों, गिरजाघर के हिम (आराधना गीतों), स्प्रिच्युल्स (आध्यात्म-गीतों) और लीव के गिरजाघर के 'शाउटिन' ने इस नवयुवक को संगीत-प्रिय बनने की भूमिका प्रदान की। जब वह मिन्स्ट्रिल शो देखने योग्य हो गया तो उसने देखा कि संगीत और नृत्य करके मनोविनोद करने वाले गोरे नीग्रों की नकल करते थे। नवीन देश के ऐसे अग्रणी नगर में जहाँ लोग प्रमुख रूप से देश के धन और शक्ति के संचय में लगे हुए थे, वहाँ ललित कला से आनन्द उठाने के लिये बहुत कम अवसर थे। स्टीफेन काफी बड़ा हो गया था। योरुप के संगीत की परम्परा को नहीं जान पाया था और बॉश, बीथॉवन, मोज़ार्ट और अन्य महान संगीतकारों के संगीत को भी न सुन सका। उन दिनों विक्ट्रोलास तथा रेडियो नहीं थे

और बहुत कम संगीत सम्मेलन हो पाते थे। अतएव वह ऐसा संगीत कहाँ सुनता ?

उसकी संगीत में रुचि उसके पिता के लिये एक जटिल समस्या थी। स्टीफेन की एक बड़ी बहिन थी जो उससे काफी बड़ी थी और वह संगीत-प्रेमी थी। उसके भाई विलियम ने उसके लिये पूर्व प्रदेश से एक पियानो मंगवाया। यह पियानो घोड़े और वैगन से पर्वत पार करके लाया गया। मिस्टर फॉस्टर को संगीत पसन्द था और वह स्वयं कभी-कभी फिडिल (बांसुरी) पर ट्यून बजाया करते थे। उनके विचार में संगीत उनकी पुत्री के लिये तो उपयुक्त था लेकिन उनकी समझ में यह नहीं आता था कि संगीत किसी पुरुष का व्यवसाय हो सकता है। वास्तव में वे अपने बेटे स्टीफेन को समझ ही नहीं पाते थे और कहा करते थे कि संगीत ही स्टीफेन की दुर्बलता है। उसकी माँ ने पूर्व देशों में संगीत सुना था और वह अपने बेटे की संगीत के प्रति भावना को अपने पति की अपेक्षा अधिक समझती थी।

दूसरी कठिनाई यह भी थी कि स्टीफेन पढ़ने-लिखने में चतुर न था। उसे अध्ययन करने में कोई आपत्ति नहीं थी और वास्तव में उसने स्वयं बहुत कुछ पढ़ा। परन्तु उसने स्कूल का जीवन पसन्द नहीं किया और उसे स्कूल के अनुशासन से चिढ़ थी। उसे सर्वप्रथम पढ़ने-लिखने में कठिनाई उस समय हुई जबकि वह पाँच वर्ष का था और स्कूल गया ही था। उससे कहा गया कि वह वर्णमाला सुनाये, उसने साहस से पढ़ना शुरू किया किन्तु यकायक बीच में ही रुक गया, वह इण्डियन की तरह चीखने लगा और एक मील दूरी पर स्थित घर की ओर भागने लगा। जब तक वह घर नहीं पहुँचा वह चीखता और भागता रहा।

उसे अपना घर सबसे अधिक प्यारा था। वह अपनी माँ के प्रति श्रद्धानत रहता था, और अपने बड़े भाइयों-विलियम, मोरीसन, डनिंग, हेनरी और अपनी बहिनों के साथ उसके बहुत ही मधुर संबंध थे। जब कभी वह घर से जाता तो उसे अपने चाचा स्ट्रथर्स के घर को छोड़कर अन्य सभी जगह अपने घर की बहुत याद आया करती थी। उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा, उस

और पोज़म्स के शिकार के लिये रात में घूमा करते थे । कभी-कभी वह स्टीफेन को भी चाँदनी रात में कून के शिकार के लिये ले जाया करते थे । वे इण्डियन लोगों के बारे में साहसिक कहानियाँ सुनाते थे जिन्हें सुनकर स्टीफेन रोमांचित हो उठता था । एक दिन उस वृद्ध व्यक्ति को अपना नन्हा भतीजा न मिल सका । उन्होंने उसे अन्दर और बाहर सभी स्थानों में खोजा लेकिन स्टीव कहीं चला गया था । अन्त में उन्होंने उसे भूसे के ढेर में गरदन छिपाये बैठा देखा जहाँ से वह मुर्गियों के बच्चों, बत्तखों और बाड़े के जानवरों को देख रहा था । उससे जब यह पूछा गया "क्या कर रहे हो ?" उसने उत्तर दिया "यों ही कुछ सोच रहा हूँ ।"

चाचा स्ट्रूथर्स को वह लड़का अच्छा लगता था और उन्होंने उस बालक की मौलिकता तथा संगीत की प्रतिभा जैसी विशेष क्षमता को समझ लिया था । उन्होंने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि स्टीफेन किसी-न-किसी दिन प्रसिद्ध आदमी होगा ।

स्टीफेन को स्कूल में पढ़ने की अपेक्षा अकेले घूमने में विशेष आनन्द आता था । वह जंगलों में या नदी के किनारे घूमा करता था । वह शर्मीला था और लोगों से अधिक 'मेल-मिलाप' नहीं बढ़ा पाता था लेकिन अपने मित्रों के समूह में प्रायः सबसे अधिक विनोदशील बन जाता था । वह पोच नहीं था, उसमें पर्याप्त साहस था और वह किसी लड़के की लड़ाई में बड़ी आसानी से कूद पड़ता था जैसे कि कोई अन्य लड़का तैयार हो जाता है । उसका भाई कहा करता था कि स्टीव लड़ने में वीर और चतुर है तथा गुण्डों को बरदाश्त नहीं कर सकता है । एक स्कूल में उसका एक मित्र था जो उससे एक वर्ष छोटा था और वे दोनों मिलकर कभी-कभी 'हुकी' खेल (ताश के खेल) खेला करते थे और दोनों जंगलों में इकट्ठे घूमा करते थे । वे जंगली स्ट्राबेरी इकट्ठी करते और अपने जूते-मोजे उतारकर किसी छोटी नदी में जल-क्रीड़ा के लिये चले जाते थे । जब यह लड़का बड़ा हो गया तो उसने यह बताया कि स्टीफेन उसको स्कूल के अन्य लड़कों के झगड़ों से अक्सर बचाया करता था । जब वह बीस वर्ष से कम आयु का था, स्टीव को पुल के किनारे दो

गुण्डे मिले जो एक शराब पिये व्यक्ति को गाली दे रहे थे और पीट रहे थे। वह निधड़क उस लड़ाई में शामिल हो गया और दुर्बल का सहारा बनकर लड़ने लगा। उसने उन दोनों गुण्डों में से एक गुण्डे को पीटा और दूसरे को भगा दिया। उस लड़ाई में उसके गाल पर एक चाकू लगा और उस घाव का निशान उसकी तमाम जिन्दगी बना रहा।

जब वह नौ वर्ष का था तो उसने अपने साथियों के साथ मिलकर एक ड्रेमेटिक-क्लब (नाटक मण्डली) की स्थापना की थी। उन्होंने एक केरिज हाऊस में थियेटर बनाया। स्टीव को छोड़कर सभी लड़कों ने उसके लिये धन जुटाया। स्टीव को ऐसा इसलिये नही करना पड़ा क्योंकि वह प्रमुख नायक था। उन दिनों काले चेहरे बनाकर मिन्स्ट्रिल शो ही लोकप्रिय मनोरंजन थे और ये लड़के उनकी नकल उतारते थे। जब स्टीव मंच पर आता और जिप कून, लॉग टेल्ड ब्लू, कोल-ब्लेक रोज़ तथा जम्प जिम क्रो गीत गाता तो उससे इन गीतों को बारबार पुनः सुनाने की माँग की जाती। वह मज़ाकिया अभिनय कर लेता था। ये लड़के सप्ताह में तीन प्रदर्शन करते थे। वे इतना धन कमा लेते थे कि वे शनिवार की रातों को पिट्सबर्ग जा सकें और वहाँ वे वास्तविक प्रदर्शन और आगन्तुक अभिनेताओं को देख सकें। इस समय तक पिता फॉस्टर को धन संबंधी मामलों में हानि उठानी पड़ी और उनके परिवार को अपना सुन्दर घर छोड़ना पड़ा। जब स्टीफिन बड़ा हो रहा था, उसके परिवार को कई बार इधर-उधर जाना पड़ा लेकिन वे सदैव पिट्सबर्ग शहर के आसपास ही बने रहे और कुछ वर्षो तक उन्हें एलीगिनी सिटी में रहना पड़ा।

इधर-उधर आने जाने से स्टीव की पढ़ाई में अड़चन आई। जब उसे एक ऐसे उपदेशक ने शिक्षा दी जो कठोर अनुशासन का हामी नहीं था, तो उसकी शिक्षा में प्रगति हुई। लेकिन उसकी शिक्षा उसके माता-पिता के लिये सदैव समस्या ही रही। स्टीफेन का दुर्भाग्य ही था कि वह अपनी बढ़ती आयु में प्रथम श्रेणी का संगीत न सुन सका और उसे ऐसे संगीत के अध्ययन करने का भी अवसर नहीं मिल सका। परन्तु उसने और उसके माता-पिता ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि संगीत से गम्भीर अध्ययन और विकास के

अवसर भी प्राप्त हो सकते हैं और संगीत के द्वारा जीवन में मान और धन भी मिल जाता है। उन्होंने कभी यह भी न सोचा कि संगीत का गंभीर अध्ययन उस वांछनीय अनुशासन की व्यवस्था कर देगा जिसकी स्टीफेन को आवश्यकता थी और संगीत से ही स्टीफेन को अपने जीवन को सुख से व्यवस्थित रखने का अवसर मिल सकेगा। उसकी बीस वर्ष से अधिक आयु होने लगी और उसे ऐसा अभाव प्रतीत होने लगा जिसे वह अपने जीवन में पूरा न कर पा रहा था। उसे म्यूज़िकल थ्योरी (संगीत सिद्धान्त), फार्म (रूप) और हार्मोनी (गति) जैसी बातों की विशेष जानकारी नहीं थी फिर भी वह गीतों को ऐसा संगीतबद्ध कर लेता था जैसा भी उसके मन में भर जाता था। संगीत के ये ही रूप उसके लिये सबसे अधिक सरल और स्वाभाविक होते थे। उसने गीत भी लिखे और उनको संगीतबद्ध किया क्योंकि उसे अन्य व्यक्तियों के गीतों की तुलना मे अपने गीतों के अनुकूल संगीत-रचना करना आसान लगा। उसमें कल्पना-शक्ति और भावना थी और उसके पिता इस बात को "विचित्र" प्रतिभा मानते थे।

जब स्टीफेन तेरह वर्ष का हो गया तो उसका परिवार उसकी शिक्षा के लिये दुविधा में पड़ गया। इस समय उसके भाई विलियम ने इस समस्या का निराकरण किया। वह स्टीफेन का सगा भाई न था अपितु उसका चचेरा भाई था जिसके बचपन में ही माँ-बाप गुजर गये थे और उसी समय फॉस्टर के भी एक बच्चे का देहान्त हो गया था। वे इस बच्चे को अपने घर ले आये और वह बालक उनके लिये ऐसा पुत्र लगने लगा कि वह उनका अपना सगा बेटा ही हो।

विलियम टोवाण्डा में कार्य कर रहा था और उसने यह सुझाव दिया कि स्टीव को अपने साथ ले जाऊँगा और वहाँ निकटवर्ती एथेन्स की एक अकादमी में उसका दाखिला करा दूंगा। माँ-बाप उसके सुझाव से सहमत हो गये। सर्दियों का मौसम आधा ही बीता था, दोनों लड़कों ने स्लेज गाड़ी से तीन सौ मील से अधिक यात्रा की। उस गाड़ी को दो घोड़े खींच रहे थे। स्टीव के विचार में यह यात्रा अधिक अद्भुत रही।

जब वह एथेन्स में था तब उसने अपने संगीत को लिपिबद्ध करना प्र
कर दिया। उसने कमेंसमेण्ट (यूनिवर्सिटियों में दीक्षान्त समारोह) के
संगीत की रचना की जिसकी व्यवस्था चार फ्लूट (बांसुरियों) पर की ग
वह संगीत **टिग्रोगा वाल्ज** कहलाया। उसने गीत का पहिला भाग स्वयं प्र
किया, दर्शकों को वह गीत बहुत अच्छा लगा और उन्होंने उसे सुनने का
आग्रह किया। उसे फिर अपने घर की याद आने लगी और वह इस स
में केवल एक वर्ष तक ही रुका। वह घर लौट आया, वहाँ उसने जेफर
कालेज में दाखिला करा लिया किन्तु वह वहाँ भी अधिक न रुक सक
फिर भी उसने फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का अध्ययन किया। उसका
मोरिसन कहा करता था कि स्टीव वाटरकलर्स से चित्र भी बनाया करता थ

वह केवल सोलह वर्ष ही का था जब उसका प्रथम गीत प्रकाशित हुआ
उस गीत का शीर्षक था : **ओपन दाई लेटिस, लव**, वह गीत उसने सू
पेण्टलेण्ड के लिये लिखा था जिसकी आयु दस वर्ष की थी। उस सम
फॉस्टर परिवार के पास कोई पियानो नहीं था और पेण्टलेण्ड के पास पिया
था अतएव स्टीफेन उसके पियानो को बजाने के लिये उसके पास जाता था।

इसी समय उसके परिवार के लोगों ने यह विचार किया कि स्टीफेन
वेस्ट पाइण्ट अथवा एन्नापोलिस में दाखिल करा दिया जाय। इससे इस ब
का पता लगता है कि उसके परिवार वालों को यह आभास भी नहीं था
स्टीफेन के लिये उपयुक्त धन्धा कौन-सा होगा? सेना अथवा नौ सेना क
लड़कों की विशेष पसन्द हो सकती है परन्तु स्टीफेन फॉस्टर जैसे कल्पनाशी
लड़के के लिये सैन्य-जीवन कभी भी उपयुक्त नहीं हो सकता था जो घण
बैठकर अपने पियानो पर संगीत का सृजन करने में लगा रहता था। ज
उसकी बहिन अथवा मित्र गाते तब उसे उस गीत को सुमधुर बनाने के लि
फ्लूट (बांसुरी) से धुन निकालने में मज़ा आता था। काश उसे कोई प
प्रदर्शक मिल पाता जो उसे संगीत के वास्तविक लक्ष्य की ओर ले जाता औ
निश्चित उद्देश्य बता सकता, तो न जाने वह प्रसन्नता से कितना कठोर परिश्र
करता।

स्टीव अपने अंतरंग मित्रों के साथ बैठकर अनौपचारिक ढंग से संगीत की रचना करना पसन्द करता था। उसे अपने सुपरिचित लड़कों और लड़कियों के साथ शाम की पार्टियों में पियानो बजाने और उनके साथ गाने में आनन्द आता था। उसकी सुरीली और पक्की आवाज थी जिसमें सकरुण मधुरता भी थी जिससे वह अपने श्रोताओं को रुला भी सकता था। वह ऐसे कंसर्ट (संगीत सभा) में भाग लेता था और वहाँ सामूहिक गान में शामिल होता था जो किसी धर्मार्थ प्रयोजन के लिये आयोजित किये जाते थे। लेकिन उसे दिखावा पसन्द न था। यदि उसे यह आभास भी हो जाता था कि किसी व्यक्ति ने उसका प्रदर्शन करने के लिये उसे आमंत्रित किया है तो वह पियानो के पास तक नहीं जाता था। जब वह अठारह वर्ष का था, एक बार परिवार के एक पुराने मित्र ने एक बड़ी पार्टी का आयोजन किया और उस आयोजन में फॉस्टर परिवार के सभी सदस्यों को आमंत्रित किया गया। जब स्टीफेन ने यह सुना कि घर की मालकिन यह कह रही हैं "स्टीफेन से कह देना कि वह अपने साथ बांसुरी भी लेता आये।" इतना सुनते ही वह उस पार्टी में जाने से इन्कार कर गया और उसने कहा : "श्रीमती......से कह देना कि जैसी उनकी इच्छा है मैं अपनी बांसुरी भेज दूंगा।"

उसका भाई मोरिसन शाम के समय कमरे में बैठा करता और स्टीव को अपने आप गाते तथा बजाते हुये सुना करता। वह बताया करता था कि स्टीफेन गाते और बजाते समय चिल्ला उठता था। मोरिसन ने यह भी कहा है कि स्टीफेन के मस्तिष्क में निरंतर मेलोडीज की तरंगें उठा करती थीं। "प्राय: रात को वह उठ बैठता था। बत्ती जलाता और कागज पर किसी मेलोडी (मधुर गीत) की पंक्ति लिख लिया करता था।" वह फिर बिस्तरे पर जाकर सो जाता था।

युवकों का एक क्लब था, उस समय स्टीफेन की आयु उन्नीस वर्ष की थी। फॉस्टर के घर में इस क्लब की प्रति सप्ताह दो बैठकें होती थीं और वहाँ गीतों को हार्मोनी (मधुर ध्वनि) से गाने का अभ्यास किया जाता था। वे अपने को 'एस० टी० के नाइट' कहते थे। (एस० टी० का प्रयोजन स्क्वेयर

टेबुल से हो किन्तु इसके बारे में किसी को ज्ञात नहीं है क्योंकि यह उनका रहस्य था) स्टीव उनके गाने में नेतृत्व करता था और वह अपने कार्य में बहुत दक्ष था। वे सभी नीग्रो गीत गाते थे जो उस समय अधिक लोकप्रिय थे और वे ऐसे ही गीतों को अधिक पसन्द करते थे। अतएव स्टीफेन ने उनके लिये अधिक गीत लिखना प्रारंभ कर दिया।

उसने अपने क्लब में जो पहिला गीत गाने के लिये दिया, उसका शीर्षक था: **लुईजैना बेली**। उन्होंने इस गीत को इतना अधिक पसन्द किया कि स्टीव को अधिक प्रोत्साहन मिल गया और उसने दूसरे सप्ताह **ओल्ड अंकिल नेड** नामक गीत की रचना की। इसी प्रोत्साहन की स्टीव को आवश्यकता थी। पिट्सबर्ग में इन गीतों की ख्याति फैलने में अधिक समय न लगा। लोग इन गीतों को एक दूसरे से ठीक इसी प्रकार सीखने लगे जैसे कि लोक गीत सीख लिये जाते हैं।

जब कभी पिट्सबर्ग में यात्रा करने कवि-मण्डलियाँ आतीं, स्टीफेन और मोरिसन उन खेलों को देखने जाते। कभी-कभी शेक्सपीयर के नाटक खेले जाते और उन नाटकों में कुशल अभिनेता रहते। इस प्रकार महीने बीतते गये और स्टीफेन बीस वर्ष का हो गया। यद्यपि उसके गीत लोगों की जबान पर चढ़ गये थे फिर भी उसने अथवा उसके पिता ने यह कभी नहीं सोचा कि गीत लिखना उसके जीवन का संभावित कार्य भी हो सकता है। उसके पिता ने यह विचार व्यक्त किया कि अब उपयुक्त समय आ गया है जबकि स्टीफेन संगीत से अपना ध्यान हटाकर किसी अन्य उपयोगी कार्य में लगाये।

यह निश्चित किया गया कि उसे सिन सिनाटी चला जाना चाहिये जहाँ उसका भाई डनिंग व्यापार कर रहा था और वहाँ जाकर वह उसका हिसाब-किताब रखे। एक दिन उसका परिवार और मित्र उसे विदा करने आ गये और वह नाव से डनिंग की ओर चल पड़ा। वहाँ स्टीफेन फॉस्टर तीन वर्ष तक रहा, उसने डनिंग के कार्यालय में बड़े क्रम, सफाई और व्यापारिक ढंग से हिसाब-किताब रखा। वह अपने खाली समय में गीत लिख लिया करता था। सौभाग्य से सिनसिनाटी सदैव संगीत का केन्द्र रहा है और उसे वहाँ

अधिक संगीत सुनने का अवसर मिला। जब स्टीफेन वहाँ था तभी कुछ ऐसी बात हुई जिससे उसके मन में पहिली बार यह विचार आया कि वह अपने संगीत से ही अपनी रोज़ी कमा सकता है। फॉस्टर की पिट्सबर्ग में एक संगीत अध्यापक से भेंट हुई थी और अब वह व्यक्ति सिनसिनाटी में संगीत रचनाओं का एक मामूली सा प्रकाशक था। यह वही व्यक्ति था जिसने **जम्प जिम क्रो** प्रकाशित किया था। स्टीफेन ने उसे अपने दो गीत दिये: **ओल्ड अंकिल नेड** और **ओह ! सुजेना**। गीत प्रकाशित कर दिये गये और उनकी इतनी अच्छी बिक्री हुई कि प्रकाशक को दस हजार डालर का लाभ हुआ जिससे उस प्रकाशक ने अपना व्यापार बड़े पैमाने पर जमा लिया। स्टीफेन को अपने गीतों के मूल्य का पता ही न था, इसी लिये उसने इन्हें यों ही दे डाला था और इनके एवज में उसे कुछ प्रकाशित प्रतियां ही मुफ्त मिली थीं।

परन्तु इससे उसकी ख्याति फैल गई। उससे यह अनुरोध होने लगा कि वह विभिन्न मिन्स्ट्रिल ट्रूप (गीत मण्डलियों) के लिये विशेष प्रकार के गीत लिखे। लोग उसे काम देने लगे। जब न्यूयार्क के एक प्रकाशक ने उससे गीत लिखने का निवेदन किया तो स्टीफेन फॉस्टर को यह अनुभव होने लगा कि अब उसकी ख्याति बढ़ने लगी है। अतिथि गायक उसे जानने लगे, अब वह संगीत के क्षेत्रों में परिचित हो गया और थियेटर में उसका स्वागत होने लगा। अब उसे थियेटर में अन्दर जाने के लिये टिकट खरीदने की आवयश्कता नहीं पड़ती थी और वह यों ही थियेटर के अन्दर जा सकता था। ट्रूपों ने उसके गीतों का विज्ञापन देना शुरू कर दिया। चार गीत **फॉस्टर एथ्योपियन मेलोडीज** के नाम से प्रकाशित हुये। उन गीतों के नाम थे : **नेली वाज़ ए लेडी, माई ब्रुडर गम, डोलसी जॉन्स** और **नेली ब्लाई**। जब स्टीफेन की आयु तेईस वर्ष की हो गई तब केलीफोर्निया में उसे अपने गीतों से प्रचुर धन की प्राप्ति होने लगी और फोर्टीनाइनर्स ने **ओह ! सुजेना** गीत को 'थीम सांग' के रूप में स्वीकार कर लिया। वह गीत महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गाया जाने लगा। योरुप के अतिथि पियानो-वादक हर्ज़ और थॉलबर्ग ने **ओह ! सुजन्ना** गीत को लेकर सामूहिक संगीत के विविध रूपों में सुनाया।

स्टीफेन फॉस्टर को अन्ततः सफलता प्राप्त हुई। उसे ऐसा लगा कि उसे अनायास ही सफलता मिली है। प्रत्येक व्यक्ति उसके गीतों को गाता था, गुनगुनाता था अथवा सीटी की आवाज से दुहराता था। अब उसके लिये आवश्यक नहीं था कि वह व्यापार के हिसाब-किताब रखने के काम में लगा रहे जबकि उसका मन संगीत में ही रमा हुआ था। तीन वर्ष बाद वह घर लौट आया। वहाँ उसने अपने घर के ऊपर पीछे वाले कमरे में एक स्टूडियो बना लिया। उसने वहाँ दत्तचित्त होकर अध्ययन किया और न्यूयार्क के प्रकाशक को संगीत देने के धन्धे में जुट गया। उसके लिये एक ऐसा प्रबन्ध हो गया कि उसे एक प्रति बिकने पर तीन सेण्ट मिलने लगे। वह काम करने में इतना गंभीर हो गया कि केवल अपनी माँ के सिवाय अपने स्टूडियो में किसी को नहीं आने देता था।

इस समय तक उसकी आयु के बराबर कई लड़कियों और लड़कों की शादी हो चुकी थी। जब वह सिन-सिनाटी में रह रहा था तब वह सूज़न पेण्टलैण्ड के विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिये गया। इसी लड़की के लिये उसने अपना पहिला गीत लिखा था जब वह दस वर्ष की थी। उसका पति एस० टी० के नाइटों में से एक था।

अंग्रेजी उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स अमरीकी यात्रा करते समय पिट्सबर्ग भी पहुँचे। वह वहाँ बीमार पड़ गये और उन्हें देखने के लिये डाक्टर मेक्डुगल आये। डॉक्टर मेक्डुगल जेन मेक्डुगल के पिता थे और जेन मेक्डुगल स्टीफेन के मित्रों में से एक मित्र था। डॉक्टर मेक्डुगल अपने रोगियों को देखने के लिये जब जाते तब उनका पुराना नीग्रो नौकर 'जो' गाड़ी चलाता था। जिस समय वृद्ध जो को डाक्टर की गाड़ी चलाने से छुट्टी मिलती थी तो उसे घर में बटलर का काम भी करना पड़ता था। उसने कई बार 'मिस जेनी' के प्रशंसकों का दरवाजे पर ही स्वागत किया। वह लड़खड़ा कर चलता। उसके चेहरे पर मन्द मुस्कराहट होती और वह मिस जेनी के पास पहुँचता तथा उसके मिलने वालों के नाम बताता और उनके फूलों के गुच्छे उसे दे देता था।

जेन मेक्डुगल अत्यन्त सुन्दर लड़की थी। उसके सुनहरे बाल थे और

उसकी आखें बेमिसाल थीं। स्टीफेन उससे प्रायः मिला करता था और एक ऐसा समय भी आया कि वह उससे प्रेम करने लगा। उसने बाद में बताया कि जेन के सुन्दर बालों के कारण ही वह उससे प्रेम करने लगा था। एक शाम को जो स्टीव को घर के अन्दर ले जा रहा था कि स्टीफेन ने उससे कहा, "किसी दिन मैं तुम पर भी गीत लिखूंगा।"

और उसने ऐसा ही किया परन्तु बहुत वर्ष बाद। उसे **ओल्ड ब्लेक जो** लिखने की प्रेरणा मिली लेकिन उस समय वह बूढ़ा हव्शी जो इस संसार से चल बसा था।

उसके लिये वह शाम कितनी व्यग्र होगी जब स्टीफेन ने जेन की परीक्षा लेनी चाही। स्टीफेन केवल पहुँचा ही था कि वृद्ध जो ने किसी अन्य अतिथि रिचर्ड कोवन (जो एस० टी० का एक नाइट भी था) के आने की सूचना दी। जेन को तारीख का धोखा लग गया होगा कि उसने दोनों को एक ही शाम को बुलाया। परन्तु स्टीफेन वहाँ पहिले आ चुका था और उसका चले जाने का भी विचार न था। जब रिचर्ड अन्दर आया तो स्टीफेन ने अपनी पीठ फेर ली और एक पुस्तक उठा ली तथा प्रकाश के पास ऐसा बैठ गया कि सारी शाम उसका पढ़ने का इरादा है। वह शायद बैठा ही रहा और पुस्तक को ध्यान से देखता रहा तथा उसने एक शब्द भी नहीं पढ़ा। उसे चिन्तन के लिये बहुत कुछ मिल गया था। रिचर्ड कावेन धनी, सुन्दर और विशेष आकर्षक व्यक्ति था। वह पहिले ही से वकालत कर रहा था तथा विवाह करने की स्थिति में भी था। स्टीफेन देखने में अच्छा था किन्तु उसे सुन्दर नहीं कहा जा सकता और उसका कद भी कम था, तथा निश्चय ही वह धनी नहीं था। निस्संदेह वह अधिक दुःखी होकर यही सोच रहा था कि जेन के लिये उसका प्रतिद्वन्दी उसकी अपेक्षा अधिक सुन्दर है। वह स्वभाव से सदैव नम्र और सज्जन था परन्तु उस रात में वह कोई भी बेवकूफी न सह सका। वह शाम उसके लिये अधिक थकान देने वाली थी और साढ़े दस बज गये जब बाहर से किसी के आने की आशा न थी। रिचर्ड जाने के लिये उठा और शानदार तरीके से सेना की टोपी पहिनी (क्योंकि उन दिनों पुरुष

टोप पहिनने के आदी थे जैसे कि वे कोट पहिनते थे) और स्टीफेन की पीठ की ओर झुका तथा यह कहा : "श्रीमन्, नमस्ते ।"

स्टीफेन कुछ भी न बोला, वह बैठा रहा । जेन ने रिचर्ड को द्वार तक पहुँचाया और फिर बरामदे तक आई क्योंकि उसे यह पता था कि संकट समीप है । उसने बाद में यह स्वीकार किया कि उसे वास्तव में ही यह नहीं ज्ञात था कि उसकी सहानुभूति रिचर्ड के प्रति थी अथवा स्टीफेन के प्रति । इस बारे में उसे सोचने के लिये बिल्कुल भी समय न मिला । जैसे ही वह कमरे में घुसी, स्टीफेन मेज़ के किनारे खड़ा था । उसका चेहरा उदास और आक्रोशपूर्ण था ।

उसने कहा "मिस जेन, आज मैं तुमसे स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ कि तुम हाँ करोगी या नहीं ?"

ऐसी शीघ्रता के प्रस्तावों में विजय की संभावना रहती है । परन्तु देखने में यह ठीक ही प्रतीत होता है कि स्टीफेन को इस समस्या के सुलझाने का यही रास्ता था क्योंकि स्टीफेन को ही जेन से विवाह करना था । उस शाम की "नाराजगी" बहुत ही कम समय रही और विवाह के बाद स्टीव और डिक कोवन अच्छे मित्र बने रहे ।

स्टीफेन चौबीस वर्ष की आयु में प्रसिद्ध हो गया जैसा कि उसके चाचा स्ट्रूथर्स ने भविष्यवाणी की थी। वह और अधिक गीत लिखने लगा। वह सर्वप्रथम गायकों के लिये गीत लिखा करता था और उनके शब्द नीग्रो—बोली के होते थे। गोरों की भाषा के शब्दों में उसका पहिला गीत था : **ओल्ड फॉक्स एट होम** । उसने **जिम क्रो** टाइप की तरह निरर्थक शब्दों के साथ मज़ाकिया गीत लिखे यथा **डी केम्प टाउन रेसेज** और **ओह ! लेमुअल,** उस समय पार्लर सांग्स (वार्तालाप कक्ष में गाये जाने वाले भावनापूर्ण गीत) अधिक लोकप्रिय हो गये तथा **ओल्ड डॉग ट्रे, हार्ड टाइम्स कम अगेन नो मोर,** उसके प्रेम गीत यथा **जेनट्ल एनी, लौरा ली** और **कम हियर माई लव लाईज ड्रीमिंग** । जेन से उसे कई गीतों की प्रेरणा मिली : **जेनी विथ द लाइट ब्राउन हेयर,** और **जेनी'ज, कमिंग ओवर द ग्रीन** । उसने कुछ हिम (आराधना

गीत) भी लिखे। उसके १८८ गीतों में से एक गीत अनेक विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुका है और समस्त संसार में सुना गया है। उस गीत का नाम है—**ओल्ड फोक्स एट होम**।

उसने वे डाउन अपॉन द पेडी रिवर—कविता लिखनी प्रारंभ की लेकिन वह इस नदी के नाम से संतुष्ट नहीं था। एक दिन वह अपने भाई मोरिसन के दफ्तर में गया और उनसे पूछा: "दो पदों का नाम बताइये जिसे दक्षिणी नदी के लिये प्रयोग किया जा सके। मैं उस नाम को अपने **"ओल्ड फॉक्स एट होम"** नामक गीत में प्रयोग करना चाहता हूँ।"

मोरीसन ने उससे पूछा कि "याजू" नाम कैसा रहेगा। लेकिन स्टीफेन ने कहा: "वह शब्द पहिले ही प्रयोग में आ चुका है।"

मोरिसन ने फिर "पेडी" शब्द बताया। संगीतकार कह उठा: "जी, मैं इसको भी प्रयोग न करूँगा।"

तब मोरिसन ने अपनी डेस्क के ऊपर से एक एटलस उठाई और उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका का नक्शा खोला। अन्त में मोरिसन की अंगुली फ्लोरिडा में एक छोटी नदी के पास रुक गई जिसको 'स्वानी' कहते थे।

"यही वह नाम है।" स्टीफेन प्रसन्नता के साथ चिल्लाया। और कहा—"वास्तव में यही वह नाम है।" तथा बिना कुछ आगे कहे वह अपने भाई के दफ्तर से बाहर निकल आया।

वह फ्लोरीडा में कभी नहीं गया था और उसने स्वानी नहीं देखी थी, फॉस्टर ने सुदूर दक्षिण में कुछ नदियों की यात्रा थी। हल्के सुनहरे बालों वाली जेनी और वह तथा उनके कुछ पुराने विवाहित मित्र और एस० टी० के कुछ नाइट मिलकर न्यू ओरलियन्स तक नदी के बहाव के साथ यात्रा करने गये थे। फॉस्टर उस सुन्दर केन्ट की "मेन्शन" को भी देखने गया जो क्रान्ति के समय बनी थी और अब उसके चचेरे भाई की थी। यह कहा जाता है कि इसी सुन्दर घर से जिसमें गुलामों की अधिक देखभाल की जाती थी, प्रेरणा पाकर उसने **माई ओल्ड केण्टकी होम** नामक कविता की रचना की

और उसने दक्षिणी भाग का जीवन देखकर **मसाज इन डी कोल्ड, कोल्ड ग्राउंड** जैसे गीत लिखे।

(इस पुस्तक का लेखक १९३६ में ग्रीष्मऋतु की एक शाम के समय बेल्जियम के ब्रूगीज में एक केफे के सामने भोजन कर रहा था। इस पुराने शहर के मध्ययुगीन स्क्वेयर के पार बहुत ऊँची टावर थी। सूर्य अस्त हुआ और अंधकार बढ़ने लगा, टावर से उन केरीलान (एक प्रकार का वाद्य-यंत्र) के स्वर सुनाई देने लगे जिन्हें एक विख्यात केरीलान बजाने वाला प्रस्तुत कर रहा था। समुद्र पार के अतिथियों के सम्मान में कार्यक्रम का शेष आधा भाग अमरीकी धुनों पर आधारित था। कार्यक्रम का एक अंश गलत छप गया था: "मसा ज इन डी गोल्ड, गोल्ड ग्राउण्ड")।

फॉस्टर को अपने गीत पसन्द थे किन्तु उसे सदैव यह अभाव अखरता रहा कि उसने संगीत की ट्रेनिंग नहीं पाई है और उसमें संगीत रचना के तकनीकी ज्ञान की कमी है। शायद एक कारण यह भी हो कि उसने कभी अपने गीतों के लिये अधिक धन नहीं माँगा। शायद इसलिये उसने धन की कभी चिन्ता नहीं की। इस तथ्य ने जेन के जीवन को कर्मठ बना दिया और लोग उसके अति समीप आ गये।

फॉस्टर के जीवन काल में विभिन्न गायक मण्डलियों ने आपस में नये गीत चलाने के लिये प्रतियोगिता की। प्रसिद्ध कम्पनियों में ई० पी० क्रिस्टी की एक कम्पनी थी और वह नीग्रो के लोकप्रिय मेलोडी कंसर्ट को प्रस्तुत करती थी। फॉस्टर ने पन्द्रह डालर की अल्प राशि में ही क्रिस्टी को अपने कुछ गीतों को पहिली बार गाने की अनुमति दे दी। क्रिस्टी के सहयोगी गायक सर्वप्रथम थे जिन्होंने फॉस्टर के **ओह! ब्वायज, केरी मी लोंग** और **ओल्ड फाक्स एट होम** गीत प्रस्तुत किये। फॉस्टर ने क्रिस्टी के हाथ यह अधिकार भी बेच दिया कि क्रिस्टी के नाम से ही दूसरा गीत प्रकाशित हो। स्टीफेन फॉस्टर ने इस बात की चिन्ता नहीं की और अधिक समय तक यह विचार रहा कि क्रिस्टी ने ही यह गीत लिखा होगा। फॉस्टर ने इस बात की इसलिये अनुमति दी क्योंकि दूसरे प्रकार के संगीत की रचना करने की

सोच रहा था और यह महसूस करता था कि उसे केवल एथूपिया के गीतों का एकमात्र रचियता ही न समझ लिया जाय। बाद में उसने यह स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की कि **ओल्ड फॉक्स एट होम** गीत उसका है और उस गीत के रचियता के रूप में उसका नाम दिया जाय।

उसके परिवार के एक मित्र ने उसे लम्बे बालों वाला एक सुन्दर शिकारी कुत्ता दिया जो उसका सदैव साथी बना रहा। फॉस्टर के परिवार के सदस्य पार्क के किनारे रहते थे और स्टीफेन को यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि उसका कुत्ता जन-साधारण के बच्चों में खेल रहा है। यह वही कुत्ता है जिसकी विश्वासपूर्ण मित्रता को उसने **ओल्ड डाग ट्रे** नामक गीत में उल्लेख किया है। कुछ समय बाद उसके पास एक और कुत्ता आ गया जिसका घर नही था और उसे गली में भटकते हुये पकड़ लिया था। उसने उसका नाम 'केलोमिटी (विपदा)' रख लिया था क्योंकि वह दुःखभरी आवाज में भूंकता था।

प्रारंभ में स्टीफेन और जेन फॉस्टर स्टीफेन के परिवार के साथ रहे। कुछ समय बाद उन्हें पुत्री लाभ हुआ और तब वे न्यूयार्क चले गये। वहाँ फॉस्टर को आर्केस्ट्रा और कोरस (समवेत स्वर में गाये जाने वाले गीत) सुनने का अवसर मिला लेकिन यह ऐसा अवसर था जो उसे अपने जीवन में बहुत देर से मिल सका। उसने कुछ वर्षों तक रहने के लिये पर्याप्त धन कमाया किन्तु उसे इस बात का विचार भी नहीं था कि वह भविष्य के लिये किस प्रकार धन बचाकर रखे। वह केवल मात्र भावनाओं से प्रेरित होकर रहा और उसके जीवन में कोई योजना नही थी। इसके कारण उसे आन्तरिक रूप से असंतोष होने लगा तथा उसका जीवन अव्यवस्थित और दुःखी बन गया जिसका अन्त भी दुःखद रहा।

उसे सदैव ही घर की याद सताती रही। न्यूयार्क में एक वर्ष रहने के बाद स्टीफेन फॉस्टर को यकायक घर की याद आई और वह एक दिन अपनी पत्नी से कह उठा कि सामान बाँध लो और घर चलें। उन्होंने चौबीस घण्टे में ही अपना फर्नीचर बेच दिया और पश्चिमी पेन्सिलवेनिया को चल पड़े। वे वहाँ अप्रत्याशित रूप से रात को जा पहुँचे। उन्होंने बुलाने की घण्टी

बजाई, स्टीफेन की माँ जग गई और वे नीचे आईं। उसकी माँ को बरामदे में ही उसकी पदचाप मालूम हो गई थी और जब वे हाल में से जा रही थीं तो उन्होंने पुकार कर कहा : "क्या मेरा प्यारा बेटा घर लौट आया है ?"

स्टीफेन उनकी आवाज सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला कि देखा कि वह बरामदे की बेंच पर बैठा बच्चे की तरह रो रहा है। फॉस्टर की माँ जब तक जीवित रहीं, वह अपने व्यवसाय के लिये न्यूयार्क अथवा कदाकदा मनोरंजक यात्रा के अतिरिक्त अपने घर से कहीं नहीं गया।

श्रीमती स्टीफेन इस बात से शायद ही कुछ आराम पातीं। एक से अधिक परिवार साथ रहने में सुविधा नहीं रहती और उन्हें यह बात सोचकर कष्ट हुआ होगा कि वह स्वयं और उनकी छोटी बच्ची मेरियोन फॉस्टर के जीवन और उसके घर में पूर्णता लाने में असमर्थ हैं। ऐसे भी समय आ जाते जब उन्हें अलग रहना पड़ता। जब स्टीफेन अपने छोटे से परिवार के निर्वाह के लिये पर्याप्त धन न कमा पाता तो श्रीमती स्टीफेन आजीविका कमाने के लिये काम करती थी। उन दिनों में यह बात असाधारण लगती थी कि एक विवाहित स्त्री घर के बाहर काम करे। आज एक महिला की इस बात की प्रशंसा की जाती है कि वह घर को संभाल कर बाहर भी काम कर लेती है लेकिन उन दिनों में महिला उसी समय काम करती थी जबकि उसे जीवन निर्वाह के लिये काम करना आवश्यक हो जाता था। इसके कारण भी स्टीफेन को अपने प्रति असंतोष हो जाता था। जब फॉस्टर के माता-पिता का देहान्त हो गया, भाई डनिंग भी गुजर गया और कई भाई बाहर चले गये तो फॉस्टर खोया-खोया सा लगने लगा। उसे केवल उसी घर में अपनापन महसूस होता था जिसमें उसकी माँ रहती थी। जब उसका यह सहारा भी टूट गया तो वह इधर-उधर भटकने लगा।

वह न्यूयार्क लौट आया। कुछ ही समय में उसकी पीने की आदत पड़ गई और उसने बहुत कोशिश की कि शराब पीना छोड़ दे लेकिन उसकी शराब के प्रति तृष्णा कम न हो सकी। गृह-युद्ध के समय फॉस्टर का परिवार

न्यूयार्क में ही रह रहा था। छोटी बच्ची मेरियोन आठ वर्ष की थी। किसी ने फॉस्टर को गली में देखा और उसे देख कर यह वर्णन किया है :

"उसका कद छोटा था और वह अधिक स्वच्छ नीला दो शाखी पूंछ का कोट और ऊँचा सिल्क का हैट पहिने हुये था। लेकिन कई वर्ष पहिले ही उसने साफ सुथरे कपड़े पहिनना बन्द कर दिया था। एक ऐसा समय आया कि उसके गीत सरलता से न प्रकाशित हो सके और जैसे-जैसे समय बीतता गया कि उसकी पत्नी अपने लिये काम खोजने पिट्सबर्ग में वापिस आ गई। उसका पति न्यूयार्क में अकेला रह गया। उसे कंपकंपी देकर बुखार आने लगा और वह वास्तव में बीमार ही हो गया।"

लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में यकायक उसने फिर कई गीत लिखना शुरू किया। इसी समय उसने **ओल्ड ब्लेक जो** गीत लिखा। उनमें से कुछ गीत इस प्रकार है : **वर्जीनिया बेली, द मेरी, मेरी मन्थ ऑफ मे, अवर ब्राइट समर डेज आर गोन।** उसका अन्तिम गीत **बियूटीफुल ड्रीमर** था। जीवन के अन्त में उसने अपने गीत वहुत कम राशि में बेच दिये। उसे ऐसा महसूस होने लगा था कि उसकी अधिक आवश्यकता नहीं है। वह बहुत कम खाता था और भोजन में रुचि नहीं रखता था। धीरे-धीरे कपड़ों से भी रुचि जाती रही। उसे अकेलापन महसूस होने लगा था और वह अकेला दिखता था। वह बॉवरी में एक पुराने जीर्ण-शीर्ण किराने के स्टोर के पीछे अपना अधिक समय विताता था। वह स्थान हेस्टर और चेस्टर गलियों के कोने पर था।

कूपर नामक एक नवयुवक ने इन दिनों में फॉस्टर के गीतों के बारे में कुछ लिखा और स्टीफेन ने उसको "गीत के कारखाने का वाम अंग" कहा। कूपर ने कहा कि फॉस्टर कभी भी नशे में न रहा यद्यपि वह लगातार पिया करता था। वह अपने भोजन की चिन्ता नहीं करता था अतएव वह एक दूकान से सेव या शलजम ले लेता और चाकू से छीलकर खा लेता। उसने कहा है कि फोस्टर सरल भाव से लिख लेता था और पियानो की सहायता नहीं लेता था। यदि उसके पास संगीत लिखने का कागज भी न रहता तो वह उसी कागज पर लिखने लगता जो उसे मिल जाता, यहाँ तक कि वह

सामान बांधने के बादामी कागज का भी प्रयोग कर लेता था और वह उसी कागज पर लकीरें खींच कर गीत लिखने लगता था क्योंकि उसके मस्तिष्क में बराबर गीत गूंजा करते थे।

सर्दियों का मौसम था, सुबह का समय था, उसके मित्र कूपर को यह समाचार मिला कि फॉस्टर किसी दुर्घटना से ग्रस्त हो गया है। उसने शीघ्र ही कपड़े पहिने और होटल की ओर तेजी से चलने लगा जहाँ स्टीफेन फॉस्टर रहा करता था। उसने अपने मित्र को देखा वह फर्श पर गिरा पड़ा था, उसके शरीर पर घाव के निशान थे और रक्त बह रहा था। उसने डाक्टर को बुलाया। फॉस्टर को अस्पताल भेजा गया और वहाँ वह सदा के लिये चल बसा। उसकी एक जेब में एक छोटा बटुआ मिला जिसमें अड़तीस सेण्ट थे और कागज का एक छोटा टुकड़ा था जिस पर पेन्सिल से लिखा था :

प्रिय मित्रो और उदार सज्जनो।

कुछ वर्षों बाद महान गायिका विल्सन अमरीका आई। आते ही उन्होंने **ओल्ड फोक्स एट होम** गीत सुना। वह उस गीत की करुण, मधुरता और मर्मस्पर्शी शब्दों को सुनकर इतनी भाव-विभोर हो उठीं कि उन्होंने शीघ्र ही उस गीत को सीखना शुरू कर दिया। उसके बाद उन्होंने अपने कंसर्ट में लगभग सदैव ही उसी गीत को गाया।

फॉस्टर जीवित था तभी वह गीत कई देशों में गाया जाने लगा था। इस गीत की रचना के कुछ वर्षों बाद एक सज्जन स्कॉटलैण्ड के सीमान्त क्षेत्रों में से होकर पैदल यात्रा कर रहे थे। वहाँ उन्होंने गड़रिया के लड़कों और लड़कियों को फॉस्टर के गीत गाते सुना और इन गीतों के अलावा वे बर्न्स तथा रेमजे के बैलेड्स भी गा रहे थे। उन्होंने एक सभा में बताया कि बेग पाइप्स (मशक बाजा बजाने वाले **स्काट्स ह्वा हे वी, वेलेस ब्लेड** और **लार्ड एथोल्स कोर्टशिप** जैसे महान बैलेड बजाना समाप्त ही करते कि उसके बाद कोई अमरीकी (फॉस्टर) गीत प्रारंभ किया जाता और सभी उसमें साथ देने लगते। ये गीत फॉस्टर की अमरीकी मेलोडी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हें चीन, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया जैसे सुदूर देशों में भी गाया जाता है।

स्काटलैण्ड के एक निवासी ने एक रोचक कहानी कही है जिससे फॉस्टर के गीतों की गुणवत्ता प्रकाश में आती है। जब वह एक लड़का था और ग्लासगो में एक विद्यार्थी था तो वह अपनी टीन की सीटी से फॉस्टर के गीतों की धुनों का अभ्यास करता था लेकिन उसे यह भी पता न था कि उन गीतों का रचियता फॉस्टर होगा। वह कहता था कि स्कूल की दावत उस समय तक अधूरी ही समझी जाती थी जब तक कि फॉस्टर के किन्हीं गीतों को गा न लिया जाय लेकिन यह सच है कि जिस प्रकार लोक-गीतों के बारे में उनके रचियता का पता नहीं लगता, उसी प्रकार यह बात किसी को भी नहीं मालूम थी कि किसी अमरीकी फॉस्टर ने ही उन गीतों की रचना की है। उसने बताया है कि किसी भी अवसर पर वातावरण बिल्कुल ही बदल जाता था जब कभी ओरकेस्ट्रा पर फॉस्टर के "पुराने सरस गीत" बजाये जाते थे।

फॉस्टर संयुक्त राज्य अमरीका की धरती का सच्चा लाल था। अन्य किसी देश में ऐसे बालक का जन्म नहीं हुआ। उसने अपने देश और अपने देशवासियों के ही गीत गाये। उसके गीतों में सरलता, निश्च्छलता और मानवता वैसी ही थी जैसी कि लोकगीतों में होती है। इन गीतों में कठिनता नाम की कोई भी चीज़ नहीं है। उन मेलोडी में उच्च और मध्यम सभी स्वर जीवन को स्फूर्ति और शक्ति प्रदान करते हैं। उन गीतों में वफादारी और प्रेम की ऐसी भावनायें भरी हैं कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें समझ सकता है। उनका संदेश सार्वभौमिक है। उनकी भाषा जनसाधारण के हृदय की भाषा है।

स्टीफेन फॉस्टर को उसकी मृत्यु के ७६ वर्ष बाद १९४० में न्यूयार्क यूनिवर्सिटी हाल में प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में नामांकित किया गया। वह प्रथम संगीतकार है और अब तक एक ही संगीतकार है जिसको वहाँ श्रद्धापूर्ण स्थान दिया गया है।

स्टीफेन कोलिन्स फॉस्टर पिट्सबर्ग, पेनसिल्वेनिया में ४ जुलाई, १८२६ को पैदा हुआ। उनका १३ जनवरी, १८६४ को न्यूयार्क नगर में स्वर्गवास हुआ; उन्हें पिट्सबर्ग में दफनाया गया।

जान फिलिप सूज़ा

'द मार्च किंग'

जान फिलिप का लालन-पालन वाशिंगटन नगर में हुआ। वाशिंगटन देश की राजधानी था। वहाँ उसने बहुत बैण्ड संगीत सुना। वह ऐसा समय था जब बैण्ड सुनकर कम्पन हो उठता था और उसके सुनने से असाधारण रूप से स्फूर्ति हो उठती थी क्योंकि उस समय गृह-युद्ध चल रहा था। बैण्ड संगीत सर्वथा उसी समय जोशीला होता है जब देश-भावना जागृत की जाय और युद्ध के समय ऐसी भावनाओं को बहुत उभारा जाता है। युवक जॉन फिलिप की नस-नस में अन्य लड़कों के समान बैण्ड का संगीत समा गया था। चाहे वह अच्छा या बुरा संगीत हो किन्तु उसे वह संगीत बहुत अच्छा लगता था।

उसका पिता एनटोनियो मेरीन बैण्ड में ट्राम-बोन बजाता था और जोन (अथवा फिलिप, जैसा कि उसका पिता उसे पुकारा करता था) को अपने पिता जी बहुत अच्छे लगते थे। और वह उनका आदर करता था। इस बात से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि उस बालक को कौन-कौन अच्छा लगता था। हम सभी यह सोचते हैं कि हमारे पिता जो कुछ भी करते हैं, वह ठीक है। शायद ही सारे संसार में कोई ऐसा लड़का या लड़की मिले जो बैण्ड के प्रस्थान के समय उसकी धुन से भाव-विभोर न हो उठता हो।

एनटोनिया सूज़ा पुर्तगाल का निवासी था लेकिन जब उसके परिवार को पुर्तगाल में क्रान्ति होने के कारण भागना पड़ा तो वे स्पेन चले गये और एन्टो-नियो सेविले में उत्पन्न हुआ। बाद में वह इंग्लैण्ड चला गया और फिर अमरीका जा पहुँचा। बुकलियन में उसकी बबेरिया की एक लड़की से भेंट हुई जो संयुक्त राज्य अमरीका देखने आई थी। वह जीवन-पर्यन्त अमरीका में

रह गई क्योंकि उसने टानी सूज़ा से विवाह कर लिया। वर्ष बीतते गये और उनके दस बच्चे हुये। उन सभी बच्चों में जोन फिलिप सबसे बड़ा था। यह स्वाभाविक था कि सबसे पहिले उसी को अपने जीवन-निर्वाह के लिये कमाना शुरू करना था क्योंकि उसके अन्य सभी भाई-बहिन छोटे थे और उनका लालन-पालन होना था। वह बचपन से संगीतज्ञ बनना चाहता था।

उसके अपने संगीत के पाठों का प्रारंभ अच्छा न हुआ। बात कुछ ऐसी है: उसके पिता का एक पुराना मित्र था, वह स्पेन निवासी था और प्रायः सूज़ा के घर मिलने के लिये आया करता था। एक दिन शाम को वह मिलने आया और वह उसके पिता से जिस कमरे में बात कर रहा था, उसी कमरे में फिलिप ने गेंद लुढ़काना प्रारंभ कर दिया और वहाँ से हटकर न गया। निदान दोनों की बातचीत में बाधा पड़ी। वह व्यक्ति रिटायर्ड ओर्केस्ट्रा-वादक था। उसने कहा कि बालक के प्रथम अनुष्ठान में कदाचित यह उचित होगा कि उसे संगीत के कुछ पाठ सिखा दिये जाये। वह वाद्य-संगीत जानता था लेकिन गाने में उसकी कर्कश आवाज थी। इन्हीं महानुभाव ने फिलिप को संगीत का प्रथम पाठ सिखाया और फिलिप को वृद्ध महाशय की टोन (आवाज) में उतार-चढ़ाव न लगा। उनके जो स्वर निकलते, वे सभी स्वर एक-से लगते। फिलिप ने कहा कि उनके स्वरों में केवल यह अन्तर प्रकट होता था कि "जब वह मध्यम स्वर में गाते तो चीं-चीं सी करते और जब आवेश में गा उठते तो चिल्लाने लगते।" वह महाशय सर्वप्रथम फिलिप को अपने स्वरों के अनुकूल गवाना चाहते थे।

"स्वर-साधना सिखाने वाले गुरु ने चीं-चीं जैसे स्वर में कहा—"डू" और फिलिप ने भी उनकी नकल करते हुये मध्यम स्वर में कहा—"डू"।

दूसरी बार गुरू ने चिल्लाकर कहा, "नहीं, नहीं—फिर गाओ, "डू"।

फिलिप ने भी चिल्लाकर "डू" कह दिया और यह प्रयत्न किया कि वह अपने गुरू की पूरी नकल करे।

इसमें संदेह नही कि इन पाठों से लड़के का मन उखड़ गया। वह इस अभ्यास की अपेक्षा बेस-बाल खेलते रहना ही कहीं अच्छा काम समझता था।

इन्हीं महाशय के पुत्र ने फिलिप के पड़ोस में संगीत-विद्यालय खोला। जब वह लड़का सात वर्ष का हुआ, उसका वहाँ अन्य साठ विद्यार्थियों के साथ दाखिला करा दिया गया और उसने वहाँ वायलिन बजाना सीखना आरंभ किया। उन चिल्लाकर गाने वाले वृद्ध महाशय के पुत्र के गुरू होने से भी उसे विशेष कठिनाई से अपना समय बिताना पड़ा।

फिलिप ने प्रोफेसर एस्यूटा (वायलिन अध्यापक) को मिस्टर सूज़ा से कहते हुये यह सुना कि यदि फिलिप ने कुछ सीखा भी नहीं तो कम-से-कम वह इधर-उधर गलियों में आवारा घूमने से बच जायेगा। फिलिप यह सुनकर अप्रसन्न हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने विद्यार्थी जीवन के प्रथम तीन वर्षों में एस्यूटा की कक्षा में उसके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। अध्यापक भी यह न बता सका कि लड़का कुछ सीख रहा है या नहीं। लेकिन इन सभी दिनों में फिलिप संगीत को अधिक मनोयोग से सीखता ही गया कि वह संगीत उसके जीवन के साथ आत्मसात कर गया क्योंकि उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह संगीत सीखे। और अन्त में जब तीन वर्ष हो गये तो उसकी पहिली परीक्षा हुई।

स्कूल पाँच पदक प्रदान करता था। प्रत्येक को यह जानकर कितना आश्चर्य हुआ होगा कि फिलिप ने केवल एक ही पदक नहीं अपितु सभी पाँचों पदक जीत लिये। मिस्टर एस्यूटा बड़े असमंजस में पड़ गये। उन्होंने मिस्टर सूज़ा से कहा कि उनके लिये यह संभव नहीं कि उनके लड़के को ही सारे पदक दिये जायें क्योंकि यह आशंका है कि अन्य छात्र बुरा मानेंगे। मिस्टर सूज़ा एक समझदार आदमी थे। उन्हें मिस्टर एस्यूटा की बात सुनकर हंसी आ गई। उन्होंने कहा कि मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरे पुत्र ने सारे पदक जीत लिये हैं लेकिन यदि ये पदक उसे न भी दिये जायें तो इससे उसे कोई अभाव प्रतीत न होगा और उन्होंने निवेदन किया कि यदि इन पदकों का अधिक अच्छा उपयोग हो सके तो ये पदक किसी अन्य छात्र को दे दिये जायें। एस्यूटा ने तीन पदक फिलिप को दिये और दो पदक अन्य छात्रों को। जान फिलिप सूज़ा को जीवन पर कई महान उपाधियाँ दी गई और उसे राजाओं

और बाहर निकल आई। कमीज के कॉलर में पिन लगाकर पीठ से जोड़ दिया गया था, वह कॉलर खुल गया और कमीज उसके सिर के पास से सरकने लगी। कमीज उसकी गर्दन से खिसक गई। दर्शक हँस पड़े और उसके शरीर से कमीज गिरने लगी जिसके कारण वह सोलो में अपने वाद्य-यंत्र के नोट्स भूल गया। वह मंच से भाग उठा और उसने अपने को छिपाने के लिये एक अंधेरा कोना ढूंढ़ लिया। वह मन से इतना अधिक दुखी हुआ कि उसकी इच्छा हुई कि वह मर क्यों न जाय।

कंसर्ट (संगीत समारोह) के बाद अध्यापक और शिष्यों को आइस-क्रीम और केक के जलपान के लिये बुलाया गया। फिलिप ने इस बात की कोशिश की कि उसे कोई भी न देख सके। फिर भी मिस्टर एस्यूटा ने उसे ढूंढ़ निकाला और उससे कहा :

"तुमने कितना गड़बड़ किया। तुम्हें शर्मिन्दा होना चाहिये। तुम जलपान पाने के भी योग्य नहीं हो। तुम्हें दोपहर के बाद गेंद नही खेलना था बल्कि तुम्हें संध्या समय के अधिक महत्वपूर्ण कार्य के लिये तैयार होना था।"

फिलिप के लिये आइसक्रीम न रही। यह ऐसा पाठ था जिसे वह कभी नहीं भूल सका और उसने कहा कि उसके बाद या तो काम करता था या खेलता था और उसने एक समय में दोनों काम फिर कभी नही किये।

उसी अध्यापक के साथ एक अन्य घटना है जिससे उस बालक ने एक और पाठ सीखा। उसने अन्य व्यक्तियो के साथ सहानुभूतिपूर्ण और विवेकशील होने की बात सीखी।

निस्संदेह आप जानते ही हैं कि एक अध्यापक के लिये सदैव शान्त और प्रसन्नचित्त होना कठिन कार्य है। जैसा बच्चे करते हैं, वैसा अध्यापक के लिये करना संभव नहीं है। सिर में दर्द होने पर या किसी पार्टी में जाने की इच्छा होने पर अध्यापन का काम रोक नही सकता। एक बार मिस्टर एस्यूटा फोड़ों से पीड़ित थे, परन्तु उनको उस दशा में भी पढ़ाना पड़ा यद्यपि उन्हें अत्यन्त कष्ट हो रहा था। दर्द और बेचैनी के अतिरिक्त फोड़ों के होने से व्यक्ति का मिजाज भी ठीक नही रहता। फिलिप अपना पाठ सीखते

य अपने अध्यापक के दुःखी मन को धैर्य बधाने के लिये कुछ न कर सका के अतिरिक्त वह स्वयं बहुत दुःखी हुआ क्योंकि उसे यह महसूस हुआ कि। अपने अध्यापक को प्रसन्न करने के लिये उस दिन कुछ भी न कर सका। मिस्टर एस्यूटा पढ़ाते-पढ़ाते बीच में रुक गये और फिलिप को पियानो पर दीर्घ स्वर निकालने के लिये कहा तो फिलिप ने उत्तर दिया कि वह उस य तक स्वर निकालता रहेगा जब तक कि उसके हाथ काम देगे। इससे यापक को क्रोध आ गया और उन्हें यह महसूस हुआ कि उनकी बात का रोध किया गया है। फिलिप ने फिर प्रयत्न नहीं किया अपितु अपने अध्यापक बहस करने लगा कि उसकी बाँह पहिले ही दीवाल में अड़ने की वजह से नहीं पा रही है। यह सुनकर के अध्यापक आग-बबूला हो उठा। वह ने दाहिने हाथ में वायलिन बजाने का गज पकड़े हुए था। यह गज उसे क बहुमूल्य उपहार के रूप में मिला था। उसने जब अपने दाहिने हाथ को र से घुमाया तो गज कुर्सी से लगकर दो टुकड़े हो गया।

उन्होंने चिल्लाकर कहा, "दूर हो जाओ।" और उस दिन की फिलिप ा पढ़ाई इस तरह समाप्त हुई।

बेचारा फिलिप क्या करता। उसने महसूस किया कि उसने ऐसा कुछ ो नहीं किया कि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाय और जब वह अपने र पहुँचा तो उसके पिता को ऐसा लगा कि कोई बात फिलिप को कष्ट दे ही है। पिता के पूछने पर फिलिप ने सारी कहानी सुना दी। उसके पिता कहा :

"ठीक है, मेरा ख्याल है कि तुम संगीतज्ञ नहीं होना चाहते। क्या कोई न्य कार्य भी है जिसे तुम करना पसन्द करोगे ?"

"जी हां," लड़के ने उत्तर दिया और उसका मन बहुत उदास था। वह कहने लगा कि मैं एक बेकर (नानबाई) बनना चाहता हूँ।

"एक नानबाई ?"

"जी हाँ, एक नानबाई।"

मिस्टर सूज़ा ने विचार किया, "ठीक है। मै इस बात का प्रयत्न करूँगा

कि तुम्हें किसी बेकरी (नानबाई की दूकान) में अच्छी जगह मिल जाय। मैं जाऊँगा और तुम्हें यह काम दिलाने की कोशिश करूँगा।" और वे यह कहकर घर से बाहर चले गये।

कुछ ही देर बाद वे लौटकर आ गये और अपने पुत्र से कहने लगे, "मुझे चार्ली मिले।' चार्ली यहाँ से दो ब्लाक की दूरी पर बेकरी का काम करते हैं। चार्ली ने मुझसे कहा है कि वह तुमको रोटी पकाना और मांस तथा फल भरकर गुझिया बनाना सिखा देंगे।" वे यह भी कह गये कि वे अपने पुत्र को बेकरों की अपेक्षा अधिक पढ़ाना चाहते थे क्योंकि उन्होंने ऐसा महसूस किया था कि उसके अधिक लिख-पढ़ जाने के बाद उन्हें अपनी आर्थिक दशा सुधारने में विशेष सहायता मिलेगी। उन्होंने फिलिप से कहा कि वह बेकरी के काम के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखे और संगीत छोड़ दे। उन्होंने फिलिप से कहा, "चार्ली तुम्हें आज शाम के साढ़े आठ बजे से ही बेकरी का काम सिखाना चाहता है।"

फिलिप बेकर के यहाँ साढ़े आठ बजे जा पहुँचा। उन्होंने सारी रात काम किया। उसने प्रातःकाल वैगन भराने में मदद की और रोटियाँ पहुँचाने के लिये ड्रायवर के साथ चल दिया। वह इस बात से अधिक प्रभावित था कि वैगन का घोड़ा सभी ग्राहकों के घर पहिचानता था। उसे प्रातः आठ बजे छुट्टी मिली और वह अपने घर जलपान करने आ गया। वह उस रात केवल आध घण्टा ही सो सका था। बेकरी में काम करने वाले लोग उस समय थोड़ी देर के लिये सो लेते हैं जब रोटियाँ तन्दूर में पकने के लिये छोड़ दी जाती हैं।

स्कूल के बाद दोपहर बाद फिलिप की इच्छा नहीं हुई कि वह बेसबाल खेले। वह घर गया और शाम के भोजन के वक्त तक उदासीन होकर इधर-उधर देखता रहा। उसे भोजन करने के बाद बेकरी जाना था। उसके लिये फिर वैसी ही रात थी लेकिन अब उसे एक अन्तर लगा कि बेकरी का मालिक और उसकी पत्नी उसके लिये इतनी मेहरबान नहीं थीं जितनी कि पहिले दिन थीं। उसने दूसरे दिन स्कूल में भी कुछ न सीखा और जब शाम

हुई तो किसी न किसी प्रकार बेकरी में तीसरी रात काटने के लिये घर से चल दिया। उस दिन वह बहुत उदास था। इस बार बेकरी के मालिक ने झिड़ककर यह बताया कि उसे यह काम करना है, वह काम करना है और एक बार उसे सीढ़ियाँ चढ़कर पालने में उनके रोते हुये बच्चे को भी झुलाना है। वह इतना थक गया था कि उसे नींद आ गई जबकि बेबी चिल्लाता ही रहा। वहाँ मिसेज चार्ली आ गईं और उन्होंने चपत लगाकर फिलिप को जगा दिया। तीसरी प्रातःकाल सभी के घर रोटियाँ पहुँचाकर जब वह घर लौटा तो बिल्कुल ही थका हुआ था। जब उसके पिता ने पूछा, "तुम्हें आज प्रातःकाल कैसा लग रहा है?", इससे पहिले कि वह कोई उत्तर दे, वह तुरन्त गहरी नींद में सो गया। तब फिलिप के पिता ने अपनी पत्नी से कहा कि उसे जलपान करा दिया जाय और बिस्तर में लिटा दिया जाय तथा उसे सारे दिन सोने दिया जाय। उस शाम को उन्होंने फिलिप से कहा: "निस्सदेह तुम नानबाई बनना चाहते हो, क्या फिलिप यह बात ठीक नहीं है?"

लड़के ने दुःखी होकर उत्तर दिया, "जी नहीं, मैं बेकर बनने की अपेक्षा मरना स्वीकार कर लूंगा।"

उसके पिता ने सरलता से कहा, "फिर मेरा विचार है कि तुम एस्यूटा के साथ ही रहो और अपना संगीत शुरू कर दो।"

उसके बाद फिलिप और उसके अध्यापक में सदैव मित्रता बनी रही। उसने परिश्रम से अध्ययन किया, ओरकेस्ट्रा पर काम किया, लय का ज्ञान बढ़ाया तथा संकेत देखकर संगीत पढ़ने (साइट-रीडिंग) लगा। उसके पिता ने इस बात की कोशिश की कि फिलिप को ट्रामबोन सिखा दिया जाय किन्तु फिलिप उसे प्रारंभ भी न कर सका, पड़ोसियों को भी यह अच्छा नहीं लगा कि वह ट्रामबोन का अभ्यास करे। लेकिन उसका पिता जिस बैण्ड में काम करता था, उसमें उस बालक को यदा-कदा सिम्बॉल (झाँझ) बजाने दिये जाता अथवा वह ट्राऐंगल या सेक्सहार्न बजाया करता था। इस प्रकार वह दस वर्ष की आयु में यह जान गया कि बैण्ड के साथ बाजा बजाने में कैसा महसूस होता है। जब जौन फिलिप सूज़ा तेरह वर्ष का होगा, उसने चार जोड़ों का बैण्ड

कि तुम्हें किसी बेकरी (नानबाई की दूकान) में अच्छी जगह मिल जाय। मैं जाऊँगा और तुम्हें यह काम दिलाने की कोशिश करूँगा।" और वे यह कहकर घर से बाहर चले गये।

कुछ ही देर बाद वे लौटकर आ गये और अपने पुत्र से कहने लगे, "मुझे चार्ली मिले।' चार्ली यहाँ से दो ब्लाक की दूरी पर बेकरी का काम करते हैं। चार्ली ने मुझसे कहा है कि वह तुमको रोटी पकाना और मांस तथा फल भरकर गुझिया बनाना सिखा देंगे।" वे यह भी कह गये कि वे अपने पुत्र को बेकरी की अपेक्षा अधिक पढ़ाना चाहते थे क्योंकि उन्होंने ऐसा महसूस किया था कि उसके अधिक लिख-पढ़ जाने के बाद उन्हें अपनी आर्थिक दशा सुधारने में विशेष सहायता मिलेगी। उन्होंने फिलिप से कहा कि वह बेकरी के काम के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखे और संगीत छोड़ दे। उन्होंने फिलिप से कहा, "चार्ली तुम्हें आज शाम के साढ़े आठ बजे से ही बेकरी का काम सिखाना चाहता है।"

फिलिप बेकर के यहाँ साढ़े आठ बजे जा पहुँचा। उन्होंने सारी रात काम किया। उसने प्रातःकाल वैगन भराने में मदद की और रोटियाँ पहुँचाने के लिये ड्रायवर के साथ चल दिया। वह इस बात से अधिक प्रभावित था कि वैगन का घोड़ा सभी ग्राहकों के घर पहिचानता था। उसे प्रातः आठ बजे छुट्टी मिली और वह अपने घर जलपान करने आ गया। वह उस रात केवल आध घण्टा ही सो सका था। बेकरी में काम करने वाले लोग उस समय थोड़ी देर के लिये सो लेते हैं जब रोटियाँ तन्दूर में पकने के लिये छोड़ दी जाती हैं।

स्कूल के बाद दोपहर बाद फिलिप की इच्छा नहीं हुई कि वह बेसबाल खेले। वह घर गया और शाम के भोजन के वक्त तक उदासीन होकर इधर-उधर देखता रहा। उसे भोजन करने के बाद बेकरी जाना था। उसके लिये फिर वैसी ही रात थी लेकिन अब उसे एक अन्तर लगा कि बेकरी का मालिक और उसकी पत्नी उसके लिये इतनी मेहरबान नहीं थीं जितनी कि पहिले दिन थीं। उसने दूसरे दिन स्कूल में भी कुछ न सीखा और जब शाम

हुई तो किसी न किसी प्रकार बेकरी में तीसरी रात काटने के लिये घर से चल दिया। उस दिन वह बहुत उदास था। इस बार बेकरी के मालिक ने झिड़ककर यह बताया कि उसे यह काम करना है, वह काम करना है और एक बार उसे सीढ़ियाँ चढ़कर पालने में उनके रोते हुये बच्चे को भी झुलाना है। वह इतना थक गया था कि उसे नींद आ गई जबकि बेबी चिल्लाता ही रहा। वहाँ मिसेज चार्ली आ गईं और उन्होंने चपत लगाकर फिलिप को जगा दिया। तीसरी प्रातःकाल सभी के घर रोटियाँ पहुँचाकर जब वह घर लौटा तो बिल्कुल ही थका हुआ था। जब उसके पिता ने पूछा, "तुम्हें आज प्रातःकाल कैसा लग रहा है?", इससे पहिले कि वह कोई उत्तर दे, वह तुरन्त गहरी नींद में सो गया। तब फिलिप के पिता ने अपनी पत्नी से कहा कि उसे जलपान करा दिया जाय और बिस्तर में लिटा दिया जाय तथा उसे सारे दिन सोने दिया जाय। उस शाम को उन्होंने फिलिप से कहा : "निस्संदेह तुम नानबाई बनना चाहते हो, क्या फिलिप यह बात ठीक नहीं है ?"

लड़के ने दुःखी होकर उत्तर दिया, "जी नहीं, मैं बेकर बनने की अपेक्षा मरना स्वीकार कर लूंगा।"

उसके पिता ने सरलता से कहा, "फिर मेरा विचार है कि तुम एस्यूटा के साथ ही रहो और अपना संगीत शुरू कर दो।"

उसके बाद फिलिप और उसके अध्यापक में सदैव मित्रता बनी रही। उसने परिश्रम से अध्ययन किया, ओरकेस्ट्रा पर काम किया, लय का ज्ञान बढ़ाया तथा संकेत देखकर संगीत पढ़ने (साइट-रीडिंग) लगा। उसके पिता ने इस बात की कोशिश की कि फिलिप को ट्रामबोन सिखा दिया जाय किन्तु फिलिप उसे प्रारंभ भी न कर सका, पड़ोसियों को भी यह अच्छा नहीं लगा कि वह ट्रामबोन का अभ्यास करे। लेकिन उसका पिता जिस बैण्ड में काम करता था, उसमें उस बालक को यदा-कदा सिम्बॉल (झाँझ) बजाने दिये जाता अथवा वह ट्राऐंगल या सेक्सहार्न बजाया करता था। इस प्रकार वह दस वर्ष की आयु में यह जान गया कि बैण्ड के साथ बाजा बजाने में कैसा महसूस होता है। जब जौन फिलिप सूज़ा तेरह वर्ष का होगा, उसने चार जोड़ों का बैण्ड

बना लिया। उसे छोड़कर सभी बजाने वाले आयु में बहुत बड़े थे। वह पहले स्वयं वायलिन बजाता और बैण्ड वाले दूसरा वायलिन, वायला, कण्ट्रा-बेस, क्लेरिनिट कॉर्नेट, ट्रम्बोन और ड्रम बजाते। वे नृत्यों के साथ बाजे बजाते थे और फिलिप वायलिन बजाकर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता था।

वह एक दिन कंस्टों (समवेत वाद्य) का अभ्यास कर रहा था कि उसके द्वार को किसी ने खटखटाया। उसने दरवाजा खोला और एक सज्जन को देखा जो पाँच मिनट से बाजों की धुन सुन रहे थे और उन्होंने इस आश्चर्य से द्वार खटखटाया कि बजाने वाले कौन हैं? फिलिप ने उस व्यक्ति को अन्दर आने के लिये आमंत्रित किया। उस आदमी ने उसके बजाने पर बधाई दी और उससे पूछा, "क्या आपका कभी यह भी विचार हुआ है कि आप सर्कस में काम करें!" फिलिप ने उत्तर दिया, "मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा है।" फिर उन सज्जन ने यह कहा कि वे सर्कस के बैण्ड के लीडर हैं। उस समय उस सर्कस का काम वाशिंगटन में चल रहा था। उन्होंने कहा, "यदि आप चाहे तो आपको भी उस बैण्ड में उपयुक्त स्थान दिया जा सकता है।" फिलिप को यह विचार पसन्द आया। इसमें सन्देह नही है कि सर्कस किसी भी बालक को अच्छा लग सकता है। उसने कहा कि उसे यह विचार पसन्द है लेकिन वह यह नहीं बता सकता कि उसके पिता को भी यह विचार स्वीकार होगा। उन्होंने फिलिप को यह सुझाव दिया कि वह अपने पिता को यह विचार बताये बिना कार्य प्रारंभ कर दे। लेकिन फिलिप का अपना ही विचार था और इसके अतिरिक्त उसे अपने पिता बहुत अच्छे लगते थे जिन्हें छोड़कर वह कहीं नहीं जाना चाहता था। फिर सर्कस के महानुभाव ने यह सुझाव दिया कि सम्भवतः पिता को यह ज्ञात नहीं है कि सर्कस के साथ उसके बेटे के होने से उसका कितना अच्छा भविष्य हो जाता है।

उन सज्जन ने फिलिप को अधिक फुसलाया और यह सुझाव दिया कि वे अगली शाम से ही सर्कस शुरू करने वाले हैं और वह उनके साथ चले। दो दिन बाद वह अपने पिता को लिख सकता है कि उसे वहाँ कितना अच्छा

लगा और सम्भवतः फिर उसका पिता उसके कार्य में अवरोध न डाले। फिलिप ने यह स्वीकार कर लिया। उन सज्जन ने फिलिप को यह बताया कि वह यह बात गुप्त रखे और वह वहाँ से चला गया।

उस लड़के ने इस बात को जितना अधिक सोचा उतना ही वह अपनी कल्पना से इस प्रस्ताव को अधिक अच्छा समझने लगा। वह सर्कस में काम करेगा, धन कमायेगा और शायद एक दिन ऐसा भी आ जाय कि वह सर्कस बैण्ड का स्वयं लीडर हो जाय। यह ठीक ही था कि वह इसके बारे में किसी से कुछ भी न कहे। अतएव उसने अपने पड़ोसी मित्र एड को विश्वास में सभी कुछ बता दिया। एड ने शायद अपनी माँ से कहा क्योंकि उसे यह काम एक अन्य दृष्टिकोण से विचित्र ही लगा और उसकी माँ ने मिसेज सूजा से कह दिया।

फिलिप अगली प्रातःकाल बहुत देर तक अपने बिस्तर में लेटा हुआ यह स्वप्न देख रहा था कि वह एक विशाल तम्बू के नीचे सर्कस के बैण्ड का संचालन कर रहा है कि उसके पिता ने आवाज देकर उसे जगाया।

"बेटा। गुड मोर्निंग।"

"पिताजी ! गुड मोर्निंग।"

उसके पिता ने कहा कि आज तुम कपड़े पहिनते समय अपने रविवार के कपड़े पहिनना।

फिलिप को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि ऐसी क्या बात है ? वह रविवार का दिन नहीं था फिर भी उसने रविवार की पोशाक में जलपान किया और फिर उसके पिता ने कहा, "चलो, कुछ सैर कर आये।"

वे मेरीन बैरकों की ओर चल दिये। ९ जून था और उस दिन उसके पिता ने उसको मेरीन कोर में एपरनटिस ब्वाय की तरह भर्ती करा दिया ताकि वह तब तक संगीत का अध्ययन करे जब तक कि उसका सर्कस में जाने का दीवानापन दूर न हो जाय। उन्हे यह मालूम था कि उसका तेरह वर्षीय बालक मेरीन कोर छोड़कर सर्कस के लिये भाग नहीं सकता।

उस समय फिलिप ने ऐसा संगीत सुना और अनुभव किया कि वह कभी

भूल नहीं सकता था। उसने सर्वोत्तम संगीतज्ञ थियोडोर टॉमस को वायलिन पर **ट्रामेरी** बजाते सुना। उसके लिये वह सर्वोत्तम संगीत था और उसने इससे पहिले इससे अधिक सुन्दर वॉयलिन नहीं सुना था। पहिली बार उसको एक विचार सूझा कि सबसे अधिक आश्चर्यचकित बात यह होगी कि संगीत को लेख-बद्ध किया जाय। संगीत से सुनने वाले को शांति और सुख मिलता है।

वर्ष बीतते गये और सूज़ा अधिकाधिक संगीत-संगठनों में काम करता रहा और उसकी आयु बढ़ती गई। उसने सबसे प्रथम बार ओरकेस्ट्रल यूनियन में वायलिन बजाया और साथ-ही-साथ संचालक के साथ वायलिन, पियानो और 'हार्मोनी' का अध्ययन किया। उसका संगीतज्ञों और संगीत-प्रेमियों से परिचय कराया गया। एक संगीत-प्रेमी चेम्बर म्यूज़िक का भी संरक्षक था और प्रति मंगलवार की संध्या समय अपने घर पर स्ट्रिंग क्वार्टेट ग्रुप का गाना-बजाना कराता था। उसने युवक सूज़ा को उस ग्रुप में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित किया। संध्या समय के इन्हीं कार्यक्रमों के अवसरों पर सूज़ा को हेडन की चेम्बर-कृतियाँ और अन्य पुराने कलाकारों की दुर्लभ कृतियाँ देखने को मिलीं। इनका संगीत विशेषकर योरुप की संगीतशालाओं से मँगाया गया था।

संगीत-संरक्षक महोदय ने सूज़ा के निवेदन पर नौ-सेना के सेक्रेटरी द्वारा उसे मेरीन बैण्ड से मुक्त करा दिया। फिर उन्होंने उस युवक से आग्रह किया कि वह योरुप जाकर अपनी संगीत-शिक्षा पूरी कर ले। उस समय यह महसूस किया जाता था कि यदि किसी अमरीकी को संगीत में पारंगत होना है तो वह जर्मनी में जाकर संगीत-शिक्षा ले।

सूज़ा ने अपने नये मित्र को यह सूचित किया कि उसके लिये योरुप जा सकना संभव नहीं है क्योंकि उसका पिता उसे भिजवाने का व्यय वहन नहीं कर सकेंगे। उसके पिता को कई छोटे बच्चे पालने थे। उसके मित्र ने उसकी आपत्ति का निराकरण करते हुये यह सुझाव दिया कि वह उन दानवीर के पास चला जाय जिन्हें वे जानते थे और उन्हें यह विश्वास था कि वे उस प्रतिभामान युवक को संगीत-शिक्षा दिलाने में आर्थिक सहायता दे देंगे किन्तु

सूज़ा इस विचार से सहमत न हो सका। उसकी यह इच्छा न थी कि वह किसी का अहसानमन्द हो। यह बात उसके स्वाभिमान और स्वतंत्र स्वभाव के विपरीत थी कि वह किसी भी दशा में किसी का कोई अहसान ले। उसने अपनी शिक्षा अमरीका में ही पूरी की और बड़े होने पर उसे कोई पश्चात्ताप भी न हुआ क्योंकि अमरीका में शिक्षा ले लेने से वह 'सच्चा अमरीकी संगीतज्ञ" कहला सका।

उसके पास छात्र आने लगे और वह अपनी रचनाएँ करने लगा। उसने एक अन्य व्यक्ति को वॉल्ट्ज़ (जर्मनी का एक प्रकार का नृत्य) का एक सेट अपने नाम से छपने के लिये दिया। वह व्यक्ति संगीतज्ञ न था लेकिन उसका विचार था कि वह संगीत से अपनी प्रेमिका को जीत सकेगा। सूज़ा की अगली दो रचनाएँ प्रयाण-गीत थे जिन्हें उसने धन के लिये नहीं बेचा बल्कि प्रत्येक गीत की सौ-सौ प्रतियाँ लेकर के ही उन गीतों को प्रकाशित करा दिया।

कभी-कभी ऐसा भी समय आता जब उसे अपने अध्ययन से निराशा हो जाती थी क्योंकि वह यह महसूस किया करता था कि उसके घर में संगीत का वातावरण न होने से उसके अध्ययन में बाधा पड़ती है। उसकी माँ को संगीत से प्रेम नहीं था और उसके पिता ने यद्यपि ट्रामबोन बजाया था लेकिन वे अच्छे टेकनिकल संगीतज्ञ न थे। और उसके अध्यापक एस्पूटा भी बहुत कठोर थे परन्तु वे केवल छात्राओं के प्रति ही दयालु रहते थे। वह लड़कों के साथ संजीदगी बरतते थे और उनपर कठोर अनुशासन रखते थे। शायद यही कारण था कि सूज़ा संगीत सीखने के सम्भव अवसर का उपयोग करने के लिये तैयार था और उसे यथाशीघ्र कार्यरूप में परिणत भी करने लगता था क्योंकि उसे उत्साह की अधिक आवश्यकता थी।

उसे यकायक थियेटर के कण्डक्ट (संचालन) करने का अवसर मिला जिसे उसने स्वीकार कर लिया। थियेटर का संचालक कहीं चला गया था। वह देखकर संगीत पढ़ सकता और केवल एक बार रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करते समय सीख भी लेता था और वह बाद में उसे प्रस्तुत कर सकता था

वह संगीत-ज्ञान के पूरा करने के लिये इतना अधिक इच्छुक रहता था कि वह थियेटर में प्रोग्राम शुरू करने से तीन घण्टे पहिले ही पहुँच जाता था। एक दिन ओपरा हाउस में कण्डक्टर बीमार हो गया। सूज़ा को उसका काम करने के लिये बुलाया गया। उस पर भरोसा था कि वह संगीत-संचालन-कार्य निभा लेगा। इसके बाद उसे सचमुच प्रथम अवसर मिला, वह एक शो (खेल) के लिये ऑरकेस्ट्रा का लीडर बन गया। उसे अब खेल दिखाने के लिये जगह-जगह की यात्रा करनी थी।

सूजा पच्चीस वर्ष का हुआ भी न था कि उससे पूर्व अमरीका में इस बात का क्षोभ फैलने लगा कि गिल्बर्ट और सुलीवेन लाइट ओपरा एच० एम० एस० **पिनेफोर** की खूब धूमधाम थी। उस समय लेखकों की रक्षा के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट का कानून नहीं था अतएव दर्जनों कम्पनियाँ गिल्बर्ट और सुलीवेन ओपरों (ओपरेटा) का प्रदर्शन कर रही थीं तथा वे लेखकों को रायल्टी के एवज में एक सेण्ट भी न देती थी। एक दिन सूज़ा से कहा गया कि सोसाइटी ऑफ अमेच्योर का एक ग्रुप **पिनेफोर** ओपरा प्रस्तुत करना चाहता है और उसे इस बात का अवसर मिल सकेगा कि वह उनका संचालन करे। उन्होंने बहुत अच्छा भुगतान किया और उस ओपरा के अधिक दिनों तक चलते रहने की आशा थी इसलिये सूज़ा को उसके संचालन-कार्य निभाने में प्रसन्नता थी। जब वह अगली शाम को अपना काम करने गया तो उसे वहाँ अच्छे गायक और सुन्दर अभिनेत्रियाँ मिली। इससे पूर्व उसे कभी इतने अच्छे गायक और सुन्दर अभिनेत्रियाँ नहीं मिली थी। उसने कहा :

"युवकों जैसी अनुभवहीनता के कारण मैं रिहर्सल के समय बहुत कठोर रहा करता था। यह आश्चर्य की बात है कि दक्ष अभिनेता प्रसन्नता से अधिक-से-अधिक अभ्यास कर लेते हैं जबकि बेवकूफ और अभिमानी कलाकार प्रायः मन ही मन कुढ़ जाते हैं यदि उनकी भूल का सुधार किया जाय या उनसे कहा जाय कि एक बार फिर रिहर्सल कर लें। आखिरकार जब हमने अपना खेल दिखाया तो सभी दर्शकों में रोमांच की लहर दौड़ गई।" अगले वर्ष जब गिल्बर्ट और सुलीविन अमरीका आये, वह ओपरा उस समय भी

चल रहा था। उन्होंने उस ओपेरा को सुना और सुलीविन ने संगीतकार की प्रशंसा की जिसे सुनकर सूज़ा बहुत प्रसन्न हुआ।

२२ फरवरी को उन "सुन्दर अभिनेत्रियों" में से एक अभिनेत्री ने सूज़ा का फिलेडेल्फिया की जेनी बेलिस से परिचय कराया। वह अभिनेत्री की शिष्या थी। सूज़ा के विचार से वह छोटी लड़की इतनी सुन्दर थी कि उस जैसी सुन्दरी उसने कभी भी अपने जीवन में नहीं देखी थी। वह उसे बहुत अच्छी लगी। उसे उसका व्यवहार भाने लगा, उसकी बातचीत पसन्द आई, वह उसका रूप देखकर मुग्ध हो गया और उसकी सुरीली आवाज अच्छी लगने लगी। उसने सूज़ा से कहा कि वह एक ही दिन दो जन्म-दिन मना रही है, एक वाशिंगटन का और दूसरा अपना। वह कुल सोलह वर्ष की थी। सूज़ा ने उसके सत्रह वर्ष की होने से पहिले ही उससे विवाह कर लिया।

उसने संगीतपूर्ण एक सुखान्त नाटक (म्युजिकल कामेडी) लिखा और जिसका जगह-जगह प्रदर्शन हुआ और उसने उस नाटक का संचालन किया। आखिरकार सूज़ा को इस कार्य में इतनी अधिक ख्याति मिली जिसके कारण वह आज भी याद किया जाता है। वह मेरीन बैण्ड का लीडर बन गया; वह ऐसे बैण्ड का लीडर बन गया जिसमें उसने अपने बचपन में काम किया था और वाद्य-यंत्र बजाना सीखा था। वह अपने पिता के प्रति सचमुच आभारी था कि उन्होंने उसे सर्कस में जाने से रोक लिया था।

उसे सबसे पहिली चिन्ता यह थी कि बैण्ड के लिये एक संगीत-पुस्तकालय बना लिया जाय। उसके इस संगीत-पुस्तकालय में नये संगीत का संग्रह नहीं था। प्रत्येक चीज बहुत पुरानी थी और वे वाद्ययंत्रों के लिये उचित रूप से व्यवस्थित न थी और उसे उन चीजों में कुछ भी उपयोगिता न दिखी। उसने सबसे पहिले उस पुस्तकालय में अच्छे संगीत की चीजों का संग्रह किया; उसके बाद उसने उस संगीत का अभ्यास किया तथा अपने साथियों से भी बराबर रिहर्सल कराया।

संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसीडेंट के लिये एक सरकारी बैण्ड है, वही मेरीन बैण्ड है। व्हाइट हाउस में जब कभी किसी स्वागत समारोह या उत्सव

के समय ओर्केस्ट्रा की जरूरत होती है तो मेरीन बैण्ड ही ओरकेस्ट्रा प्रस्तुत करता है। जब कभी परेड होती है अथवा राजधानी में संगीत समारोह का आयोजन किया जाता है तो ऐसे अवसरों पर मेरीन बैण्ड ही बजाया जाता है। उन कार्यक्रमों में जहाँ विदेशी राजदूत उपस्थित हों और सौजन्य के कारण यह आवश्यक हो कि उनके प्रेमपूर्ण सम्बन्धों को ध्यान में रखा जाय तो उस समय मेरीन बैण्ड को उन देशों की राष्ट्रीय धुनें बजानी होती हैं जिनके राजदूत उस उत्सव में उपस्थित हैं। सूजा अपने विशेष संगीत के साथ सदैव तैयार रहता था। उसने अपने संगीत-पुस्तकालय में सभी देशों की राष्ट्रीय धुनें इकट्ठी कर ली थीं। उसने एक संग्रह प्रकाशित कराया जिसमें राष्ट्रीय तथा विशेष प्रकार के गीत सन्मिलित थे। उस पुस्तक में केवल महान देशों के ही गीत सम्मिलित न थे अपितु सेमोआ, लेपलैण्ड, एबीसीनिया और अमरीकी इण्डियन के कई कबीलों के गीत भी थे। उस राष्ट्रीय गीतों की पुस्तक में एपाशे, चेसेकी, चिपेवा, डेकोटा, एस्कीमों, आओवा, इरीकिस, वेन्क्ववर जैसे कबीलों के गीत शामिल किये गये। उन सभी गीतों को लयबद्ध कर लिया गया था जिससे कि उनकी धुनों को बैण्ड पर बजाया जा सकता था। हमने उन गीतों को अपने लयबद्ध करने के नियमों के अनुसार ऐसा ढाल लिया था कि वे इण्डियन स्वयं अपनी धुनों को नहीं पहिचान सकते थे। फिर भी सूजा किसी-न-किसी प्रकार उन नृवंशवेत्ताओं (इथोनालोजिस्ट्स) और अन्य लोगों से धुनें इकट्ठी करता रहा जो इण्डियनों के साथ रहे और उनके साथ घूमे थे।

व्हाइट हाउस के ईस्ट रूम में स्वागत समारोहों में प्रेसीडेन्ट के स्वागत के लिये मंत्रिमण्डल के मंत्री, राजदूत, जनरल और एडमिरल एकत्र होते थे उस समय यह रिवाज था कि बैण्ड **हेल टू दी चीफ*** की धुन बजाता था जिससे यह घोषित होता कि प्रेसीडेन्ट स्वयं आ रहे हैं। यह परम्परा कई वर्षों तक चलती रही। एक बार आर्थर अपने अतिथियों को छोड़कर बरामदे

---

*हेल टू द चीफ स्कॉटलैण्ड का पुराना बोटिंग साँग है।

में चले गये और सूज़ा से वात की। प्रेसीडेंट ने पूछा, "जब हम डिनर के लिये अन्दर कमरे में गये तो आपने क्या बजाया ?"

सूज़ा ने उत्तर दिया, 'श्रीमन् प्रसीडेंट, **हेल टू दी चीफ**।"

"क्या आप इसे उपयुक्त गीत समझते हैं ?"

"जी, नहीं।"—सूज़ा ने उत्तर दिया। "यह गीत बहुत पहिले अपने नाम के कारण चुना गया था किन्तु इस वात पर ध्यान नहीं दिया गया कि इसका क्या रूप है ? यह नौका में बैठकर गाया जाने वाला गीत है (**हेल टू दी चीफ** स्काटलैण्ड का पुराना गीत है जो नौका-विहार के समय गाया जाता था) और इसमें आधुनिक सैनिक भावना का अभाव है अतएव न तो यह गीत स्वागत के लिये ठीक है और न परेड के लिये।"

"फिर इसको बदल दो।"—प्रेसीडेंट ने आज्ञा दी।

उसके बाद सूज़ा ने व्हाइट हाऊस के अन्दर आयोजित होने वाले उत्सवों के लिये प्रेसीडेन्शियल पोलोनैज और वाहर के अवसरों के लिये सेम्पर फाइ-डलिस मार्च गीतों की रचना की।

वाशिंगटन पोस्ट समाचार पत्र के तत्वावधान में ग्रीष्म काल में पब्लिक स्कूलों के विभिन्न ग्रेडों के छात्रों की निबन्ध प्रतियोगिता होगी जिसमें निबन्धों के लिये पुरस्कार और पदक दिये जायेंगे। इस महान कार्यक्रम के लिये जून में एक दिन निश्चित किया गया और उस दिन के कार्यक्रम में मेरीन बैण्ड का वादन भी सम्मिलित था। अखबार के एक मालिक ने सूजा से कहा कि प्रति-योगिता के संचालन के लिये वह एक प्रयाण-गीत की रचना करे और वह उस दिन उसे सर्वप्रथम बजाये जिस दिन पुरस्कार वितरित किये जायें। इस अवसर के लिये सूज़ा ने **वाशिंगटन पोस्ट मार्च** नामक गीत की रचना की और उसे प्रस्तुत किया। यह गीत इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि सारे संसार में बजाया गया। जिस दिन वह गीत वाशिंगटन में बजाया गया, उस दिन कदाचित वाशिंगटन के सभी बच्चे उपस्थित रहे होंगे। बैण्ड के चारों ओर पेड़ों पर बच्चे चढ़ गये जिससे वे बैण्ड के संगीत को अच्छी तरह सुन सकें।

वाशिंगटन पोस्ट मार्च की पहली धुन के साथ-साथ हाई स्कूल के केडिट मार्च करने लगे जिसे देखकर सभी बच्चों ने हर्ष में करतल ध्वनि की। वाशिंगटन के बच्चों के लिये वह दिन महान था। उसके बाद सूज़ा ने **हाई स्कूल केडिट्स मार्च** नामक गीत लिखा। जब वह दौरे पर बाहर जाता था तब उससे प्रिय गीत बजाने के लिये आग्रह किये जाते थे। ऐसे ही दौरे में एक बार उनसे एक यह निवेदन किया गया कि वह **आइस कोल्ड केडिट्स** नामक गीत की धुन बजा दे। इस आग्रह से सूज़ा को बहुत प्रसन्नता हुई।

वाशिंगटन पोस्ट मार्च नामक गीत किस प्रकार सारे संसार में फैल गया, इसकी झलक हमें एक कहानी से मिलती है। इस गीत के लिखे जाने के वर्षों बाद सेना का एक मेजर बोर्नियो के जंगल में घूम रहा था। उसे यकायक जंगल में वायलिन के स्वर सुनाई पडे। उस पर **वाशिंगटन पोस्ट मार्च** की धुन बजाई जा रही थी। वह उस आवाज की ओर चलने लगा और एक आदि-वासी के बालक के पास पहुँच गया। उस बालक ने इस गीत की स्वर-लिपि को अपने सामने पेड़ पर लगा रखा था और वह उसे देखकर अपनी फिडिल (नफीरी) पर इस गीत को निकालने का अभ्यास कर रहा था।

डांसिग-मास्टरों (नृत्य कलाविद्) ने एक नये प्रकार का नृत्य दिखाने के लिये इस ट्यून को अपनाया। इस नृत्य को "टू-स्टेप" नृत्य कहते थे। परन्तु बाद में जब सूज़ा योरुप गया तो उसने यह पाया कि इंग्लैण्ड और जर्मनी में इस नृत्य को "वाशिंगटन पोस्ट" का ही नाम दे दिया गया है।

जान फ़िलिप सूज़ा को एक संस्था पर बहुत गर्व था, उसने इस संस्था में बैण्ड का अभ्यास प्रारंभ कराया और जब उसे यह संतोष हो गया कि बैण्ड पर संगीत की पर्याप्त अच्छी धुनें बजाई जा सकती है तो उसकी यह इच्छा हुई कि बैण्ड को यात्रा के लिये ले जाया जाय जिससे वाशिंगटन के बाहर भी लोग बैण्ड को सुनें। नार्थ केरोलीना में फेटेविले नगर में एक राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया गया था। यह उत्सव मेक्लिनबर्ग स्वतंत्रता घोषण की स्मृति-स्वरूप मनाया गया। मेरीन बैण्ड को इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित किया गया। क्योंकि प्रेसीडेंट स्वयं भाषण देने के लिये वहाँ

उत्सव के दिन पर्वतीय क्षेत्रों और ग्रामों से लोग आकर नगर में इकट्ठे होने लगे और वहाँ बहुत भीड़ हो गई। भीड़ इस कदर थी कि बहुत से लोग वैगनों में सोये और सूज़ा ने तो कुछ बच्चों को सामान के बक्सों और बेंचों पर घुटने समेट कर सोते हुये देखा। फेटेविले में रौनक ही रौनक थी।

सर्वप्रथम गवर्नर ने भाषण दिया और फिर सूज़ा के बैण्ड ने राष्ट्रीय धुन बजाई। जनता ने बहुत ही शान्त और सहज भाव से इसे सुना। उसके बाद चेयरमैन ने एक सिनेटर (सीनेट का सदस्य) का परिचय कराते हुये भाषण दिया। सेनेटर 'राज्य का संभ्रान्त व्यक्ति' माना जाता था। जैसे ही चेयरमैन ने अपना स्थान ग्रहण किया और सेनेटर महोदय अपना भाषण प्रारंभ भी न कर पाये थे कि सूजा ने बड़ी फुर्ती के साथ अपने साथियों को इशारा किया और वे एकदम **डिक्सी** गीत की धुन बजाने लगे। सूज़ा का कहना था कि इस धुन का प्रभाव ऐसा हुआ जैसे कि बिजली का झटका लगे। उस जन-समूह में उन्माद की लहर दौड़ गई और जनता का यह आल्हाद भरा शोर भीड़ को चीरता हुआ सड़कों तक पहुँचा। हैट उछाले जाने लगे। वृद्ध व्यक्ति भाव-विभोर हो विह्वल हो उठे। महिलायें एक दूसरे के आलिंगन में बंध गई और पन्द्रह मिनट तक समारोह का कार्यक्रम रुका रहा।

यह कितने विस्मय की बात है कि कोई मधुर गीत हमारे हृदयों में इतना गहरा उतर जाता है।

सप्ताह भर बैण्ड फेटल विले में रहा। उसके कार्यक्रम इस प्रकार थे :—

ओवरच्युर	**विलियम टेल**
गीत	**डिक्सी**
वाल्ज	**ब्लू डेन्यूब**
गीत	**डिक्सी**
देशभक्ति के गीत	**फॉस्ट**
गीत	**डिक्सी**
मेडले (मिला-जुला संगीत)	**फेवरिट ट्यून्स**
गीत	**डिक्सी**

सूज़ा ने कहा, दर्शकों में से प्रत्येक ने बार-बार **डिक्सी** गीत की धुन ही सुनने का आग्रह किया। आश्चर्य है कि उत्तर निवासी डेन एमिट ने **डिक्सी** नामक गीत लिखा था और सबसे पहिले यह गीत गृह युद्ध के दौरान न्यूयार्क के मिन्स्ट्रिल शो में गाया गया था :

सूज़ा मेरीन बैण्ड का बारह वर्षों तक लीडर रहा और उसने अपने सेवा-काल में पाँच प्रेसीडेंट देखे। फिर उसने सेवा से निवृत्त होने का निवेदन किया। अब वह यह चाहता था कि वह अपने कन्सर्ट बैण्ड का संगठन करे। उसे इस कार्य को पूरा करने में अधिक समय नहीं लगा और उसने शिकागो के अखिल विश्व मेला में उसका प्रदर्शन किया। उसे वहाँ विशेष आदर मिला और वह स्मृति उसके जीवन में बहुत समय तक बनी रही। उसके बैंण्ड ने **थियोडोर टॉमस** के नेतृत्व में महान ओरकेस्ट्रा प्रस्तुत किया। यह वही व्यक्ति थे जिन्होंने कई वर्ष पूर्व वाशिंगटन में वायलिन पर **ट्रामेरी** बजाकर युवक फिलिप को इतना प्रेरित कर दिया था कि फिलिप गीतों की रचना करने लगा था। सूज़ा ने अपने बैण्ड पर अमरीकी संगीतकार जोन नोलेस पैने द्वारा लिखित **कोलम्बस** के कुछ अंशों को संगीतबद्ध कर लिया था। यह रचना ओरकेस्ट्रा मिलिटरी बैण्ड तथा कोरस के लिये प्रयाण-गीत और स्तुति गान के रूप में अपनाई गई। रिहर्सल में ही सूज़ा इस बात से प्रसन्न हुआ कि उसे परिश्रम या मेहनत को मान्यता मिली क्योंकि रिहर्सल के दौरान मिस्टर टॉमस ने कहा था :

"आप बधाई के पात्र हैं कि आपने इन ट्यूनों को निकालने में अधिक परिश्रम किया है।"

वे दोनों दोपहर का भोजन करने साथ-साथ गये और एक रेस्ट्रां में शाम के छः बजे तक बैठे रहे। दोनों संगीतज्ञ एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण थे। सूज़ा ने यह स्वीकार किया, "उस दिन दोपहर के बाद मुझे जीवन में सबसे अधिक आनन्द देने वाला समय मिला। टॉमस महानतम संचालकों में से एक संचालक माने जाते थे।" बैण्ड लीडर ने टॉमस से कहा कि वह प्रारम्भ में

वायलिन पर टॉमस के **ड्रामेरी** बजाकर स्वर्गिक आनन्द लेना चाहता था। यह सुनकर संचालक महोदय की आँखें उत्साह से भर गई और उन्होंने कुछ याद करते हुये कहा कि वे बहुत कोमल ध्वनियाँ थी।"

सूज़ा ने कहा कि **ग्लेडियेटर मार्च** उसका पहिला जोरदार गीत था जिसे उसने प्रकाशन को पचास डालरों में बेचना चाहा किन्तु वह गीत उसे लौटा दिया गया। फिर उसने इसे एक प्रकाशक को पैंतीस डालर में बेच दिया और उस प्रकाशक ने **सेम्पर फाइडलिस हाई स्कूल केडिट्स** और अन्य प्रयाण गीतों के लिये भी इतनी ही राशि दी। प्रकाशक ने सूज़ा के सैन्य संचालन के गीतों से बहुत धन कमाया और संगीतकार को कुछ भी न मिला। वह प्रकाशक दो कारखाने खरीद सका, एक कारखाने में 'रीड' तैयार किये जाते थे और दूसरे कारखाने में पीतल के औजार तैयार किये जाते थे। यह कार्य सूज़ा के गीतों को बेचकर ही किया गया था। इस घटना से स्टीफेन फॉसर की याद आ जाती है जिन्होंने **ओल्ड अंकिल नेड और ओह! सुज़ेना** गीतों को जिस आदमी के हाथ बेचा था उसने इन दो गीतों से दस हजार डालर कमाये और म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस की स्थापना कर ली थी। फोस्टर को अपने गीतों की कुछ ही प्रतियां मुफ्त मिल सकीं। सूज़ा ने इस बात से कुछ सीखा और उसने फिर प्रयाण-गीतों को एक ही बार इकमुश्त दाम लेकर नहीं बेचा। उसे **लिबर्टी बेल मार्च** से रायल्टी के रूप में पैंतीस हजार डालर की प्राप्ति हुई।

सूज़ा ने अपने दीर्घ और व्यस्त जीवन में सौ से अधिक प्रयाण-गीत लिखे, इसके अतिरिक्त उसने वाल्ज (जर्मनी का एक प्रकार का नृत्य) फेन्टेसियाज़ (कल्पना प्रधान गीत), ओपरा, सूटस (वाद्य संगीत-सम्बन्धी कृति), गीत और पुस्तकों की रचना की जिनमें उसने अपने जीवन की रोचक कहानी और बच्चों के लिये **पाइपटाउन सेण्डी** नामक कहानी भी लिखी। परन्तु उसके प्रयाण गीत ही अधिक प्रसिद्ध हैं और इन्हीं गीतों के कारण उसको याद किया जाता है। वह किसी भी अवसर के लिये प्रयाण-गीत लिखने में कुशल हो गया था। उसने अपने प्रसिद्ध बैण्ड को लेकर संयुक्त राज्य अमरीका में कई

बार यात्रा की। इन यात्राओं के कारण वह अमरीका के संगीतज्ञों में सबसे अधिक लोक-प्रिय और प्यारा व्यक्ति बन गया। किसी नगर में सूज़ा का पहुँचना ही एक घटना समझी जाती थी। कभी-कभी मेयर उसके आने के सम्मान में छुट्टी कर देते थे और झण्डे फहराये जाते थे। उसने अपना बैण्ड लेकर योरुप में कई यात्रायें कीं और एक बार सारे संसार का भ्रमण किया।

जब वह इंगलैण्ड में पहिली बार गया तो सूज़ा से सम्राट जार्ज छठे के बाबा सम्राट एडवर्ड अष्टम के सम्मुख बैण्ड बजाने का निवेदन किया गया। सम्राट ने सम्राज्ञी के जन्म-दिन पर उसके बैण्ड-वादन की इच्छा प्रकट की। यह बात बैण्ड वालों से भी छिपाकर रखी गई। उन्हें इस बात का कोई अनुमान भी न था कि उन्हें अपना बैण्ड राजपरिवार के लिये बजाना होगा जब तक कि वे ट्रेन में सवार होकर सेंड्रिगहेम में पहुँचे जहाँ सम्राट का ग्रामीण क्षेत्र में एक महल था। उस दिन संध्या समय के कार्यक्रम में सूज़ा ने प्रयाण-गीतों के अतिरिक्त अमरीकी गिरजाघरों के गीतों की धुनें बजाई तथा प्लांटेशन सांग्स (अमरीका में हब्शियों द्वारा गाये जाने वाले गीत) और नृत्य-गीत की धुनें बजाई। सम्राट ने बार-बार उन गीतों की धुनों को दुबारा बजाने के लिये कहा। फिर उन्होंने सूज़ा को विक्टोरियन आर्डर के मेडल से विभूषित किया।

इंग्लैण्ड में प्रकाशित एक छोटी ब्रासबैण्ड जर्नल (पत्रिका) में एक लेख छपा कि सूज़ा को "प्रयाण-गीतों का सम्राट" उसी प्रकार कहा जा सकता है जैसा कि जान स्ट्रास को 'वाल्ज सम्राट" माना जाता था।

सूजा ने विदेश की यात्रा पूरी की और फिर अपने देश को लौट आया। उसने न्यूयार्क में जहाज से उतरते ही उन सभी बातों के बारे में विचार किया कि उसे कहाँ-कहाँ उपस्थित होना पड़ा था। यकायक उसे अपने मस्तिष्क में बैण्ड की एक सुरीली आवाज सुनाई देने लगी। वह एक ऐसी मेलोडी (मधुर गीत) थी जिसकी अन्तर्ध्वनि उसके हृदय में घर लौटते समय बराबर होती रही। वह उस मेलोडी को तनिक भी न भूल सका क्योंकि वह गीत उसे अत्यधिक आत्म-विभोर कर चुका था। उसने घर पहुँचकर कल्पना पर आधारित उस

वायलिन पर टॉमस के **ट्रामेरी** बजाकर स्वर्गिक आनन्द लेना चाहता था। यह सुनकर संचालक महोदय की आँखें उत्साह से भर गई और उन्होंने कुछ याद करते हुये कहा कि वे बहुत कोमल ध्वनियाँ थी।"

सूजा ने कहा कि **ग्लेडियेटर मार्च** उसका पहिला जोरदार गीत था जिसे उसने प्रकाशन को पचास डालरों में बेचना चाहा किन्तु वह गीत उसे लौटा दिया गया। फिर उसने इसे एक प्रकाशक को पैंतीस डालर में बेच दिया और उस प्रकाशक ने **सेम्पर फाइडलिस हाई स्कूल केडिट्स** और अन्य प्रयाण गीतों के लिये भी इतनी ही राशि दी। प्रकाशक ने सूजा के सैन्य संचालन के गीतों से बहुत धन कमाया और संगीतकार को कुछ भी न मिला। वह प्रकाशक दो कारखाने खरीद सका, एक कारखाने में 'रीड' तैयार किये जाते थे और दूसरे कारखाने में पीतल के औजार तैयार किये जाते थे। यह कार्य सूजा के गीतों को बेचकर ही किया गया था। इस घटना से स्टीफेन फॉसर की याद आ जाती है जिन्होंने **ओल्ड अंकिल नेड और ओह! सुजेना** गीतों को जिस आदमी के हाथ बेचा था उसने इन दो गीतों से दस हजार डालर कमाये और म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस की स्थापना कर ली थी। फोस्टर को अपने गीतों की कुछ ही प्रतियाँ मुफ्त मिल सकीं। सूज़ा ने इस बात से कुछ सीखा और उसने फिर प्रयाण-गीतों को एक ही बार इकमुश्त दाम लेकर नहीं बेचा। उसे **लिबर्टी बेल मार्च** से रायल्टी के रूप में पैंतीस हजार डालर की प्राप्ति हुई।

सूजा ने अपने दीर्घ और व्यस्त जीवन में सौ से अधिक प्रयाण-गीत लिखे, इसके अतिरिक्त उसने वाल्ज (जर्मनी का एक प्रकार का नृत्य) फेन्टेसियाज़ (कल्पना प्रधान गीत), ओपेरा, सूटस (वाद्य संगीत-सम्बन्धी कृति), गीत और पुस्तकों की रचना की जिनमें उसने अपने जीवन की रोचक कहानी और बच्चों के लिये **पाइपटाउन सेण्डी** नामक कहानी भी लिखी। परन्तु उसके प्रयाण गीत ही अधिक प्रसिद्ध हैं और इन्हीं गीतों के कारण उसको याद किया जाता है। वह किसी भी अवसर के लिये प्रयाण-गीत लिखने में कुशल हो गया था। उसने अपने प्रसिद्ध बैण्ड को लेकर संयुक्त राज्य अमरीका में कई

बार यात्रा की। इन यात्राओं के कारण वह अमरीका के संगीतज्ञों में सबसे अधिक लोक-प्रिय और प्यारा व्यक्ति बन गया। किसी नगर में सूजा का पहुँचना ही एक घटना समझी जाती थी। कभी-कभी मेयर उसके आने के सम्मान में छुट्टी कर देते थे और झन्डे फहराये जाते थे। उसने अपना बैण्ड लेकर योरुप में कई यात्रायें कीं और एक बार सारे संसार का भ्रमण किया।

जब वह इंगलैण्ड में पहिली बार गया तो सूजा से सम्राट जार्ज छठे के बाबा सम्राट एडवर्ड अष्टम के सम्मुख बैण्ड बजाने का निवेदन किया गया। सम्राट ने सम्राज्ञी के जन्म-दिन पर उसके बैण्ड-वादन की इच्छा प्रकट की। यह बात बैण्ड वालों से भी छिपाकर रखी गई। उन्हें इस बात का कोई अनुमान भी न था कि उन्हें अपना बैण्ड राजपरिवार के लिये बजाना होगा जब तक कि वे ट्रेन में सवार होकर सेंड्रिंगहेम में पहुँचे जहाँ सम्राट का ग्रामीण क्षेत्र में एक महल था। उस दिन संध्या समय के कार्यक्रम में सूजा ने प्रयाण-गीतों के अतिरिक्त अमरीकी गिरजाघरों के गीतों की धुनें बजाईं तथा प्लांटेशन सांग्स (अमरीका में हब्शियों द्वारा गाये जाने वाले गीत) और नृत्य-गीत की धुनें बजाईं। सम्राट ने बार-बार उन गीतों की धुनों को दुबारा बजाने के लिये कहा। फिर उन्होंने सूजा को विक्टोरियन आर्डर के मेडल से विभूषित किया।

इंग्लैण्ड में प्रकाशित एक छोटी ब्रासबैण्ड जर्नल (पत्रिका) में एक लेख छपा कि सूजा को "प्रयाण-गीतों का सम्राट" उसी प्रकार कहा जा सकता है जैसा कि जान स्ट्रास को 'वाल्ज सम्राट" माना जाता था।

सूजा ने विदेश की यात्रा पूरी की और फिर अपने देश को लौट आया। उसने न्यूयार्क में जहाज से उतरते ही उन सभी बातों के बारे में विचार किया कि उसे कहाँ-कहाँ उपस्थित होना पड़ा था। यकायक उसे अपने मस्तिष्क में बैण्ड की एक सुरीली आवाज सुनाई देने लगी। वह एक ऐसी मेलोडी (मधुर गीत) थी जिसकी अन्तर्ध्वनि उसके हृदय में घर लौटते समय बराबर होती रही। वह उस मेलोडी को तनिक भी न भूल सका क्योंकि वह गीत उसे अत्यधिक आत्म-विभोर कर चुका था। उसने घर पहुँचकर कल्पना पर आधारित उस

मेलोडी को संगीत-बद्ध किया। वह दिन प्रतिदिन अपनी समुद्री यात्रा में उस मेलोडी की अन्तर्ध्वनि सुनता था जिसे उसने ज्यों का त्यों लेखबद्ध करने का प्रयत्न किया। वह सबसे अधिक लोकप्रिय प्रयाण गीत था, गीत का नाम था **दी स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स फौरएवर**। उस गीत को राष्ट्रीय प्रयाण गीत जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। एक फ़ांसीसी महिला ने एक बार सूज़ा से कहा कि उस प्रयाण-गीत की धुन ऐसी लगती है कि कोई अमरीकी उकाब ऑरोरा बोरियेलिस की ओर तेजी से उड़ रहा हो।

सूज़ा ने इंग्लैण्ड के श्रोताओं को संसार के सबसे अच्छे श्रोताओं जैसा माना। उसने लिखा कि हमारे बड़े नगरों के कुछ संगीत प्रेमी इंग्लैण्ड के संगीत प्रेमियों की समता कर सकें लेकिन मेरा यह विश्वास है कि इंग्लैण्ड वासियों के समान अच्छे श्रोता नहीं बन सकते। संगीत के क्षेत्र में ख्याति बढ़ाना शिक्षित अंग्रेजों के लिये महत्वपूर्ण कार्य है। इंग्लैण्ड में श्रोता निष्पक्ष और बड़े उत्साही होते हैं।" उसने यह भी विचार व्यक्त किया कि "एक अंग्रेज किसी रचना को उसके संगीत के मूल्य के अनुसार आंकते हैं।"

लेडीज होम जर्नल के तत्कालीन सम्पादक एडवर्ड बॉक ने सूज़ा को इस बात के लिये पाँच सौ डालर और कापीराइट के अधिकार देने की इच्छा प्रकट की कि सूज़ा एस० एफ० स्मिथ का गीत **माई कण्ट्री इस्ट्स आफ दी** को नया स्वर दे दें जो अब तक **गॉड सेव दी किंग** की तर्ज पर गाया जाता था। लेकिन सूजा ऐसा करने पर राजी नहीं हुआ। सूज़ा यह महसूस किया करता था कि संगीत चाहे अच्छा हो या बुरा या अरुचिकर ही क्यों न हो फिर भी वह संगीत उस ट्यून को नहीं बदल सकेगा जिसे जनता ने कई वर्षों से अपनाया है।

दूसरी बार सूज़ा अपना बैण्ड लेकर इंग्लैण्ड गया। बैण्ड के लीडर ने सम्राट के लिये अभिनन्दनीय प्रयाण-गीत लिखा जिसका शीर्षक था—**इम्पीरियल एडवर्ड**। इस बार बैण्ड का कार्यक्रम सम्राट के विंडसर महल में आयोजित किया गया। सूज़ा को यह बताया गया कि बच्चों को जब यह मालूम हुआ कि वह आ रहा है तो उन्होंने अपने शिशु-विहार (नर्सरी) में ग्रामोफोन

पर सूजा के बैण्ड के रिकार्ड बजाकर अपना सामूहिक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया है। उन्हें उक्त शाम को वास्तविक संगीत-कार्यक्रम में उपस्थित होने की अनुमति न थी। इन्हीं बच्चों में से एक बच्चा बड़ा होकर इंग्लैण्ड का किंग जार्ज अष्टम हुआ।

इस संध्या को सूज़ा को यह सूचना मिली कि सम्राट कार्यक्रम के अन्त में अमरीकी राष्ट्रीय गीत सुनना चाहते हैं। इसलिये सूज़ा ने अपने साथियों को यह हिदायत कर दी कि हमें अपना राष्ट्रीय गीत सुनाना है और इस गीत के समाप्त होते ही बिना किसी अवरोध के मध्यम तथा लम्बे स्वर में **गॉड सेव दी किंग** गीत की धुन बजानी है। कार्यक्रम समाप्त हो गया और प्रशंसा के बाद खामोशी छा गई। फिर सूज़ा ने अपने व्यक्तियों को सामने खड़ा किया। सिगनल दिखाया गया। ज्यों ही **स्टार स्पेंगल्ड बेनर** का गगन-भेदी पद विंडसर महल के विशाल कक्ष में गूंजने लगा त्योंही सम्राट उठे और ध्यान-मग्न हो गये। उनके साथ ही श्रोतागण उठकर खड़े हो गये। और उस पद के अन्त में.....''एण्ड दी होम आव दी ब्रेव'' के बाद बैण्ड ने दीर्घ स्वर में **डिमीन्यूनडो** प्रस्तुत किया। उसके बाद बहुत धीमे स्वर में वही धुन ब्रिटिश राष्ट्रीय गीत में परिणित हो गई। प्रारंभ में वह धुन ऐसी थी कि अधिक ध्यान देकर सुननी पड़ी और फिर **गॉड सेव दी किंग** की धुन बजाई गई। यह गीत अमरीका वासियों के लिये **माई कण्ट्री इट्ज ऑफ दी** के समान ही है। सूजा सम्राट को देख रहा था और वह सम्राट के मुख पर परिवर्तित भावनाओं को समझ रहा था। सगीत के स्वर प्रभावकारी ढंग से बढ़ते ही गये, सूज़ा को यह लगा कि सम्राट कुछ विचार कर रहे हैं: ''ये परदेशी ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि मैं और मेरा देश सुरक्षित रहे।'' सूज़ा को महसूस हुआ। उस शानदार और महत्वपूर्ण क्षण से वह गौरवान्वित हो रहा था। ''वह संयुक्त राज्य अमरीका के पाँच प्रेसीडेंटो के बैण्ड का लीडर रहा। उसे यह महसूस हुआ कि महत्त्वपूर्ण स्थान व्यक्ति की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा देता है और बड़े पद के उत्तरदायित्व ही व्यक्ति को सर्वसाधारण से ऊँचा कर देते हैं।

इंग्लैण्ड में एक दूसरा कंसर्ट (संगीत-समारोह) आयोजित किया गया जिसकी कहानी उसके बैण्ड के व्यक्तियों की योग्यता को प्रकट करती है। वे इंग्लैण्ड पहुँचे और यात्रा करने लगे। उन्होंने अपनी एक यात्रा में स्ट्रट-फोर्ड-ऑन-एवन के शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर में कंसर्ट (सामूहिक संगीत कार्यक्रम) प्रस्तुत किया। उसी समय वारविक की काउन्टिस ने उससे समीप ही वारविक महल में अतिथियों के सम्मुख अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने का आग्रह किया। लेकिन उसके कार्यक्रम में कोई गुंजाइश न थी अतएव उन महिला ने फिर निवेदन किया कि वे अर्धरात्रि में अपने संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करें। उस रात आँधी आ गई और पानी बरसने लगा। बैण्ड मोटर-गाड़ियों से वहाँ पहुँचाया गया किन्तु जिस कार में संगीत की सामग्री थी, वह पहाड़ी पर फिसल कर नियंत्रण के बाहर हो गई। संगीत समारोह का कार्यक्रम समाप्त भी हो गया और वह संगीत-सामग्री वहाँ न पहुँच सकी। बैण्ड की प्रत्येक धुन केवल स्मृति के सहारे बनाई गई।

लगभग प्रत्येक व्यक्ति को ही यह पता लग गया कि सूजा कैसा है लेकिन एक बैंक में प्रसिद्ध बैण्ड-लीडर गया और उसे पहिली बार पहिचाना न जा सका। उस जगह बैण्ड का एक सप्ताह से कार्यक्रम चल रहा था और बैण्ड के मैनेजर कई हजार डालरों का चैक लेकर सूजा के साथ चैक भुनाने बैंक गये थे।

खजांची ने सूजा से कहा : "आपकी शनाख्त करानी है।"

उसके बाद बैण्ड मास्टर खजांची की ओर पीठ करके खड़ा हो गया। उसने अपनी बाँहें उठाईं और एक अदृश्य बैण्ड का संचालन करने लगा। उसने मुँह से सीटी बजाई जिससे **द स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स फॉर एवर** की धुन निकल रही थी। क्लर्कों की हंसी फूट पड़ी और उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। उनमें से एक ने खजांची से कान में कुछ कहा और उस चैक का भुगतान कर दिया गया।

सूजा ग्रीष्म ऋतु में अपनी यात्राओं और बैण्ड के कार्य से अवकाश पाता तो अपनी हॉबी में लग जाता। जब वह लड़का था तब वह अपने पिता के

साथ शिकार खेलने जाया करता था। यद्यपि उसे दक्षिणी केरोलीना के सुरक्षित जंगलों में बत्तख, हिरन और बटेर का शिकार करना पसंद था फिर भी वह उसे जाल बिछाकर शिकार करना अधिक अच्छा लगता था। वह जिन्दा कबूतरों की अपेक्षा मिट्टी के कबूतरों को मारना अधिक पसन्द करता था और मिट्टी की चिड़ियों का शिकार करना उसे बहुत अच्छा लगता था। वह पक्का निशानेबाज था। उसे घोड़े की सवारी करने का शौक था। उसने प्रथम महायुद्ध के दौरान ग्रीष्म ऋतु में घोड़े की पीठ पर एक हजार मील की यात्रा के लिये प्रस्थान किया था। वह अपने घर पर भी घोड़े रखता था।

जब वह बासठ वर्ष का था, एक अन्य अमरीकी संगीतकार मित्र जॉन एल्डन कारपेन्टर ने उससे निवेदन किया कि नौ सेना (नैवल) स्टेशन के बैण्ड में उसकी सहायता की आवश्यकता है। उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह वहाँ पहुँच सकेगा? वह वहाँ गया। फलस्वरूप उसने नौसेना में लेफ्टीनेंट के पद पर संगीत का इंचार्ज होकर काम करना आरंभ कर दिया। उसने ३५० व्यक्तियों का एक बैण्ड तैयार किया जिसमें कमाण्डर, संगीत डायरेक्टर और सर्जन थे और फिर उसने नैवल स्टेशन के प्रत्येक रेजीमेन्ट के लिये बैण्ड संगठित किये। वह जहाजों अथवा स्टेशनों को बैण्ड भेजा करता था, जब और जहाँ उनके भिजवाने की आवश्यकता होती थी। उसने युद्धकाल में रेडक्रास और स्वतंत्रता-ऋण आन्दोलन जैसे कार्यों के लिये अपने बैण्ड के कार्यक्रम प्रस्तुत किये और लाखों डालर एकत्र कर लिये।

जब वह युवक था और मैरीन बैण्ड का संचालन कर रहा था, उस समय वह लम्बी दाढ़ी रखता था। वह सोचता था कि दाढ़ी से वह विदेशी दिखाई देता है। अमरीकी संगीतज्ञों को उन दिनों में बहुत कम अवसर मिला करते थे। अमरीका वासियों का यह विचार था कि केवल विदेशी ही संगीत की क्षमता रखते हैं और कई अमरीकी संगीतज्ञों ने इस बात का प्रयत्न किया कि वे विदेशी जैसे दिखें। सूज़ा ने वास्तव में यह सोचा कि उसकी दाढ़ी ने उसके केरियर के बनाने में विशेष सहायता दी है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, वह अपनी दाढ़ी बराबर काटता गया जैसा कि उसके चित्रों से लगता

है। आखिरकार युद्धकाल में उसने अपनी दाढ़ी बिल्कुल ही साफ कर दी। सूजा कहा करता था कि उसकी दाढ़ी ने ही युद्ध जीता है। वह अपनी इस बात को इस प्रकार समझाता था कि जब कैसर ने यह सुना कि लोगों ने अपनी दाढ़ी काट दी है तो कैसर ने कहा कि ऐसे लोगों से लड़ना बेकार ही है जो इस प्रकार का त्याग कर सकते हैं। लेकिन इसका कारण यह था कि वह आयु में कम लगे। उसने बासठ वर्ष की आयु में नौ सेना में काम प्रारंभ किया जबकि उस समय यह नियम था कि सैंतीलीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति को भरती न किया जाय। लेकिन सूज़ा इस नियम के अपवाद रहे। नौ सेना को उनकी आवश्यकता थी। शायद उन्होंने यह सोचा कि यदि वह दाढ़ी साफ कर दें तो वह सैंतालीस वर्ष से कम आयु के ही लगेंगे।

सूज़ा को अपने बैण्ड रखने का काफी अनुभव हो चुका था और. सूज़ा ने यह देखा कि अमरीकी संगीतज्ञों की संख्या बराबर बढ़ रही है। जब उसे युवावस्था में मैरीन बैण्ड के संचालन का कार्यभार मिला, उस समय बैण्ड में छः व्यक्तियों से अधिक अमरीका के मूल निवासी नही थे। बारह वर्ष बाद जब उसने अपना बैण्ड संगठित किया तो उसने सभी अमरीकावासियों को ही उसमें भरती करने का प्रयत्न किया। शुरू में उसने अपने बैण्ड में विभिन्न वाद्य-यंत्रों के सर्वोत्तम वादकों को रखा, भले ही उनका जन्म विदेश में क्यों न हुआ हो परन्तु समय के साथ-साथ अधिकांश अमरीकावासियों को ही उस बैण्ड में स्थान मिल गया। वह उस समय बड़ा प्रसन्न होता था। जब उसके बैण्ड का पूर्व सदस्य अपने पुत्रों को उसकी देखरेख में बैण्ड में भरती होने के लिये भेजता था।

सूज़ा प्रसन्न चित्त और विनोदी स्वभाव का था। वह उदार मेजबान था। उसे अकेला भोजन करना बिलकुल अच्छा न लगता था। उसके व्यक्तित्व में आकर्षण था, लोग उसकी ओर खिंच जाते थे। वह संचालन कार्य में कठोर ौर अनुशासन का हामी था। फिर भी उसके लोग उसे बहुत पसन्द करते थे। बैण्ड के लोगों में भाई-चारे की भावना थी। जब बैण्ड में अस्सी या सौ

व्यक्ति हो जाते तो वे आपस में ही मनोविनोद के लिये टीम बनाकर गेंद खेला करते थे।

यदि सूजा अपने बचपन में ही अध्ययन करने के लिये विदेश चला गया होता जब उसे ऐसा अवसर मिला था कि वह "प्रयाण-गीतों का सम्राट" कैसे बन पाता। वह कदाचित किसी अन्य प्रकार का ही संगीतकार होता। वह जिन हार्मोनी का प्रयोग करता था, वे प्रायः बहुत सरल प्रकार की होती थीं। वे टोनिक, डोमीनेण्ट और सब डोमीनेण्ट होती थी, ये हार्मोनी इस प्रकार की होती थी जिनके बारे में संगीतविद् यह महसूस करते है कि जब गीतकारों को अधिक संगीत नहीं आता तो वे इसी प्रकार की हार्मोनी का प्रयोग करते हैं। फॉस्टर की हार्मोनी (स्वर-लहरियाँ) कुछ इसी प्रकार की थीं। परन्तु प्रत्येक संगीतज्ञ के लिये पूर्ण कुशल होने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी संगीत के विद्वान अध्यापक यह भूल जाते है कि संगीत का वास्तविक आकर्षण उसकी अपनी आत्मा (स्प्रिट) है, उतार-चढ़ाव नहीं। सूजा के प्रयाण-गीतों में एक ऐसी श्रृंखला और आवेग है कि श्रोताओं के हृदय प्रयाण-गीतों में रम जाते हैं। कई बार सूजा के प्रयाण-गीतो ने थके हुये लोगों की थकान दूर की है। उन गीतों से कठिन समय में यात्रा करने वाले लोगों के थके पैरों को आराम मिला है। उन गीतों की रिद्म और लय आनन्ददायक होती है। सूजा यह विचार किया करता था कि संगीत में 'विनोदकारी" भावना संसार के लिये विशेष उपयोगी हो सकती है बजाय इसके कि संगीत की केवल तकनीकी ढंग से ही प्रशंसा की जाय। वास्तव में संगीत का मूल्य प्रमुख होता है। बच्चे को सर्वप्रथम संगीत से अधिक आनन्द मिलता है और उसके बाद वह संगीत की प्रशंसा करता है। सूजा ने सदैव ही अपने कार्यक्रमों को विनोद की दृष्टि से व्यवस्थित किया। यही कारण था कि वह अधिक लोकप्रिय रहा। संगीत में विनोद की भावना उसके सीखने से अधिक श्रेयस्कर समझी जाती है।

एक बार जर्मनी में यह कहा गया कि उसके बैण्ड ने बहुत अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया और उसके संगीत में विशेष **माधुर्य** था। यह कहना मूर्खता ही

था क्योंकि इस विचार से केवल तुलना की भावना प्रकट होती है। कुछ लोगों को मिठाई अच्छी लगती है और कुछ लोग अचार पसन्द करते हैं। इन दोनों में तुलना का कोई धरातल ही नहीं। अलबत्ता कोई दोनों को ही अलग-अलग समय पर पसन्द कर लेते हैं।

सूजा को हेलीन्कोन स्यूबा की आवाज अच्छी नहीं लगी जो मेरीन बैण्ड में पहिले प्रयोग की जाती थी। यह एक बड़ा वाद्य-यंत्र होता था जिसे बैण्ड बजाने वाले के बदन पर बाँध दिया जाता था। बजाने वाला उसे सिर तक उठाया करता था। उसने वाद्य-यंत्र तैयार करने वाले मिस्त्री को समझाया कि ट्यूब एक लम्बे आकार की सीधी घण्टी के साथ इस प्रकार बनाया जाय कि उसकी आवाज कुल बैण्ड में छा जाये जैसे कि किसी परत पर बर्फ जमा होती है। ऐसा वाद्य-यंत्र बनाया गया और उसका आज भी प्रयोग होता है। इस वाद्य यंत्र को सूजाफोन कहते हैं।

लेफ्टिनेंट कमाण्डर सूजा ने 'केण्ड म्यूजिक' शब्द की रचना की। उसने यह कभी महसूस नहीं किया कि संगीतज्ञों से व्यक्तिगत ढंग से संगीत सुनने की अपेक्षा 'केण्ड म्यूजिक' को स्थान मिलने लगेगा। जब वह लगभग पचहत्तर वर्ष का था, उसे यह सूचना दी गई कि एक मोटर में यांत्रिक संगीत की सज्जा व्यवस्थित कर ली जायेगी। उसका विश्व-विख्यात प्रयाण-गीत एक मोटर से सेना की टुकड़ियों का पथ-प्रशस्त करेगा। उसने पूछा :

"क्या मोटर भी कदम से कदम मिलाकर चल सकेगी ?"

सूजा को यह विश्वास नहीं हुआ कि संगीत में राष्ट्रीयता है। उसने महसूस किया कि संगीतकार राष्ट्रीय संगीत के ऐसे लेखक होते हैं जो केवल अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और जीवन के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते हैं। शायद उसका यह कहना ठीक ही था। नार्वे में रहने वाला व्यक्ति बर्फ से आच्छादित स्थल के दृश्य को देखकर जैसा महसूस करेगा उससे कहीं अलग विचार उस व्यक्ति का होगा जो भू-मध्य रेखा के समीप किसी जंगल में रह रहा हो। इन दोनों व्यक्तियों के वायुयानों के बारे में भी अलग-अलग विचार होंगे। सूजा ने कहा, "आप मेलोडी को ऐसे नहीं

बाँध सकते जैसा कि आप किसी देश को सीमाबद्ध कर लेते हैं। संगीत की रचना कई बोलियों में हो सकती है किन्तु उनकी भाषा व्यापक होती है।" उसने अपनी कई यात्राओं में यह अनुभव किया कि लोगों की संगीत के प्रति भावनाएँ एक-सी ही होती हैं, चाहे भौगोलिक स्थिति के कारण लोग अलग-अलग ही क्यों न हों। उसने कहा कि जब कभी उसने हँसाने वाले संगीत को सुनाया तो लोगों को उसी जगह हँसी आई जहाँ उसके संगीत में हँसी थी, चाहे दर्शक स्पेन के रहे हों अथवा उत्तरी डेकोटा के।

उसका आनन्दमय और व्यस्त जीवन था और उसने आनन्ददायक और व्यस्त जीवन के लिये संगीत की रचना की। उसने कभी उदास करने वाले संगीत की रचना नहीं की परन्तु यदि कभी ऐसा अवसर भी आया तो उसने इस प्रकार का भी संगीत प्रस्तुत किया। उसका विचार था कि उसे और उसके बैण्ड को इसलिये सफलता मिली कि उसने सदैव प्रसन्नतादायक संगीत ही प्रस्तुत किया। सूज़ा कहा करते थे कि संसार को सदैव प्रसन्नतादायक संगीत की आवश्यकता है।

जान फिलिप सूज़ा वाशिंगटन, डी० सी में ६ नवम्बर, १८५४ को पैदा हुये और रीडिंग, पेन्सिलवेनिया में ६ मार्च, १९३२ को स्वर्गवासी हुये।

विक्टर हरबर्ट

"आप सदैव ही यथाशक्ति सर्वोत्तम कार्य करें, चाहे वह कार्य कैसा ही क्यों न हो।"

सौ वर्षो से पहिले की बात है। उस समय एक गुणी आयरलैंड वासी सेम्युअल लवर रहा करते थे। उनके नाती-पोते उन्हें कभी नहीं भूल सकते। लवर चित्रकार, कवि, गीतकार, गायक, नाटककार, विनोदी, संगीतज्ञ, अभिनेता और अकेले ही मनोरंजन करने वाले कलाकार थे। उन्होंने शानदार ऑपेरा तथा कोमिक ऑपेरा लिब्रेटो लिखे और उन्हें अपनी **हेण्डी एण्डी** नामक पुस्तक के कारण कुशल उपन्यासकार के रूप में ख्याति मिली। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि उनका नाती बड़े स्वाभिमान से उनके बारे में बात किया करता था। उनमें किसी भी गीत को याद रखने की अपूर्व क्षमता थी और उनके पोते विक्टर हरबर्ट में भी गीत याद रखने की विलक्षण प्रतिभा थी लेकिन वह गीत के स्रोत को सदैव ठीक नहीं बता पाता था।

सेम्युल लवर अपनी असाधारण स्मृति-शक्ति को किस प्रकार उपयोग में लाता था—इसके बारे में एक रोचक कथा है। उसने अपने समकालीन महान वायलन वादक पागानिनी के चित्र को स्मृति से तैयार किया। वायलिन वादक का असाधारण व्यक्तित्व था और उसका चेहरा भी बड़ा विचित्र था। वायलिन वादक लम्बे, पतले-दुबले शरीर का व्यक्ति था। उसकी नाक लम्बी थी। उसका भोला चेहरा गोरा था और उसके सिर पर घुंघराले काले बाल थे। वह वायलिन को इतनी अधिक उदास भावनाओं से बजाया करता था कि कुछ लोगों ने यह महसूस किया कि उसे वास्तव में दैवी शक्तियाँ प्राप्त हैं और वास्तव में कोई दैवी शक्ति ही इतना भावनापूर्ण वायलिन बजा सकती है। पागानिनी ने डबलिन में अपने वायलिन के कार्यक्रम को प्रस्तुत किया तभी सेम्युल लवर की तीव्र इच्छा हुई कि असाधारण आकृति के संगीतज्ञ का चित्र

क्यों न बजाया जाय। वायलिन वादक ने चित्र बनवाने की सहमति दे दी और वह चित्रकार के पास कई बार बैठा किन्तु चित्रकार को उसका चेहरा गम्भीर उदास दिखा। चित्रकार ने यह प्रयत्न किया कि किसी-न-किसी प्रकार संगीतज्ञ को प्रसन्न चित्त कर सके। उसने वायलिन वादक से कहा कि उसे अपनी संगीत रचना में उन्मुक्त भाव से **मन की मौज** बहुत अच्छी लगती है और वह अपने गीत को गुनगुनाने लगा। पागानानी को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा :

"क्या आप कभी स्ट्रासबर्ग गये हैं ?"

"कभी नहीं।"

"फिर आपने यह गीत कहीं सुना है ?"

'मैंने आपको इस गीत की धुन बजाते सुना है।"

"जी नही—ऐसा कभी नहीं सुन सकते जब तक कि आप स्ट्रासबर्ग न हो आये हों।"

"जी हाँ—मैंने इस गीत की धुन लन्दन में सुनी थी।"—चित्रकार ने जोर देकर कहा।

"मैंने स्ट्रासबर्ग में उस गीत की रचना की थी और मैंने उसे लन्दन में कभी नही सुनाया।"—वायलिन वादक ने भी बार-बार यही कहा।

"क्षमा करें।"—लवर कहता ही गया और उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि उसने वायलिन वादक के मन में एक विचार उत्पन्न कर दिया है। उसने यह कहा कि आपने यह धुन ऑपेरा-हाऊस में सुनाई थी।

"मुझे याद नहीं आता।"

"वह रात का समय था। आपने पॉस्टा के साथ **ओब्लिगाटो** की धुन बजाई।"

"पॉस्टा ! जी हाँ, उस रात को उन्होंने कितने शानदार ढंग से गीत सुनाया।"

"और आपने भी कितने अच्छे ढंग से वायलिन बजाया।"

पागानिनी ने बधाई स्वीकार कर ली और कहता गया "लेकिन इससे

आपका क्या तात्पर्य है ! "जी हाँ, मैंने उस समय वह धुन बजाई थी लेकिन लंदन में केवल एक बार ही वह धुन बजाई गई है। आप भी संगीतज्ञ लगते हैं। यह ऐसी धुन नहीं है कि सरलता से याद की जा सके।"

लवर ने अधिक प्रिय ढंग से यह समझाया कि उस गीत को फिर दोहराने के लिये आग्रह किया गया था और इस प्रकार मुझे वह धुन दूसरी बार सुनने का अवसर मिला।

"जी हाँ, लेकिन मैं कहता हूँ कि फिर भी उस धुन को याद रखना सरल नहीं है जब तक कि व्यक्ति संगीतज्ञ न हों।"

कुछ वर्षों बाद सेमुअल लवर ने एक मित्र के प्रति अधिक उदारता दिखाई फलस्वरूप अपना पर्याप्त धन खो बैठा और उसे फिर शीघ्र ही धन कमाना था। अतएव उसने अमरीका आने का निश्चय कर लिया। अमरीका ऐसे लोगों को सदैव आश्रय देता रहा है जो या तो स्वतंत्र बनना चाहते हैं अथवा प्रचुर धन कमाना चाहते हैं। लवर अमरीका में बहुत से व्यक्तियों से परिचित थे। उन परिचित व्यक्तियों में अमरीकी लेखक हॉथार्न भी थे और इसलिये उनका वहाँ सहृदयतापूर्ण स्वागत किया गया।

उन्होंने शीघ्र ही एक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत करने की व्यवस्था थी। उस कार्यक्रम के लिये एक-एक डालर के टिकट रखे गये। हाल सुन्दरियों और फैशन वालों से खचाखच भर गया और कई व्यक्ति निराश लौट गये। न्यूयार्क हैरल्ड ने यह रिपोर्ट दी :

"मिस्टर लवर ने आठ बजे झुककर दर्शकों को अभिवादन किया और दर्शकों ने अधिक सहानुभूति तथा प्रशंसा से करतल ध्वनि से उसका स्वागत किया। यह बताना कठिन है कि उन्होंने किस प्रकार का संगीत प्रस्तुत किया। उस संगीत के रूप को किसी भी प्रकार स्पष्ट करना उसके प्रति अन्याय ही है क्योंकि उस संगीत की बारीकियों को नहीं समझा जा सकता। इतना कहना पर्याप्त होगा कि उस कार्यक्रम में हास्य, गीत, मजाक और रचनाओं का पाठ आदि अधिक सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया था जिसमें कभी-कभी हृदय-विदारक दुःख की झलक भी थी। यह कार्यक्रम ऐसी मधुर शैली में

प्रस्तुत किया गया था कि यदि एक बार श्रोता मनोविनोद से उछल पड़ते तो दूसरी बार आँखों में आँसू भरकर दुःखी हो जाते। वे सभी गीत उसकी अपनी रचनाएँ थीं और इस देश के लिये केवल दो या तीन रचनाओं को छोड़ कर सभी रचनाएं नई थीं।. . . . ."

मिस्टर लवर अमरीका में दो वर्ष रहे और उन्हें अपने कार्यक्रमों में अपूर्व सफलता मिली। उन्होंने अमरीका में कई नगरों का भ्रमण किया। उन्होंने वहाँ "आइरिश ईवनिंग्स" के नाम से अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये और उसके बाद वे इंग्लैड लौट आये। उन्होंने लन्दन के पास ही सेवन ओक्स में अपना घर बना लिया। कुछ समय तक वे मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करते रहे और फिर अपने अमरीका में प्रवास के दौरान के अनुभवों के आधार पर "अमेरिकन आइरिश ईवनिंग्स" नामक कार्यक्रम देते रहे। उसके बाद वे जीवन-पर्यन्त लिखते रहे तथा चित्र बनाते रहे।

उनकी पुत्री फेनी का विवाह एडवर्ड हरबर्ट से हुआ। उसके डबलिन में पुत्र हुआ जिसका नाम विक्टर रखा गया। विक्टर दो वर्ष का ही हुआ होगा कि उसके पिता मिस्टर हरबर्ट का देहान्त हो गया। फिर फेनी अपने पुत्र को लेकर इंग्लैण्ड में आकर अपने पिता के साथ रहने लगीं। विक्टर हरबर्ट जन्म से आयरलैण्ड का निवासी था लेकिन वह बचपन में ही कुछ समय आयरलैंड में रह सका। इसी कारण बाद में उसे अपने पिता की अपेक्षा नाना की बहुत याद आती थी।

उस बालक ने अपने नाना के घर काफी संगीत सुना। उसकी माँ भी बहुत अच्छा पियानो बजा लेती थीं और उसके नाना के कई अतिथि भी अच्छे संगीतज्ञ थे। विक्टर को बचपन से ही आयरलैण्ड के लोक गीत सुनने का अवसर मिला था। मिस्टर लवर विक्टर को अपने घुटनों पर झुलाकर अमरीका की कहानियाँ सुनाते थे और न्यूयार्क नगर तथा शानदार नियाग्रा प्रपात के बारे में बताते थे।

जब विक्टर स्कूल जाने के योग्य हुआ तब उसके नाना ने उसकी माता को यह सुझाव दिया कि वह अपने बेटे को लेकर जर्मनी चली जाय जहाँ

विक्टर को कम खर्च में बहुत अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। शायद वे यह भी सोचते थे कि कहीं उनका बेवता कोरा अंग्रेज ही न हो जाय। वे स्वयं इंग्लैण्ड में रहना पसन्द करते थे परन्तु उनके मन में अपने देश आयरलैण्ड के प्रति अटूट भक्ति थी और वे विक्टर के मन में भी आयरलैण्ड के प्रति देश-भक्ति जगाना चाहता था।

मिसेज हरबर्ट इस विचार से सहमत हो गईं। उन्होंने अपना सामान बाँधा और उसमें नहाने के दो पोर्टेबल टब भी रख लिये। और वे अपने पुत्र के साथ जर्मनी के दक्षिण भाग की ओर चल दीं। योरुपवासियों को उनके सामान में नहाने के टब देखकर हँसी आ जाती थी। वे कोन्स्टेंस नामक सुन्दर झील पर बसे एक नगर में आकर रहने लगीं। वहाँ श्रीमती हरबर्ट की एक जर्मन डाक्टर से मुलाकात हुई और उन्होंने उनके साथ विवाह कर लिया। उसके बाद वह परिवार स्टटगार्ट में आकर रहने लगा। इस प्रकार उस आयरलैण्ड के बालक को जर्मनी में शिक्षा मिली और वह बाद में एक दिन अमरीका में रहने लगा तथा वहाँ वह एक महान संगीतकार बना।

वह स्कूल जाने लगा और अपनी कक्षा में आगे रहना चाहता था। उसे खेल पसन्द थे। उसकी माँ जब कभी उसे कोई वाद्य-यंत्र सीखने के लिये कहती तो वह इस उलझन से अपने आपको बचाना चाहता था। शायद इसका कारण यह हो कि उसके दूसरे पिता डाक्टर थे और यह तै किया गया था कि विक्टर को डाक्टरी का काम ही करना है। वह इस विचार से सहमत था और उसने यह कभी नहीं सोचा कि वह एक संगीतज्ञ हो सकेगा।

वहाँ एक बहुत ही अच्छा वायलिन वादक था जो उसके घर आया जाया करता था और विक्टर की माँ की इच्छा होती थी कि यदि उसका पुत्र वायलिन बजाना सीख ले तो कितना अच्छा है क्योंकि वह इस योग्य हो जायेगा कि वायलिन से शानदार और सुरीले स्वर निकाल सकेगा। उसकी समझ से यह ठीक ही था कि उसका पुत्र कम से कम एक वाद्य-यंत्र बजाना सीख ले। लेकिन वह कोई भी वाद्य-यत्र बजाना सीखना न चाहता था। सेलो (एक प्रकार का वायलिन बाजा के सीखने में काफी समय लगने की संभावना थी और वह अपने अध्ययन के बाद कुछ समय खेल-कूद तथा मनोरंजन

में विताना चाहता था। वह अपने दैनिक कार्यों में बराबर आगे बढ़ता ही रहता और किसी दिन डाक्टर बन जाता और शायद उसे यह भी पता न होता कि वह संगीतज्ञ बन सकेगा लेकिन एक ऐसी घटना हो गई कि वह अपनी माँ की इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने के लिये तत्पर हो गया।

उसके स्कूल बैण्ड को किसी उत्सव की तैयारी के लिये एक अन्य बांसुरी-वादक की आवश्यकता हुई। विक्टर हरबर्ट को उस जगह काम करने का आदेश मिल गया और उससे यह कहा गया कि वह दो सप्ताह में डोर्नाजेट्टी के **द डाटर आव द रेजीमेण्ट** गीत की प्रारंभिक पंक्ति की धुन बांसुरी पर सीख ले। जब उसने उसे सीखने का निश्चय कर लिया तब वह अपने काम में लग गया। और उसने कितना अधिक कार्य किया। उसे दो सप्ताह में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये वह गीत ही सीखना न था बल्कि उसे वह वाद्य-यंत्र बजाना भी सीखना था।

उसने बांसुरी बजाना सीख लिया। उत्सव समाप्त हो गया बांसुरी पर उस गीत की धुन भी बजी लेकिन उन दो सप्ताहों का वह समय उसकी माँ के लिये कितना विचित्र था। उस घर में बांसुरी की लगातार तीखी आवाज होती थी जबकि उसे सेलो के मध्यम और गंभीर स्वर अच्छे लगते थे। फिर वह यह भी सोचती थी कि वह कैसा विचित्र वाद्य-यंत्र है जिसे बजाने के लिये उसके पुत्र को बाध्य किया गया है। वह कितनी छोटी बांसुरी थी। फिर भी उससे विक्टर के संगीत का प्रारंभ हुआ।

कुछ समय बाद उसका एक लड़के से परिचय हुआ जिसे वायलिन बजाना आता था। उसे अपने नये मित्र का वायलिन बजाना अच्छा लगता था और जब उसके मित्र ने विक्टर को पिकोलो-वादकों के प्रति उसकी माँ के विचार बताए तो विक्टर ने अन्ततः अपनी माँ से एक सेलो खरीदने के लिये निवेदन किया। विक्टर यह ठीक ही समझता था कि केवल पढ़ाई तक ही सीमित रहा जाय क्योंकि उसने बाद में यह कहा है कि जब से उसने वायलिन-सेलो को सीखना आरंभ किया, उसकी पढाई के काम में हानि हुई। वह अपनी कक्षा के प्रथम पाँच विद्यार्थियों में से न रह सका।

वह लगभग पन्द्रह या सोलह वर्ष का ही था कि उसने सेलो का अभ्यास करना प्रारंभ कर दिया। उसे अपने वायलिन बजाने वाले मित्र के पिता के प्रभाव से उस समय के सर्वोत्तम वायलिन वादकों में से एक वायलिन वादक के शिष्य बनने का अवसर मिला। वह अपने गुरू के घर एक वर्ष से अधिक समय तक रहा और इससे उसे अधिक लाभ हुआ। वह अपने गुरू की देखरेख में रहता था जिससे वह कभी अशुद्ध न बजा सका। उसकी निरंतर और शीघ्र प्रगति होती गई। वह शीघ्र ही ओरकेस्ट्रा में काम करने के योग्य बन गया। इस प्रकार उसकी शिक्षा में उन्नति होने लगी क्योंकि उसे लिज्ञ, ब्रेहम्स, रूबिनस्टीन, सेण्ट-सेन्स, डेलबिस जैसे महान संगीतज्ञों के नेतृत्व में बजाने का अवसर मिलता रहा।

कुछ वर्षों तक हरबर्ट योरुप में यात्रा करता रहा और ओरकेस्ट्रा में भाग लेता रहा। वह कभी-कभी कंसर्ट (संगीत कार्यक्रमों) में अपना सोलो कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता था। एक बार ड्रेसडेन में वह थियेटर हाल में समय से पहिले पहुँच गया और उसने पियानो छेड़ना शुरू कर दिया। उसने कभी पियानो बजाना नहीं सीखा था लेकिन उसने अपने आप ही थोड़ा बहुत बजाना सीख लिया था। ओरकेस्ट्रा का एक दूसरा संगीतज्ञ उसके पास आया और उससे कहने लगा :

"तुम्हे गीतों की रचना करनी चाहिये।"

शायद यह पहिला अवसर था जब युवक विक्टर हरबर्ट के मन में गीतों की रचना का विचार आया। उसे संदेह था कि क्या उसमें ऐसी प्रतिभा है। लेकिन उसके मित्र ने कहा कि उसमें ऐसी प्रतिभा है और उसे समय नष्ट न करके संगीत की रचना करना प्रारंभ करना चाहिये। उसके कुछ समय बाद हरबर्ट को स्टटगार्ट में कोर्ट आपेरा में प्रथम वायलिन वादक का स्थान मिल गया : और फिर उसने अपने सहयोगी संगीतज्ञ की सलाह पर एक प्रोफेसर से संगीत रचना का अध्ययन गंभीरता से प्रारंभ कर दिया। उन प्रोफेसर महोदय ने उसे हार्मोनी (समताल), कांउटर प्वाइंट (सुरसंगति) और ओरकेस्ट्रेशन (स्वर या साज मिलाने की क्रिया) के बारे में ठोस ज्ञान दिया।

इसके साथ-साथ उसे सेलो और ओरकेस्ट्रा के लिये पुरानी धुनों को बजाने के लिये शिक्षा दी गई। उसकी इस प्रकार कुछ ट्रेनिंग हो गई और फिर उससे कहा गया कि वह सेलो और ओरकेस्ट्रा के लिये पाँच मूवमेण्ट (गतियों) में वाद्य-संगीत सम्बन्धी रचना करे। वह रचना ऐसी बनी कि उसे सर्वसाधारण के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता था और उस रचना के समय तक वह केवल चार महीने ही अध्ययन कर पाया था।

विक्टर हरबर्ट सदैव कठोर परिश्रम कर सकता था। जब उसने रचनाएँ प्रारंभ कर दीं तो फिर उसने यह कार्य रोका नहीं। साथ ही साथ वह यह भी जानता था कि वह किस प्रकार मनोविनोद करे। स्टगार्ट में जब वह कोर्ट ओपरा में वायलिन वादक का काम कर रहा था, उस अवधि में नगर का एक अधिक लोकप्रिय नवयुवक समझा जाने लगा। वह लम्बे कद का था। उसका चेहरा आकर्षक था। वह देखने में सुन्दर लगता था। वह आदत से उदार था, स्वभाव से हंसमुख। वह सदैव एक अच्छी कहानी सुनाने के लिये उत्सुक रहता था।

उस ओपेरा में एक सुन्दर युवती सम्मिलित हो गई। उसका शरीर प्रतिमा सदृश्य था तथा उसका कण्ठ सुरीला था। उस प्रथम वायलिन-वादक का उस लड़की से प्रेम हो गया और उन दोनों ने अपना विवाह तय कर लिया।

इसी समय एक युवक अमरीकी संचालक वाल्टर डेमरोश न्यूयार्क से मेट्रोपालिटन ओपेरा हाऊस के लिये गायकों की खोज के लिये आया। उसे ऐसे व्यक्तियों की खोज थी जो वेगनर की भूमिका में गायक अथवा कलाकार बन सकें। ये कार्यक्रम मेट्रोपालिटन की एक नई विशेषता बनने वाले थे। उसने नयी गायिका को सुना और उसे न्यूयार्क आने के लिये आमंत्रित किया। इस अवसर का लाभ उठाने की अपेक्षा कलाकार ने कहा कि उसे मिस्टर हरबर्ट से विवाह करना है, अतएव वह कदाचित यह कार्य स्वीकार नहीं कर सकेगी। मिस्टर डेमरोश को आश्चर्य हुआ और उन्होंने मिस्टर हरबर्ट का पता किया। उसके बाद उन्होंने गायिका को एक सुझाव दिया। क्या वह मिस्टर हरबर्ट के साथ आना पसन्द करेगी यदि उसे मेट्रोपालिटन ओरकेस्ट्रा में प्रथम

वायलिन-वादक का स्थान दिया जा सके। उसे यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया। उसके साथ वायलिन-वादक का विवाह हो गया और विवाह के कुछ दिन बाद ही वे न्यूयार्क में आ पहुँचे। उस समय विक्टर हरबर्ट सत्ताईस वर्ष का था।

उसे अमरीका उतना ही अच्छा लगता था जितना कि उसके नाना को। वह वहाँ अपने शेष जीवन-भर रहा। वह चारों ओर उत्साह से घूमता रहा और एक सच्चा अमरीकी सैलानी बन गया। जब कभी किसी वायलिन-वादक की आवश्यकता होती, हरबर्ट को आमंत्रित किया जाता। उसने थियोडोर टॉमस के नेतृत्व में फिल-हारमोनिक सोसाइटी के साथ वायलिन बजाया। थियोडोर टॉमस एक संचालक थे, सूजा ने उनकी बहुत प्रशंसा की है। हरबर्ट ने स्वयं एन्टन सीड्ल की अधिक प्रशंसा की। एन्टन सीड्ल मेट्रोपालिटन के जर्मन ओपेरा के संचालक थे। हरबर्ट वायलिन अच्छा बजा लेता था तथा उसे संगीत का विविध प्रकार का अनुभव था जिसके कारण सीडल का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ और हरबर्ट ब्राइटन बीच में ग्रीष्म ऋतु के कंसर्ट (संगीत समारोह) में उसके सहायक संचालक के रूप में काम करने लगा। उसने इसके साथ ही नेशनल कन्जरवेटरी में सेलो सिखाया। उवेरेक भी उसी समय वहाँ थे। (एडवर्ड मेकडूवेल की माँ कन्जरवेटरी की सेक्रेटरी थीं।) हरबर्ट ने चेम्बर संगीत दलों में भी काम किया और सेलो-वादक के रूप में अधिक ख्याति प्राप्त की। मेट्रोपालिटन ओरकेस्ट्रा में उसके साथ ही एक अन्य वायलिन-वादक बैठता था। इसी वायलिन-वादक का पौत्र फर्डीग्रोफे हुआ जो जाज़ म्यूज़िक का व्यवस्थापक बना।

जब अमरीका में रहते हुए हरबर्ट को सात वर्ष हो चुके थे तब उसे प्रसिद्ध बैण्ड मास्टर गिलमोर के निधन के बाद न्यूयार्क में गिलमोर बैण्ड का लीडर बनने के लिये आमंत्रित किया गया। (उसके समय में गिलमोर का बैण्ड अमरीका में सबसे अधिक प्रसिद्ध हो चुका था और गिलमोर स्वयं प्रसिद्ध बैण्ड मास्टर जान फिलिप सूजा की प्रतिमूर्ति था।) इस प्रकार हरबर्ट को गंभीर संगीत से अलग हटने का प्रथम अवसर मिला। उसे सीड्ल के मेट्रोपोलिटन ओरकेस्ट्रा में काम करने का पर्याप्त अनुभव था अतएव बैण्डमैन हरबर्ट को

प्रशंसनीय और पारंगत संगीतज्ञ मानते थे। निस्संदेह उसने सीड्ल की छड़ी (बैण्ड मास्टर की ताल देने की छडी) के इशारे से बैण्ड का संचालन-कार्य बहुत कुछ सीख लिया था। वह रिहर्सल कराने में बहुत कठोर था और सदैव अच्छे किस्म का संगीत पसन्द करता था। वह अपने साथियों को डांट देता था यदि वे उम्दा किस्म का संगीत प्रस्तुत न कर पाते थे। लेकिन यदि उसे इस बात का आभास हो पाता कि वे अधिक काम करके थक गये हैं और उनके लिये रिहर्सल करना कठिन है तो वह सभी कुछ बंद कर देता था और मनोरंजक कहानी सुनाकर उनका मनोविनोद करता था। उसके साथी उसे सदैव पसन्द करते थे। बाद में वह पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा का संचालक बन गया, वहाँ भी लोग उसे उतना ही पसन्द करने लगे। वे उसे हमेशा "अपने लड़कों में से एक लड़के" के समान प्रिय मानते थे। जब हरबर्ट का जन्मदिन आता तो उनके बैण्ड अथवा ओरकेस्ट्रा के साथी हरबर्ट के घर के बाहर एकत्र हो जाते और कोई गीत अलापते। सेण्ट पेट्रिक दिवस के अवसर पर वे सभी हरी टाई पहिनते और इस प्रकार उसके आयरलैण्ड के मूल निवासी होने के कारण सन्मान प्रकट करते क्योंकि हरबर्ट अपने मन में आयरलैण्ड का मूल निवासी होने का गर्व महसूस करता था।

विक्टर हरबर्ट शान-शौकत और सुख से रहना पसन्द करता था। उसके जीवन का एक मुख्य लक्ष्य यह भी था कि वह अच्छी तरह रह सके। वह धन खर्च करना चाहता था और उसे धन खर्च कराते हुये अच्छा लगता था। वह मित्र बनाने में इतना ही पारंगत था जितना कि वह संगीत विद्या में निपुण था। वह हर जगह 'हर दिल अजीज' हो जाया करता था। उसके एक मित्र ने कहा कि हरबर्ट के संगीत और मित्रता में सभी कुछ था। जब वह अपने बैण्ड या ओरकेस्ट्रा को लेकर यात्रायें करता तो वह एक ट्यूबा बजाने वाला नियुक्त कर लेता जिसका विशेष काम यह था कि वह पतली टहनियों की बनी भोजन की टोकरी को ठसाठस भरा रखे। ट्यूबा बजाने वाले को इस काम के लिये विशेष भत्ता मिला करता था। हरबर्ट के लिये यह सोचना सम्भव नहीं था कि वह अपना भोजन छोड़ सके अथवा वह अपने

प्रिय भोजन तथा मदिरा के बिना रह सके। वह इतने मन से अपना भोजन करता था कि भोजन के दौरान व्यवसाय की बात नहीं करता था। वह स्वादिष्ट भोजन की प्रशंसा करता था। उसे महिलाओं के **संगीत समारोह में** कभी-कभी छोटे-छोटे चुटकुलों से बहुत आनन्द आता था जबकि इन संगीत समारोहों में धनी एमेच्युर उसे और उसके साथियों को चेम्बर संगीत में साथ देने के लिये काम में लगा लेते थे। वह सदा यह चाहता था कि भोजन बहुत स्वादिष्ट हो और अपने में एक ही बात। और साथ ही-साथ भोजन के समय मन-पसन्द और खुशनुमा बातें होती रहें।

हरबर्ट बैण्ड मास्टर के रूप में वर्दी पसन्द करता था और परेड में अपने साथियों का नेता बनकर उसे मार्च करना अच्छा लगता था। वह इस बात से बहुत प्रसन्न था कि उसका बैण्ड प्रेसीडेंट मेक्किन्ले के इनआगरल बॉल के अवसर पर बजाने के लिये चुना गया। वह ऐसा समय था जब बड़े-बड़े नृत्यों के आयोजन का फैशन था। उस समय शानदार और बड़े नृत्यों की व्यवस्था करने में एक-दूसरे से होड़ करते थे और शाम के मनोरंजन पर ही हजारों डालर व्यय कर दिये जाते थे। हरबर्ट ने न्यूयार्क के एक ऐसे ही नृत्य-समारोह में अपना बैण्ड बजाया जिससे पहिले प्रस्तुत किये गये सभी नृत्य समारोह फीके पड़ गये। हरबर्ट को शान-शौकत पसन्द थी। एक स्वाभिमानी व्यक्ति को किसी विशेष दल में सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त होने पर संतोष मिल जाता है अतएव हरबर्ट को कभी-कभी ऐसी स्पर्द्धा में फँस जाना पड़ता था जिससे उसका स्थान और ऊँचा हो जाय।

हरबर्ट की सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि उसका नाम शानदार ओपेरा के संगीत रचनाकार के रूप में जाना जाय। उसने अपने दो सफल ओपेरा लिखे और उनका प्रदर्शन भी देखा फिर भी आज उसे उन ओपेरा के कारण याद नहीं किया जाता है। अमरीका में आठ वर्ष रहने के बाद ही उसके वास्तविक केरियर का प्रारंभ हुआ जिसके द्वारा संयुक्त राज्य अमरीका के संगीत-इतिहास में उसे ओपरेटा के रचियता के रूप में भी स्थान मिला।

हरबर्ट स्वभाव से सुगम संगीत पसन्द करता था। उसने गंभीर संगीत

रचना की। ड्वोरेक ने उसके वायलिन-सेलो की बहुत प्रशंसा की परन्तु उसकी अपेक्षा वह सुगम संगीत में ही अधिक सफल रहा। यह देखकर कि अमरीका में केवल सुगम संगीत के क्षेत्र में ही किसी संगीत रचयिता को सफलता प्राप्त हो सकती है, उसने थियेटर के संगीत में और अधिक रुचि लेना प्रारंभ कर दिया। उसने यह देखा कि ओफेन बैरा और सर आर्थर सुलिवेन के सुगम संगीत के ओपेरों की भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है और उनके लेखकों को इन ओपेरों से बहुत आय हो रही है, इसलिये हरबर्ट ने यह निश्चय कर लिया कि वह हास्य के ओपेरा तब तक लिखेगा जब तक कि वह इतना धन न कमा ले कि फिर अपनी इच्छा से लिखता रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि वह अपने शेष जीवन भर सुगम ओपेरा लिखता रहा।

इस प्रकार के संगीत से उसे अपने जीवन के व्यवसाय का निर्दिष्ट स्थान मिल गया जब वह लगभग पैंतीस वर्ष का ही था। वह सरल भाव से सुहावने गीतों की रचना करने लगा और वह शूबर्ट की रचनाओं से अधिक प्रभावित होकर वैसे ही रोचक गीत लिखने लगा। वह सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति था, उसे बैण्ड के संचालन में चार अलग-अलग भाषाओं में अनुदेश देने में कठिनाई नहीं होती थी और वह तत्काल ही बदलकर इंगलिश से जर्मन, इटेलियन या फ्रेंच भाषा में बोलने लगता था। इसी प्रकार वह अपने ओपेरों में भी एक साथ कई काम कर लेता था।

किसी भी संगीतज्ञ को ओपेरा लिखने से पूर्व ओपेरा संबंधी पुस्तिका या शब्द समूह अपने पास रखने चाहिये जब तक कि उसमें स्वयं वेगनर जैसी लिखने की क्षमता न आ जाय। हरबर्ट ने चेम्बर संगीत की रचना की, उसने वोरसेस्टर उत्सव के लिये एक छोटा नाटक (समवेत गान) लिखा, उसका शीर्षक था—**सेरेनेड फॉर स्ट्रिंग्स।** उस नाटक को देखने के लिये अधिक दर्शक इकट्ठे हुये जिससे उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की बहुत प्रशंसा हुई, परन्तु वह अब भी उसे संतोष न था और अपने मित्रों से प्रायः कहा करता था :

"मेरी इच्छा है कि मैं एक अच्छा कोमिक-ओपेरा लिबरेटो लिख सकूं।"

शिकागो विश्वमेला के एक उत्सव के लिये हरबर्ट को संगीत-रचना का

काम मिला और इस प्रकार हरबर्ट रंगमंच के अधिक समीप आ गया। मेला के अवसर पर यह कार्यक्रम इतने बड़े पैमाने पर करने का विचार किया गया कि उसका प्रदर्शन ही न हो सका परन्तु हरबर्ट को अपने नये परिचितों से शीघ्र ही लिब्रेटो की रचना की प्रेरणा मिली जिसका उसे अभाव महसूस हो रहा था। उसने सर्वप्रथम अपना **प्रिंस एनानियास** नामक ओपरेटा न्यूयार्क में प्रस्तुत किया, उस समय हरबर्ट लगभग पैंतीस वर्ष का था। उसमें उसे असफलता मिली। कुछ भी क्यों न हो, वह अपना काम शुरू कर चुका था और वह अपनी असफलता से हतोत्साह होने वाला नहीं था। उसने अगले वर्ष **द विजार्ड ऑफ द नाइल** प्रदर्शित किया, यह सफल रहा। यद्यपि आलोचकों ने उसकी कटु आलोचना की। उन्होंने बताया कि ओपरेटा का संगीत "बहुत हल्का" और "नकली" है लेकिन सर्वसाधारण ने उसे बहुत पसन्द किया। बाद में वह इंग्लैण्ड, जर्मनी और मेक्सिको में भी प्रस्तुत किया गया।

वह पिट्सबर्ग सिम्फोनी ओरकेस्ट्रा का संचालक हो गया, और उसने छः वर्ष तक बराबर सर्वोत्तम ओरकेस्ट्रा संगीत का प्रतिदिन अभ्यास किया तथा उसे प्रस्तुत किया, फिर भी उसने समय बचाकर अपनी इच्छा के अनुकूल सुगम संगीत की रचना भी की। उसने अपने लोकप्रिय ओपरेटा—**द फॉरचून टेलर**—की रचना उसी वर्ष की थी, जब वह पिट्सबर्ग गया था। वह इस बात से प्रसन्न था कि लोग उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की प्रशंसा करते हैं। लोग उसकी आलोचना भी करते थे और कहा करते थे कि जो सुगम संगीत की रचना करता वह गंभीर शास्त्रीय संगीत को भली-भांति नहीं निभा पाता। उसे यह सुनकर भी प्रसन्नता होती थी कि लोग उसे परिश्रमी मानते हैं। उसे इस बात का गौरव था कि वह रिचर्ड स्ट्रॉस और क्रीस्लर जैसे महान संगीतज्ञों के सम्पर्क में उस समय आया जब वे अपना ओरकेस्ट्रा लेकर पिट्सबर्ग आये थे। अमरीका के संगीत के संरक्षकों में से एण्ड्रू कारनेगी का नाम प्रमुख है। वे विक्टर हरबर्ट के उत्साही प्रशंसक थे और पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा के लिये कहा करते थे :

"मेरे विचार से विक्टर हरबर्ट और उसके साथियों का दिन में दो बार संगीत सुनना ही स्वर्ग है।"

लेकिन वह न्यूयार्क की ओर फिर चल दिया और वहीं उसने थियेटर के लिये संगीत की अधिकाधिक रचना करना प्रारंभ की। न्यूयार्क के एक प्रकाशक ने रोवर्ट हरबर्ट की प्रारंभिक रचनाओं को यह कहकर रद कर दिया कि हरबर्ट को ओरकेस्ट्रा के काम में ही लगा रहना चाहिये तथा गीतों की रचना का कार्य केवल गीतकारों को ही करना चाहिये। बाद में वही प्रकाशक हरबर्ट की रचनाओं को प्रकाशित कर उठा और जिस व्यक्ति को यह सलाह दी गई थी कि वह गीतों की रचना न करे, वह अब अमरीका के प्रिय गीतकारों में से एक गीतकार बन गया।

हरबर्ट के अधिकांश गीत आर्डर मिलने पर लिखे गये हैं और कदाचित उसने किसी आर्डर को अस्वीकार नहीं किया। उसके जीवन में एक समय ऐसा भी आया जब कि उसने चार ओपरेटा लिखे : **द सिंगिंग गर्ल, दी अमीर, सिरेनो डी बरजेरेक** और **द वाइसराय**। उसने इन चारों ओपरेटा को एक साथ लिखा था। उसके थियेटर में तीन नीची डेस्कें और बुक कीपर की एक ऊँची डेस्क थी। जब वह लिखते-लिखते थक जाता था, तब वह खड़े होकर लिखने लगता था। संगीत-रचना की स्वरलिपि (स्कोर्स) उसके सामने खुली रहती थी। संगीत की देवी की प्रेरणा से वह अभिभूत हो जाता और फिर एक के बाद दूसरी रचना कर उठता। इन चारों ओपरेटा में अलग-अलग समय, स्थान और चरित्रों का चित्रांकन किया गया है। **द सिंगिंग गर्ल** का दृश्य स्थल जर्मनी में था और इसी प्रकार **द अमीर** के लिये अफगानिस्तान, **सिरेनो डी बरजेरेक** के लिये पुराना फ़ान्स और '**द वाइसराय**' के लिये वेनिस दृश्य स्थल रहे। हरबर्ट ने अपने मन की स्थिति को बराबर बदलने के लिये अपने कमरे में बर्फ भरकर एक टब रख लिया था और बर्फ पर अलग-अलग किस्म की वेब्रेजे (स्फूर्तिदायक पेय) की बोतलें रख ली थीं और वह इन किस्म-किस्म की बोतलों को अलग-अलग ओपरेटा के लिखने के समय इस्तेमाल करता था।

इन चार ओपरेटा के अतिरिक्त उसने उस वर्ष चेम्बर संगीत और वाद्य-

काम मिला और इस प्रकार हरबर्ट रंगमंच के अधिक समीप आ गया। मेला के अवसर पर यह कार्यक्रम इतने बड़े पैमाने पर करने का विचार किया गया कि उसका प्रदर्शन ही न हो सका परन्तु हरबर्ट को अपने नये परिचितों से शीघ्र ही लिब्रेन्टो की रचना की प्रेरणा मिली जिसका उसे अभाव महसूस हो रहा था। उसने सर्वप्रथन अपना **प्रिंस एनानियास** नामक ओपरेटा न्यूयार्क में प्रस्तुत किया, उस समय हरबर्ट लगभग पैंतीस वर्ष का था। उसमें उसे असफलता मिली। कुछ भी क्यों न हो, वह अपना काम शुरू कर चुका था और वह अपनी असफलता से हतोत्साह होने वाला नहीं था। उसने अगले वर्ष **द विजार्ड ऑफ द नाइल** प्रदर्शित किया, यह सफल रहा। यद्यपि आलोचकों ने उसकी कटु आलोचना की। उन्होंने बताया कि ओपरेटा का संगीत "बहुत हल्का" और "नकली" है लेकिन सर्वसाधारण ने उसे बहुत पसन्द किया। बाद में वह इंग्लैण्ड, जर्मनी और मेक्सिको में भी प्रस्तुत किया गया।

वह पिट्सवर्ग सिम्फोनी ओरकेस्ट्रा का संचालक हो गया, और उसने छः वर्ष तक बराबर सर्वोत्तम ओरकेस्ट्रा संगीत का प्रतिदिन अभ्यास किया तथा उसे प्रस्तुत किया, फिर भी उसने समय बचाकर अपनी इच्छा के अनुकूल सुगम संगीत की रचना भी की। उसने अपने लोकप्रिय ओपरेटा—**द फॉरचून टेलर**—की रचना उसी वर्ष की थी, जब वह पिट्सवर्ग गया था। वह इस बात से प्रसन्न था कि लोग उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की प्रशंसा करते हैं। लोग उसकी आलोचना भी करते थे और कहा करते थे कि जो सुगम संगीत की रचना करता वह गंभीर शास्त्रीय संगीत को भली-भांति नहीं निभा पाता। उसे यह सुनकर भी प्रसन्नता होती थी कि लोग उसे परिश्रमी मानते हैं। उसे इस बात का गौरव था कि वह रिचर्ड स्ट्रॉस और क्रीस्लर जैसे महान संगीतज्ञों के सम्पर्क में उस समय आया जब वे अपना ओरकेस्ट्रा लेकर पिट्सबर्ग आये थे। अमरीका के संगीत के संरक्षकों में से एण्ड्रू कारनेगी का नाम प्रमुख है। वे विक्टर हरबर्ट के उत्साही प्रशंसक थे और पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा के लिये कहा करते थे :

"मेरे विचार से विक्टर हरबर्ट और उसके साथियों का दिन में दो बार संगीत सुनना ही स्वर्ग है।"

लेकिन वह न्यूयार्क की ओर फिर चल दिया और वहीं उसने थियेटर के लिये संगीत की अधिकाधिक रचना करना प्रारंभ की। न्यूयार्क के एक प्रकाशक ने रोबर्ट हरबर्ट की प्रारंभिक रचनाओं को यह कहकर रद्द कर दिया कि हरबर्ट को ओरकेस्ट्रा के काम में ही लगा रहना चाहिये तथा गीतों की रचना का कार्य केवल गीतकारों को ही करना चाहिये। बाद में वही प्रकाशक हरबर्ट की रचनाओं को प्रकाशित कर उठा और जिस व्यक्ति को यह सलाह दी गई थी कि वह गीतों की रचना न करे, वह अब अमरीका के प्रिय गीतकारों में से एक गीतकार बन गया।

हरबर्ट के अधिकांश गीत आर्डर मिलने पर लिखे गये हैं और कदाचित उसने किसी आर्डर को अस्वीकार नहीं किया। उसके जीवन में एक समय ऐसा भी आया जब कि उसने चार ओपरेटा लिखे : **द सिंगिग गर्ल, दी अमीर, सिरेनो डी बरजेरेक** और **द वाइसराय**। उसने इन चारों ओपरेटा को एक साथ लिखा था। उसके थियेटर में तीन नीची डेस्के और बुक कीपर की एक ऊँची डेस्क थी। जब वह लिखते-लिखते थक जाता था, तब वह खड़े होकर लिखने लगता था। संगीत-रचना की स्वरलिपि (स्कोर्स) उसके सामने खुली रहती थी। संगीत की देवी की प्रेरणा से वह अभिभूत हो जाता और फिर एक के बाद दूसरी रचना कर उठता। इन चारों ओपरेटा में अलग-अलग समय, स्थान और चरित्रों का चित्रांकन किया गया है। **द सिंगिग गर्ल** का दृश्य स्थल जर्मनी में था और इसी प्रकार **द अमीर** के लिये अफगानिस्तान, **सिरेनो डी बरजेरेक** के लिये पुराना फ़ान्स और '**द वाइसराय**' के लिये वेनिस दृश्य स्थल रहे। हरबर्ट ने अपने मन की स्थिति को बराबर बदलने के लिये अपने कमरे में बर्फ भरकर एक टब रख लिया था और बर्फ पर अलग-अलग किस्म की वेब्रेजे (स्फूर्तिदायक पेय) की बोतलें रख ली थीं और वह इन किस्म-किस्म की बोतलों को अलग-अलग ओपरेटा के लिखने के समय इस्तेमाल करता था।

इन चार ओपरेटा के अतिरिक्त उसने उस वर्ष चेम्बर संगीत और वाद्य-

वृन्द सम्बन्धी एक बड़ी प्रभावपूर्ण कृति की रचना की। उसे काम करने में मजा आता था। वह ड्रेस्डेन के उस संगीतज्ञ को कभी नहीं भूल सका जिसने पहिली बार उससे कहा था कि वह गीतों की रचना करे। उसके लिये रचना-कार्य इतना ही सरल था जितना कि उसे मित्र बनाना और उसने अपने जीवन में बहुत कुछ लिखा। उसे अपने जीवन की सफलताओं में यदाकदा असफलताओं को भी स्वीकार करना पड़ा परन्तु हरबर्ट दिल का पक्का था, इसलिये उन असफलताओं के आघातों को झेल गया।

यदि कोई कलाकार दो विभिन्न क्षेत्रों में काम करे तो उसकी अधिक आलोचना की जाती है। लोग अथवा आलोचक स्पर्धा से कटु आलोचना करते हैं और वे कलाकार की कृतियों को अच्छी तरह समझने में असफल रह जाते हैं। हरबर्ट के गंभीर संगीत के साथियों को उसकी लोकप्रियता अधिक अच्छी न लगी। लेकिन उसे लोकप्रिय क्षेत्र में ऐसे साथी मिल गये थे जो हरबर्ट जैसे व्यक्ति को पाकर गौरवान्वित थे। हरबर्ट टिन पैन एली में अच्छा काम करता रहा और वे लोग कहा करते थे कि हरबर्ट अपने काम में उस्ताद है। हरबर्ट की तैयार की गई ट्यून में परिवर्तन की आवश्यकता न होती थी। वह अपनी ट्यून तैयार किया करता था। वह ओरकेस्ट्रा को ध्यान में रखकर ट्यून के बारे में विचार किया करता था। वास्तव में उसने पियानो पर संगीत की रचना नहीं की क्योंकि वह पियानो अच्छी तरह बजा नहीं सकता था। जब वह संगीत की रचना करता था तो वह अपने ओरकेस्ट्रा के सभी वाद्य-यंत्रों से ऐसी धुन निकलवाता था जैसी कि उसने वह धुन कभी सुनी हो और पियानो इस कार्य के लिये पर्याप्त नहीं था। लेकिन ओरकेस्ट्रा के लिये वाद्य-संगीत तैयार करने में वह इतना अधिक कुशल था कि वह संगीत को अलग-अलग भागों में स्वर-बद्ध कर लेता था यदि कभी जल्दी होती और फिर बाद में सभी को मिलाकर समेकित रचना तैयार करता था।

कभी-कभी हरबर्ट पर यह दोष लगाया जाता था कि वह ऐसी मेलोडीज प्रयोग में लाता है जो उसकी अपनी नहीं थीं। उसकी स्मृति-शक्ति इतनी विलक्षण थी कि उसे कभी-कभी अपनी ट्यूनों से उन ट्यूनों को अलग करना

कठिन हो जाता था क्योंकि वे ट्यून उसकी स्मृति का अंग बन जाती थीं। जब कभी वह अपने मित्र के लिये कुछ भी बजाता तो वह प्रायः यह पूछ लेता था कि यह धुन कहाँ से ली गई है। बाद में उसने यह स्वीकार कर लिया कि उसने महा संगीतज्ञों से संगीत की सामग्री संकलित की है।

हरबर्ट के **बेब्ज इन टॉयलैण्ड** से **द मार्च आफ द टायज** को रेडियो के ओरकेस्ट्रा संगीत में प्रायः बजाया जाता है।

वह सदैव आर्डर लेकर लिखा करता था, अतएव हरबर्ट रचना करते समय सदैव जानता था कि उसके गीतों को चलाने के लिये कौन गायक रहेगा। उसके **बेबेटे** ओपेरा को साधारण ख्याति मिली लेकिन उसकी गायिका फ़िजी शेफ को व्यक्तिगत रूप से अधिक सफलता मिली। उस गायिका ने रंगमंच पर पहिले पहल गाया था। उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। वह इतनी प्रसन्न थी कि उसने गीतकार-संचालक को पकड़कर रंगमंच पर ला खड़ा किया और मुग्ध दर्शकों के सामने उसका चुम्बन किया तथा गले से चिपटा लिया। अगले दिन अखबारों में उस चुम्बन और आलिंगन की काफी चर्चा रही और उससे यह भी लगा कि विक्टर हरबर्ट ने ही ऐसा किया था।

दो वर्ष बाद वही अभिनेत्री हरबर्ट के सबसे अधिक लोकप्रिय ओपरा-**मेडम म्वॉजेल-मोडिस्टी** में काम करने आई। वह ओपेरा हरबर्ट के जीवन की सबसे बडी सफलता थी। उस ओपेरा में **किस मी अगेन** गीत बहुत लोकप्रिय हो गया। यह रोचक कहानी है कि इस गीत की रचना किस प्रकार हुई और यह गीत इतना लोकप्रिय क्यों हो गया। हरबर्ट ने स्वयं इस कहानी को बताया है और हम उसे यहाँ फिर दोहराते हैं।

विक्टर हरबर्ट नगर से बाहर कई कन्सर्टो का संचालन कर रहा था। उस समय **मेडम म्वॉजेल मोडिस्टी** के ओपेरा प्रणेता उससे मिलने के लिये आया और उसने हरबर्ट से कहा कि उसने एक ओपेरा लिखा है और उसका विचार है कि एक ऐसी विशेष मेलोडी की रचना की जाय जो अन्य सभी गीतों से कहीं अधिक अच्छी हो। इसके अतिरिक्त वह मेलोडी ऐसी होनी चाहिये जिसे मिस शेफ सरलता से मधुर स्वर में गा सकें। हरबर्ट ने कोशिश तो

का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाता था। इन दिनों अतीत के प्रति विशेष सम्मोहन था। यह फैशन था कि लोकप्रिय संगीत के शो रेव्यू अथवा रेव्यू-स्टाइल पर आधारित संगीत की कामेडी के रूप में प्रस्तुत किये जाते थे। वहाँ संगीत को जाज़ शैली पर रचा जा रहा था। हरबर्ट का संगीत और ऑपरेटा ऐसे लगने लगे थे कि वे पुराने हों। कुछ ही समय पूर्व की रचनाये अप्रचलित हो चली थी। जब लोग हरबर्ट से पूछते कि वह **किस मी अगेन** जैसे गीत फिर क्यों नही लिखते तो वह यह उत्तर दे देते कि उन्होंने अच्छे गीत लिखे हैं किन्तु अब जनता में परिवर्तन आ गया है और वह उन्हें अब स्वीकार नहीं कर पाती।

विक्टर हरबर्ट का **सूट आफ सेरेनेड्स** प्रसिद्ध गोरों के कन्सर्ट में प्रस्तुत किया गया। उसी समारोह के लिये जर्शविन ने **रेपसोडी इन ब्लू** लिखा। उसने जाज़ गीत नहीं लिखे लेकिन उसका यह पहला अनुभव था कि उसने जाज़ संगीत के आर्केस्ट्रा की ट्यून की रचना की। इस कार्य से उसे यह शिकायत बनी रही कि उसने इस प्रकार दोहरा काम करके अपनी मूल रचना की प्रगति में बाधा डाली है। उदाहरण के लिये जब कभी उसे शहनाई-वादक की अत्यावश्यकता होती तो उसे पता लगता कि शहनाई-वादक बेस-क्लेरिनेट के बजाने में लगा हुआ है।

[illegible] हरबर्ट ने अधिक उदारता से जार्ज जर्शविन को आरकेस्ट्रा-वादन सिखाया। [illegible]न्तु कुछ समय बाद हरबर्ट का निधन हो गया। उसने इस बात का भी [illegible]त्न किया कि इरविंग बर्लिन की संगीत-सिद्धान्त में रुचि हो जाय। उसने [illegible] से कहा :

"[illegible]ह सोचना भ्रामक है कि संगीत-सिद्धान्त की जानकारी से मेलोडी के [illegible]विक प्रवाह में गति-रोध हो जाता है। इसके विपरीत संगीत की शिक्षा [illegible] पृष्ठभूमि प्रस्तुत करेगा कि उससे आपके काम में सुधार होगा।"

हरबर्ट अमरीका का वह महत्वपूर्ण संगीतकार था जिसने सिनेमा के लिये मौलिक गीतों की रचना की। वह जीवन के अन्त समय तक रचनायें करता रहा। जब वह संगीत की रचना न करता तो अधिक रात तक बैठकर अपने

पुराने गीतों का रियाज किया करता। मई का दिन था। उसने बहुत देर तक रिहर्सल किया और फिर अपने प्रिय रेस्ट्रा में भोजन करने आ गया। उसने अपना दिन का समय मित्रों में काट दिया क्योंकि उसे सर्वत्र मित्र मिल जाते थे। वह एक मित्र के पास पहुँचा जो ह्वीट-केक्स (गेहूँ की रोटियाँ) खा रहा था, वह उसके पास रुका और हँसकर उसे झिड़कने लगा तथा कहने लगा कि वे दोनों ही इतने वृद्ध हो गये हैं कि अब ह्वीट-केक्स चबा सकें। कुछ समय बाद उसका मित्र उसकी मेज के पास से निकला और उसने हरबर्ट को सेन्ड-विच खाते देखा तो उसके मित्र ने उससे यह कहा कि इसे छोड़ क्यों नहीं देते। लेकिन हरबर्ट ने कहा : "चार्ली ! मैं जानवर के सुदृढ़ अंगों का गोश्त भी खा सकता हूँ।"

उसने सदैव अपने को नवयुवक ही समझा। एक व्यक्ति जो हरबर्ट को जानता था, उसने यह कहा है कि हरबर्ट ने मरते समय तक भोजन में कमी नहीं की। वह सैण्डविच उसका अन्तिम भोजन था और उस दोपहर के बाद उसकी तबियत ठीक न रही तथा वह डाक्टर के पास गया। डाक्टर घर से बाहर था। जब तक डाक्टर घर लौटे कि वह संगीतज्ञ स्वर्गवासी हो गया।

डीमस टेलर ने हरबर्ट के बारे में लिखा है : "गीतकारों में से वह एक प्रमुख, अन्तिम गीतकार था......उसमें गीत-रचना की प्रतिभा थी। उसके संगीत में उत्साह, आकर्षण और सम्मोहन था। वह संगीत कला में चार-चाँद लगा देता था और यह बात अन्य संगीतज्ञों में नहीं है तथा वे प्रदर्शन और अहं से आक्रान्त रहते हैं।"

[विक्टर हरबर्ट डबलिन, आयरलैण्ड में १ फरवरी, १८५९ को पैदा हुये और वे न्यूयार्क नगर में २७ मई, १९२४ को स्वर्गवासी हो गये।]

एडवर्ड मेक्डोवेल

**"जीवन का केवल यही सार है कि
हम यथाशक्ति उपयोगी बनें।"**

इस देश में सबसे पहिले गोरे लोग इसलिये आये कि वे अपने धर्मपालन की कठिनाइयों से बच सकें। वह धर्म उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुका था। उन लोगों और उनके बच्चों को यह भी समझना आवश्यक था कि वे अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता के बारे में भी विचार करें ताकि वे अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकें। लेकिन संसार में बहुत दिनों के बाद ही कुछ सीख मिलता है। संसार के बहुत से भागों में अब भी ऐसे व्यक्ति हैं जो यह सोचते हैं कि जो कुछ वे करते हैं, वही ठीक है और वे चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति भी वैसा ही करे। कभी कभी ऐसे भी लोग मिलते हैं जो अपने बचपन की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते परन्तु वे यह चाहते हैं कि उनके पुत्र को अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये अवसर मिलें; एक उदार व्यक्ति की यह सदैव इच्छा होती है कि उसके पुत्र को वही अवसर मिलें, जिन्हें वह अपने जीवन में प्राप्त न कर सका।

संयुक्त राज्य अमरीका का प्रेसीडेंट अब्राहमलिंकन था उस समय न्यूयार्क नगर के २२० क्लिनटन स्ट्रीट, क्वैकर क्वार्टर में एक व्यापारी रहता था जिसका नाम टॉमस मेक्डोवल था। वह आइरिश और स्काच का पुत्र था तथा स्वयं कट्टर धार्मिक विचारों का था। यदि टॉमस को वही सब कुछ करने को मिल जाता और वह अपने कठोर पिता के इशारे पर काम न करता तो वह कदाचित एक कलाकार बनता। जब वह छोटा था, तभी वह चित्र बना सकता था क्योंकि उसकी चित्रकला में विशेष रुचि थी। वह बाहर रहना पसन्द करता था और तमाम दिन लैंडस्केप चित्रित करते रहना उसे अधिक प्रिय था। लेकिन उसके पिता उन लोगों में से एक थे जो चित्रकला को यह

समझते हैं कि यह काम किसी पुरुष का नहीं है। उनका विचार था कि उनके पुत्रको व्यापार करना चाहिये। इसलिये टॉमस को दिन-प्रतिदिन नगर के एक कार्यालय में काम करने के लिये जाना पड़ता था।

उसने इंग्लैण्ड की एक युवा और सुन्दर लड़की से विवाह कर लिया। वह लड़की क्वैकर न थी। उनके दो पुत्र हुये। वाल्टर बड़ा था और उसके तीन वर्ष बाद एडवर्ड ऐलेक्जेण्डर का जन्म हुआ।

टॉमस के छोटे बच्चे रविवार को क्वैकर की बैठकों में भाग लेने जाते थे और उन्हें वहाँ कई घण्टों तक सख्त और ऊँची पीठ की बेंचों पर बैठना पड़ता था और वे वहाँ नितांत मौन रहते थे। वहाँ न तो कोई उपदेश था, न संगीत और न गायन। प्रत्येक व्यक्ति चुपचाप बैठा रहता था जब तक कि किसी क्वैकर की प्रेतात्मा किसी क्वैकर को बोलने के लिये प्रेरित न कर दे। सभा में एक ओर स्त्रियां बैठा करतीं थीं और सभा की दूसरी ओर पुरुष बैठा करते थे। बच्चों के लिये कठोर आराधना थी। इन मौन सभाओं का एडवर्ड के मन पर इतना गंभीर प्रभाव पड़ा कि जब एडवर्ड बड़ा होकर गिरजाघर जाने लगा और उसे वहाँ उम्दा संगीत तथा उपदेश ग्रहण करने को मिले तो वह स्वभाववश दूर किवाड़ के पास जाकर चुपचाप बैठ जाया करता था। वह सदैव यह महसूस करता रहता था कि कहीं उसे पकड़ न लिया जाय—जैसे किसी जाल में कोई फंस जाता हो और उसे निकल भागने का कोई अवसर न मिलता हो।

टॉमस को यह लगने लगा कि उसके बेटे भी अच्छे क्वेकर के समान जीवन-यापन की बात सोचने लगे हैं। फिर भी वह अपने बच्चों के साथ अधिक उदार था यद्यपि उसका पिता उसके साथ उतना उदार कभी नहीं रहा। एडवर्ड ने स्वभाव से अपने स्कॉच और आइरिश पूर्वजों से कुछ कठोरता प्राप्त कर ली थी और यह कठोरता अधिकांशतः उसे अपने बाबा से और अंशतः अपने पिता से भी मिली।

संसार का सबसे सुन्दर कुछ लोक-संगीत स्काटलैण्ड और आइरलैण्ड से आया है। प्राचीन आयरलैण्ड की लोक कथाएँ और गल्प तरुण जल-व्याल,

भूत और परियों के संदर्भों से भरपूर हैं। इनमें लोगों का पूर्ण विश्वास था। क्वैकर एडवर्ड मेक्डोवेल बचपन से अमरीका में रहने लगा था लेकिन उसने आइरिश और स्कॉच पूर्वजों से यह आदत प्राप्त की थीं। कुछ भी हो, वह वास्तव में उन जंगलों के उन छोटे लोगों में बहुत विश्वास करता था। वह आकर्षक कहानियों और गल्पों में रुचि रखता था। वह शहर का लड़का था फिर भी उसे देहात बहुत पसन्द था क्योंकि वह वहाँ जंगलों में घूम फिर सकता था और वह अकेले रहकर भूत-प्रेत से मिलने के लिये लालायित रहता था।

एडवर्ड के पिता की ड्राइग में विलक्षण प्रतिभा थी। एडवर्ड ने अपने पिता से ही ड्राइंग का कार्य सीखा। वह अपना अधिक समय स्केच बनाने में लगाता था और स्केच बनाने का काम अच्छी तरह कर लेता था। जब उसकी माँ ने उसे एक स्केच-बुक दी तो उसके पिता ने कोई आपत्ति नहीं की क्योंकि वह जानती थी कि उसकी ड्राइंग में बहुत दिलचस्पी है।

एडवर्ड की माँ को कला और संगीत का ज्ञान नहीं था फिर भी उसकी यह महत्वाकांक्षा थी कि एडवर्ड कला और संगीत में पारंगत हो जाय। उसे यह लगा कि एडवर्ड में कुछ हुनर जानने की स्वाभाविक रुचि है। वह यह जानती थी कि उसके घर में एक ऐसा लड़का है जिसकी आदतें ऐसी हैं जिन्हें क्वैकर परिवार में हास्यास्पद समझा जाता है—उस लड़के की रुचि संगीत, रंग, परियों की कहानियों और जोखिम की कहानियों में थी लेकिन उसे उसके स्वभाव के विपरीत ट्रेनिंग दी जा रही थी। उसने विचार किया कि उसका सावधानी से पालन-पोषण किया जाय। वह शहर का लड़का था और क्वैकर परिवार का सदस्य था। वह स्वप्नों की दुनियाँ में रहा करता था और ऐसी कल्पना किया करता था कि वह सोचता था कि उसे ऐसे संसार में रहना है जिसके बारे में कभी-न-कभी लोग विश्वास करेंगे। वह वास्तव में जनसाधारण लोगों से अलग ही था।

वह पोच नहीं था। वह अपने खिलौनों को भी तोड़ सकता था। क्रिसमस का दिन था, वह और वॉल्टर यांत्रिक खिलौने से खेलते-खेलते थक गये तो

उसने उन खिलौनो को तोड़ दिया। ये खिलौने अपने आप ही चलते थे। वह कुश्ती भी लड़ सकता था—उसका यह शौक क्वैकर परिवार के लोगों से अलग ही था। गृह-युद्ध बीते कुछ ही दिन हुये थे और देश-प्रेम की भावनाओं से वातावरण ओत-प्रोत था। एक सात वर्षीय बालक एडवर्ड गली में एक विदेशी पर टूट पड़ा। वह विदेशी एक गली में इधर-उधर भटकने वाला लड़का था जिसने झण्डे के बारे में कुछ अपमानजनक शब्द कह दिये थे। एडवर्ड को वे अपमानजनक शब्द सहन न हुये। वह उस लड़के से लड़ा और उसकी माँ ने देखा कि दोनों बच्चे गुत्थम-गुत्था लड़ते हुये गन्दी नाली में लुढ़क रहे थे। कई वर्ष बीत गए, एडवर्ड की आयु तेरह वर्ष से अधिक होने लगी और वह जर्मनी में पढ़ने लगा। वहाँ वह एक अमरीकी मित्र के साथ एक स्ट्रीट में घूम रहा था। उसे उस विदेश में वही अकेला अमरीकी मित्र मिल पाया था। एडवर्ड उस समय तक जर्मन समझने लगा था। उसके पास ही शानदार जर्मन पुलिस वाला गुजरा। उसने सुना कि वह पुलिस वाला उसके मित्र के बारे में कुछ अपमानजनक शब्द कह रहा है। वह शीघ्र ही व्यंग करने वाले पुलिस वाले से लड़ पड़ा। उसके मित्र उसे रोका करते थे क्योंकि उनका विचार था कि वह अपने देश में नहीं है। इन घटनाओं से यह विदित होता है कि एडवर्ड झेंपू और भावुक मन का होते हुये भी सदैव न्याय के लिये लड़ पड़ता था।

जब लड़के बहुत छोटे थे, उस समय उनके माता-पिता पिकनिक के लिये उन्हें सेण्ट्रल पार्क ले जाते थे जहाँ उन्हें दौड़ने-भागने का अवसर मिल सके। उन दिनों में सड़कें इस प्रकार कुटी हुई न थीं जैसी कि आज हैं। उस समय न तो टैक्सी थी और न बस। फिफ्थ एवेन्यू में स्टोर्स की अपेक्षा सुन्दर घर थे और सेण्ट्रल पार्क बिल्कुल ही कण्ट्री लगता था। वह पार्क क्लिटन स्ट्रीट के 'उतार' की ओर मेकडोवेल के घर से लगभग तीन मील की दूरी पर स्थित था। मिस्टर मेकडोवेल अपने परिवार के घोड़े 'व्हिटने' को किसी माँगी गई गाड़ी में जोतते और पहिले ही से निश्चित किये गये दिन अपने परिवार के साथ पिकनिक के लिये जाते थे। सिपाही गहरी नीली यूनीफॉर्म पहिनकर

अक्सर सड़कों पर मार्च किया करते थे। उस समय कपड़े बिल्कुल ही अलग प्रकार के थे। महिलाएँ हूप-स्कर्ट पहिना करती थीं जो सवारी के समय इधर-उधर सरकाई जा सकती थीं और घुमाई जा सकती थीं। छोटी लड़कियाँ पेण्टेलेट पहिना करती थीं जो उनकी फ़्रॉक से लटके रहते थे। छोटे लड़के कसे हुये जाकेट पहिना करते थे। बड़ी आयु के लोग अब्राहम लिंकन की तरह ऊँचे टोप और कसे हुये ट्राउजर्स तथा पीले रंग के दस्ताने पहिना करते थे। उन दिनों गाड़ियों को घोड़े खींचा करते थे। उस समय गगन चुम्बी अट्टालिकाएँ नहीं थी और बड़े-बड़े कमरों के घर भी नहीं थे। उस समय लोग बड़े चैन से रहा करते थे, केवल बटन दबाकर काम हो जाने की उस समय सुविधा नहीं थी, न तो उस समय बिजली की रोशनी थी और न टेलीफ़ोन थे।

उस समय न तो रेडियो थे और न विक्ट्रोलैस अतएव उस समय पढ़ने के लिये अधिक इच्छा होती थी और लोगों के पास काफी समय होता था और वे अपने मनोरंजन के लिये अन्य कई काम कर सकते थे। एडवर्ड को पढ़ने का बहुत शौक था और जब कभी वह घर पर रहता था, वह पढ़ा करता था। उसे घर और बाहर अपनी स्केच-बुक में स्केच बनाते रहने में अच्छा लगता था। वे स्केच बहुत अच्छे थे। इस पुस्तक में उसका अपना एक स्केच है जिसे उसने स्वयं चौदहवीं वर्ष में तैयार किया था। इस स्केच के देखने से यह लगता है कि उसके मूंछे आने वाली थीं।

मेक्डूवेल लड़कों को कदाचित संगीत का पहिला पाठ उनके बाबा मेक्डूवेल के फार्म में सिखाया गया था। वाल्टर से एक वर्ष बड़ा उसका चचेरा भाई चार्ल्स मेक्डूवेल था और वह भी उस समय वहाँ था। सर्दी का दिन था और लड़के जलपान की प्रतीक्षा कर रहे थे। एडवर्ड की माँ ने सभी लड़कों को डायनिंग रूम में एक पंक्ति में खड़ा किया और उन्हें सिखाया :

ट्रैम्प, ट्रैम्प, ट्रैम्प दी ब्यॉज आर मार्चिंग......."

उत्तर का प्रत्येक व्यक्ति वह युद्ध-गीत गाया करता था। लड़के गीत गाते और तालियाँ बजाते हुये कमरे में मार्च किया करते थे। एडवर्ड सबसे छोटा था,

उसकी आयु तीन वर्ष की थी और वह सबसे अच्छी तरह रिद्म तथा गीत की ट्यून को निभा रहा था। उसकी संगीत में प्रतिभा प्रारंभ से झलक उठी अतएव उसके परिवार ने उसके लिये एक पियानो भी खरीद दिया। उसके अध्यापक दक्षिणी अमरीका के एक सज्जन थे जिन्हें मेक्डूवेल के घर में ही रहने के लिये आमंत्रित किया गया था। उन बच्चों के बाबा ने यह सोचा कि यह शिक्षा निरर्थक ही होगी। उनका विचार था कि एडवर्ड को कोई "उपयोगी कार्य" सीखना चाहिये। उनका विचार था कि सभी संगीतज्ञ ऐसे लगते हैं जैसे मदारी बंदर ले जा रहे हों।

संगीत के प्रति उनकी यह प्रवृत्ति न तो अमरीकी व्यक्ति की तरह थी और न क्वैकर की तरह। यह ऐसी प्रवृत्ति थी जो उन्हें योरुप के पुराने जमाने से विरासत में मिली हो। यदि आप रैश मेनिनॉफ या साइबलियस के बारे में पढ़ें तो आपको यह विदित होगा कि उनके दादा परदादा भी इसी प्रकार सोचा करते थे। यह ऐसी स्थिति थी जब संगीतज्ञों को नौकरों की तरह समझा जाता था। केवल शहजादे ही अपने कोर्ट में संगीतज्ञों को रख पाते थे। हेडन सर्वोत्तम संगीतज्ञों में से एक संगीतज्ञ थे फिर भी वह अपने संरक्षक प्रिंस एस्टर हेजी के दरबार में नौकरों की बर्दी ही पहिना करते थे। इसी दुर्दशा के विरुद्ध बीथॉवन ने संघर्ष किया था। उसने एक बार अपने दयालु संरक्षक प्रिंस लॉव्कोविट्ज से जोरदार शब्दों में यह कह दिया था कि उसकी प्रतिभा और कार्य ने उसे इतना उन्नत कर दिया है कि उसे जितना अधिक आदर मिलता है, उस आदर के लिये वह उपयुक्त है मानों वह वास्तव में एक धनी और सम्पन्न परिवार का ही है। बीथॉवन स्वतंत्र स्वभाव का संगीतज्ञ था, उसकी वजह से योरुप के संगीतज्ञों की सामाजिक प्रतिष्ठा ऊँची हुई। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी लेखक और संगीतज्ञ हैं जिन्होंने पुराने जमाने की संरक्षकता में अच्छाई समझी है। विक्टर हर्बर्ट सोचा करता था कि संयुक्त राज्य अमरीका में संगीतज्ञों को संरक्षकता नहीं दी जा रही है इसलिये संगीत के विकास में काफी गतिरोध है। निस्संदेह यह सच है कि हमारे देश ने काफी विकास किया है और अब देश इतना धनी हो गया है कि कला को प्रोत्साहित

किया जाय—इस विचार को कार्यरूप में परिणित किया जाने लगा है और संगीत की अधिक प्रगति हुई है।

एडवर्ड मेक्डोवेल विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति न था। उसे अपने पाठ अच्छे लगते थे और वह यह भी समझता था कि उसका अध्यापक संगीत के प्रति कितना अधिक उत्साह रखता है लेकिन वह अभ्यास करना पसन्द न करता था। उसे पियानो पर अपनी छोटी-छोटी रचनाओं के बनाने में आनन्द आता था। वह कहानियाँ लिखा करता था और चित्र बनाया करता था। कभी-कभी उसका अध्यापक उसे कुछ गाना-बजाना सिखाने लगता लेकिन वह सन्तप्त होकर यह देखता कि एडवर्ड छिपकर अपनी संगीत की पुस्तक पर उसका स्केच ही बना रहा है।

एडवर्ड कुछ निश्चित विचारों का व्यक्ति था। उसे उपनाम पसन्द न थे और वह यह नहीं चाहता था कि उसे एड या एडी कहा जाय। उसे यह भी अच्छा न लगता था कि लोग उसके बारे में बात करें या कोई उसका चुम्बन ले और उसे डांसिंग-स्कूल में उपस्थित रहने में भी अच्छा न लगता था। यदि वह कभी डांसिंग स्कूल में जाता भी था तो मिसेज़ मेक्डोवेल के ही आग्रह पर जाता था अन्यथा ऐसे स्कूल में जाना क्वैकर परिवार की परम्परा के विरुद्ध बात थी। फिर भी एडवर्ड को स्कूल जाना ही पड़ता था। वह बहुत सुन्दर था, उसके काले बाल थे, चमकीली नीली आँखें थीं और गुलाबी गालों पर चमक थी। वह बहुत चाहता था कि लड़कियों से अलग रहे लेकिन लड़कियाँ उसे बहुत पसन्द करती थीं। उसे रिद्म का ज्ञान था इसलिये वह स्वाभाविक रूप से अच्छा नृतक भी था लेकिन उसे बेसबाल खेलना अधिक अच्छा लगता था।

दक्षिणी अमरीका से एक प्रतिभाशील महिला अपने पियानो के कार्यक्रम प्रस्तुत करने आई और न्यूयार्क में उनके कंसर्ट (संगीत समारोह) आयोजित किये गये। उन आयोजनों में खचाखच भीड़ थी। वह महिला टेरेसा केरिनो थीं और उन्हें सर्वोत्तम महिला पियानो-वादकों में स्थान दिया जाता था। वह उस समय लगभग अठारह वर्ष की थीं। वह पियानो-वादन कला में प्रतिभा-

सम्पन्न थीं। उन्होंने बड़ी सुन्दरता से नौ वर्ष की आयु से ही पियानो बजाना शुरू कर दिया था। एडवर्ड के दक्षिणी अमरीकी अध्यापक मिस्टर ब्यूट्रेगो ने उन महिला का मेक्डोवेल से परिचय कराया और वह मेक्डोवेल के घर भी आई। एडवर्ड ने उनके सम्मान में पियानो बजाया और वह एडवर्ड को कुछ सिखाने के लिये तैयार हो गई। मिस्टर ब्यूट्रेगो पियानो-वादक के बजाय वास्तव में वायलिन-वादक था इसलिये उसके पियानो के पाठों का क्रम अनियमित हो जाता था। अब एडवर्ड को एक महान पियानो बजाने वाली का सम्पर्क मिल गया। केरिनो स्पेन देश की सुन्दरी थी और वह स्वभाव से कोमल थी। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहती थी और वह क्वैकरों के समान अपने विचारों को व्यक्त करना पसन्द नहीं करती थी। जब एडवर्ड उसको प्रसन्न करने के लिये वाद्ययंत्र बजाता तो वह भाव-विभोर होकर उसे चिपटा लेती और उसका चुम्बन कर लेती। वह विरक्त भाव रखता और उसकी अवहेलना कर देता। केरिनो को शीघ्र ही एडवर्ड की भावनाओं का पता लग गया। उसके बाद जब वह अभ्यास न करता और बहुत बेतुके ढंग से पियानो बजाता तो वह एडवर्ड को झिड़कती नहीं थी बल्कि वह धमकी दे देती थी कि यदि वह ढंग से काम न करेगा तो वह उसका चुम्बन ले लेगी। इस धमकी से उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि वह अपनी प्रतिभा के अनुकूल योग्य बन गया।

वह पहिले पब्लिक स्कूल गया और फिर प्राइवेट फ्रेंच स्कूल गया। थर्ड एवेन्यू के पास पूर्व दिशा में उन्नीसवीं स्ट्रीट में जब उसका परिवार रह रहा था, एडवर्ड को एक पुरस्कार मिला। वह पुरस्कार न तो संगीत के लिये था और न ड्राइंग के लिये और न फ्रेंच के लिये बल्कि उसके विनोदी स्वभाव के लिये था जिससे उसके पिता को आश्चर्य हुआ। एक दिन लड़के छत पर थे, उनमें उनका चचेरा भाई चार्ल्स भी था। वाल्टर ने कहा .

"चार्ल्स, तुम्हारा क्या अनुमान है कि इस समय एडी ने क्या किया होगा।"

"मैं नहीं जानता कि क्या किया होगा ?"

वाल्टर को अपने छोटे भाई पर गर्व था। उसने कहा, "एडी एक महान लड़का है।"

उसने ब्यूरो ड्रावर से मोती-जड़ी मूठ और रजत पत्र से ढकी रिवालवर निकाल ली। वाल्टर ने कहा :

"इसकी ओर देखो। क्या आप ऐसी रिवालवर को शूटिंग की प्रतियोगिता में प्राप्त कर सकेंगे ? एडी ने इसे प्रतियोगिता में प्राप्त किया है।"

वे घर के पीछे के मैदान (यार्ड) में चले गये और वाल्टर ने एक ईंट में एक कार्ड बाँध दिया। इसी कार्ड को निशाना बनाना था। वाल्टर और चार्ल्स ने कुछ गोलियों से निशान लगाये और उन्होंने एडवर्ड से आग्रह किया कि वह भी निशाना लगाकर यह दिखाये कि वह कैसा निशानेबाज है।

एडवर्ड कुछ दिन पहिले अपने साथ रिवालवर लेकर घर लौटा था तो उसके पिता ने उसे पूछा कि उसे रिवालवर कहाँ से मिली है। एडवर्ड ने उत्तर दिया कि उसे वह रिवालवर थर्ड एवेन्यू की शूटिंग गैलरी की खिड़की से लटकती हुई मिली जब वह उस ओर से आ रहा था। वहाँ एक नोटिस लगा था कि यह रिवालवर उसको मिलेगी जो दिन में निशानेबाजी में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त करेगा। यह देखकर वह निशानेबाजी के लिये चला गया और उसे उस रिवालवर का पुरस्कार मिल गया।

उसके पिता को इस बात पर विश्वास ही न हो सका। वह पिस्टल लेकर एडवर्ड के साथ शीघ्र ही 'शूटिंग-गैलरी' पहुँचा। उस गैलरी के मालिक ने मिस्टर मेक्डोवेल का स्वागत किया और कहा कि इस लड़के ने अन्य सभी निशाना-बाजों को हरा दिया है और इसने शान से यह रिवालवर जीत ली है। उस मालिक ने मिस्टर मेक्डोवेल को यह कहकर बधाई दी कि उनका लड़का होनहार है। कई वर्ष बाद एडवर्ड एक उम्दा पियानो-वादक तथा संगीतकार बन गया लेकिन इससे पूर्व अपने बेटे का अनिश्चित केरियर देखकर वह यह कहानी सुनाकर गर्व नहीं कर पाता था बल्कि दु:खी ही होता था।

एडवर्ड बारह वर्ष का हुआ और उसकी माँ उसे विदेश ले गई। वह लड़का आयरलैण्ड जाना चाहता था क्योंकि उसे आयरलैण्ड की कहानियाँ

बहुत पसन्द थीं, वह स्काटलैण्ड जाना चाहता था जहाँ उसके पूर्वजों ने किल्ट पहिने थे और इंग्लैण्ड जाना चाहता था जहाँ से उसकी माँ के घर के लोग आये थे। फिर वह फ़्रांस भी जाना चाहता था जिससे कि वह किसी स्कूल में फ्रेंच विद्वान से बात कर सके और जर्मनी भी जाने का इच्छुक था जहाँ वह संगीत सुन सके।

उस ग्रीष्म ऋतु में उसे काफी अनुभव हुए जिन्हें वह कभी नहीं भूल सका; बाद में उसने पियानो के लिये कुछ टोन पोइम्स लिखीं जिन्हें **सी पीसेज** कहा जाता है। **इन मिड ओशन** और **ए वांडरिंग आइस बर्ग** नामक कविताओं में उसके प्रथम अनुभवों का उल्लेख है। बहुत से अमरीकी जब पहिली बार महासागर पार करते हैं तो वे शुरू में आने वाले पिलग्रिम के बारे में सोचते हैं और यह सोचकर आश्चर्य करते हैं कि उन पिलग्रिम को विशाल अंध-महासागर कैसा लगा होगा जब उन्होंने **मेफ्लोर** नामक जहाज से तीन महीने तक समुद्र-यात्रा की होगी। मेक्डोवेल ने भी इस प्रकार सोचा और उसने सन् १६२० की रचना की।

उसने स्विटजरलैण्ड की सैर की। वह देश प्रसिद्ध निशानेबाज विलियम टेल की जन्म-भूमि है। उसने राइन नदी के चढ़ाव की ओर स्टीमर से यात्रा की और उसने अपने सहयोगी यात्रियों के साथ पुराने दिनों के शबर बैरन के महल देखे। लेकिन एडवर्ड के जीवन में एक ऐसा अनुभव हुआ जिसे उसने बहुत दिनों तक याद करते रहने की चिन्ता नहीं की। उसे यह अनुभव पेरिस में हुआ था।

एक दिन वह फ़ान्स के सुन्दर नगर में था और उसे कुछ कैण्डी की आवश्यकता थी। उसने फ़्रांस की कन्फेक्शनरियों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था इसलिये वह स्वयं पेरिस की सड़कों पर कैण्डी की दूकान खोजने के लिये चल दिया। वहाँ की दूकानें उसके अपने नगर की दूकानों से बिल्कुल ही भिन्न थीं और उसने वहाँ किसी भी दूकान पर प्रदर्शन की अल्मारियों में सजाकर रखी कैण्डी को नहीं देखा। फिर उसे एक बोर्ड पर **कन्फेक्शन्स** शब्द लिखे दिखाई दिये और उसने उस दूकान की युवती क्लर्क से **कन्फेक्शन्स**

के लिये कहा। उसे किसी काउंटर या शेल्फ में कैण्डी नहीं दिखाई दी और उसने यह सोचा कि शायद फ्रांस में ऐसा रिवाज ही होगा कि कैण्डी को किसी भी दूकान की प्रदर्शन की अल्मारी में सजाकर न रखा जाता हो। वह उन सौदा बेचने वाली लड़कियों की फुसफुसाहट और शोखी भरी नजरों से भौंचक्का रह गया जो उसके आर्डर को सुन रही थीं। जब वे उसे दिखाने के लिये डेस कन्फेक्शन उठा लाईं तो उसे यह देखकर हैरानी हुई क्योंकि उसे यह आशा थी कि वे कैण्डी लायेंगी लेकिन वे चीजें महिलाओं के लिये सिल्क और लेस से बने अन्दर के कपड़े (अण्डर क्लोथ्ज) थे और उनके ड्रेसिंग गाउन थे। यह फ्रेंच का एक ऐसा पाठ था जिसे वह फिर कभी न भूल सका। वह उस स्टोर के बाहर निकल आया और उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया था।

जब वह तेरह वर्ष का था, उसने न्यूयार्क फ्रेंच स्कूल में अध्ययन करना छोड़ दिया था और उसके बाद उसने केवल संगीत का ही अध्ययन किया। उनकी माँ का यह अटूट विश्वास था कि वह किसी दिन एक अच्छा पियानो-वादक हो जायेगा। उन्होंने योरुप-दर्शन की यात्रा के तीन वर्ष बाद फिर यात्रा पर प्रस्थान किया। अब एडवर्ड की आयु पन्द्रह वर्ष की थी। इस बार उसे पेरिस की फ्रेंच कंज़रवेटरी के अध्यक्ष की देखरेख में रख दिया गया जिससे वह गंभीरता से संगीत-अध्ययन कर सके। इस बार वह जी-जान से काम करने लगा। वह प्रातःकाल छः बजे अपना काम शुरू करता और रात के नौ बजे तक काम करता रहता था। वह पियानो-वादन के अतिरिक्त संगीत की थियोरी और संगीत-रचना सीखता था। वह फ्रेंच भाषा में भी दक्ष होने के लिये अध्ययन किया करता था।

वह एक दिन फ्रेंच का पाठ सीख रहा था कि उस समय वह स्केचिंग-कार्य में दत्तचित्त हो गया। जब कभी उसके हाथ में पेन्सिल होती तो वह सदैव स्केच बनाता रहता था। अध्यापक ने जब यह देखा कि उस का छात्र अपनी फ्रेंच ग्रामर की पुस्तक के पीछे कुछ छिपा रहा है तो उसने अपने छात्र से उसे दिखाने के लिये कहा। एडवर्ड को ऐसा लगा कि अध्यापक उसे अवश्य ही डांटेंगे क्योंकि उसने अध्यापक की हूबहू शक्ल का स्केच तैयार कर लिया

था और अपने स्केच में अध्यापक की असाधारण लम्बी नाक का भली-भांति चित्रांकन किया था। एडवर्ड को सचमुच आश्चर्य हुआ जब उसके अध्यापक ने डांटने के बजाय यह पूछा कि उसने ड्राइंग कहाँ सीखी है। उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि उसने कभी भी ड्राइंग का अध्ययन नहीं किया है। फ्रेंच अध्यापक को यह जानकर अचम्भा हुआ कि उसमें इतनी समझ कहाँ से आ गई और उसने कहा कि वह उस तस्वीर को अपने पास रखना चाहता है।

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। कुछ दिन बाद वह अध्यापक मिसेज मेक्डोवेल से भेंट करने आये और उनसे कहा, "मेरे एक मित्र ऐसे हैं जो महान कलाकार है। मैंने एडवर्ड के बनाये स्केच को उन कलाकार महोदय को दिखाया है और वह इस बात से अधिक प्रभावित हैं कि एडवर्ड ने मेरी हूबहू शक्ल बनाई है। कलाकार ने एक विशेष प्रस्ताव भेजा है। उन्होंने कहा है कि वह एडवर्ड को केवल तीन वर्षों तक मुफ्त ही नहीं पढ़ा देंगे बल्कि उसकी सहायता भी करेंगे, इस प्रकार मेक्डोवेल को अपने रहने और भोजन के लिये कुछ भी न देना पड़ेगा। उन्हें एडवर्ड से बहुत आशा है और उनका विचार है कि एडवर्ड किसी न किसी दिन एक महान चित्रकार बन जायेगा।"

यह प्रलोभन कुछ कम न था। योरुप में मेक्डोवल के संगीत-अध्ययन का व्यय बहुत अधिक था। मेक्डोवेल के माता-पिता उस लड़के को बाहर संगीत सीखने के लिये सदैव अपने हिसाब-किताब की काट-छांट करके बजट बनाते रहते थे। अब यकायक एडवर्ड को ऐसा अवसर मिल गया जिसकी सहायता से वह मुफ्त में ही एक अन्य कला में पारंगत हो सकता था जिसके लिये भी उसमें प्रतिभा थी। अब प्रश्न यह था कि वह चित्रकार बने अथवा पियानो-वादक ? उसने संगीत में बहुत परिश्रम किया था और ड्राइंग को केवल खेल समझकर ही अपनाया था। उसे दोनों ही काम पसन्द थे। संगीत कला सीखना खर्चीला काम था और चित्रकला सीखना उसके लिये मुफ्त ही था। किसी एक काम में पारंगत होने के लिये विशेष परिश्रम की आवश्यकता है क्योंकि लगातार, कठोर और दत्तचित्त होकर काम करने की आदत से ही व्यक्ति सफल विशेषज्ञ हो सकता है। एक अन्य संगीतकार भी दोनों कलाओं में

प्रतिभावान था और उसके सामने भी केवल एक कला को चुनने की समस्या थी। चार्ल्स गोनाड को संगीत-रचना के लिये 'प्रिक्स डी रोम' जैसा पुरस्कार मिला जिसके प्राप्त करने की इच्छा किसमें न होगी। और उसे ड्राइंग के लिये भी पुरस्कार मिला। परन्तु वह संगीत के प्रति ही अधिक वफादार रहा। मेक्डोवेल ने भी संगीत को अपनाया। उसकी माँ अमरीका लौट गई और वह अपने प्रथम अध्यापक मिस्टर व्यूड्रेगो के साथ पेरिस में ही रुक गया। मिस्टर व्यूड्रेगो उन दोनों अमरीकियों के साथ योरुप आये थे।

एडवर्ड ने अपने फ्रेंच मित्र के साथ शारट्रेस के समीप फार्म पर छुट्टी बिताई। उसके लिये फ्रेंच परिवार के साथ रहना एक अजीब अनुभव था। जब गाँव के गिरजाघर के ओरगेनिस्ट को यह पता लगा कि समीप ही एक संगीतज्ञ ठहरा है, उसने एडवर्ड से निवेदन किया कि वह उसके स्थान पर काम कर ले जब तक वह छुट्टी पर रहे। किशोर मेक्डोवल ने गिरजाघर में आर्गेन बजाया। उस गिरजाघर की सर्विस क्वैकर की उन मीटिंग से बिल्कुल भिन्न थीं जिनमें वह कभी बचपन में भाग लिया करता था।

उसने पेरिस में दो वर्ष अध्ययन किया और उसके बाद वह बेचैन रहने लगा। उसने बहुत सी बैश प्रील्यूड और फ्यूग्ज के सुर अन्य 'की' में बदल लिये थे। और इससे संगीत का अनुशासन बढ़ गया था लेकिन वह यह महसूस करने लगा था कि उसके पियानो-वादन की कुशलता उस तीव्र गति से नहीं बढ़ पा रही है जितनी कि प्रगति होनी चाहिये। वह परिवर्तन करना चाहता था। वह जानता था कि उसने पेरिस में रहकर संगीत की बुनियादी बातों को बहुत अच्छी तरह सीख लिया है। लेकिन रूबिनस्टीन को बजाते हुये देखकर वह यह महसूस कर उठा कि वह फ़्रांस में रहकर इतना अच्छा कभी न बजा सकेगा। वह एक कुशल पियानो वादक के साथ रहकर अभ्यास करना चाहता था। एक वर्ष बीत गया और उसने जर्मनी के एक सुन्दर छोटे नगर बीसवेडन में अध्ययन किया और फिर वह फ्रेंक फोर्ट की कंजरवेटरी में गया। वहाँ उसने रैफ के साथ संगीत-रचना का अध्ययन किया। अभी तक छात्र रैफ की संगीत-रचनाओं को पियानो पर बजाते हैं। उसके अध्यापक उत्साह-

बर्द्धक और सहानुभूतिपूर्ण थे। दो वर्षों बाद वह बहुत अच्छी तरह पियानो बजाने लगा और उसके पियानो अध्यापक हेमेन ने यह सिफारिश की कि जब तक वह बीमार है, उसकी अनुपस्थिति में एडवर्ड ही अध्यापन कार्य करे। लेकिन सभी जर्मन प्रोफेसर इतने अधिक उदार न थे। कुछ ऐसे भी 'ओल्ड फोगी' होते हैं और वे दोनों प्रकार के नये और पुराने कलाकारों में मिल जाया करते हैं जो बहुत कोशिश करने पर भी संगीत में जान नहीं डाल पाते। उनमें से कुछ यह भी सोचते हैं कि केवल नोट्स का बजा लेना ही पर्याप्त है। वे कला के मानवी पक्ष अथवा जीवन की पुट नहीं दे पाते और वे शुद्धता, नोट, नियम, मांसपेशियाँ, हाथ की स्थिति और इसी प्रकार की अन्य बातों पर ध्यान देते रहते हैं। अलबत्ता यह भी महत्वपूर्ण बात है। लेकिन नोट्स चाहे स्केल्स, आरपीगिओस या जेरनी ही क्यों न हों फिर भी उन्हें बजाते समय जीवन और शुद्ध रक्त का जोश या आवेश की किसी प्रकार कमी नहीं होनी चाहिये, तभी वे नोट्स जीवित रह पाते हैं। साइबलियस कहा करता था कि संगीत में जो "जीवित" है, वही नोट्स हैं। स्केल्स और आरपीगिओस ही वादक की ख्याति स्थापित कर देते हैं और जेरनी तथा क्लेमेण्टी बहुत बड़े हुनर हो सकते हैं। इनमें से कुछ प्रोफेसर मेक्डोवेल के नवीन और स्पष्ट वादन के तरीके को स्वीकार न कर सके और वे हेमेन के स्थान पर उसे अध्यापन करने की अनुमति न दे सके। लेकिन रैफ ने कुछ प्राइवेट विद्यार्थियों को उसके पास भेज दिया और मेक्डोवेल ने जर्मनी में अध्यापन-कार्य शुरू कर दिया।

अब वह सुन्दर अमरीकी के नाम से परिचित हो गया। उसका सुडौल शरीर था, गोरा रंग था, नीली चमकीली आँखें थीं, लाल सी मूछें थीं और काले बाल थे।

ग्रीष्म ऋतु में एक दिन वह उन्नीस वर्ष का हो गया। उस दिन फ्रेंक फर्ट में उसके पास आता ही कौन, लेकिन उसका चचेरा भाई चार्ल्स ऊँची बाइस्किल पर सवार होकर उसके पास पहुँच गया। दोनों ने एक दूसरे को बहुत दिनों से नहीं देखा था। एडवर्ड ने अपने मनपसन्द आवास-स्थान पर

अपने चचेरे भाई चार्ल्स को आराम से ठहराया। चार्ल्स एडवर्ड के विदेश में सरल स्वभाव से रहने और काम करने के ढंग से इतना अधिक प्रसन्न हुआ जितना एडवर्ड के उस रिवालवर को इनाम में जीतने पर प्रसन्न हुआ था जब उसने शूटिंग की प्रतियोगिता में सबसे अधिक ठीक निशाने लगाये थे।

रैफ ने एडवर्ड के पास कुछ छात्र भेजे थे उन छात्रों में रैफ की अमरीका-वासी एक प्रिय शिष्या मिस मेरियन नेविंस थीं। जिनका घर कन्केटीकट में था। रैफ का यह विचार था कि संयुक्त राज्य अमरीका की लड़की को ऐसे अध्यापक से अधिक सहायता मिलेगी जो उसकी भाषा जानता हो यद्यपि वह मन से अमरीकी को अपना अध्यापक बनाने के लिये तैयार न थी क्योंकि अमरीकी को अध्यापक न बनाने की दृष्टि से ही वह इतनी लम्बी यात्रा करके योरुप आई थी। फिर भी वह एक वर्ष तक मेक्डोवेल के साथ अध्ययन करने के लिये सहमत हो गई। मेक्डोवल भी अपना अनुभव बढ़ाने के लिये सर्व-प्रथम योरुप के विद्यार्थियों को ही सिखाना चाहता था। उसने उस छात्रा को पहिले वर्ष केवल 'केश' और 'एट्यूड्स' सिखाये और कोई भी 'गीत' न सिखाया। उस छात्रा को क्लारा शूमैन के पास सीखने का अवसर मिला लेकिन इतनी कठोर ट्रेनिंग के बावजूद उसने मेक्डोवेल की छात्रा बने रहना ही अधिक पसन्द किया।

सर्वप्रथम रैफ ने ही उस 'सुन्दर अमरीकी' को संगीत रचना करने के लिये प्रोत्साहित किया था। जब उसने एडवर्ड से **फर्स्ट पियानो कंसर्टो सुना,** उसने यह कहा कि वह वाद्य-वादन लीश को सुनाने के लिये सचमुच ही बहुत अच्छा है। वास्तव में यह उसकी अनुपम प्रशंसा थी। रैफ ने मेक्डोवेल को लीश से मिलने के लिये यह एक परिचय-पत्र दिया और एक दिन अमरीकी संगीत-कार ने साहस किया और वह वीमर गया जहाँ लीश रहा करता था। लेकिन जब वह उस महान पियानो-वादक के द्वार पर पहुँचा तो वह बाहर बेंच पर बैठ गया क्योंकि उसे घर में घुसने से डर लगा। कुछ समय बाद वह घर के अन्दर गया। फिर बरामदे में ही बैठ गया। कुछ छात्र लीश की कक्षा में जा रहे थे और उन्होंने उस प्रतीक्षा करने वाले युवक के बारे में अपने गुरू

में कहा होगा कि एक युवक अपने हाथ में म्यूजिक का पेपर लिये बाहर प्रतीक्षा कर रहा है। लीश हाल में आ गया और मेक्डोवेल तत्काल ही समझ गया कि ऐसी विशिष्ट आकृति का वही महान कलाकार है जिससे वह भेंट करने आया है। मेक्डोवल ने उन महाशय को अपना पत्र दिया। उसे बड़े आदर से अन्दर लाया गया और उससे कहा गया कि वह अपनी संगीत रचना प्रस्तुत करे। वह इस नवीन और सुन्दर वातावरण में बहुत ही लजीला था और लीश तथा उनके छात्रों के सामने कुछ भी बजाने में भयभीत सा हो था फिर भी उसने अपनी सामर्थ्य में सबसे अच्छा प्रदर्शन देने का प्रयत्न किया। उस महान कलाकार ने उसके कंसर्टो की ही प्रशंसा नहीं की अपितु उसके वाद्य-वादन की भी सराहना की। लीश महोदय ने उसकी केवल प्रशंसा ही नहीं की बल्कि उसकी और भी सहायता की। लीश ने अपने प्रभाव से मेक्डोवल को यह सहायता दी कि उसकी रचनाएँ जर्मनी में प्रस्तुत होने लगीं।

रैफ एक अच्छे अध्यापक थे। वे यह जानकर गौरव महसूस कर उठे कि लीश के कहने पर संगीतज्ञों की जर्मन सोसाइटी ने मेक्डूवल के **फर्स्ट पियानो सूट** को बजाया है। वह मेक्डोवेल की अपूर्व सफलता के उस दिन की अधिक प्रतीक्षा में थे किन्तु दुर्भाग्य आ धमका और उस आयोजन से कुछ समय पूर्व रैफ संसार से चल बसे। मेक्डोवेल दुःख से अधिक पीड़ित हो गया क्योंकि वह अपने दयालु और सहानुभूतिपूर्ण अध्यापक को अधिक चाहता था। वह सान्त्वना पाने के लिये अपनी अमरीकी छात्रा मिस नेविंस के पास गया और उसने मेक्डोवेल को यही सलाह दी कि अब वह अधिकाधिक परिश्रम करे। दो सप्ताह बाद उसने कंस्र्ट (संगीत समारोह) में अपना सूट प्रस्तुत किया और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लोगों ने लगातार "शाबाश, वाह ! वाह !!" की तुमुल ध्वनियों से उसके कुशल वाद्य-वादन का स्वागत किया है। वह इतना संकोची स्वभाव का था कि उसने पहिली बार ही यह सोच पाया कि उसकी संगीत-रचनाओं को प्रत्येक व्यक्ति पसन्द कर सकता है। इससे उसे अधिक प्रोत्साहन मिला। लीश ने उसकी प्रथम कृतियों को

जर्मनी में प्रकाशित किये जाने की सिफारिश की और मेक्डोवेल ने अपने 'कन्सर्टो' को लीश को ही समर्पित किया। उसने कठोर परिश्रम किया, वह बराबर लिखता रहा, उसने बहुत अभ्यास किया और वह लगातार अध्यापन भी करता रहा। और वह अपनी अमरीकी छात्रा मिस नेविन्स के प्रेम में फंस गया।

ग्रीष्म ऋतु थी और वह तेईस वर्ष का हो गया। उस समय वह अमरीका आया और उसका कानेक्टीकट में विवाह हो गया। नव-दम्पति फिर योरुप आ गये और वहाँ वे कुछ सप्ताह तक यात्रा करते रहे फिर वे जर्मनी में आकर रहने लगे।

मेक्डोवेल ने जर्मनी में कई वर्षों तक अध्यापन-कार्य किया और फिर अपने देश को लौटा। मेक्डोवेल ने संयुक्त राज्य अमरीका में भी लगभग उतने ही वर्ष जीवन विताया जितना कि वह योरुप में रह चुका था।

मेक्डोवेल परिवार उस समय बॉस्टन में रहा करता था। उस संगीतकार को कई बार सफलताएँ मिली थीं। उसे अपनी उस महान सफलता की अधिक याद थी जब उसने बोस्टन सिम्फोनी ओरकेस्ट्रा के साथ अपना **दूसरा कन्सर्टो** प्रस्तुत किया था और उस ओरकेस्ट्रा ने उसके **इण्डियन सूट** को भी बजाया था। उस शाम को उसे उसकी सफलता पर माला पहिनाई गई जिसे वह अपने न्यू हेम्पशायर फार्म की दीवाल पर सदैव टांगे रहता था। वह अपने काम की प्रशंसा सुनकर बहुत ही प्रसन्न होता था लेकिन जब कभी उसकी प्रशंसा होती तो उसे बहुत संकोच होता और उलझन महसूस होती। वह कपट से घृणा करता था और उससे सदैव डरा करता था। उसने अपने माता-पिता को उतना धन कमाकर सौंप दिया जितना कि उसकी संगीत की शिक्षा पर व्यय हुआ था और इस प्रकार उसने अपने माता-पिता के प्रयास की प्रशंसा प्रकट की।

जब वह बास्टन में रहता था तो उसके पास दो कुत्ते थे जिन्हें वह बहुत पसन्द करता था, उसने काली जाति के कुत्ते का नाम चार्ली चार्लिमेन और छोटे टेरियर का नाम चार्ली रख लिया था। चार्ली फार्म पर संगीतकार के सदैव साथ रहा करता था जहाँ ग्रीष्म ऋतु में मेक्डोवेल के परिवार के लोग

रहा करते थे। चार्ली को संगीत-मर्म-भेदी बना लिया गया था क्योंकि जब वेंगर का संगीत होता तो वह प्रसन्न होकर भोंकने लगता था और जब ब्रेह्मस का संगीत होता तो वह दुःखी होकर चिल्लाने लगता था।

मेक्डोवेल को कोलम्बिया विश्वविद्यालय में म्यूजिक के प्रोफेसर पद पर काम करने के लिये आमंत्रित किया गया इसलिये वह फिर अपने देश लौट आया। उस समय तक क्लिटन स्ट्रीट में बना उसका घर नष्ट हो चुका था जहाँ उसने अपने बचपन के दिन बिताये थे। उसके स्थान पर एक भद्दा घर बना हुआ था क्योंकि वह घर पूर्वी सेक्शन के क्षेत्र में आ गया था। बाहर से आने वाले लोग वहाँ इकट्ठे होने लगे थे और जो लोग भी अमरीका पहुँचते, वे आराम से ही रहने की बात सोचते थे। उसी समय रूस से बेलाइन नाम का परिवार वहाँ आया और बेलाइन परिवार का ही चार वर्षीय बालक इर्विङ्ग बर्लिन बड़ा होकर लोकप्रिय गीतकार हो गया। वह **एलेक्जेंडर्स रेगटाइम बैण्ड** और **गाड ब्लेस अमेरिका** नामक गीतों का रचियता था।

मेक्डोवेल ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में यथा-शक्ति अध्यापन कार्य किया और संगीत विभाग बनाने का प्रयत्न किया। वह अपने उन छात्रों के प्रति बहुत उदार था जो काम करने का पक्का इरादा रखते थे और अपने काम में योग्यता दिखाते थे। वह उन छात्रों को मुफ्त सिखाने को तैयार रहता था जिनके पास धन नहीं था। वह विनोदी स्वभाव का था और उसकी हँसी इतनी उन्मुक्त थी कि सभी खुलकर हँस उठते थे। एक बार एक छात्र ने अपनी अभ्यास-पुस्तिका (एक्सरसाइज बुक) में विश्राम-सूचक रेखाएँ लगा दीं और अन्त में डबल बार का निशान लगा दिया तो मेक्डोवेल ने लाल स्याही से मार्जिन में यह लिखकर वह पुस्तिका लौटा दी कि "इस अभ्यास में केवल यही शुद्ध लेखांश है।"

किसी भी गीत के प्रारंभ होने से पूर्व उसके मन में विश्वास और आशंका की अनवरत हिलोरें उठती थीं और उसमें पूर्वाभास की बेचैनी तथा रंगमंच के प्रति भय बना रहता था, उसकी पत्नी प्रायः अन्त समय तक उसे अपना कार्यक्रम शुरू करने के लिये प्रोत्साहित किया करती थी। वह अध्यापन में

अधिक समय लगाता था इससे उसके वाद्य-वादन पर असर पड़ता था। वह पियानो इतना अच्छा बजाता था कि उसके बारे में एक आलोचक ने लिखा है कि पेडेरेव्सकी के बाद मेक्डोवल ही सबसे अधिक संतोष देने वाला पियानो-वादक था। मेक्डोवेल को यह जानकर बहुत दुःख होता था कि वह अमुक कार्यक्रम में अपना पियानो अच्छा नहीं बजा पाया।

वह शहर से बाहर जाना पसन्द करता था और वह न्यू हेम्पशायर की पहाड़ियों पर घूमा करता था तथा अपने किसान के साथ टमटम पर जाया करता था। उसने अपनी सबसे अधिक रचनाएँ उसी समय लिखीं जब वह प्रत्येक झंझट से दूर होकर नितान्त अकेला रह पाता। इस एकाकीपन के जीवन के लिये उसने न्यू हेम्पशायर के पीटरबोरो स्थित फार्म के समीप जंगल में एक छोटी केबिन बना ली थी। वह छोटी केबिन अब भी वहाँ है। लेकिन अब उस फार्म पर एक कालोनी बस गई है जिसमें कलाकार, लेखक, संगीतकार और इसी प्रकार के अन्य लोग रहते हैं क्योंकि वहाँ वे अधिक अच्छा काम कर लेते हैं। उन्हें वहाँ न तो टेलीफोन पर बात करनी होती है, न अन्य व्यक्तियों के साथ भोजन के लिये जाना पड़ता है, और न ऐसी विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उनके जीवन में प्रतिदिन अनायास आ जाया करती हैं। मेक्डोवेल के निधन के बाद मिसेज़ मेक्डोवेल ने अन्य कलाकारों के लिये अपना समय और शक्ति अर्पित कर दी क्योंकि उनके पति की इच्छा थी कि कलाकारों और लेखकों के लिये सुविधाजनक एकान्त स्थान की व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि वे चिन्तन-मनन कर सकें और रचनाएँ कर सकें। अब वहाँ एकान्त में बीस केबिन बना दी गई हैं। उन केबिनों को उस जंगल में बनाया गया है जिसके मालिक मेक्डोवेल रहे। कई अमरीकी संगीतकारों ने उस स्थान से अधिक लाभ उठाया है।

मेक्डोवेल अपने बचपन से ही पढ़ना पसन्द करता था। किसी ने उसके लिये लिखा है कि 'उसमें साधारण संगीतज्ञ की मूर्खता से कहीं विपरीत बौद्धिक रुचि और व्यापक संस्कृति थी।" उसकी कई प्रकार के कार्यों में व्यापक रुचि थी जैसा कि इस कथन की सार्थकता उसकी हाबी (मुक्त समय

के रुचिपूर्ण कार्य) से प्रकट होती है। वह अधिकतर कविता पढ़ा करता था और उसे कथा-कहानियों के गीतों तथा मध्य-युग के प्रेम-गीतों के बारे में अधिक जानकारी थी, फिर भी उसे मार्क-ट्वेन और अंकल रीमत की कहानियाँ पढ़ने का शौक था। उसे बागवानी, फोटोग्राफी और बढ़ईगीरी से प्रसन्नता मिलती थी। उसने बाग बगीचों के प्लान तैयार किये थे और घर के नक्शे बनाये थे। एक दिन वह फैकल्टी की मीटिंग छोड़कर दंगल देखने के लिये चला गया। उसे यह देखकर बहुत प्रसन्नता मिली कि उसके एक तिहाई साथियों ने भी ऐसा ही किया है।

जब उसे यह मालूम हुआ कि उसके छोटे गांव पीटर-बोरो में कोई गोल्फ-कोर्स नहीं है तो उसने एक फार्म खरीदा और उसे अपने गाँव को उपहार में दे दिया। उसने वहाँ एक क्लब हाऊस बनाने के लिये एक अमीर पड़ोसी से आग्रह किया। उस क्लब में उसने सभी को आमंत्रित किया, यहाँ तक कि उस क्लब में सबसे गरीब भी गया और उन सभी ने मिलकर उस "शाही खेल" का आनन्द उठाया।

वह अध्यापन कार्य में कितना ही अधिक व्यस्त क्यों न रहता हो परन्तु वह सदैव यह महसूस किया करता था कि उसे प्रत्येक दिन संगीत की कुछ पंक्तियाँ अवश्य लिखनी ही थीं उसने फ्रांस में अपना बचपन विताया और तभी यह अनुशासन सीख लिया था कि प्रतिदिन लिखने के अभ्यास की वैसी ही आवश्यकता है जैसी कि प्रतिदिन पियानो बजाने का अभ्यास करने की आवश्यकता है। उसने कभी भी पियानो बजाकर संगीत-रचना नहीं की लेकिन वह प्रायः आशुकविता करते समय अपने विचारों को अपनी स्केच बुक में लिख लिया करता था। फिर कभी ग्रीष्म ऋतु में अपने फार्म पर वह अपने फुटकर विचारों को देखा करता और उन विचारों के आधार पर गीत लिखा करता था। उसने चार बड़े पियानो-सोनटा की रचनाएँ कीं जिनमें से उसे **केल्टिक सोनेटा** सबसे अधिक प्रिय रचना लगी। वह अपनी सभी बड़ी कृतियों में उसे सबसे अधिक पूर्ण और सर्वोत्तम समझता था। उसने **केल्टिक सोनेटा** और **नोर्स सोनेटा** को ग्रीग को समर्पित किया जिनका संगीत उसे बहुत पसन्द

था। उसे अपनी छोटी रचनाओं में सभी बातें देखते हुये **सी पीसेज** सबसे अच्छे लगे परन्तु वह **इण्डियन सूट** में से **डर्ज** अधिक पसन्द करता था।

जब बोहेमियन संगीतकार ड्वोरेक इस देश में था, उसने **न्यू वर्ल्ड सिम्फनी** लिखी, उस समय मेक्डोवेल को यह महसूस नहीं हुआ कि वह नीग्रो मेलोडी को इस तरीके से उपयोग कर रहा है कि उससे 'अमरीकी' संगीत तैयार होने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। उसने यह नहीं सोचा कि वह अधिक सरलता से ऐसी शैली (स्टाइल) की स्थापना कर रहा है, जिसे 'अमरीकी' कहा जायेगा। यद्यपि उसने स्वयं 'इण्डियन मेलोडी' का उपयोग किया, उसने कभी भी उस संगीत को 'अमरीकी संगीत' नहीं समझा। एलगर ने भी ऐसा ही महसूस किया क्योंकि वह कभी फोक-ट्यून (लोक धुनों) को जानबूझ कर काम में नहीं लाता था। मेक्डोवेल ने कहा : "मनुष्य कपड़े पहिनता है या किसी धन्धे में लगा रहता है लेकिन उसके कपड़ों या धन्धे को देखकर वह कैसा ही क्यों न लगे फिर भी वह प्रायः कुछ अलग ही व्यक्तित्व रखता है लेकिन जब हम उसको केवल उसकी वेश-भूषा से ही पहिचानने का प्रयत्न करते हैं तो हम उसके बारे में कुछ भी नहीं जान पाते। और यही बात संगीत के लिये भी सत्य है। केवल मात्र कहे जाने वाला रशियन, बोहेमियन या किसी राष्ट्र का संगीत कला की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता क्योंकि उस संगीत के लक्षणों को कोई भी दुहरा सकता है जिसे इस बात का शौक हो। इसके विपरीत संगीत के लिये भी एक प्रमुख बात है—व्यक्तित्व, और यही संगीत की कसौटी है। यदि संगीत किसी 'उपकरण' की सहायता से तैयार किया जाय तो उसे केवल 'दर्जीगीरी' ही माना जायेगा। राष्ट्रीय संगीत-रचना के लिये ऐसे साधन अपनाना मूर्खता है। यदि किसी राष्ट्र को संगीतकार की तलाश करनी है जो राष्ट्र-भावना को अभिव्यक्त कर सके तो ऐसे राष्ट्र में सर्वप्रथम इस प्रकार के व्यक्ति होने चाहियें जो सही अर्थों में अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हों अर्थात् राष्ट्र का अभिन्न अंग होने के नाते वे अपने देश से प्रेम करते हों, वे अपने संगीत में वही भावनाएँ भरते हों जिन्हें राष्ट्र ने अपने जीवन में स्वीकार किया है। जहाँ तक अमरीका की अपनी बात है, उसके लिये सभी से परे

यह आवश्यकता है कि प्रत्येक प्रतिबंध से अलग हटकर पूर्ण स्वतंत्रता मिले। जनता और लेखक दोनों की यह आवश्यकता है। यह प्रतिबंध हमारे जीवन में योरुपीय विचार और पक्षपात के प्रति शाश्वत आदर रखते रहने से ही आरोपित हुआ है। नीग्रों की वेश-भूषा बोहेमिया के अनुकूल बना ली जाय और इस प्रकार छद्मवेश में यों ही राष्ट्रीयता स्थापित कर दी जाय तो इससे हमें कोई लाभ न होगा। हमें नवयुवकों की सी आशाप्रद शक्ति और अपराजित भावना की आवश्यकता है और यही अमरीकी व्यक्ति की पहिचान है।"

हमारा पहिला गंभीर संगीतकार अमरीका में पैदा हुआ और योरुप में उसकी ख्याति हुई तथा वहाँ उसकी संगीत की रचनाएँ प्रकाशित हुई। चालीस वर्ष से अधिक समय हो गया है और वह अब इस संसार में नहीं है लेकिन जब आप अन्य संगीतकारों की जीवनियों और उनकी कृतियों के बारे में पढ़ेंगे, कदाचित आप यह महसूस करेंगे कि अमरीकी संगीत के सम्बन्ध में मेक्डोगल के विचार सही थे। एक व्यक्ति के जीवन से कहीं अधिक समय किसी कला की परिपक्वता में लग जाता है, शायद आप यह महसूस करेंगे कि मेक्डोवेल ने "युवकों की आशाप्रद शक्ति और अपराजित भावना' के विषय में जो कुछ कहा है, वह अमरीकी संगीत में प्रवेश कर रहा है।

[एडवर्ड मेक्डोवेल का १८ दिसम्बर १८६१ को न्यूयार्क शहर में जन्म हुआ। वह २३ जनवरी, १९०८ को स्वर्गवासी हुए।]

एथेलबर्ट नेविन

"बेंश मेरे लिये प्रतिदिन की खुराक है।"

जब स्टीफेन फॉस्टर का देहान्त हुआ, उस समय डेढ़ वर्ष का एक छोटा बालक था जिसका नाम एथेलबर्ट नेविन था। फास्टर ने जिस जगह अपना बचपन बिताया था, वहीं वह बालक बड़ा हो रहा था। वह स्थान पेन्सिल-वेनिया में पिट्सबर्ग के पड़ोस में था। जब फॉस्टर छोटा था, पिट्सबर्ग नदी के किनारे बसा नगर था और वह नगर अब भी प्रमुख मार्गों के समीप है और उसके पश्चिम में सुदूर जंगलों भरा सीमांत प्रदेश था। वह नदी के किनारे मल्लाहों के आकर्षक जीवन के सम्पर्क में आया इसलिये उसे घाट पर काम करने वाले नीग्रों के गीत सुनने को मिले। उसने उन निम्नवर्ग के आदमियों का संगीत सुना जो स्वयं गा-बजा कर एक दूसरे का मन बहलाया करते थे। एथेलबर्ट नेविन भी गीतकार बन गया लेकिन उसके गीतों में ऐसा कुछ भी न था कि फॉस्टर की याद की जाती। उसका सारा जीवन फॉस्टर के जीवन से भिन्न था। उसे संगीत में ट्रेनिंग मिली थी जबकि फॉस्टर इस ट्रेनिंग से वंचित रहा था लेकिन दोनों ही कलाकार देर से संगीत सीखना प्रारंभ कर सके क्योंकि उन दिनों में और विशेषकर अमरीका की प्रारंभिक जिन्दगी में माता-पिता यह नहीं समझते थे कि अपने बच्चों को किस प्रकार सफल संगीतज्ञ बनाये। फॉस्टर ने स्वयं अपने मन से गीत लिखे और वे गीत स्वान्तः सुखाय लिखे गये। नेविन के गीत उसके जीवन की अनुभूतियाँ थीं। उसकी अपने विषयों के प्रति काव्य-कल्पना थी लेकिन उसकी कृतियाँ स्वाभाविक न होने की अपेक्षा अधिक कृत्रिम थीं। फिर भी वह अपनी रचनाओं को वास्तविक ही समझता था इसलिये उसने विश्वास से अपनी रचनाओं का प्रणयन किया।

नेविन बड़ा हो रहा था कि पिट्सबर्ग रेलों का केन्द्र बन गया। इससे

अंधमहासागर के किनारे पूर्वी शहर मध्यवर्ती पश्चिमी भाग के साथ-सरल सम्पर्क स्थापित करने लगे। यह दूरी इतनी थी कि फॉस्टर के माता-पिता अपनी सुहागरात मनाने के लिये दो सप्ताह से अधिक समय में तै कर पाये थे जबकि वे घोड़े पर सवार होकर यात्रा पर निकले थे लेकिन अब ऐथलबर्ट नेविन के समय में यह दूरी रेल से कुछ ही घण्टों में तै की जा सकती थी। स्टीफेन फॉस्टर ने स्वप्न में यह कभी नहीं सोचा कि वह समुद्र पार करके दूर देश की यात्रा करे लेकिन नेविन ने योरुप की कई यात्राएँ की। उसने वहीं अध्ययन किया। उसके संगीत में योरुपीय परम्परा का पुट होते हुये भी वह अपने देश के प्रति अधिक झुका हुआ था। उसका लालन-पालन मेक्डोवेल के समान ही हुआ था। मेक्डोवेल उससे एक वर्ष ही बड़ा था। लेकिन मेक्डोवेल न्यूयार्क में रहा और जब वह लगभग पन्द्रह वर्ष का हो गया तभी वह विदेश गया इसलिये उन दोनों की तब तक भेंट न हो सकी जब तक कि वे बड़े न हो गये तथा अच्छे संगीतज्ञ न बन गये। दोनों ही संगीतकार थे और कुशल पियानो-वादक थे। उन दोनों को जिस किसी ने पियानो बजाते सुना, यही कहा, 'मेक्डोवेल के संगीत में कर्कशता है और नेविन के संगीत में कविता है।''

नेविन का परिवार मेक्डोवेल और फॉस्टर के परिवार के समान ही था। वे स्काच-आइरिश वंश के थे। एथेलबर्ट के पिता को पिट्सबर्ग के बारे में उस समय की स्थिति पता थी जब वहाँ जेफरसन कालेज में पढ़ा करता था जब स्टीफेन फॉस्टर वहाँ गया था। लेकिन एक सप्ताह भी न हुआ कि स्टीफेन ने वह स्थान छोड़ दिया। बाद में मिस्टर नेविन ने स्टीफेन फॉस्टर और नीग्रो गायकों के बारे में एक लेख लिखा। एथेलबर्ट की माँ में सौंदर्य और संस्कृति की विशेष भावना थी। जब वे छोटी थीं, तब उनके लिये सुदूर पूर्व से एलीगेनी पहाड़ियों को पार करके घोड़े की पीठ पर लादकर एक बड़ा पियानो लाया गया था। उन्हें संगीत बहुत पसन्द था।

नेविन का घर ''वाइन-एकर'' कहलाता था। नेविन पिट्सबर्ग के दक्षिण में लगभग पन्द्रह मील दूर ओहियो नदी के किनारे सेविक्ले के समीप एजवर्थ

में पैदा हुआ था। उसका घर इतना बड़ा और अव्यवस्थित था जैसे कि वह घर बच्चों के खेलने के लिये ही हो। उस घर में कई बच्चे खेला करते थे क्योंकि नेविन के परिवार में आठ बच्चे थे और एथिलबर्ट पाँचवाँ बच्चा था।

वह उस समय पैदा हुआ जब गृह-युद्ध हो रहा था और उसने उन लोकप्रिय गीतों को सुना जो उसके बचपन से ही गाये जा रहे थे। जब वह तीन वर्ष का हुआ तो वह ये गीत गा सकता था : **टेंटिंग आन दी ओल्ड कैम्प ग्राउंड** और **मार्चिग थ्रू जार्जिया**। जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो वह पियानो की धुन के साथ-साथ गीत गा लेता था। उस समय भी वह संगीत सीखने के लिये उत्सुक रहता था। जब वह यह देखता कि उसके बड़े चचेरे भाई संगीत के पाठों को शुरू कर रहे हैं तो वह कुछ संगीत के पृष्ठ लपेट लेता और अपनी बगल में दबाकर घर के बाहर चला जाता। यदि उससे यह पूछा जाता "कहाँ जा रहे हो ?" वह उत्तर देता, "ओह ! मुझे जाना चाहिये और अपने साथ संगीत के पाठ भी ले जाना है।" उस वर्ष क्रिसमस से पहिले रात को उसके पिता अपनी जेब में रखकर एक म्यूजिक बाक्स लाये। उन्होंने उस छोटे बच्चे को अपने घुटनों पर बिठाया और क्रिसमस की पहली कहानी सुनाई। वे कभी-कभी अपनी जेब के म्यूजिक बाक्स के तार छेड़ देते जिससे आकाश में मधुर ध्वनि उठा करती और इस प्रकार वे उस कहानी को और अधिक प्रभावकारी बना देते। वह लड़का इस बात से भावावेश हो उठता और उसे यह विश्वास हो जाता कि वह संगीत की ध्वनि सचमुच स्वर्ग से ही आ रही है।

एथेलबर्ट को लड़कों के खेल-कूद कभी अच्छे न लगे, उसे लड़कियों के साथ खेलना पसन्द था। वह इस बात से बहुत प्रसन्न होता था कि उसे बेसबॉल के खेल में पानी पिलाने का स्थान दिया गया है। वह इसे एक सम्मान समझता था। शायद उसकी यह भावना ठीक ही थी। अक्सर यह घटना होती थी कि यदि उसे गेंद के खेल में शामिल भी कर लिया जाता तो वह अपना बल्ला जमीन पर फेंक कर घर भाग जाता और वहाँ अपने पियानो को बजाने लगता। उससे यह पूछा जाता, "ऐसा क्यों किया ?" वह उत्तर दे

में पैदा हुआ था। उसका घर इतना बड़ा और अव्यवस्थित था जैसे कि वह घर बच्चों के खेलने के लिये ही हो। उस घर में कई बच्चे खेला करते थे क्योंकि नेविन के परिवार में आठ बच्चे थे और एथिलबर्ट पाँचवाँ बच्चा था।

वह उन समय पैदा हुआ जब गृह-युद्ध हो रहा था और उसने उन लोकप्रिय गीतों को सुना जो उसके बचपन से ही गाये जा रहे थे। जब वह तीन वर्ष का हुआ तो वह ये गीत गा सकता था : **टेंटिंग आन दी ओल्ड कैम्प ग्राउंड** और **मार्चिग थ्रू जार्जिया**। जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो वह पियानो की धुन के साथ-साथ गीत गा लेता था। उस समय भी वह संगीत सीखने के लिये उत्सुक रहता था। जब वह यह देखता कि उसके बड़े चचेरे भाई संगीत के पाठों को शुरू कर रहे हैं तो वह कुछ संगीत के पृष्ठ लपेट लेता और अपनी बगल में दबाकर घर के बाहर चला जाता। यदि उससे यह पूछा जाता "कहाँ जा रहे हो ?" वह उत्तर देता, "ओह ! मुझे जाना चाहिये और अपने साथ संगीत के पाठ भी ले जाना है।" उस वर्ष क्रिसमस से पहिले रात को उसके पिता अपनी जेब में रखकर एक म्यूजिक बाक्स लाये। उन्होंने उस छोटे बच्चे को अपने घुटनों पर बिठाया और क्रिसमस की पहली कहानी सुनाई। वे कभी-कभी अपनी जेब के म्यूजिक बाक्स के तार छेड़ देते जिससे आकाश में मधुर ध्वनि उठा करती और इस प्रकार वे उस कहानी को और अधिक प्रभावकारी बना देते। वह लड़का इस बात से भावावेश हो उठता और उसे यह विश्वास हो जाता कि वह संगीत की ध्वनि सचमुच स्वर्ग से ही आ रही है।

एथेलबर्ट को लड़कों के खेल-कूद कभी अच्छे न लगे, उसे लड़कियों के साथ खेलना पसन्द था। वह इस बात से बहुत प्रसन्न होता था कि उसे बेसबॉल के खेल में पानी पिलाने का स्थान दिया गया है। वह इसे एक सम्मान समझता था। शायद उसकी यह भावना ठीक ही थी। अक्सर यह घटना होती थी कि यदि उसे गेंद के खेल में शामिल भी कर लिया जाता तो वह अपना बल्ला जमीन पर फेंक कर घर भाग जाता और वहाँ अपने पियानो को बजाने लगता। उससे यह पूछा जाता, "ऐसा क्यों किया ?" वह उत्तर दे

देता, "मैंने अभी कुछ ऐसा सोचा है जिसे पियानो पर बजाकर देखना चाहता था।"

जब वह आठ वर्ष का हुआ तो उसने अपने अध्यापक से पियानो के पाठ सीखने शुरू किये। वह बचपन से ही अधीर और स्वाभिमानी स्वभाव का था। उसकी नर्स भी इस आदत को दूर करने में सहायक सिद्ध न हो सकी। वह उससे बार-बार छोटे-छोटे गीत ही गाने के लिये कह पाती थी या उसे नचाती थी। उसने संगीत सीखना प्रारंभ कर दिया और कुछ समय बाद वह अपनी मेलोडी की रचना भी करने लगा। उसने अपनी पहिली रचना अपनी छोटी बहिन के लिये लिखी थी और उसी के नाम से उस रचना का शीर्षक था : **लिलियन पोल्का**। उसने लिफाफे के ऊपर लिख दिया था :

बाई बर्टी नेविन

एजेड इलेविन

उसका पहिला स्कूल एजवर्थ में था, वहाँ एपिसकोपल चर्च का रेक्टर स्कूल मास्टर भी था और चर्च में ही स्कूल लगा करता था। बर्टी के कई नेविन चचेरे भाई उस स्कूल में विद्यार्थी थे। वास्तव में उस नगर में नेविन परिवारों की संख्या अधिक थी कि उस कम्यूनिटी के लिये यह बात मजाक बन गई थी कि चर्च में जाने वाले लोग अपनी प्रार्थनाओं में यह भ्रम कर बैठते थे और कह देते थे, "हमारे पिता नेविन हैं।"

बर्टी की स्पष्ट और कोमल तीव्र स्वर की आवाज़ थी तथा वह नेविन आक्टीटे और गौनाड क्लब के कन्सर्ट में गाया करता था। जिस वर्ष उसने अपनी पहिली रचना की थी, उसने उसी वर्ष उसे सार्वजनिक कन्सर्ट में प्रस्तुत किया था। वह कंसर्ट वेगनर-लीश का था जिसपर **टेनहासर मार्च** प्रस्तुत किया गया।

जब वह पन्द्रह वर्ष का था तब उसके माता-पिता उसे और उसकी बहिन को योरुप की यात्रा के लिये ले गये। बर्टी को ड्रेसडेन में संगीत के अध्ययन का अवसर मिला और उसे लीपज़िग, बर्लिन और वियाना में सर्वोत्तम संगीत सुनने का अवसर मिला। वे रोम भी गये, वहाँ एपिसकोपल चर्च में उसका चचेरा भाई नेविन रेक्टर था और बर्टी ने क्वैयर (गिरजों में उपासना के

समय गाने-बजाने वालों की मण्डली) के साथ गाया। उसने कदाचित उस समय सबसे अधिक गीत गाये जब उसकी आवाज़ बदल रही थी। बाद में उसके गाने की आवाज़ कभी सशक्त न हो सकी और यह बात उसके लिये निराशाजनक थी। पतझड़ के मौसम में नेविन परिवार के लोग 'वाइन एकर' लौट आये और बर्टी ने फ्रेशमेन क्लास में दाखिला ले लिया जो अब पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है।

लेकिन वह आदत से कालेज के छात्र जैसा न था। वह अपने मित्रों में साथी बने रहने के योग्य था किन्तु उसमें ऐसी क्षमता नहीं थी कि वह सभी के साथ घुल मिल सके। वह अपने अध्ययन के लिये भी तत्पर नहीं रहता था। वह स्वयं पढ़कर अध्ययन करना चाहता था और बाद में वह कई यात्राएँ करके अनुभव एकत्र करने लगा। उसने कालेज में जो वर्ष बिताया उस वर्ष उसकी संगीत के प्रति सबसे अधिक रुचि थी। उसका फ्रेशमेन वर्ष ही उसके कालेज में अध्ययन का अन्तिम वर्ष था। उसने पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा में चापिन का **ई फ्लेट पोलोनेसे** की धुन बजाई और उसने 'सेविक्ली मिन्स्ट्रेस' में अभिनय किया। उसी वर्ष उसने गीत भी लिखे जो बाद में प्रकाशित हुये।

उसने अपने घर में यह इच्छा व्यक्त की कि वह एक व्यावसायिक संगीतज्ञ बनना चाहता है तो उसके पिता को इस विचार पर आपत्ति हुई। यह ऐसी ही बात है जिसे आपने अन्य संगीतकारों की जीवनियों में भी सुना है। मिस्टर नेविन का यह विचार था कि संगीत का सीख लेना एक अच्छी कला है किन्तु उसे जीवन-यापन के लिये व्यवसाय नही बनाया जा सकता।

संगीत से धन अर्जित करना कठिन है। उसने संगीतज्ञों और कलाकारों को ऐसा नहीं समझा कि वे साधारण व्यक्तियों जैसे हों। जो कुछ भी हो, उसके पिता की यह धारणा थी कि यदि बर्टी ने अपने जीवन में संगीत को आय का साधन बनाया तो वह भूखा रहा करेगा। पिता की इन अकाट्य दलीलों को बर्टी ने स्वीकार कर लिया और उसने एक अच्छा व्यापारी होने का प्रयत्न किया।

कुछ समय तक वह मुद्रण के काम में लगा रहा क्योंकि उसके दो भाई उस व्यवसाय में लगे हुए थे। दूकान के सामने एक बड़े स्टोर की खिड़की थी और सेविकली परिवार की लड़कियाँ जब कभी नगर में खरीदारी के लिये जाती तो उस खिड़की के पास आकर खड़ी हो जाया करती थीं और बर्टी को काम में लगे हुए देखा करती थी। लेकिन इन आकर्षणों के बावजूद उसका व्यापार में मन न लगा। उसकी उस काम में प्रवृत्ति नहीं थी क्योंकि वह काम करते समय संगीत के बारे में विचार किया करता था। एक रात वह अपने पिता के पास गया। वे अपने घर की लाइब्रेरी में बैठे हुये थे। उसने उनसे कहा :

"मुझे जीवन भर गरीब ही रहने दें लेकिन एक संगीतज्ञ बनने दें।"

कदाचित बर्टी की माँ बर्टी के भविष्य के प्रति पारिवारिक बहस में बर्टी का ही मूक समर्थन करती थी। आखिरकार उसके पिता ने उसे संगीत सीखने तथा अभ्यास करने की अनुमति दे दी। अब बर्टी की आयु अठारह वर्ष की हो चुकी थी। वास्तव में उसे यह अवसर कुछ वर्ष पूर्व ही मिल जाना था।

'वाइनएकर' जैसी छोटी जगह में उसे "पत्र-व्यवहार द्वारा पाठ्यक्रम" के आधार पर ही संगीत-सिद्धान्त अध्ययन करने का अवसर मिला। उसने अपना यह अध्ययन न्यूयार्क में संगीत सिखाने वाले एक अध्यापक से पत्र-व्यवहार करके पूरा किया। इसी वर्ष उसने एक दूसरी रचना की। वह एक सुन्दर गीत था जिसका शीर्षक था **एपल ब्लासम** उसने यह गीत अपने नाम से नहीं लिखा बल्कि इस गीत पर अपना 'वुडब्रिज' **उपनाम** दिया।

वहाँ कई सामाजिक कार्यक्रम होते रहते थे। बर्टी को उन मनोविनोद के कार्यक्रमों में सम्मिलित होने में आपत्ति न थी। जिन लड़कियों के साथ वह बड़ा हुआ था, वह दूर बोर्डिंग स्कूल में रहा करती थीं लेकिन उनमें से कुछ पिट्सबर्ग में रहती थी और सप्ताह के अन्त में प्रायः घर वापिस आ जाया करती थीं। बसन्त का मौसम था। एक दिन उसकी एक परिचित लड़की अपनी दो सहेलियों के साथ छुट्टी बिताने घर आई। बर्टी नेविन भी अपने दो मित्रों के साथ था। वे लड़के उन लड़कियों से स्टेशन पर ही मिल गये।

उन दिनों में मोटर गाड़ियाँ नहीं थीं और लोग पैदल चलना या घूमना-फिरना पसन्द करते थे। उनमें से एक लड़के को यह पता था कि अंगूर की बेलें कहीं लगी हैं और वे वहाँ जाकर उन्हें ढूंढना चाहते थे। लड़कियों ने सोचा कि यह एक अच्छा खेल रहेगा। उन्होंने नदी पार की, वे पहाड़ी पर चढ़ने लगे और बेलों तक पहुँच गये। वहाँ बेलें ही बेलें थी। वहाँ इतनी लम्बी रस्सियाँ थीं कि उनपर सरक कर घाटी पार की जा सकती थी। लड़कों ने बहादुरी दिखाकर उस झूले को पहिले प्रयोग किया जिससे वे यह जान सकें कि उसपर लड़कियों का सरकना सुरक्षित रहेगा या नहीं। फिर बर्टी और विली वुड ने यह सोचा कि इस बात में मजा आयेगा कि वे मिलकर एक साथ झूलें। वे उसपर चढ़ गये, उन्होंने एक दूसरे के आमने-सामने अपने मुँह किये और झूले पर ऊँची-ऊँची पेंगें भरने लगे। सचमुच यह शानदार खेल था। वे झूले पर घाटी के परे बहुत ऊँचे उठ गये, लड़कियाँ उनकी प्रशंसा कर रहीं थीं और शेष लड़कियाँ तथा लड़का उन्हें देख रहे थे। वे चिल्लाकर, खुश होकर नीचे से हाथ हिला रहे थे।

यकायक रस्सी टूट गई। दोनों लड़के पत्थर के टुकड़ों के समान उस छोटी घाटी में नीचे गिर गये। बर्टी पहिले ऊपर आ गया और बाद में बिली भी उसके साथ पहुँच गया। सेविकली परिवार की लड़की को उस छुट्टी में सबकी मेहमानेवाज़ी करनी थी। वह बहुत घबरा गई थी लेकिन उसकी सुन्दर सहेली एनीपाल वर्टी के झूले से गिरते समय बेढंगे चेहरे को यादकर हँसी से लोट-पोट होने लगी थी। दुर्घटना में केवल बर्टी के टखने में मोच आई थी। इसी कारण शाम की पार्टी वाइन-एकर में ही की गई। बर्टी उस पार्टी में नृत्य के साथ केवल वाद्य-वादन ही कर सका। उसने लोगों से यह कहा कि ऐनीपाल निस्संदेह बहुत सुन्दर लड़की है लेकिन वह बहुत कठोर भी है और उसे ऐसी लड़की जीवन में दूसरी नहीं मिली। उस युवक पियानो-वादक के मस्तिष्क में अभी तक उस हँसी की स्मृति शेष थी जब ऐनीपाल उसके गिर पड़ने पर हँस उठी थी।

इसके बाद छः महीने बीत गये। पिट्सबर्ग के दूसरी ओर ऐनी-पाल का

घर था और वहाँ बर्टी को शाम को होने वाली नव-वर्ष की पार्टी में आमंत्रित किया गया। ऐनीपाल के पिता ने एक ट्रेन की व्यवस्था कर दी थी जिससे ऐनीपाल के सभी अतिथि वहाँ सरलता से पहुँच सकें। बर्टी नेविन एक विचित्र लड़का था, उसे संगीत और फूल अच्छे लगते थे,वह संवेगशील था तथा प्रायः घबरा उठता था। ऐनीपाल जिन लड़कों से परिचित थी, उनसे कहीं भिन्न बर्टी का स्वभाव था। वह स्वयं भी एक 'टॉम बाय' के समान थी। उसे घुड़सवारी और घर के बाहर की जिंदगी पसन्द थी। यह विचित्र ही बात थी कि उसे बर्टी जैसे लड़के की याद बनी रही बात केवल इतनी ही नहीं है लेकिन जब वह अपने अतिथियों में अपने ऐसे साथी ढूढने के लिये घूमने लगी जिसके साथ वह नृत्य कर सके, तब उसे बर्टी को ही सहज रूप में चुन लेने में अनुपम गौरव महसूस हुआ।

बसन्त और ग्रीष्म ऋतु के शेष समय में ऐथिलबर्ट पत्र-व्यवहार द्वारा पढ़ाई करता रहा। वह गिरजाघर में जाकर आरगेन बजाया करता था। पतझड़ का मौसम था, उसने यह निश्चय किया कि वह अधिक गंभीरता से संगीत-शिक्षा प्राप्त करे। बोस्टन उस समय संगीत और संगीतकारों का केन्द्र था, इसलिये बर्टी बोस्टन चला गया। जब वह वहाँ था, ऐनी की पढ़ाई खत्म हुई थी। वह अपनी कुछ सहेलियों के साथ आगे शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश भेज दी गई जिससे कि वह विदेश से अपनी शिक्षा में विशेषज्ञता हासिल कर सके।

आखिरकार ऐथिलबर्ट ने भी अधिक गंभीरता से अपना काम शुरू कर दिया। उसने 'स्केल्स' अभ्यास और 'क्रेमर' के अध्ययन में अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसके पियानो के अध्यापक लीश के शिष्य रह चुके थे। वे नेविन को केवल एक स्केल का अभ्यास करने के लिये कहते और उस पर नेविन की अंगुली की एक विशेष गति होती। नेविन प्रतिदिन डेढ़ घण्टे तक अभ्यास करता। उसने अपनी माँ को लिखा कि कुछ वर्षों पहिले उसने ड्रेसडेन में कुछ अभ्यास किये थे, वे अभ्यास अब के अभ्यासों की अपेक्षा कहीं अच्छे थे। जब उसे संगीत रचना के लिये भी एक अध्यापक मिला तब

भी उसका यही विचार रहा। उसे सैद्धान्तिक बातों मे ही इतना अधिक अभ्यास करना पड़ता था कि वह यह प्रायः सोचा करता कि आठ वर्ष पूर्व ही उसने यह सब कुछ क्यों न समाप्त कर लिया। इस बात में कितना अधिक समय बीत गया कि वह अपने पिता का यह विचार बदल सका कि उसे व्यापारी की अपेक्षा संगीतज्ञ होने में अधिक प्रसन्नता है। इन वर्षों में एथिलबर्ट नेविन को अधिक परिश्रम करना पड़ा। उसे उसी समय इन अभ्यासों में लगा दिया जाता जब कि उसके मन में प्रारंभ में ही सीखने की लगन थी। उसे इस प्रकार की शिक्षा देना कदाचित समयानुसार ही न था जबकि उसकी आशाओं पर पानी फिर चुका था और उसका मस्तिष्क इस बात से विमुख हो चुका था कि वह अपने जीवन में कोई महत्वाकांक्षा पूर्ण करना चाहता है। इस विचारधारा का उसके मन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि वह कभी अदम्य उत्साह से अपने काम में लग जाता था और कभी अधिक निराश होकर यह सोचने लगता था कि क्या वह अपने जीवन में कभी सफलता प्राप्त कर सकेगा। उसे लगता था कि उसके जीवन का उद्देश्य बहुत ही दूर हो चुका है। उसने घर में कई वर्ष बिताये फिर भी उसे प्रायः घर की याद आया करती थी। उसकी माँ उससे अधिक आत्मीयता रखती थी और उसकी माँ की ममता उसे इतना अधिक जकड़े हुए थी कि वह अपनी माँ से कभी अलग न हो सका जैसा कि प्रायः अधिकांश लड़के हो जाते हैं। वह अपनी माँ को लिखा करता था कि उसे दिन में अधिक से अधिक समय काम करना है अन्यथा उसके लिये यह सम्भव नहीं है कि वह उतना काम कर सके जितना कि उसके अध्यापकों को उससे आशा थी। उसका हाथ लगातार अभ्यास करते-करते कई बार सुन्न पड़ जाता था। किन्तु इन सभी बाधाओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं था और वह अपनी माँ को लिखा करता था "चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह अपना कार्य नहीं रोकेगा।

वह बोस्टन में दूसरा वर्ष काम करने लगा। ऐथलबर्ट ने कुछ छात्रों को सिखाने और वादक के रूप में अच्छा स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जिससे वह अपना व्ययभार उठा सके। लेकिन उसे कुछ भी प्राप्त न हो सका और

वह मन से कभी बहुत प्रसन्न और कभी बहुत निराश हो जाता था। उसने इस समय अपने को संगीतकार की अपेक्षा पियानो-वादक बनना अधिक श्रेयस्कर समझा। उसने लिखा : "आह ! कितनी निराशा है, मैं लगातार अभ्यास ही करता जाता हूँ—अभ्यास और अभ्यास—यहाँ तक कि अभ्यास करते-करते सुबह से शाम हो जाती है और कभी यह सोचता हूँ कि न जाने कितने वर्ष बीत जायेंगे जब मैं कलात्मक ढंग से कुछ बजा सकूँगा।" उसी पत्र में उसने अपनी माँ को यह भी लिखा कि उसके अध्यापक ने उसे एक सार्वजनिक कार्यक्रम में पियानो वादन पर बधाई दी है। उसने अपनी संगीत रचनाओं के लिये यह बताया, "मेरे पास बहुत से विचार हैं लेकिन मुझे इस बात के जानने की आवश्यकता है कि मैं इन विचारों को किस प्रकार 'म्यूजिक पेपर' पर अंकित करूँ ?"

सर्दी का मौसम था और वह अपने घर पर ही था। उस समय उसने पिट्सबर्ग में एक स्टूडियो किराये पर ले लिया और उसने यह विज्ञापन दे दिया कि वह अध्यापक तथा पियानो-वादक है। उस वर्ष उसके दो अन्य गीत प्रकाशित हुये : **आई वन्स हैड ए स्वीट लिटिल डाल, डियर्स** और **व्हेन आल दी वर्ल्ड इज यंग, लेड** इसी सर्दी के मौसम में वह उस लड़की के प्रेम में फँस गया जो उसे झूले से घाटी में गिरता देखकर हँस पड़ी थी। उनकी सगाई हो गई। उसके बाद ग्रीष्म ऋतु में वह योरुप चला गया। उस समय उसकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। यह बात बताने में विचित्र सी लगती है कि ऐनी के पिता व्यापारी होते हुये भी यह समझते थे कि नेविन के जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता उसके संगीत की सिद्धि है और यह बात नेविन के पिता को महसूस भी न हो सकी।

उसके बड़े भाई उसके विदेश की पढ़ाई के व्यय के लिये धन भेजा करते थे उसने उन्हें लिखा कि उसे बर्लिन नगर अच्छा लगा। वह वहाँ रहा और उसने काम किया। उसके अध्यापक का नाम किलाइंडवर्थ था जिसे वह पहिले पहल पसन्द नहीं था, वह उन्हें कठोर व्यक्ति मानता था लेकिन बाद में वह उनका ऐसा आदर करने लगा कि उन्होंने उसे सबसे अधिक सिखाया है और वे

दोनों अभिन्न मित्र हो गये। उसके लिये वह वर्ष एक महान अवसर था, वह जर्मनी में संगीत सुनता था, उसका बिना किसी अवरोध के अध्ययन चल रहा था और वह जर्मन सीख रहा था। उसने लिखा कि कभी-कभी उसे इतनी अधिक निराशा होती थी कि वह शायद ही किसी को यह सलाह देगा कि वह व्यवसाय के लिये संगीतज्ञ बने।

पार्टियों और ओपेरों का आयोजन होता रहता था। और सारा काम कुल इतना ही नहीं था। बर्लिन में नेविन का सामाजिक जीवन सुखद था। उसने बॉल्स और कंसर्ट में भाग लिया। उसके अध्यापक ने उसे अपने साथ बाक्स में बिठाया। यह सीट सम्राट की सीट के बाद होती थी। एथलबर्ट ने अपने परिवार के सदस्यों को लिखा कि उसकी सीट के पास ड्यूक, काउंट, काउंटेस काफी संख्या में इकट्ठे हो जाते थे।

वह अपना अध्ययन दूसरे वर्ष भी करता रहा। ग्रीष्म ऋतु में वह अपने घर गया और दूसरे वर्ष भी अध्ययन के लिये बर्लिन लौट आया। रास्ते में वह लंदन में रुका और वहाँ उसने गिल्बर्ट और सुलीवन के **द मिकाडो** का प्रदर्शन देखा। उसने सोचा कि वह प्रदर्शन सचमुच ही बहुत आकर्षक था। दूसरा वर्ष भी उसके लिये सफल वर्ष रहा क्योंकि ऐनी और उसकी बहिन भी वहाँ आ गई थीं। उस वर्ष क्रिसमस पार्टी में असली मजा आया। अपने मित्रों के साथ नाचने-गाने के लिये क्रिसमस त्योहार बहुत दिनों से मनाया जाता है और पुराने जर्मनी में यह त्योहार बहुत ही धूमधाम से होता है। नेविन को यह नहीं पता लगा कि वह उस क्रिसमस पेड़ के नीचे कितना सौभाग्यशाली है जहाँ उसने '**ओ टेनेनबाम**' और **स्टिल नैश**' गीत सुने। उसके बाद संगीत केवल ट्यून तक ही सीमित रह गया और निर्जीव हो गया यद्यपि वह देश संगीत के लिये धनी था। युद्ध और संगीत साथ-साथ विकसित नहीं होते। जब राष्ट्र की विचारधाराएँ युद्ध में लग जाती हैं तब संगीत लोप हो जाता है।

बसंत ऋतु में गर्मी के दिन थे। पिकनिकों का आयोजन किया जाता, नदियों के किनारे सैर की जाती और पुराने हीडिलबर्ग तक पहुँचने के लिये यात्राओं के कार्यक्रम बनाये जाते इसलिये नेविन को ऐसा समय भी मिल जाता

कि वह की बोर्ड के सामने अधिक देर तक नहीं बैठ पाता था। यदि आप नेविन के जीवन की पूरी कहानी पढ़ें तो आप उन दिनों में जर्मनी के विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में रुचिकर वर्णन पायेंगे।

जब वह अमरीका लौटकर आया तो उसने पिट्सबर्ग में सफलतापूर्वक पियानो का कार्यक्रम दिया। उसके बाद के वर्षों में वह कई कंसर्ट में काम करता रहा और उसने रचनाएँ भी कीं। जब वह छब्बीस वर्ष का हो गया तब उसकी ऐनी से शादी हो गई। उन्होंने मेसाचूसेट्स में अपना घर बनाया, वे बोस्टन या उसके समीप ही रहे। कभी-कभी वह अध्यापन कार्य भी करता। उसने पियानो के लिये कई गीत और टुकड़े लिखे।

उसने योरुप की कई और यात्राएँ कीं। वह योरुप में उस समय था जब उसके पियानो से सम्बन्धित रचनाएँ **वाटर सीन्स** के नाम से प्रकाशित हुईं। उन रचनाओं में से **नारसिसस** इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि सारे संसार में उसकी ट्यून बजाई जाने लगी। वह एक ऐसी ट्यून थी जो सभी के लिये प्रिय बन गई। उसकी लाखों प्रतियाँ बिक गईं। उन ट्यून को ओरकेस्ट्रा, ओरगेन और हर्डी-गर्डी पर बजाया गया। प्रिंस ऑव वेल्स ने स्वयं एक बार उस ट्यून को सुनाये जाने का अनुरोध किया। क्लोनडाइक की खानों में काम करने वालों ने उस ट्यून को अपने माउथ-ओरगन पर बजाया और पियानो सीखने वाला प्रत्येक छात्र उस ट्यून को सीखना चाहता था। इसलिये उस संगीत-कार को कभी आराम नहीं मिल पाता था। वह प्रत्येक बार सार्वजनिक सभाओं में वह ट्यून बजाता और उससे सदैव उसी ट्यून के बजाने के लिये आग्रह किया जाता। वह स्वयं 'नारसिसस' की ट्यून को बेकार ट्यून कह देता था।

उसके दो बच्चे थे, एक लड़का था और एक लड़की थी। वह पेरिस में अपने रहने के लिये एक घर ढूंढ़ रहा था जहाँ वह अपने परिवार को भी साथ में रख सके। उसे एक घर सबसे अधिक पसन्द आया, वह घर उस घर के ऊपर ही था जहाँ रोज़ा बॉनहियर रहते थे। वे **दी होर्स फयर** के प्रसिद्ध चित्रकार थे। लेकिन नेविन परिवार का वहाँ रह सकना संभव न हो सका क्योंकि चित्रकार अपने सिर पर ही पियानो बजाने की ध्वनि न

दोनों अभिन्न मित्र हो गये। उसके लिये वह वर्ष एक महान अवसर था, वह जर्मनी में संगीत सुनता था, उसका बिना किसी अवरोध के अध्ययन चल रहा था और वह जर्मन सीख रहा था। उसने लिखा कि कभी-कभी उसे इतनी अधिक निराशा होती थी कि वह शायद ही किसी को यह सलाह देगा कि वह व्यवसाय के लिये संगीतज्ञ बने।

पार्टियों और ओपेरों का आयोजन होता रहता था। और सारा काम कुल इतना ही नहीं था। बर्लिन में नेविन का सामाजिक जीवन सुखद था। उसने बॉल्स और कंसर्ट में भाग लिया। उसके अध्यापक ने उसे अपने साथ बाक्स में बिठाया। यह सीट सम्राट की सीट के बाद होती थी। एथलबर्ट ने अपने परिवार के सदस्यों को लिखा कि उसकी सीट के पास ड्यूक, काउंट, काउंटेस काफी संख्या में इकट्ठे हो जाते थे।

वह अपना अध्ययन दूसरे वर्ष भी करता रहा। ग्रीष्म ऋतु में वह अपने घर गया और दूसरे वर्ष भी अध्ययन के लिये बर्लिन लौट आया। रास्ते में वह लंदन में रुका और वहाँ उसने गिल्बर्ट और सुलीवन के **द मिकाडो** का प्रदर्शन देखा। उसने सोचा कि वह प्रदर्शन सचमुच ही बहुत आकर्षक था। दूसरा वर्ष भी उसके लिये सफल वर्ष रहा क्योंकि ऐनी और उसकी बहिन भी वहाँ आ गई थीं। उस वर्ष क्रिसमस पार्टी में असली मजा आया। अपने मित्रों के साथ नाचने-गाने के लिये क्रिसमस त्योहार बहुत दिनों से मनाया जाता है और पुराने जर्मनी में यह त्योहार बहुत ही धूमधाम से होता है। नेविन को यह नहीं पता लगा कि वह उस क्रिसमस पेड़ के नीचे कितना सौभाग्यशाली है जहाँ उसने '**ओ टेनेनबाम**' और **स्टिल नैश**' गीत सुने। उसके बाद संगीत केवल ट्यून तक ही सीमित रह गया और निर्जीव हो गया यद्यपि वह देश संगीत के लिये धनी था। युद्ध और संगीत साथ-साथ विकसित नहीं होते। जब राष्ट्र की विचारधाराएँ युद्ध में लग जाती हैं तब संगीत लोप हो जाता है।

वसंत ऋतु में गर्मी के दिन थे। पिकनिकों का आयोजन किया जाता, नदियों के किनारे सैर की जाती और पुराने हीडिलबर्ग तक पहुँचने के लिये यात्राओं के कार्यक्रम बनाये जाते इसलिये नेविन को ऐसा समय भी मिल जाता

कि वह की बोर्ड के सामने अधिक देर तक नहीं बैठ पाता था। यदि आप नेविन के जीवन की पूरी कहानी पढ़ें तो आप उन दिनों में जर्मनी के विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में रुचिकर वर्णन पायेंगे।

जब वह अमरीका लौटकर आया तो उसने पिट्सबर्ग में सफलतापूर्वक पियानो का कार्यक्रम दिया। उसके बाद के वर्षों में वह कई कंसर्ट में काम करता रहा और उसने रचनाएँ भी कीं। जब वह छब्बीस वर्ष का हो गया तब उसकी ऐनी से शादी हो गई। उन्होंने मेसाचूसेट्स में अपना घर बनाया, वे बोस्टन या उसके समीप ही रहे। कभी-कभी वह अध्यापन कार्य भी करता। उसने पियानो के लिये कई गीत और टुकड़े लिखे।

उसने योरुप की कई और यात्राएँ कीं। वह योरुप में उस समय था जब उसके पियानो से सम्बन्धित रचनाएँ **वाटर सीन्स** के नाम से प्रकाशित हुईं। उन रचनाओं में से **नारसिसस** इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि सारे संसार में उसकी ट्यून बजाई जाने लगी। वह एक ऐसी ट्यून थी जो सभी के लिये प्रिय बन गई। उसकी लाखों प्रतियाँ बिक गईं। उस ट्यून को ओरकेस्ट्रा, ओरगेन और हर्डी-गर्डी पर बजाया गया। प्रिंस ऑव वेल्स ने स्वयं एक बार उस ट्यून को सुनाये जाने का अनुरोध किया। क्लोनडाइक की खानों में काम करने वालों ने उस ट्यून को अपने माउथ-ओरगन पर बजाया और पियानो सीखने वाला प्रत्येक छात्र उस ट्यून को सीखना चाहता था। इसलिये उस संगीत-कार को कभी आराम नहीं मिल पाता था। वह प्रत्येक बार सार्वजनिक सभाओं में वह ट्यून बजाता और उससे सदैव उसी ट्यून के बजाने के लिये आग्रह किया जाता। वह स्वयं 'नारसिसस' की ट्यून को बेकार ट्यून कह देता था।

उसके दो बच्चे थे, एक लड़का था और एक लड़की थी। वह पेरिस में अपने रहने के लिये एक घर ढूंढ़ रहा था जहाँ वह अपने परिवार को भी साथ में रख सके। उसे एक घर सबसे अधिक पसन्द आया, वह घर उस घर के ऊपर ही था जहाँ रोजा बॉनहियर रहते थे। वे **दी होर्स फयर** के प्रसिद्ध चित्रकार थे। लेकिन नेविन परिवार का वहाँ रह सकना संभव न हो सका क्योंकि चित्रकार अपने सिर पर ही पियानो बजाने की ध्वनि न

सह सका। नेविन ने लिखा है, "यदि मुझे माइकिल ऐंजिलो और शेक्सपियर के घर में स्थान मिले तथा मैं वहाँ अपना पियानो न बजा सकूँ तो मेरे लिये वह घर बेकार ही है।"

जब वह अमरीका में रहा तो उसने कई कन्सर्ट में भाग लिया और साथ ही साथ अनेक रचनाएँ की। बोस्टन में उसका मेक्डोवेल से परिचय हो गया और उन दोनों ने एक कार्यक्रम में साथ-साथ काम किया लेकिन दोनों में से कोई भी संगीतज्ञों के किसी ग्रुप में भी न था। मेक्डोवेल को इसमें इतना संकोच था कि वह किसी ग्रुप में शामिल न हो सकता था और बोस्टन के संगीतज्ञ नेविन को देखकर नाक-भौं सिकोड़ने लगे थे क्योंकि वे नेविन को कमजोर संगीतज्ञ मानते थे। लेकिन मेक्डोवेल एक ऐसा कलाकार था जो नेविन की प्रशंसा करता था और मानता था कि नेविन का संगीतज्ञों में अपना एक स्थान है। उसने यह महसूस किया कि नेविन ने कभी 'सिम्फनी' की रचनाएँ नहीं की हैं लेकिन वह "मेलोडी" निकाल सकता है जिनमें नवीनता और प्रवाह होता है। उसने कहा कि **नारसिसस** के ताल-लय-पूर्ण गीत को कभी नहीं भुलाया जा सकता चाहे "अधिक परिश्रम से तैयार की गई सिम्फनी भुला दी जायँ।"

नेविन कभी बहुत कठोर नही था। वह प्रायः यह आवश्यक समझता था कि अपनी आवेशमयी दशा को संभालने के लिये उसे पुरानी दुनियाँ की शान्ति चाहिये। योरुप का जीवन उसके अनुकूल था, उसे वहाँ अध्ययन करने में आनन्द आता था और वह वहाँ ऐसे तरीके से काम कर लेता था कि वह तरीका अमरीका में संभव नहीं था। अमरीका में उसका सारा समय केवल धन कमाने में ही लग जाता था। वह अपने परिवार के साथ कुछ समय इटली में भी रहा। जब उसने गत बार योरुप की यात्रा की थी और वहाँ क्रिसमस के अवसर पर उसकी पत्नी ने उसे अत्यन्त विभोर होकर कंसर्ट में भाग लेते हुये देखा। जैसे ही उसने बजाना शुरू किया, उसकी पत्नी समीप के कमरे में चली गई। वह यह नहीं जान सका कि वह वहीं हैं। वह बहुत ही धीमे बजा रहा था और गा रहा था। 'एवरी व्हियर, एवरी व्हियर, क्रिसमस टू नाइट।' उसके

बाद वह 'आशु' कविता में उलझ गया। वह उस समय ऐसी विचित्र ट्यून बजाने लगा कि उसने इससे पूर्व या इसके बाद ऐसी ट्यून कभी नहीं बजाई। और जैसे-जैसे वह बजाता गया, उसके स्वप्न साकार हो उठे और वे सभी गीत उस कमरे में छाया बनकर सजीव हो उठे। वह उन सभी गीतों को साकार देख उठा। वह उनसे मध्यम स्वर में कह उठा, "लिटिल ब्याय ब्लू, यह ट्यून तुम्हारे उपयुक्त है", और फिर वह उस स्थान की ओर देखने लगता जहाँ विंकेन और ब्लिंकेन तथा नाड साथ-साथ खड़े हुये थे, तो वह उनसे कहता: "और यह ट्यून अब आपके लिये है—यह ट्यून आप तीनों के लिये ही है।' एक के बाद दूसरे गीत उसके मस्तिष्क में आने लगे—वह छोटी बच्ची दिख उठी जिसकी गुड़िया टूट गई थी, वह लड़का याद आया जो रात में जग गया था और उसने प्रत्येक का हंसकर और नम्र शब्दों में स्वागत किया।" बाद में उसके डाक्टर ने बताया कि इस प्रकार की असाधारण कल्पनाएँ केवल कवि के मन में ही आ सकती हैं और यह भी कहा जा सकता है कि इन्फ्लुयंजा होने के कारण ऐसा हो गया हो।

एथिलबर्ट नेविन ने संगीत की रचना की जिसमें सौदर्य और आकर्षण था और वह उस समय के अनुकूल थी। उसकी 'मेलोडी' में ट्यून थीं। वह एक महान संगीतकार नहीं था और न उसने कई प्रकार के संगीत अपनाये थे। उसके संगीत की भावनाएँ स्पष्ट थीं और उनमें सच्चाई थी। यदि उसकी जीवन-कहानी पढ़ी जाय और उसका संगीत सुना जाय और फिर इर्विंग बर्लिन की जीवन-कहानी पढ़ी जाय तो यह बात अविश्वसनीय लगती है कि नेविन गीत का रचियता था क्योंकि बर्लिन की यह इच्छा थी कि संसार को अन्य गीतों का रचियता न मानकर उसे उसी गीत का रचियता माना जाये। वह गीत **द रोज़री** था।

नेविन की आयु पैंतीस वर्ष की थी जब उसने **द रोज़री** गीत लिखा। वह उस समय न्यूयार्क में रहता था। उसे एक दिन अपनी माँ का पत्र मिला जिसमें एक समाचारपत्र की कतरन थी। वह एक कविता थी जिसका शीर्षक था : **द रोज़री** और उसे राबर्ट केमेरन रोजर्स ने लिखा था। एक मित्र ने

समाचारपत्र से वह कविता काट ली और कुछ वर्ष पूर्व उसकी माँ को दी थी। नेविन को वह कविता कुछ भी करने से एक महीने पूर्व मिल गई थी। फिर एक दिन उसने वह कविता ली, उसे पढ़ा, उसके शब्द याद कर लिये और एक बार ही बैठकर उसे गीतबद्ध कर दिया। वह उसे अपनी पत्नी को उपहार स्वरूप भेंट करने के लिये गया और यह लिखकर उसने वह कविता उपहार में दी :

यह एक लघु स्मारिका है, मैं बॉन ड्यू के प्रति आभारी हूँ जिनसे तुम मुझको मिली। तुम्हारे लिये मेरा सम्पूर्ण प्रेम और सद्भावना है—

सस्नेह—एथेलबर्ट नेविन

यदि नेविन को किसी के प्रति आत्मीयता हो जाती तो उसके लिये वह अत्यन्त स्वाभाविक रूप से मधुर और सरल शब्दों में ऐसा सब कुछ लिख देता था। जब वह बच्चा था तब अपनी माँ अथवा बहिन को फूलों का गुच्छा देने के लिये उनके सामने आ उपस्थित होता था।

'**द रोजरी**' एक ऐसा गीत है जिसकी सबसे अधिक प्रतियां संसार में बिकी हैं। यह ऐसा गीत था जिसकी 'टिन पैन एली' की भाषा में तोड़-मोड़ की आवश्यकता नहीं थी और यह गीत 'स्वाभाविक' था।

एक लेखक का विचार है कि यदि नेविन ने कुछ भी न लिखा होता और केवल **लिटिल ब्याय ब्लू** ही लिखा होता तो भी उसका सदैव स्मरण किया जाता। उसकी पत्नी ने बताया कि यह गीत रेल-यात्रा में कई लिफाफों की पुश्त पर लिखा गया। उसने बच्चों के लिये अन्य गीत भी लिखे और उसे 'शिकागो वर्ल्डस फेयर' के लिये गीत लिखने के लिये बुलाया गया। उसने जर्मन और फ्रेंच कविताओं को संगीत-बद्ध किया तथा कुछ निरानन्द केरल लिखे। उसके निधन के बाद उसका दूसरा गीत **माइटी लेक, ए रोज** प्रकाशित हुआ और यह गीत भी इतना लोकप्रिय हुआ कि इसकी हजारों प्रतियाँ बिक गई।

वेलेनटाइन का दिन था। नेविन के जीवन का वह अन्तिम वर्ष था। वह उस समय केन्केटीकट के न्यूहैवन में रहता था। वहाँ उसने अपनी छोटी

समाचारपत्र से वह कविता काट ली और कुछ वर्ष पूर्व उसकी माँ को दी थी। नेविन को वह कविता कुछ भी करने से एक महीने पूर्व मिल गई थी। फिर एक दिन उसने वह कविता ली, उसे पढ़ा, उसके शब्द याद कर लिये और एक बार हीं बैठकर उसे गीतबद्ध कर दिया। वह उसे अपनी पत्नी को उपहार स्वरूप भेंट करने के लिये गया और यह लिखकर उसने वह कविता उपहार में दी :

यह एक लघु स्मारिका है, मैं बॉन ड्यू के प्रति आभारी हूँ जिनसे तुम मुझको मिलीं। तुम्हारे लिये मेरा सम्पूर्ण प्रेम और सद्भावना है—
सस्नेह—एथेलबर्ट नेविन

यदि नेविन को किसी के प्रति आत्मीयता हो जाती तो उसके लिये वह अत्यन्त स्वाभाविक रूप से मधुर और सरल शब्दों में ऐसा सब कुछ लिख देता था। जब वह बच्चा था तब अपनी माँ अथवा बहिन को फूलों का गुच्छा देने के लिये उनके सामने आ उपस्थित होता था।

'**द रोजरी**' एक ऐसा गीत है जिसकी सबसे अधिक प्रतियां संसार में बिकी हैं। यह ऐसा गीत था जिसकी 'टिन पैन एली' की भाषा में तोड़-मोड़ की आवश्यकता नही थी और यह गीत 'स्वाभाविक' था।

एक लेखक का विचार है कि यदि नेविन ने कुछ भी न लिखा होता और केवल **लिटिल ब्याय ब्लू** हीं लिखा होता तो भी उसका सदैव स्मरण किया जाता। उसकी पत्नी ने बताया कि यह गीत रेल-यात्रा में कई लिफाफों की पुश्त पर लिखा गया। उसने बच्चों के लिये अन्य गीत भी लिखे और उसे 'शिकागो वर्ल्डस फेयर' के लिये गीत लिखने के लिये बुलाया गया। उसने जर्मन और फ्रेंच कविताओं को संगीत-बद्ध किया तथा कुछ क्रिसमस केरल लिखे। उसके निधन के बाद उसका दूसरा गीत **माइटी लेक, ए रोज** प्रकाशित हुआ और यह गीत भी इतना लोकप्रिय हुआ कि इसकी हजारों प्रतियाँ बिक गई।

वेलेनटाइन का दिन था। नेविन के जीवन का वह अन्तिम वर्ष था। वह उस समय केन्केटीकट के न्यूहैवन में रहता था। वहाँ उसने अपनी छोटी

लड़की के लिये एक पार्टी का आयोजन किया। उसका लड़का स्कूल में था। उस समय उसकी पत्नी भी नहीं थी. इसलिये उसी ने अपने घर को रिबन और फूलों से सजाया और छोटे-नन्हें मुन्ने अतिथियों को बुलाने के लिये गाड़ियाँ भेजीं जिन्हें वह अपनी लड़की की पार्टी के लिये बुलाना चाहता था। उसने उनका मनोरंजन किया, उसने नृत्यों के लिये ट्यून बजाई और खेलों में साथ दिया तथा उन बच्चों के लिये गीत गाये। जब एक पड़ोसी ने अन्दर झांका तो वह हँसा और उससे कहने लगा, "मैं अपने जीवन में सबसे अच्छा समय बिता रहा हूँ।"

यह उसकी अन्तिम पार्टी थी। उसके तीन दिन बाद उसका स्वर्गवास हो गया। उसके जीवन में उसके गीत इतना धन एकत्र नहीं कर सके कि वह अपना व्यय पूरा कर पाता। उसके बाद **द रोज़ेरी** गीत से प्रचुर धन इकट्ठा हुआ।

[ऐथिलबर्ट नेविन का जन्म २६ नवम्बर, १८६२ को पेन्सिलवेनिया के पिट्सबर्ग के समीप वाइन एकर में हुआ था। और १७ फरवरी १९०१ को कन्केटिकट के न्यूहैवन में उसका स्वर्गवास हो गया।]

अन्तराल (इण्टल्यूड)

लोकप्रिय संगीत में बदलने वाले फैशन

एक नये प्रकार के संगीत का परिवर्तन हमें इस बात से सचेत करता है कि हम सभी के जीवन में कितने अधिक संकट आये। संगीत की विधयों (मोड) में कदापि अन्तर नहीं आता जब तक कि राजनीतिक और सामाजिक परिपाटी में परिवर्तन न हो जाय.....

—प्लेटो"

प्राचीन काल के गीतकारों (वार्ड) के समय से, दिन प्रतिदिन की घटनाओं, इतिहास के तथ्यों, महापुरुषों के कारनामों का वर्णन गीतों और बेलेडों में होता आया है। सभी राष्ट्रों के अपने बेलेड और लोकप्रिय गीत होते हैं लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका जैसे नये देश में नवीन राजनीतिक विचारों के अनुसार जीवन का नया मार्ग प्रशस्त हुआ जिसके कारण लोकप्रिय संगीत में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुये।

हम यह जानते हैं कि दक्षिणी आबादी के क्षेत्रों में नीग्रों को धार्मिक गीत सुनाये गये। फलस्वरूप 'स्प्रिचुअल' की रचना होने लगी। अमरीकी नीग्रों और मूल निवासियों के संगीत से गोरों पर जो असर हुआ उसकी अनुभूतियों के फलस्वरूप मिनिस्ट्रल शो के गीतों की रचना की गई। अमरीकी नीग्रों के धार्मिक गीतों (स्प्रिचुअल्स) के बाद नीग्रों के एक अन्य प्रकार के संगीत का जन्म हुआ जिसे "ब्लूज़" कहा जाता है। मिन्स्ट्रिल शो, गीत और भावनात्मक बेलेड से एक नवीन डांस टाइम का विकास हुआ जिसे रैगटाइम कहते हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका में लोकप्रिय संगीत का विकास हो रहा था, उन महत्वपूर्ण वर्षों में केन्द्रीय योरुप में ब्रह्मस नामक एक संगीतकार रहता था जो अमरीकी रैगटाइम में अधिक रुचि रखने लगा और उसने अपने एक मित्र को यह लिखा कि वह उस संगीत का उपयोग करना चाहता है। परन्तु वह

कुछ वर्षों बाद स्वर्गवासी हो गया। इन्हीं वर्षों में कभी बोहेमियन संगीतकार ड्वेरक संयुक्त राज्य अमरीका में रह रहा था और उसकी नीग्रो लोगों के संगीत में विशेष रुचि हो गई। इन वर्षों में कई अमरीकी संगीतकार या तो बढ़ रहे थे या केवल जन्म ही ले पाये थे।

किसी व्यक्ति ने एक बार नवीन रैगटाइम के बारे में कहा : "रैगटाइम में एक ऐसी आरोह-अवरोह-पूर्ण गति है जिसे बरबस सुनने को कान आतुर हो जाते हैं।" इस "स्विंग" पर बराबर ज़ोर दिया जाना था और इसका विकास करना था। नीग्रो-रिद्म (लय) से लोकप्रिय संगीत में एक नया टेम्पो पैदा हुआ और इसके साथ ही नर्वस रिद्म की भी उत्पत्ति हुई जिसमें स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) के पुशिंग्ज और उसी के बार-बार आने वाले अस्थायी विराम (हाल्टिंग्स) रहते थे। स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) स्वयं नई बात नहीं थी। जिप्सी संगीत, हंगरी देश के गीतों और नृत्यों तथा प्राचीन स्पेन के संगीत में इसका अभाव न था। लेकिन रैगटाइम में स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) की अलग ही लज्जत थी।

रैगटाइम एक प्रिय धुन बन गई। फिर एक सरल स्टेप के साथ रैगटाइम का बजाना एक सफलता मानी जाने लगी। इसके पाठ कम खर्चे से सीखे जा सकते थे। जिन लोगों के पास अपने पियानो थे, वे रैगटाइम आसानी से सीख लेते थे। १८९० से रैगटाइम के प्रति उत्तरोत्तर लोकप्रियता बढ़ती गई जिससे सारे देश में वाद्य-वादन की कुशलता बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिला। रैगटाइम लोगों के लिए एक ऐसा सम्यक संगीत था जिससे लोग मतवाले होकर नाचने लगते थे। यदि लोगों के पास अपने वाद्य-यंत्र होते तो उनको कम खर्चे पर संगीत सिखाया जा सकता था। और इससे राष्ट्र में 'टिन पैन एली' नामक महान उद्योग का विकास होने लगा।

न्यूयार्क की अट्ठाईसवीं स्ट्रीट में छटी एवेन्यू और ब्रोडवे के बीच छोटे ब्लाक में लोकप्रिय संगीत के प्रकाशकों के कई कार्यालय खुल गये। इन कार्यालयों में छोटे-छोटे कमरे थे लेकिन उनमें बहुत कम छोटे "टिन पैन" पियानो के अतिरिक्त साज-सामान न था। उस ब्लाक में कई दूकानें थीं जहाँ पियानो

अन्तराल (इण्टल्यूड)

लोकप्रिय संगीत में बदलने वाले फैशन

एक नये प्रकार के संगीत का परिवर्तन हमें इस बात से सचेत करता है कि हम सभी के जीवन में कितने अधिक संकट आये। संगीत की विधयों (मोड) में कदापि अन्तर नहीं आता जब तक कि राजनीतिक और सामाजिक परिपाटी में परिवर्तन न हो जाय.....

—प्लेटो"

प्राचीन काल के गीतकारों (वार्ड) के समय से, दिन प्रतिदिन की घटनाओं, इतिहास के तथ्यों, महापुरुषों के कारनामों का वर्णन गीतों और बेलेडों में होता आया है। सभी राष्ट्रों के अपने बेलेड और लोकप्रिय गीत होते हैं लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका जैसे नये देश में नवीन राजनीतिक विचारों के अनुसार जीवन का नया मार्ग प्रशस्त हुआ जिसके कारण लोकप्रिय संगीत में आश्चर्य-जनक परिवर्तन हुये।

हम यह जानते हैं कि दक्षिणी आबादी के क्षेत्रों में नीग्रों को धार्मिक गीत सुनाये गये। फलस्वरूप 'स्प्रिचुअल' की रचना होने लगी। अमरीकी नीग्रों और मूल निवासियों के संगीत से गोरों पर जो असर हुआ उसकी अनुभूतियों के फलस्वरूप मिनिस्ट्रल शो के गीतों की रचना की गई। अमरीकी नीग्रों के धार्मिक गीतों (स्प्रिचुअल्स) के बाद नीग्रों के एक अन्य प्रकार के संगीत का जन्म हुआ जिसे "ब्लूज़" कहा जाता है। मिन्स्ट्रिल शो, गीत और भावनात्मक बेलेड से एक नवीन डांस टाइम का विकास हुआ जिसे रैगटाइम कहते हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका में लोकप्रिय संगीत का विकास हो रहा था, उन महत्वपूर्ण वर्षों में केन्द्रीय योरुप में ब्रह्मस नामक एक संगीतकार रहता था जो अमरीकी रैगटाइम में अधिक रुचि रखने लगा और उसने अपने एक मित्र को यह लिखा कि वह उस संगीत का उपयोग करना चाहता है। परन्तु वह

कुछ वर्षो बाद स्वर्गवासी हो गया। इन्हीं वर्षों में कभी बोहेमियन संगीतकार ड्वेरक संयुक्त राज्य अमरीका में रह रहा था और उसकी नीग्रो लोगों के संगीत में विशेष रुचि हो गई। इन वर्षो में कई अमरीकी संगीतकार या तो बड़ रहे थे या केवल जन्म ही ले पाये थे।

किसी व्यक्ति ने एक बार नवीन रैगटाइम के बारे में कहा : "रैगटाइम मे एक ऐसी आरोह-अवरोह-पूर्ण गति है जिसे बरबस सुनने को कान आतुर हो जाते हैं।" इस "स्विंग" पर बराबर जोर दिया जाना था और इसका विकास करना था। नीग्रो-रिद्म (लय) से लोकप्रिय संगीत में एक नया टेम्पो पैदा हुआ और इसके साथ ही नर्वस रिद्म की भी उत्पत्ति हुई जिसमें स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) के पुंशिग्ज और उसी के बार-बार आने वाले अस्थायी विराम (हाल्टिंग्स) रहते थे। स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) स्वयं नई बात नहीं थी। जिप्सी संगीत, हंगरी देश के गीतों और नृत्यों तथा प्राचीन स्पेन के संगीत में इसका अभाव न था। लेकिन रैगटाइम में स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) की अलग ही लज्जत थी।

रैगटाइम एक प्रिय धुन बन गई। फिर एक सरल स्टेप के साथ रैगटाइम का बजाना एक सफलता मानी जाने लगी। इसके पाठ कम खर्चे से सीखे जा सकते थे। जिन लोगों के पास अपने पियानो थे, वे रैगटाइम आसानी से सीख लेते थे। १८९० से रैगटाइम के प्रति उत्तरोत्तर लोकप्रियता बढ़ती गई जिससे सारे देश में वाद्य-वादन की कुशलता बढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिला। रैगटाइम लोगों के लिए एक ऐसा सम्यक संगीत था जिससे लोग मतवाले होकर नाचने लगते थे। यदि लोगों के पास अपने वाद्य-यंत्र होते तो उनको कम खर्चे पर संगीत सिखाया जा सकता था। और इससे राष्ट्र में 'टिन पैन एली' नामक महान उद्योग का विकास होने लगा।

न्यूयार्क की अट्ठाईसवीं स्ट्रीट में छटी एवेन्यू और ब्रोडवे के बीच छोटे ब्लाक में लोकप्रिय संगीत के प्रकाशकों के कई कार्यालय खुल गये। इन कार्यालयों में छोटे-छोटे कमरे थे लेकिन उनमें बहुत कम छोटे "टिन पैन" पियानो के अतिरिक्त साज-सामान न था। उस ब्लाक में कई दूकानें थीं जहाँ पियानो

के टुनटुनाने की आवाज प्रातःकाल से रात तक आती रहती थी। इस सेक्शन का नाम ही "टिन पैन ऐली" पड़ गया। इस सेक्शन का यह नारा था—'सब कुछ देकर गीत खरीदो।' प्रारंभ से ही "टिन-पैन ऐली" की उन्नति होने लगी। उसकी न्यूयार्क शहर में ख्याति हो गई और साथ-ही-साथ उसमें अच्छे किस्म के "बातचीत करने के कक्ष" भी बन गये। इर्विंग बर्लिन अपने बचपन के दिनों में इन्हीं अंधेरे कमरों में से एक कमरे की पतली सीढ़ियों पर एक अंगुली रगड़ता हुआ चढ़ा करता था और उससे निकली ट्यून उसके मस्तिष्क में छा गई थी। जार्ज जर्शिविन टिन-पैन ऐली में 'प्लगर' का काम करते थे। अब भी मिस्टर बर्लिन के कार्यालय में बहुत जगह है और वहाँ से लोकप्रिय गीत प्रकाशित होते हैं। कम्बल और तस्वीरें कमरों की शोभा बढ़ाती हैं। टिन-पैन एली में सुकोमल वस्तुओं का संग्रह होता जा रहा है।

प्रथम विश्व महायुद्ध से पहिले और बाद में रेगटाइम जाज़ संगीत हो गया और अब दूसरे प्रकार की संगीत-शैली को लोकप्रियता मिल गई। समय ऐसा आया कि वाद्य-वादन ने जाज़ नामक संगीत शैली को जन्म दिया जिसे "स्विंग म्यूजिक" कहा जाने लगा। इस शैली से वाद्य-वादकों ने एक ही गीत (थीम) को कई प्रकार बजाने का प्रयत्न किया अथवा उसके साथ की मेलोडीज को विविध प्रकार से प्रस्तुत किया। ये मेलोडीज़ (मधुर गीत) एक प्रकार से लोकप्रिय 'कांउटर प्वाइंट' ही थे।

रैगटाइम के प्रारंभ के दिनों में **दी रैगटाइम इन्स्ट्रक्टर** पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक को बेन हॉनी ने लिखा था। वह रैगटाइम का प्रमुख संगीतकार था और लोइस बिले का पियानोवादक था। न्यूयार्क के लोग उसे बहुत पसन्द करते थे। वह अपने प्रदर्शनों में "स्केल की रैगिंग करके" अधिक आवेश उत्पन्न कर देता था। उसने मेन्डेलसोन्स का '**स्प्रिंग सांग**" और **रूबिनस्टीन** के **मेलोडी इन एफ** में रेग का पुट दिया। वह विशेष प्रकार का मुख्य संगीतज्ञ भी था और उसके लिये "टिन पैन एली" के अरेंजर (व्यवस्थापक) के रूप में ऐसा होना ही था।

इर्विंग बर्लिन ने एक अंगुली से ही अपने गीतों की ट्यून सीखीं क्योंकि

उसे पियानो बजाना नहीं आता था। लेकिन ऐसे भी अनेक लोग थे जो दसों अंगुलियों से पियानो बजा सकते थे और वे जानते थे कि कागज पर किस प्रकार संगीत को लिपिबद्ध किया जाय लेकिन उनमें से किसी ने एक ट्यून भी नहीं सोची थी। ये लोग अरेंजर (व्यवस्थापक) थे। वे संगीतज्ञ से कहा करते, "आप अपनी ट्यून गुनगुनाएँ।" फिर वे उस ट्यून को कागज पर लिख देते थे। उनकी हार्मोनी बता देते थे और संगत कर देते थे। एक सरल ट्यून से लेकर हार्मोनिक एकाम्पनीमेण्ट तैयार करने या एक क्लासिकल मेलोडी से लेकर "रैग्ड" हार्मोनी और रिद्म के प्रस्तुत करने के अलावा अरेंजर्स (व्यवस्थापकों) का यह भी काम था कि वे नये वाद्य-यंत्रों के काम्बीनेशन (समूह) तैयार करें। हैण्डी ने सेक्साफोन वाद्य-यंत्र के प्रयोग को बढ़ावा दिया। इस वाद्य-यंत्र की ब्लू ट्यून ऐसे समय में अधिक उपयोग में आई जब नृत्य के ओरकेस्ट्रा में विक्टर हर्बर्ट के रोमांटिक स्टाइल के वायलिन का प्रयोग कम होने लगा था और उसके स्थान पर जाज़ संगीत के लिये अपेक्षित 'विण्ड्स' (मुँह से बजाये जाने वाले वाद्य-यंत्र) और 'परकुशन्स' (थपकी देकर बजाये जाने वाले वाद्य-यंत्र) का प्रयोग किया जाने लगा था।

कुछ संगीतकार अपने गीत स्वयं लिखते हैं, अन्य गीतकार गीतों की ट्यून लिखते हैं और ट्यून लिखने वालों के लिये अन्य व्यक्ति गीत लिखा करते हैं। गीत लिखने वालों को लिरिसिस्ट्स (गीतकार) कहते हैं। इरा जर्शविन ने अपने भाई की रचनाओं के लिये कई गीत लिखे। जार्ज जर्शविन ने दो पियानो के लिये **रेप्सोडी इन ब्लू** लिखा और अरेंजर (व्यवस्थापक) 'फर्डे ग्रोफे' ने ओरकेस्ट्रा संगीत की रचना की जो उसकी तात्कालिक लोकप्रियता के लिये उतनी ही आवश्यक थी। फर्डे ग्रोफे के पितामह पियानोवादक थे और वे मेट्रोपालिटन ओपेरा हाऊस के ओरकेस्ट्रा में विक्टर हर्बर्ट के साथ वाद्य-यंत्र बजाते रहे।

टिन पैन ऐली ने अपने विशेष प्रकार के संगीत के लिये सभी कुछ प्रबंध किया, वहाँ से मेलोडी, गीत और साज-सामान मिलने लगा। लेकिन उसमें कोई नियंत्रण न था। मेलोडी की लगातार "रैगिंग" "जैजिंग" और "होटिंग अप" से

उनकी शीघ्र ही क्षति होने लगी। ऐसा प्रतीत होता था 'जाज' संगीत के साधारण प्रतिभा सम्पन्न लेखक भी इतनी रचनाएँ कर देते थे कि उन्हें बहुत अधिक मेलोडीज (मधुर गीतों) की आवश्यकता पड़ती थी। फिर उन्हें शास्त्रीय संगीत (क्लासिकल म्यूज़िक) की विषय-वस्तु लेने में कोई हिचक न थी जिसे तोड़-मरोड़ कर हास्यास्पद ध्वनियों में बदल दिया करते थे। यों शास्त्रीय संगीत को बड़े लोगों की चीज (**हाई ब्रो**) कहा करते थे। जाज़ घबरा देने वाला संगीत जिससे 'नर्वस' युग का बोध होता है और प्रायः असंस्कृत रुचि वालों का यह निरंतर प्रयास रहता है कि किसी चीज के महत्व को स्वीकार करें या शोरगुल करके उसकी आवाज को दबा दें।

(जो कुछ भी हो, **सांस्कृतिक** और **असांस्कृतिक** रुचि की बात को छोड़ देना ही उचित है क्योंकि इन दोनों से एक प्रकार के विरोध की भावना पैदा होती है। यही ठीक होगा कि इन शब्दों को केवल उन्हीं अर्थों में प्रयोग में लाया जाय जिनके लिये ये शब्द बने हैं और इन शब्दों को "कृतज्ञ (**सिसि-यर**)" और "कृतघ्न (**इंसिसियर**)" अथवा "शिक्षित (**एज्यूकेटेड**)" और "अशिक्षित (**अनएज्यूकेटेड**)" कहेंगे।)

अमरीका में पहिले-पहल संगीत कला की अपेक्षा एक उद्योग के रूप में विकसित हुआ इसलिये लोकप्रिय संगीत की पर्याप्त वृद्धि हुई। कुछ ही पीढ़ियों में अमरीका की संस्थाओं और व्यक्तियों ने गंभीर संगीतकारों को प्रोत्साहित करने के लिये धन लगाया है। अब तो सभी बातें अनिश्चित सी हैं। कई गंभीर संगीतकार भी जाज़ संगीत और रिद्म को प्रयोग में लाने लगे हैं।

सभी कलाओं के समान संगीत में भी सर्वोत्तम संगीत उसी समय तक जीवित रहता है जब तक लोग उसे सुनें और समझें। यही कारण है कि सर्वोत्तम संगीत को गंभीर संगीत भी कह देते हैं। यह अजीब बात है कि ऐसे संगीत के लिये कोई अन्य शब्द नहीं है क्योंकि **गंभीर** शब्द भ्रामक है। इससे यह प्रतीत होता है कि हम सभी अपना मुंह लटकालें, बिल्कुल भी न हँसे। बात यह नहीं है। कुछ **गंभीर** संगीत इतना प्रखर और प्रसन्नतादायक होता है जैसे कि सूर्य की किरन हो जिसमें मन्द मुस्कान हो और इतना हल्का हो जैसे कि

इक्षुगन्धा हो। इसे अमर संगीत भी कह सकते हैं और इसको लोकप्रिय संगीत भी मानते हैं। यह संगीत तभी तक चलता है जब तक कि फैशन में परिवर्तन न हो। संगीत, कपड़ों, अथवा मोटर-गाड़ियों में जो कुछ भी लोकप्रिय होता है, वह केवल क्षण का आकर्षण ही है। जब महिलाएँ 'बस्टलेस' कपड़े पहिना करती थीं और घोड़ों की गाड़ियों में सैर किया करती थीं। उस समय लोकप्रिय संगीत मोटर-गाड़ियों और नये-नये स्पोर्ट्स के कपड़ों के युग में लोकप्रिय संगीत से कहीं भिन्न संगीत था।

'वेराइटी शो', फ्रांसीसी नाट्य संगीत तथा आधुनिक संगीत कामेडी से पूर्व मिन्स्ट्रिल शो हुआ करते थे। उनका संगीत जाज के संगीत का जनक ही होगा। चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य में जाज भावना का सर्वप्रथम उदय योरुप में हुआ। लेकिन अमरीका ने उसका नामकरण किया जब वहाँ संगीत में जाज की भावना आने लगी थी। मोजार्ट के समय व्यंजन-ध्वनियों की हार्मोनी को संगीत कहते थे। आज बेसुरे स्वर और एकसी आवाजों को भी संगीत कह देते हैं।

विलियम सी हैण्डी

"बिना परिश्रम के उत्कृष्टता नहीं आती"

—मेक गुफ़ेज़ फिफ्थ रीडर

अभी सौ वर्ष भी नहीं हुये हैं, संयुक्त राज्य अमरीका में गोरों ने मूल निवासियों को गुलाम के रूप में स्वीकार किया है। कुछ गोरे अपने गुलामों के प्रति उदार थे और कुछ मालिक उनके प्रति बहुत कठोर। कभी-कभी कोई गोरा अपने गुलाम को स्वतंत्र भी कर देता है। क्रिस्टोफर ब्रीवर एक नीग्रो था। उसे स्वतंत्रता दे दी गई लेकिन उसे अपने मालिक का व्यवहार बहुत अच्छा लगता था इसलिये उसने अपनी इच्छा से अपने मालिक के यहाँ विश्वास-पात्र नौकर के रूप में काम करना चाहा। उसने अपना "धर्म परिवर्तित' किया और इससे पूर्व वह नृत्य के समय फिडिल बजाया करता था। उसके मालिक ने उसे अनुमति दे दी थी कि उसे फिडिल बजाकर जो कुछ भी आय हो, वह धन अपने पास ही रख ले। उन दिनों में यदि किसी नीग्रों को गिरजाघर में जाने की अनुमति मिल जाती या वह अपना धर्म बदल पाते तो वे यह महसूस किया करते कि नृत्य-संगीत और अन्य वाद्य-यंत्र ठीक नहीं हैं। क्रिस्टोफर ब्रीवर ने गिरजाघर जाना प्रारंभ कर दिया और उसके बाद उसने अपनी फिडिल को छोड़ दिया और उसके बाद उसे न बजाया। उसकी पुत्री ऐलिज़ाबेथ को गिटार बजाना अच्छा लगता था लेकिन वह गिरजाघर की सदस्या थी, इसलिये उसे गिटार बजाने की कभी अनुमति न मिली।

विलियम वाइज़ हैण्डी नाम का एक अन्य गुलाम भी था लेकिन वह क्रिस्टोफर ब्रीवर के समान सौभाग्यशील नहीं था। वह और उसके दो भाई स्वतंत्र होना चाहते थे इसलिये वे अपने मालिक को छोड़ कर भाग गये। उनका पीछा किया गया। उसके दोनों भाई भाग गये लेकिन विलियम पकड़ लिया गया और उसे फिर गुलाम के रूप में बेच दिया गया और वह अब सुदूर दक्षिण

में ले जाया गया। वह एलाबामा में दूसरी बार भागना चाहता था कि उनके गोली मारी गई लेकिन वह बच गया। उसने अपने पुत्रों में से पुत्र हेन्सन को अपनी आँखों के सामने बिकते देखा और उसका पुत्र आरकन्साज में बेच दिया गया। वह इस दुःख को सहन करने के लिये ही जीवित रह गया था। हेन्सन के बारे में फिर उसे कोई समाचार नहीं मिला।

गुलामी के कारण मूल निवासियों के परिवार प्रायः तितर-बितर हो जाया करते थे। माता-पिता अपने बच्चे खो बैठते थे, भाई और बहिन एक-दूसरे से अलग कर दिये जाते थे और उन्हें अलग-अलग बेच दिया जाता था। इन लोगों के इतिहास की सबसे महान घटना है कि दक्षिण के जनरल ली ने उत्तर के जनरल ग्राण्ट के साथ आत्म-समर्पण कर दिया और इस कार्य से उनकी स्वतंत्रता के प्रारंभ होने का संकेत मिलता है।

विलियम हैण्डी ने गुलाम होने पर भी काम किया और अध्ययन करते रहे। उन्होंने एलबामा के फ्लोरेंस में एक जगह लट्ठे का केबिन बना लिया जिसे 'हैण्डीज हिल' के नाम से पुकारा जाने लगा। केबिन के रसोई-घर में बहुत मिट्टी थी लेकिन उन्होंने मिट्टी कूट-पीट कर पक्का फर्श जैसा फर्श तैयार कर लिया। उस स्थान के गोरे उनका आदर करते थे और जब मूल-निवासियों को स्वतंत्र किया गया तो उन्हें सबसे पहिली बार फ्लोरेंस में अपनी सम्पत्ति का मालिक बना रहने दिया। उसके बाद वे मेथोडिस्ट मिनिस्टर हो गये। उनका पुत्र चार्ल्स भी एक मिनिस्टर था और उसने एलिजाबेथ ब्रॉवर से विवाह किया। चार्ल्स ने अपनी पत्नी और बच्चों के लिये अच्छा घर बना लिया। उनके लड़के विलियम क्रिस्टोफर का नाम अपने पितामह के नाम पर रखा गया और उसका 'लाग केबिन' में जन्म हुआ था। उन्होंने बताया कि वह "आत्म समर्पण" के आठ वर्ष बाद पैदा हुआ था। वह बड़ा हो गया और उसके लिये स्वाभाविक रूप से यह सोचा जाने लगा कि वह भी चर्च का मिनिस्टर होगा लेकिन वह अपने परिवार के अनुमान के विपरीत मिनिस्टर के स्थान पर एक संगीतज्ञ बना। यही वह लड़का था जिसने 'ब्लूज' नाम का

संगीत लिखा। कदाचित यह सरल मार्ग नहीं था क्योंकि इस जीवन को सफल बनाने में अधिक कठिनाई और संघर्ष था।

उस छोटे लड़के के माता-पिता कुछ ही समय पूर्व गुलामी से आज़ाद हुये थे। वह लड़का फिर भी स्वतंत्र न था कि संगीत की सभी आवश्यक सुविधाओं का उपयोग कर सके। लेकिन वह बचपन से ही संगीत पसन्द करता था और प्रकृति में उसे जो भी स्वर सुनने को मिलते, उनकी वह बड़े चाव से प्रशंसा किया करता था। उन स्वरों से उसकी मनः स्थिति बदलती रहती थी। वह रात मे उल्लू, चमगादड़ और व्हिप-पुअर-विल्स (अबाकील जाति का एक अमरीकी पक्षी) की आवाजें सुनकर उदास हो जाता था। उसे यह पता लगा कि यदि आग में कोई सलाख गर्म करने के लिये रख दी जाय तो घर के पड़ोस से उल्लू उड़ जायेंगे। इस प्रकार वह आग में 'पोकर' रखकर उल्लू भगाने में सफल हुआ। जब वह छः वर्ष का था, वह नीग्रो के फ्लोरेंस डिस्ट्रिक्ट स्कूल में दाखिल हुआ और उसने वहाँ शीघ्र ही संगीत का अध्ययन करना सीखना शुरू कर दिया।

जब वह बच्चा था, तभी से विलियम ने गिरजाघर के धार्मिक गीतों (स्प्रिचुअल्स) की स्वाभाविक धुन सुनीं थीं। जब वह कुछ बड़ा हो गया तब वह अपने पिता को देखा करता था कि यदि किसी ने **मार्च एलोंग, आई'ल सी यू ऑन द जजमेंट डे** गीत शुरू किया कि उसका पिता चिल्ला उठता था। जब वह अपने पिता से यह पूछता कि वे क्यों चिल्लाते हैं तो उसे यह उत्तर मिलता कि वह यही गीत है जिसे गुलामों ने उस समय गाया था जब गोरों ने उसके भाई हेन्सन को बेचा था।"

विलियम के स्कूल के अध्यापक संगीतज्ञों को निकम्मा और बेकार समझते थे, फिर भी वे स्वयं संगीत बहुत पसन्द करते थे। अधिकांश स्कूलों में सुबह का कुछ समय प्रार्थना और स्क्रिपचर के पढ़ने के लिये नियत था और यही समय विलियम के स्कूल में गायन तथा संगीत सिखाने के काम में लाया जाता था। छात्रों को **डू-रे-मी** स्वरों से 'नोट' पढ़ाये जाते थे। स्कूल में कोई पियानो या ओरगेन नहीं था लेकिन अध्यापक महोदय 'ए' निशान पर गढ़ी 'ट्यूनिग

फार्क' काम में लाते थे। इसके साथ छात्र ला अलाप उठते और उस स्थान से वे उस गीत की ट्यून पकड़ते जिसे वे गाना चाहते थे। वे अपने बायें हाथ में पुस्तकें पकड़ते और दायें हाथ से थपकी देकर ताल बांधते और वे इस प्रकार गास्पेल हिम्स तथा अपनी पुस्तकों के गीत गाते। वे प्रतिवर्ष बराबर कठिन पुस्तकों से गीत गाते और फिर वेगनर, विजट और वर्डी से उद्धृत गीत गाया करते थे। उन्हें कुछ समय के लिये संगीत की शिक्षा दी जाती थी जिससे उनके कान सुनने में सध जायँ और वह हार्मोनी (लय-गति) समझ सकें। विलियम के जीवन में स्कूल का यह समय उसके लिये सबसे अच्छा समय था और जैसे ही उसने संगीत पढ़ना सीख लिया, वह बड़ी उत्सुकता से संगीत को कागज पर लिखने भी लगा।

वह ऐसी जाति में पैदा हुआ था कि उसे रिद्म सीखने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह स्वभाव से ही उसे जानता था। उसके पितामह ब्रीवर ने यह समझाया कि वह यह अपने 'सिनफुल' दिनों (गुलामी के समय) में नृत्य के लिये फिडिल बजाया करते थे और संगीतकार विशेष रिद्म का प्रयोग करके संगीत को किस प्रकार अधिक आवेशपूर्ण बनाया करते थे। ऐसे अवसर पर एक लडका फिडिल बजाने वाले के पीछे बुनाई की दो सलाइयाँ लेकर खड़ा हो जाता था। वह लड़का अपनी जगह से हटकर फिडिल वादक के बाईं ओर से निकलता और ढोल धपधपाने वाले की तरह फिडिल की स्ट्रिंग्स (तारों) को उन सलाइयों से झनझना देता।" कुछ वर्षों बाद एक वृद्ध पुरुष ने विलियम को यह दिखाया कि उन दिनों में किस प्रकार संगीत प्रस्तुत किया जाता था। वह वृद्ध पुरुष 'फिडिल' बजाने में विशेषज्ञ था और एक 'स्टोम्पर' भी था। उसने स्वयं वायलिन बजाया और विलियम को उन सलाइयों से आवाज़ निकालने के लिये कहा। नीग्रो नर्तक और फिडिल वादक अपने नाचने-बजाने के साथ पैर की थपकी देकर एक विशेष प्रकार की स्टॉम्पिग (ताल देने की क्रिया) करते थे। नृत्य के लिये कुशल वादक यथा "अंकल व्हिट" (जैसा लोग उसे पुकार उठे थे) वाद्य-यंत्र बजाते समय केवल गाता ही नहीं था बल्कि इसके साथ-साथ मुश्किल ढंग की थपकियाँ (स्टाम्पिग) भी दे लेता था और इस

प्रकार वह वास्तव में सिर से पैर तक संगीत में विभोर होकर अपना संगीत प्रस्तुत करता था। मिस्टर हैण्डी ने यह कहा, "मुझे अच्छी तरह याद है कि उन दिनों में उत्सवों में भाग लेने वालों और उनके आयोजकों को जिटरबग्स जैसे 'ब्रेक डाउन' या "स्ववैरडांस" के समय फिडिल बजाते समय उतना ही आनंद आता था जितना कि.... आज 'स्विग बैंड' में आनन्द आता है।"

जब विलियम लड़का ही था तब उसे "अंकल व्हिट" के साथ वाद्य-वादन की अनुमति न दी गई। उसे यह अनुमति बाद में मिली। उसका एक सगा चाचा ऐसा भी था जो इतना कठोर अनुशासन करता था कि अपने बच्चों को सीटी भी नहीं बजाने देता था। जब विलियम की दादी ने यह कहा कि उसके बड़े कान इस बात की निशानी है कि उसमें संगीत के लिये प्रतिभा है, तो वह अधिक प्रसन्न हुआ और उसे अपने परिवार से केवल मात्र यही प्रोत्साहन मिला। जब वह लगभग दस वर्ष का हो गया तो प्रकृति के स्वर और बाहर की आवाजें सुनकर उसके मस्तिष्क में संगीत के नोट्स (ध्वनियों) की कल्पनाएँ उठने लगीं। यहाँ तक कि बैल के रंभाने से भी उसके मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पड़ा मानों वह आवाज भी संगीत का 'नोट' हो और जब वह बड़ा हो गया तो उसने इस प्रभाव को अपने **हुकिंग काऊब्लूज** गीत में व्यक्त किया।

विलियम दो वर्ष का भी न हो पाया था कि उसके बाबा हैण्डी का देहान्त हो गया। वह इस बात को कभी भी नहीं भूल सकता कि एक गोरे सज्जन ने उससे कहा था, "सनी, यदि तुम अपने बाबा के समान बने तो तुम भी एक महान व्यक्ति बन जाओगे।"

हैण्डी के घर में भोजन की कमी नहीं थी लेकिन यदि उसको अपने लिये धन की आवश्यकता होती तो उसे स्वयं धन कमाना पड़ता था। सण्डे स्कूल के लिये एक 'निकल' और चर्च के गीत संग्रह के लिये एक 'डाइम' की जरूरत होती थी। उसने एक बार एक गैलन दूध से बेंजमिन फ्रेंकलिन की पुस्तक **पुअर रिचार्ड्स एलमेनेक** की प्रति बदल ली। उसने पुराने कपड़े और लोहा खरीदा जिन्हे उसने बेच दिया। वह बेर और फल भी बेचा करता था जिन्हें

वह ग्रीष्म-ऋतु में इकट्ठा कर लेता था और 'नट' भी इकट्ठा करके बेचा करता था। उसने हड्डियों से साबुन बनाना सीख लिया और वह जंगल से हड्डियां इकट्ठी कर लेता था। वह हिकरी वृक्ष (अखरोट या बादाम के सदृश एक वृक्ष) की लकड़ी की राख पर बरसात का पानी डालता और उसमें हड्डियों का आवश्यक खारी चूर्ण मिलाया करता था। उस घोल को वह उबालता और फिर ठंडा करता। उसके बाद वह साबुन की टिक्की काट लेता और उन टिक्कियों को बेच दिया करता था। विलियम के पिता उसके इन उद्योग-धन्धों को देखकर प्रसन्न होते थे। उसके पिता ने उसे हल चलाना सिखाया लेकिन विलियम के भाग्य में घोड़ों या खच्चरों से काम लेना नहीं था।

जब वह बारह वर्ष का हुआ, उसके मित्र ने उसे मसल शोल्स के समीप पत्थर की खदान में 'वाटर ब्वॉय' की जगह दिला दी। विलियम वहाँ प्रतिदिन पचास सेण्ट कमाता था। वह स्टील ड्राइवरों को यह गीत गाते सुना करता था :

ओह, बेबी, 'मेम्बर लास' विण्टर ?
वाज़ेण्ट इट कोल्ड—हुँ ?
वाज़ेण्ट इट कोल्ड—हुँ ?

इस श्रम-गीत (काम करते समय का गीत) में हुँ कहकर संगीत की धीमी और कर्कश आवाज (ग्रण्ट) होती। यह आवाज उस समय की जाती जब मज़दूर हथौड़ा मारते या किसी रस्सी को एक साथ खींचते या किसी भारी बोझ को कई आदमी मिलकर एक ही साथ उठाने का प्रयत्न करते। विलियम हैण्डी ने अन्य कई कार्य किये और जैसे-जैसे समय बीतता गया, वह जूता बनाने, बढ़ईगीरी और प्लास्टर के काम में 'अपरेंटिस' की तरह लगा रहा। एक बार उसने प्रिंटिंग प्रेस भी चलाया। वह खेतों में भी सदैव काम करता था, वहाँ वह कपास चुनता, चारा इकट्ठा करता; ओट, बाजरा और गेहूँ की फसल काटता। वह अपनी आय से अपने कपड़े, पुस्तकें और स्कूल की चीजें खरीद सकता था।

वह चौदह वर्ष का हो गया, विलियम के मन में एक तीव्र इच्छा। वह गिटार बजाना चाहता था। लेकिन उसे गिटार कहाँ से मिलता? धन बचाकर गिटार खरीद सकता था। वह सरल काम नहीं था। कभी किसी सप्ताह में तीन डालर ही कमा पाता। वह एक डालर ाँ को और दूसरा डालर अपने पिता को देता और तीसरा डालर ा ही रखता था। उसे अपने धन से जरूरत की चीजें भी खरीदनी। इस प्रकार उसे एक वर्ष लग जाता और तभी वह किसी-न-किसी ा बचाकर गिटार खरीद सकता था।

विलियम ने इस वाद्य-यंत्र को प्राप्त करने के लिये अपना मन लगाया मय उसके मन की स्थिति ऐसी थी कि वह किसी के प्रेम में उलझ उसे सारा संसार प्रसन्न और बदला हुआ दिखाई देने लगा था। नी जीवन कहानी की पुस्तक* में लिखा है, "जिन दिनों मुझे गिटार यकता थी, उन दिनों मैं पक्षियों और आमोद-प्रमोद वाले कार्नीवाल अधिक ध्यान देता था क्योंकि उनमें से कुछ ऐसा लगता है कि कोई गा रहा है और मैं उनकी ओर आकर्षित हो जाता था।" वह उन्हीं को निकालना चाहता था जिन्हें वह सुना करता था। वह प्रतिदिन म करता था क्योंकि वह यह जानता था कि कठोर परिश्रम से धन ही वह किसी दिन गिटार खरीद सकेगा। इतना अधिक परिश्रम भी उसे लगता था कि समय बीता जा रहा है।

दिन वह स्टोर विण्डो में अपनी मन-पसन्द का वाद्य-यंत्र देखने गया। स्टोर विण्डो तक जाता और वहाँ विण्डो के सामने खड़ा हो जाता ायित होकर उस वाद्य-यंत्र की ओर देखता ही रहता कि क्या कभी होगा कि वह गिटार खरीद सकेगा। वह किसी को भी अपनी तीव्र ारे में न बता सका। लेकिन उसके पिता ने यह देखा कि वह अधीर

दर आव दी ब्लूज़' : डब्लू० सी० हैण्डी की आत्म-कथा; १९४१ में। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक और मेक्मिलन कम्पनी की अनुमति से उस तथ्यों और उद्धरणों का प्रयोग किया गया है।

रहता है तो उन्होंने उसे प्रसन्न रखने के लिये छोटे-मोटे विनोद के कार्य किये। वे अपने लड़के को एक छोटी नदी पर ले जाकर उसे तैरना सिखाते थे। परन्तु विलियम ने तैरना नहीं सीखा। एक दिन वह अकेले ही वहाँ गया और सहसा एक गहरे गढ्ढे में चला गया। उस समय या तो उसे तैरना था या डूब जाना था। उसके पिता ने उसे गृह-युद्ध के दिनों की एक बन्दूक (मस्केट) भी दी जिससे उसने निशाना लगाना सीख लिया किन्तु वह तीर और कमान से ही आखेट करना पसन्द करता था।

गोरों के 'बेप्टिस्ट क्वायर' के साथ एक 'ट्रेम्पेट' वादक आया जिसे देखकर विलियम के मन में इच्छा हुई कि उसके पास एक ट्रेम्पेट भी हो। उसने गाय के सींग को खोखला करके एक ट्रेम्पेट बनाने का प्रयत्न किया और उसके मुँह पर एक छेद कर लिया। उसका यह वाद्य-यंत्र शिकार के समय के लिये उपयुक्त बाजा बन गया लेकिन ट्रेम्पेट नहीं बन सका इसलिये उसने अब अधिक धन कमाने की चेष्टा की जिससे कि वह गिटार खरीद सके।

बसन्त के दिनों में स्कूल के कमरे के दरवाजे और खिड़कियाँ खुली हुई थीं और विलियम नीग्रो किसान का गीत सुन रहा था :

आय-ओह–यू, आय-ओह-ओ,
आई वुडण्ट लिव इन कैरो, ओ !

खेतों, धधकती हुई भट्टियों और खदान के श्रमिकों के काम करते समय के गीतों, गिरजाघर के स्प्रिचुअल्स (धार्मिक गीतों), स्कूल के संगीत और हैण्डीज हिल के बच्चों के संगीत उसकी स्मृति के अंग बन चुके थे जिससे वह मेलोडी और रिद्म बनाने लगा। इन गीतों से विलियम को संगीत की मूल बातें पता लगीं। उसने इन्हीं बातों का बाद में उपयोग किया जब उसने 'ब्लूज' लिखे।

जब वह पन्द्रह वर्ष का था तब उसके पास इतना धन इकट्ठा हो सका कि वह डिपार्टमेण्टल स्टोर में जाकर अपने लिये गिटार खरीद लेता। उसके जीवन में वह क्षण भी आ गया जिसकी उसे बहुत पहिले से प्रतीक्षा थी। वह उस नवीन चमकीले वाद्य-यंत्र को लेकर खुशी से अपने घर की ओर तेजी

से चला जहाँ वह अपने परिवार के सदस्यों को दिखाना चाहता था जो उसकी प्रशंसा करते। उसे विश्वास था कि वे उसे देखकर प्रसन्न हो उठेंगे और उसे इस बात का स्वाभिमान था कि उसने अपनी कमाई से वह गिटार खरीदा है। जब वह घर आया और उन्हें अपना गिटार दिखाया, वह इतना प्रसन्न था कि कुछ भी न बोल सका। लेकिन जब किसी ने भी कुछ न कहा तो वह स्वयं बोल उठा.

"इसकी चमक को देखिये...यह मेरा है, यह **मेरा**...। मैंने धन बचाया है।"

तब उसके पिता ने कहा। लेकिन उसके दुःख की बात यह रही कि उसकी प्रशंसा अथवा प्रसन्नता में कुछ भी नहीं कहा। वे क्रोधित हुये।

उन्होंने हाँपते हुये कहा, "एक बक्स ले आये। एक गिटार ले आये। यह दैत्यों का एक बाजा है। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसे बाहर ले जाओ। तुम इसे अपने पास से अलग कर दो। तुम्हें क्या हो गया कि तुम अपने ईसाई धर्म के अनुयायी घर में ऐसी अपवित्र चीज उठा लाये? तुम इसे वहीं पहुँचा दो जहाँ से इसे लाये हो। सुन रहे हो जो कुछ मैंने कहा?"

विलियम सुन रहा था। वह निश्चेष्ट हो गया। वह यह समझाना चाहता था कि गिटार रखने में कोई अपराध नहीं है लेकिन उसके पिता के अन्यथा विचार थे। वह अपने आप यह महसूस करने लगा कि उसके लिये यह बिल्कुल असंभव ही होगा कि वह अपने पिता को इस बात पर राजी कर सके कि वह उस वाद्य-यंत्र को अपने पास रखना चाहता है। फिर भी उसने धीरे से कहा, "शायद अब इसे स्टोर वापिस न लेगा।" लेकिन उसके पिता ने कहा :

"स्टोर के मालिक इस वाद्य-यंत्र को किसी अन्य चीज से बदल देंगे। इस मूल्य में तुम वेवस्टर्स अनएब्रिज्ड डिक्शनरी की नई प्रति खरीद सकते हो और यह ऐसी पुस्तक है जिससे तुम लाभ उठा सकोगे।"

लड़का हृदय में दुःखी होकर गिटार की एवज में डिक्शनरी ले आया। इस दुःखद घटना के बाद उसने वाद्य-यंत्र पर कुछ पाठ सीखे। वह वाद्य-यंत्र

पुराना ऑरगन था और इस पवित्र संगीत के लिये उसके पिता ने व्यय-भार वहन किया।

वह कुछ और भी चाहता था जिससे उसे वंचित कर दिया गया। वह चित्रकला में रुचि रखता था। उसके अध्यापक ने नक्शे तैयार करने की अनुमति दी। जब विलियम लोगों की शक्लें बनाना था जो उसे अच्छी लगतीं थीं तब उसे नक्शे तैयार करने के लिये कहा जाता था।

उसने 'मिक्स्ड वोकल क्वार्टेट्स' के लिये 'पार्ट्स' की व्यवस्था करना प्रारंभ कर दिया। सोलह वर्ष की आयु में उसने महिलाओं की आवाज में 'क्वार्टेट' की व्यवस्था की। जब वह अठारह वर्ष का था, एक महान घटना हुई जिसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

जिम टर्नर फ्लोरेंस आये। वे वायलिन को इतनी अच्छी तरह बजा लेते थे कि उस नगर में उनसे अच्छा वायलिन कभी नहीं सुना गया था। इसका विलियम हैण्डी के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिम ने उसे एक अन्य संसार की झलक दिखाई। जिम ने एक ओरकेस्ट्रा का आयोजन किया और नाचना सिखाया। उन्हें उन दिनों के सभी नृत्य आते थे। उन्होंने मेम्फिस की बील स्ट्रीट की कहानियाँ सुनाई और बताया कि वहाँ दिन-रात जीवन में संगीत ही संगीत है।" उन्होंने "डार्क टाउन डेंडी" और "हाई ब्राउन बली" के बारे में बताया। इन कहानियों से विलियम के मन पर असंतोष की भावना ने गहरी छाप लगा दी, वह अलग हटना चाहता था, वह ऐसे स्थानों को जाना चाहता था, और बील स्ट्रीट के आनन्ददायक जीवन को देखना चाहता था। उसे उस समय इस बात का आभास भी न था कि किसी दिन उसकी जाति के अमरीका के सभी लोग उसे **मेम्फिस ब्लूज** और **बील स्ट्रीट ब्लूज** का रचयिता मानेंगे। वह यह नहीं जानता कि वह किसी दिन अपने वादक-मित्र की याद करके **जो टर्नर ब्लूज** की रचना कर लेगा।

जब वह स्कूल छोड़ने वाला था, फ्लोरेंस में एक सर्कस आया। उसमें गोरे बैण्ड मास्टर ने मूल निवासी के बैण्ड को सिखाकर धन कमाने का प्रयत्न किया। एक नाई की दूकान में पाठ सिखाये जाते थे। विलियम दोपहर के

बाद प्रतिदिन अपने घर को वापिस आता और नाई की दूकान पर रुक जाता और खिड़की में से झांक उठता और यह सीखने की कोशिश करता कि अलग-अलग वाद्य-यंत्रों पर किस प्रकार अंगुलियाँ चल रही हैं और ब्लैक बोर्ड पर लिखे संगीत को कैसे सीखा जा रहा है। वह स्कूल में अपनी डेस्क पर अंगुलियाँ रखकर अभ्यास करता। उसे कुछ समय बाद एक कोरनेट मिल गया जबकि वह पहिले ही अंगुलियाँ चलाना सीख चुका था।

वह कोरनेट बजाना सीख चुका था इसलिये यह स्वाभाविक ही था कि वह शीघ्र ही किसी बैण्ड में काम कर उठेगा। सबसे पहिले उसने नगर के बाहर जिम टर्नर के बैण्ड में काम किया और उसे आठ डालर मिल गये। उसका दिन भी खुशी से बीता और उसे एक दिन में ही इतनी मजदूरी मिल गई। यह खुशी उस खुशी से कहीं ज्यादा थी जब उसे एक सप्ताह के कठिन परिश्रम के बाद तीन डालर ही मिले थे। इससे उसके मन में यह लालच भर गया कि वह संगीत को ही क्यों न व्यवसाय बना ले यद्यपि उसके पिता की यह इच्छा न थी।

उसने अठारह वर्ष की आयु में स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली और इसके बाद वह इधर-उधर भटकने लगा। सबसे पहिले उसने बेसेमर नगर में संगीत सिखाना शुरू किया। फिर वह एक फाउंड्री में काम करने लगा क्योंकि वहाँ उसे अधिक मजदूरी मिलती थी। बेसेमर में उसने पहिला ब्रास-बैण्ड का संगठन किया और अन्य लोगों को बैण्ड सिखाया। देश में दुर्दशा के दिन आ गए, फैक्टिरियाँ बन्द होने लगीं और लोगों को काम मिलना बन्द हो गया। वह बर्मिंघम चला गया। शिकागो में 'वर्ल्ड फेयर' होने वाला था, उसने सोचा कि वहाँ उसे काम मिल जायेगा और वह लौजेट्टा क्वार्टेट के साथ शिकागो को चल दिया। उस समय यात्राओं में अधिक समय लग जाता था। यदि कोई व्यक्ति उन्हें गाने के लिये बुलाता तो वे गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत करते। उन्होंनें भाड़ा देकर ट्रेन से यात्रा की और 'बाक्स कार' में सो जाते थे या "ब्लाइंड बैगेज" में सवारी करते थे। आखिरकार वे शिकागो पहुँच गये। उन्हें वहाँ यही समाचार मिला कि मेला एक वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया

है। उन्होंने सोचा कि शायद सेण्ट लुइस में संगीत के लिये अवसर मिले इसलिये वे सेण्ट लुइस को चल दिये। एक दिन एक आदमी ने उन्हें मुफ्त सवारी का प्रबन्ध कर दिया। यह बात उनके लिये संदेहप्रद थी। जब वे अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचे तो उस आदमी ने उन्हें समझाया कि उसे पहिले ही इतनी मजदूरी इसलिये दी गई थी कि वह प्रत्येक नीग्रो को इसी प्रकार बहका कर इस नगर में ला सके, निस्संदेह वे नीग्रो कंकड़-मिट्टी के गड्ढे में काम कर सकें। उस आदमी को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि लोग वहाँ ठहरते हैं या वहाँ से चले जाते हैं क्योंकि वह आदमी उन लोगों को ट्रेन से उतारते ही अपनी फीस वसूल कर लेता था।

सेण्ट लुइस पहुँचकर क्वार्टेट को समाप्त ही करना पड़ा। वहाँ बहुत से संगीतज्ञ थे जिनको काम नही मिला था। उस शहर में भी दुर्दशा थी। विलियम हैण्डी को दो सप्ताह के लिये काम मिल गया लेकिन उसके साथ उसी की जाति के एक ठेकेदार ने धोखा देकर उसकी मजदूरी छीन ली। अब उसके जीवन में और अधिक संकट आ गया। वह जानता था कि उसे अपने दुर्भाग्य के सहारे रहना है और मिसीसिपी नदी की तलहटी के पत्थरों पर सोना है। केवल उसी की यह दुर्दशा नहीं थी, उस समय बहुत से अभागे और दुःखी लोग थे जो नितान्त निर्धन थे। उन दुखियों में गोरे और नीग्रो दोनों ही लोग थे। कभी वह किसी पूलरूम की कुर्सी पर ही सो जाता था लेकिन उस कुर्सी पर सोना कठिन काम था क्योंकि पुलिस आवारा लोगों की तलाश में घूमती रहती थी। पुलिस उन्हें कहीं पकड़ न ले और कैद न कर ले, इसलिये कुर्सी पर सोने वाले या तो अपनी आँखें खोले रहते थे या अपने पैर हिलाते रहते थे। हैण्डी ने भी उस कुर्सी पर सोना सीख लिया था। वह सोता रहता था और साथ ही एक पैर भी हिलाता रहता था। उसका कहना है कि उन दिनों पुलिस के अत्याचार से अभिभूत होकर उसने दो लोकप्रिय गीतों की रचना की थी। कई वर्ष बाद उसने यह महसूस किया कि उन दिनों में उसे जो दुःख सहने पड़े थे, वही उसकी सफल रचनाओं के प्रेरक सिद्ध हुये। उन दुर्दिनों के बीत जाने के बाद उसे कभी पियानो बजाने का अवसर मिला और उसने एक बार ही सांध्य-समय

बाद प्रतिदिन अपने घर को वापिस आता और नाई की दूकान पर रुक जाता और खिड़की में से झांक उठता और यह सीखने की कोशिश करता कि अलग-अलग वाद्य-यंत्रों पर किस प्रकार अंगुलियाँ चल रही हैं और ब्लैक बोर्ड पर लिखे संगीत को कैसे सीखा जा रहा है। वह स्कूल में अपनी डेस्क पर अंगुलियाँ रखकर अभ्यास करता। उसे कुछ समय बाद एक कोरेनेट मिल गया जबकि वह पहिले ही अंगुलियाँ चलाना सीख चुका था।

वह कोरनेट वजाना सीख चुका था इसलिये यह स्वाभाविक ही था कि वह शीघ्र ही किसी बैण्ड में काम कर उठेगा। सबसे पहिले उसने नगर के बाहर जिम टर्नर के बैण्ड में काम किया और उसे आठ डालर मिल गये। उसका दिन भी खुशी से बीता और उसे एक दिन में ही इतनी मजदूरी मिल गई। यह खुशी उस खुशी से कहीं ज्यादा थी जब उसे एक सप्ताह के कठिन परिश्रम के बाद तीन डालर ही मिले थे। इससे उसके मन में यह लालच भर गया कि वह संगीत को ही क्यों न व्यवसाय बना ले यद्यपि उसके पिता की यह इच्छा न थी।

उसने अठारह वर्ष की आयु में स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली और इसके बाद वह इधर-उधर भटकने लगा। सबसे पहिले उसने बेसेमर नगर में संगीत सिखाना शुरू किया। फिर वह एक फाउंड्री में काम करने लगा क्योंकि वहाँ उसे अधिक मजदूरी मिलती थी। बेसेमर में उसने पहिला ब्रास-बैण्ड का संगठन किया और अन्य लोगों को बैण्ड सिखाया। देश में दुर्दशा के दिन आ गए, फैक्टिरियाँ बन्द होने लगीं और लोगों को काम मिलना बन्द हो गया। वह बर्मिंघम चला गया। शिकागो में 'वर्ल्ड फेयर' होने वाला था, उसने सोचा कि वहाँ उसे काम मिल जायेगा और वह लौजेंट्रा क्वार्टेट के साथ शिकागो को चल दिया। उस समय यात्राओं में अधिक समय लग जाता था। यदि कोई व्यक्ति उन्हें गाने के लिये बुलाता तो वे गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत करते। उन्होंने भाड़ा देकर ट्रेन से यात्रा की और 'बाक्स कार' में सो जाते थे या "ब्लाइंड बैगेज" में सवारी करते थे। आखिरकार वे शिकागो पहुँच गये। उन्हें वहाँ यही समाचार मिला कि मेला एक वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया

है। उन्होंने सोचा कि शायद सेण्ट लुइस में संगीत के लिये अवसर मिले इसलिये वे सेण्ट लुइस को चल दिये। एक दिन एक आदमी ने उन्हें मुफ्त सवारी का प्रबन्ध कर दिया। यह बात उनके लिये संदेहप्रद थी। जब वे अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचे तो उस आदमी ने उन्हें समझाया कि उसे पहिले ही इतनी मजदूरी इसलिये दी गई थी कि वह प्रत्येक नीग्रो को इसी प्रकार बहका कर इस नगर में ला सके, निस्संदेह वे नीग्रो कंकड़-मिट्टी के गड्ढे में काम कर सकें। उस आदमी को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि लोग वहाँ ठहरते हैं या वहाँ से चले जाते हैं क्योंकि वह आदमी उन लोगों को ट्रेन से उतारते ही अपनी फीस वसूल कर लेता था।

सेण्ट लुइस पहुँचकर क्वार्टेट को समाप्त ही करना पड़ा। वहाँ बहुत से संगीतज्ञ थे जिनको काम नहीं मिला था। उस शहर में भी दुर्दशा थी। विलियम हैण्डी को दो सप्ताह के लिये काम मिल गया लेकिन उसके साथ उसी की जाति के एक ठेकेदार ने धोखा देकर उसकी मजदूरी छीन ली। अब उसके जीवन में और अधिक संकट आ गया। वह जानता था कि उसे अपने दुर्भाग्य के सहारे रहना है और मिसीसिपी नदी की तलहटी के पत्थरों पर सोना है। केवल उसी की यह दुर्दशा नहीं थी, उस समय बहुत से अभागे और दुःखी लोग थे जो नितान्त निर्धन थे। उन दुखियों में गोरे और नीग्रो दोनों ही लोग थे। कभी वह किसी पूलरूम की कुर्सी पर ही सो जाता था लेकिन उस कुर्सी पर सोना कठिन काम था क्योंकि पुलिस आवारा लोगों की तलाश में घूमती रहती थी। पुलिस उन्हें कहीं पकड़ न ले और कैद न कर ले, इसलिये कुर्सी पर सोने वाले या तो अपनी आँखें खोले रहते थे या अपने पैर हिलाते रहते थे। हैण्डी ने भी उस कुर्सी पर सोना सीख लिया था। वह सोता रहता था और साथ ही एक पैर भी हिलाता रहता था। उसका कहना है कि उन दिनों पुलिस के अत्याचार से अभिभूत होकर उसने दो लोकप्रिय गीतों की रचना की थी। कई वर्ष बाद उसने यह महसूस किया कि उन दिनों में उसे जो दुःख सहने पड़े थे, वही उसकी सफल रचनाओं के प्रेरक सिद्ध हुये। उन दुर्दिनों के बीत जाने के बाद उसे कभी पियानो बजाने का अवसर मिला और उसने एक बार ही सांध्य-समय

कपड़े खरीद सका और पहिले की अपेक्षा अधिक अच्छा महसूस कर उठा। उसके जीवन में एक वह भी दिन था जब वह सेंट लुइस में केवल कोट पहिनता था और कसकर बटन लगाये रहता था क्योंकि उसके पास उन दिनों में कमीज़ भी नहीं थी। उसे मिन्स्ट्रेल्स के दो बैण्डों में एक बैण्ड का लीडर बनने का अवसर मिला और अब उसकी इतनी अच्छी वर्दी थी कि वह सचमुच बहुत अच्छा लगता था।

महाराज मिन्स्ट्रेल नीग्रो मिन्स्ट्रेल ही था लेकिन उसका प्रबन्ध गोरों के हाथ में था। उनका दोपहर से कुछ पूर्व काम शुरू हो जाता था। उस समय मिन्स्ट्रेल कम्पनी को नगर में परेड करनी पड़ती थी। नगर के लोग शाम को उनके कार्यक्रम देखा करते थे। मैनेजर थियेटर में पौने बारह बजे सीटी बजा देता था जिससे परेड शुरू हो जाय। यदि कम्पनी उस स्थान से देर से लौटती जहाँ उन्होंने गत रात अपना कार्यक्रम दिया है तो परेड सीधी रेल-रोड के रास्ते से ही शुरू हो जाती थी। उस परेड के आगे मैनेजर रहते थे जो चार घोड़ों की गाड़ी में सवार होते थे। वे अपने सिल्क के हैट को छूकर सड़कों पर खड़े नागरिकों को शाम के कार्यक्रम की सूचना देते थे। दूसरी गाड़ी में 'अभिनेता (स्टार्स)' रहते थे। उसके बाद (पैदल चलने वाले लोग होते थे। उस कम्पनी में गायक, कोमेडियन और कलाबाज थे। उसके बाद 'ड्रम मेजर' आता था और वह अपनी शानदार चाल से दर्शकों का मन लुभा लेता था और उसके बाद बैण्ड रहता था। परेड पब्लिक स्क्वैर का चक्कर लगाती थी और सर्व-साधारण को क्लासीकल ओवरच्योर और लोकप्रिय धुन सुनाते थे। वे प्राय: सूज़ा के लिये 'प्रयाण गीत' भी सुनाते थे। **बडर गार्डनर्स पिकनिक** की ट्यून को लोग बहुत पसन्द करते थे और इस ट्यून को बारबार बजाया जाता था।

बैण्ड के बजने के बाद कुछ विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता था। कदाचित एक ट्रिक साइकिल वाला अपने खेल दिखाता था और उसके बाद एक भाषण होता था जिससे लोगों का इस ओर ध्यान आकर्षित किया जाय कि शाम का कार्यक्रम बहुत अच्छा होगा। इस परेड के बाद कलाकारों

को साढ़े सात बजे तक छुट्टी मिल जाती थी और तब स्थानीय ओपेरा हाऊस के सामने फिर वैण्ड बजाया जाता था।

कई वर्षों तक हैण्डी मिन्स्ट्रिल खेलों के साथ यात्रा करता रहा। उसने समस्त देश की यात्रा कर ली, उसने क्यूबा से केलोफोर्निया और कैनाडा से मेक्सिको तक यात्रा की। इन्हीं वर्षों में उसका विवाह हो गया और उसकी पत्नी भी उसके साथ रही। क्यूबा में वह विचित्र देशी गीतों की ट्यूनों पर मोहित हो गया और उसे विशेषकर "शाई वैण्ड" की ट्यून बहुत अच्छी लगी जो पिछली गलियों में दरवाजे बन्द करके बजाई जाती थीं। तीस वर्ष बाद ये ट्यूनें न्यूयार्क में सुनाई दी और सारे देश में ट्यूनें बजाई जाने लगीं। इनका नाम रुम्बा था।

उस प्रदर्शन में एक कोर्नेट भी था जिसे हैण्डी बजाया करता था। एक दिन अलबामा मे महाराज मिन्स्ट्रिल्स के कार्यक्रम में विलियम हैण्डी के पिता अपने पुत्र के कार्य को देखने आये। विलियम के पिता अपने संगीतज्ञ पुत्र को देखने आये। विलियम के जीवन में वह प्रसन्नता का महान अवसर था। विलियम यह जानता था कि उसके पिता को अपनी धारणा पर विजय पाने के लिये कितना अधिक परिश्रम करना पड़ा होगा। हैण्डी के पिता अपने सुपुत्र विलियम की सफलता देखकर प्रसन्न थे और अन्य श्रोताओं को गौरव से बता रहे थे कि बैण्ड का लीडर उनका पुत्र है। पर्दा गिरते ही उसके पिता अपने पुत्र के पास रंगमंच पर गये और उससे हाथ मिलाकर कहा, "मैंने कभी खेल नहीं देखा क्योंकि मैं धर्म का अनुयायी ही रहा। मैंने अब खेल में आनन्द पाया है। मैं तुम्हें देखकर बहुत गौरवान्वित हूँ। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ कि तुम एक संगीतज्ञ बन गये।"

हैण्डी दम्पति फ्लोरेंस में वापिस लौट आये और वहाँ उनके पहिला पुत्र हुआ। विलियम और जिम टर्नर ने इस अवसर पर एक छोटे ओरकेस्ट्रा का आयोजन किया। विलियम हैण्डी ने एक कंसर्ट में वाद्य-वादन किया। उस आयोजन में एग्रीकलचरल एण्ड मेकेन्किल कालेज के प्रेसीडेंट भी उपस्थित थे। उस कन्सर्ट में विलियम को इतनी सफलता मिली कि उसे इस बात के

नर्तक अधिक उत्मत्त होकर नाचने लगे। उन देहाती लड़कों से हैण्डी ने ऐसा कुछ सीखा जिसे वह पुस्तकों से नहीं सीख पाया था। उस समय उसे देशी संगीत के सौंदर्य का आभास हुआ और "उसी रात उसमें एक संगीतकार का जन्म हुआ।" वह घर पर उसी प्रकार के संगीत-रचना का कार्य करने लगा। उसे यह बात पहिले ही से महसूस होती थी कि अमरीकी लोगों को नृत्य-संगीत में रिद्म और गति (मूवमेंट) की जरूरत है।

हैण्डी ने कुछ स्थानीय ट्यून को ओरकेस्ट्रा-बद्ध कर लिया और मिसीसिपी के डल्टा में बने शानदार ऊँचे भवनों के लिये नृत्यों के अनुरूप ट्यूनें प्रस्तुत कीं। उसने राजनीतिक समारोह के अवसर पर भी ओरकेस्ट्रा प्रस्तुत किया और इस प्रकार उसने इतना काफी धन कमाया जितना कि वह पहिले कभी भी न कमा पाया था।

वह १९०९ में फिर मेम्फिस पहुँच गया, उसने मिस्टर क्रम्प के लिये एक गीत लिखा जिसे मिस्टर क्रम्प ने एक राजनीतिक सभा के समक्ष अपने बैण्ड पर प्रस्तुत किया। वह उस समय ३० वर्ष से अधिक हो चुका था। यह गीत **मेम्फिस ब्लूज** नामक शीर्षक से तीन वर्ष बाद प्रकाशित हुआ। यह कई 'ब्लूज' में से पहिला प्रकाशित 'ब्लूज' था और इसलिये इसे प्रमुख काम मानते हैं। उसने कई गीत लिखने शुरू कर दिये और वह प्रायः ब्लूज तैयार करने लगे। हैण्डी मेम्फिस में ही हेरी एच० पेस से मिला। हेरी एच० पेस नीग्रो बेंक का खजांची (केशियर) था और उसकी संगीत में अभिरुचि थी। उसने कुछ गीत लिखे हैं और उन गीतों की गिरजाघर के कार्यक्रमों में अधिक माँग रही है। दोनों आदमियों ने मिलकर गीतों में साझा कर लिया और वे म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस में भागीदार हो गये। उन्होंने अपनी दूकान का नाम पेस एण्ड हैण्डी म्यूजिक कम्पनी रख लिया।

जब मिस्टर हैण्डी पैंतालीस वर्ष के हुये तो उनकी पब्लिशिंग फर्म बील स्ट्रीट से ब्राडवे पहुँच गई। रैगटाइम संगीत को अब जाज़ कहा जाने लगा। "टिन पैन ऐली" से गीत फैल रहे थे। ब्लूज के लेखक को न जाने कितने समय तक कष्ट ही कष्ट सहने पड़े थे और अब सुख-दुःख के बाद रिकर्ड

बनाने वाली कम्पनियों से उन गीतों को बेचना शुरू कर दिया जिससे उसे बहुत आय होने लगी। विलियम हैन्डी को न्यूयार्क में 'ब्लूज' के कार्यक्रम के संचालन के लिये आमंत्रित किया गया। महायुद्ध के समाप्त होने के बाद जब जाज संगीत उभर रहा था उस समय हैन्डी के ब्लूज पेरिस में अमरीकी नीग्रो बैण्ड पर बजाये जा रहे थे। अमरीकी गोरे सिपाहियों को इस संगीत को सुनकर स्फूर्ति आ जाती थी और वे इसे अपने देश का ही संगीत मानते थे। मिस्टर हैण्डी ने लिखा है कि 'ब्लूज' गीतों की रचना बड़ी सादगी से हुई और अन्ततः उन्हें कंसर्ट हाल में प्रस्तुत किया गया। पाल व्हाइटमेन ने उन गीतों की ट्यून बजाई और हेंडी के **सेण्ट लुइस ब्लूज** को ओरकेस्ट्रा ने इतना अधिक बजाया गया कि शायद ही अन्य गीतों को इतना बजाया गया होगा। न्यूयार्क में हिपोड्राम कंसर्ट का आयोजन हुआ, वहाँ व्हाइटमेन्स का बैण्ड बजाया गया और डीम्स टेलर ने जीवित संगीत की धुनियाँ (लिविंग प्रोग्राम नोट) प्रस्तुत कीं। इग्लैण्ड के किंग एडवर्ड अष्टम के सम्मान में हैण्डी के ब्लूज बजाये गये। इस विषय के एक विशेषज्ञ का विचार है कि **मेम्फिस** और **सेण्ट लुइस ब्लूज** ने जाज संगीत को बहुत कुछ दिया जितना कि कोई संगीतकार व्यक्तिगत रूप से नहीं दे सकेगा। **सेन्ट लुइस ब्लूज** १९१४ में लिखे गये और वे इतने सफल हुये कि चालीस वर्ष बाद अब भी उनसे २५००० डालर प्रतिवर्ष आय हो जाती है।

वह सत्तर वर्ष का हो गया और उसकी आँख की रोशनी कम हो गई फिर भी वह ब्रोडवे पर स्थित अपने ऑफिस प्रतिदिन जाता था। वह द्वितीय विश्वयुद्ध में सिपाहियों और नौ सेना के जवानों का मनोविनोद कर सकता था। वह सत्तर वर्ष का हो चुका था और अंधा भी हो चुका था। उसने वाटर-व्याय, मोची, कपास चुनने वाला, स्टील का काम करने वाला और सफल ब्लूज लेखक के रूप में काम किया। वह वृद्ध हो गया था फिर भी 'बिली रोज डायमण्ड होर्स शू' के अवसर पर उम्दा ट्रम्पेट बजा सकता था। उसकी अठत्तरवीं वर्षगाँठ मनाने के लिये उसके सम्मान में वाल्डोर्फ में एक भोज आयोजित किया गया। जब वह अस्सी वर्ष का हुआ तो "ब्लूज के पिता"

के रूप में उसने ब्रुकलिन के हाई स्कूल के कई सौ बच्चों को अपने वाद्य सुनाये। जब उसकी अधिक प्रशंसा हुई तो उसने अपने ट्रम्पेट को थपथपाया और कहा, "जीवन इसी ट्रम्पेट के समान है। यदि आप इसमें कुछ भी नहीं कर सकेंगे, तो आपको इससे कुछ भी न मिल सकेगा।"

मिस्टर हैण्डी ने यह महसूस किया कि नेविन का गीत **माइटी लेक ए रोज** उसकी जाति के लिये सद्भावना पैदा करने वाला गीत है। उसने कई वर्षों तक **मेक गुफे फिफ्थ रीडर** के पाठ याद रखे क्योंकि उसने बहुत कुछ कठोर परिश्रम के अनुभव से ही उन्हें सीखा था जैसा कि इस अध्याय के प्रारंभ में ही कहा गया है।

[विलियम क्रिस्टोफर हैण्डी १६ नवम्बर, १८७३ में एलबामा के फ्लोरेंस नगर में हैण्डीज़ हिल पर पैदा हुये। उनका २८ मार्च, १९५८ मे न्यूयार्क में निधन हो गया।]

चार्ल्स एडवर्ड आइव्ज़

"जो कुछ मैं जानता हूँ वह पा ने मुझे सिखाया है।"

"पा" डेनबेरी, कन्केटिक्ट में बैण्ड मास्टर थे। वहीं चार्ल्स आइव्ज का जन्म १८७४ में हुआ। अन्य लोग "पा" को जॉर्ज आइव्ज़ समझते थे और उसे ऐसा संगीतज्ञ मानते थे कि वह नगर की सभी संगीत के क्रिया-कलापों का लीडर था। वह बैण्ड मास्टर के अलावा क्वायर-लीडर और अध्यापक था और उसने कई व्यक्तियों को अच्छे संगीत की शिक्षा दी थी। वह ध्वनि की (साइंस आफ साउण्ड) में विशेष दिलचस्पी रखता था और उसने ध्वनिशास्त्र (एकाउस्टिक्स) को अध्ययन किया और ऐसे वाद्य-यंत्र का आविष्कार किया जो क्वार्टर टोन पैदा कर सकता था।

जॉर्ज आइव्ज़ ने १६ वर्ष की आयु में सिविल वार आर्मी बैण्ड संगठित किया। वह फर्स्ट कन्केटीक्ट हैवी आर्टिलरी आर्मी बैण्ड का लीडर बना और रिशमॉण्ड के चारों ओर घेरा डालते समय वह बैण्ड बजाया गया। उस समय प्रेसीडेंट लिंकन ने कहा, "यह एक अच्छा बैण्ड है। जनरल ग्राण्ट ने उत्तर दिया कि उसने सुना है कि आर्मी में यह सर्वोत्तम बैण्ड है लेकिन वह स्वयं उस बैण्ड की श्रेष्ठता आंकने में असमर्थ है क्योंकि वह केवल **यांकी डूडल** की ट्यून ही पहिचान पाता है।

बाद में न्यूयार्क में जॉर्ज आइव्ज़ का स्टीफेन फॉस्टर से परिचय हो गया। जब उसका लड़का चार्ल्स पाँच वर्ष का था तब उसने उसे संगीत के पाठ सिखाने प्रारंभ कर दिये। उसने अपने बच्चों और नगर के अन्य कई बच्चों को बैश और स्टीफेन फॉस्टर का संगीत सिखाना प्रारंभ कर दिया। वह संगीत की नई विधाओं को जानने के लिये केवल उत्सुक ही न था बल्कि उसने अपने लड़के को सिखाया कि वह संगीत के सम्बन्ध में परम्परा से हटकर प्रयोग करने में न डरे। चार्ल्स दस वर्ष का हो पाया कि उसके पिता ने कहा कि वह **स्वानी**

रिवर गीत 'ई-फ्लेट की' पर गाये और उसके पिता ने 'सी' की पर वाद्य-वादन किया। उसने कहा कि इसका उद्देश्य यह है कि कानों को अभ्यस्त कराया जाय। किसी व्यक्ति के लिये केवल 'पिच' पर रहना बहुत कठिन है और इससे यह पता लगता है कि चार्ल्स को पिच का अच्छा ज्ञान होगा।

यदि मिस्टर जॉर्ज आइव्ज़ लगभग पचास वर्ष और जीवित रहते तो उन्हें यह देखकर कितनी प्रसन्नता होती कि उनका पुत्र चार्ल्स अमरीकी संगीतकारों में सबसे अधिक मौलिक संगीतकार है और देश-विदेश के संगीतकारों तथा आलोचकों ने उसकी संगीत की रचनाओं का सबसे अधिक आदर किया है।

जब चार्ल्स आठ वर्ष का था, एक दिन उसके पिता ने यह देखा कि उसका लड़का बैण्ड के ड्रम की रिद्म से अधिक आकर्षित है, वह उसे गाँव में एक नाई की दूकान पर ले गया जिसने आइव्ज़ सिविल बार बैण्ड में ड्रम बजाये थे। उस नाई ने चार्ली को एक खाली टब के सामने बैठा लिया और उसको दो ड्रम-स्टिक दे दी तथा उसे सिखाना प्रारंभ कर दिया और साथ-ही-साथ वह लोगों की दाढ़ी बनाता रहा तथा बाल काटता रहा। उसने सिखाया कि एक साथ दो काम कैसे हो सकते हैं। जब चार्ल्स बारह वर्ष का हुआ तब वह अपने बैण्ड में स्नेयर बैण्ड बजाने लगा।

जब वह तेरह वर्ष का था, उसे पर्याप्त संगीत आ गया था और वह डेनबरी की वेस्ट स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च में ओरगेनिस्ट का काम करने लगा। उस वर्ष उसने **होली डे क्विक स्टेप** गीत लिखा। यह गीत बैण्ड के लिये उपयुक्त था लेकिन उसे इतना अधिक संकोच था कि वह उसे न बजा सका। उसके पिता ने डेकोरेशन डे परेड में सर्वप्रथम उस गीत की ट्यून बैण्ड पर बजाई। जब बैण्ड स्ट्रीट में मार्च करता हुआ आ रहा था और उसके घर के समीप होकर निकल रहा था तो आइव्ज़ उस ट्यून को सुनकर आश्चर्य-चकित हो गया और वह दरवाजे पर बेस-बाल मारकर उसे फिर पकड़ने लगा। लेकिन एक स्थानीय आलोचक ने उस नौजवान ओरगेनिस्ट और संगीतकार के उज्जवल भविष्य का पूर्वाभास किया।

चार्ल्स डेनबरी पब्लिक स्कूल गया और फिर हॉपकिन्स ग्रामर स्कूल

पहुँचा और वहाँ से उसने येल जाने की तैयारी की। येल में उसने शिक्षा और संगीत का अध्ययन किया। उसने वहाँ डूडले बक के साथ ओरगन और होरेशो पार्कर के साथ संगीत-रचना का अध्ययन किया। उसने न्यू हेविन गिरजाघरों में ओरगेन बजाया और वह १८९८ में ग्रेजुएट हो गया। वह बेस बाल और फुटबाल खेलने का भी समय बचा लेता था।

चार्ल्स आइव्ज़ अपनी डिग्री प्राप्त करने से पूर्व अपने ओरगन के लिये संगीत-रचना किया करता था जिसमें वह जान-बूझकर कर्कश स्वर रखता था या वे ऐसे स्वर थे जिन्हें उस समय बंधे स्वरों के साथ मिलाना सम्भव नहीं था। कुछ वर्षों बाद स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग ने विचारोत्तेजक लेख लिखकर संगीत की दुनिया में तहलका मचा दिया। लेकिन आइव्ज़ चुपचाप और अकेले पहिले इयर-स्ट्रेचिंग ध्वनियों के बारे में प्रयोग कर रहा था। उसने स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग को अधिक नहीं सुना था। आइव्ज़ को अब इस बात का श्रेय है कि उसने पहिली बार पाली हार्मोनी (एक ही समय में एक से अधिक 'की' का प्रयोग) का प्रयोग किया और एटोनेलिटी (की को किसी होम बेस के बनाये बिना स्वच्छंद रूप से प्रयोग) को अपनाया।

होरेशियो पार्कर योरुप की उन्नीसवीं शताब्दी के उम्दा संगीतज्ञ और अच्छा संगीतकार थे और वे अपने छात्रों को उनकी नव-निर्मित ध्वनियों के लिये प्रोत्साहन नहीं देते थे, उन्होंने चार्ल्स से कहा कि वह "सभी 'की' को हाग कर ले। चार्ल्स अपने गुरु के समक्ष सभी रचनाएँ प्रस्तुत करने पर भी कहीं अधिक संगीत जानता था। कई लोगों ने उसके संगीत को सुनकर यह कहा कि उसका संगीत "देश का नहीं है।" वह ऐसा संगीत नहीं है कि लोग उसे सुखपूर्वक सुनकर अपने देश का संगीत कह सके। उसने असाधारण तार-विन्यास, विचित्र स्केल के पद्यांश, विस्तृत सुरीले स्किप, रिद्म (लय) की मिश्रित रचना अपनाई जिनसे उसके अध्यापक परेशान थे क्योंकि वे योरुप के पारंपरिक संगीत की शिक्षा देते थे। इन संगीत के विचारों में से कुछ विचार ऐसे भी थे कि नये दिखने पर भी नये नहीं थे। ऐसा संगीत आदि-वासियों ने प्रयोग किया था और पुराने जमाने में इसका चलन था लेकिन

आधुनिक अमरीकी और योरुपवासियों यहाँ तक कि स्वयं संगीतकार के लिये यह संगीत नया था। फिर भी हमेशा कुछ ऐसे लोग होते हैं जो नई चीजों का स्वागत करते है। जिन संगीतज्ञों को प्रयोग करना अच्छा लगता था, उन्हें आइव्ज़ का संगीत अच्छा लगा।

उसने अपने कालेज के अध्ययन के बाद पार्ट-टाइम संगीतकार का काम किया और वह न्यू जर्जी और न्यूयार्क सिटी के गिरजाघरों में कुछ वर्षों तक ओरगेनिस्ट और क्वायर डायरेक्टर रहा लेकिन वह संगीत क्षेत्र में दिन भर काम नही करता था। उसने ग्रेजुएट होने के बाद यह तै किया कि वह बीमा का काम करेगा और वह म्यूच्युल लाइफ इन्श्योरेंस कम्पनी में एक क्लर्क हो गया। उसे बीमा का काम अच्छा लगा और वह अपना अधिक से अधिक समय निश्चित मन से बिताना चाहता था जिससे वह अपने मन की पसन्द का संगीत तैयार कर सके। कुछ वर्षों बाद उसने आइव्ज़ एण्ड कम्पनी की स्थापना की और उसके कुछ वर्षों बाद वह और एक दूसरा क्लर्क दोनों मिलकर मैनेजर हो गये। उनकी आइव्ज़ एण्ड मेरिक नामक फर्म देश की सबसे बड़ी फर्म हो गई। चार्ल्स की सेहत गिर गई जिसके कारण उसे अनिवार्य रूप से अपने कार्य से मुक्त होना था। अत: उस फर्म को इक्कीस वर्ष बाद समाप्त कर दिया गया।

उसका व्यवसाय-क्षेत्र में अधिक आदर किया जाता था और वहाँ भी उसने उतना ही उत्साह दिखाया जितना कि उसने संगीत में। वह बीमा के सम्वन्ध में अपने कुछ नये विचार रखता था और उसने इक्कीस वर्ष में अपनी फर्म के लिये ४५०,०००,००० डालर का व्यापार किया। उसने लिखा है, "मुझे व्यापार के अनुभव से जीवन के कई पक्षों के देखने का अवसर मिला है और यदि व्यापार में न लगता तो मैं वह अनुभव प्राप्त नहीं कर पाता। व्यक्ति व्यापार में दु:खद घटना सज्जनता, कमीनापन, उच्च उद्देश्य, निम्नकोटि के विचार, उज्जवल आशायें, क्षीण आशायें, महान आदर्श और आदर्श शून्यता पाता है और व्यक्ति यह देखता है कि इन्हीं सभी बातों से उसके भाग्य का निर्माण होता है।"

आइव्ज़ ने कालेज की पढ़ाई समाप्त करने के दस वर्ष बाद एक लड़की से विवाह किया जिसका प्रथम नाम हार्मोनी था। उसने आइव्ज़ के जीवन में अपना नाम सार्थक कर दिया। उसने इस बात की कभी चिन्ता नहीं की कि उसका पति दिन भर कार्यालय में काम करता है और संध्या समय, सप्ताह के अन्त में तथा छुट्टियों में घर पर ही संगीत लिपिबद्ध करने में अपना समय बिताता है। और उसने उससे कभी यह भी न कहा कि वह इतना 'अच्छा' लिखे जिसे लोग पसन्द करें, वह जानती थी कि उसे वही लिखना चाहिये जो उसके मन में है। उसने बाद में यह भी बताया कि वे दोनों कहीं नहीं गये और इसका उसे बुरा भी न लगा। आइव्ज़ ने भी अपने एक मित्र को बताया कि वह अपनी पत्नी के प्रति उतना ही ऋणी है जितना कि वह अपने पिता के प्रति ऋणी है। वह हार्टफोर्ड के एक प्रसिद्ध पादरी की बेटी थी। मार्क ट्वेन, व्हिटियर, हेरियट बीचर स्टो और कम्यूनिटी के अन्य साहित्यिक व्यक्तियों से उसके पिता परिचित थे। वास्तव में वह 'एट्रेम्प एब्रोड' में मार्क ट्वेन के साथ यात्री थे।

वर्ष बीतते गये और आइव्ज़ ने बहुत सी रचनाएँ एकत्र कर लीं। १९२० में उन्होंने ११४ गीतों की पुस्तक निजी तौर पर छापी और बाँटी। अगली वर्ष पियानो के लिये उसका **कनकॉर्ड सोनेटा** छापा गया। संगीतज्ञ इससे अधिक प्रभावित हुये और विशेष रूप से नौजवान संगीतज्ञों को यह अधिक अच्छा लगा क्योंकि वे नये संगीत में अधिक रुचि रखते थे। संगीतज्ञों और आलोचकों ने उसकी संगीत रचनाओं की प्रशंसा की, फिर भी कई वर्ष बाद आइव्ज़ को ख्याति मिल सकी। वह अपना संगीत लोगों पर लादना नहीं चाहता था, उसके वाद्य-संगीत का प्रदर्शन बहुत कठिन था, वह संगीत ऐसा नहीं था कि उसका तुरन्त ही प्रभाव पड़े। वह न तो सुन्दर ही था और न उसका समझना सरल था—उसने स्वयं कहा है कि वह संगीत "कठोर" संगीत ही था।

विद्वान पियानोवादक जान कर्क पेट्रिक के बाद आइव्ज़ ऐसा पियानोवादक हुआ जिसने **काँकॉर्ड सोनाटा** का बारह वर्ष अध्ययन किया (प्रारंभ में वह उसे समझ भी न सका) और फिर उसने १९२९ में न्यूयार्क में उसे प्रस्तुत

किया। लोगों ने उसको बहुत सुना और उसने **थोरियो**-गति को दर्शकों की माँग पर वार-वार बजाया। आलोचक इस संगीत को महत्व दे रहे थे। एक आलोचक ने यहाँ तक कह दिया कि इससे अच्छा संगीत अमरीका में पहिले कभी नहीं बना है। कुछ सप्ताह वाद पियानोवादक ने इसे जनता की माँग पर फिर प्रस्तुत किया और उस दिन पूरे हाल में केवल आइव्ज के ही संगीत का आयोजन था। पैंतीस वर्ष वाद आइव्ज ने अपनी तीसरी सिम्फनी समाप्त की, उसे १९४६ में प्रथम वार प्रस्तुत किया गया और उसे पुलिटज़र पुरस्कार मिला।

बहुत से संगीतकार यह महसूस करते हैं कि उन्होंने जो कुछ लिखा है उसके प्रस्तुत करने में कोई परिवर्तन न किया जाय। लेकिन हम ऐसे समय से निकल रहे हैं जबकि "व्यवस्थाओं" को प्रमुखता दी जाती है और मिस्टर आइव्ज ने तीस वर्ष पहिले अपने ११४ गीत प्रकाशित करते समय यह महसूस किया था कि जहाँ तक उसके संगीत का सम्बन्ध है, कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार प्रस्तुत करने में उसका प्रयोग कर सकता है, वह उसकी नकल कर सकता है और उसके सुर बदल सकता है या अन्य वाद्य-यंत्रों के लिये व्यवस्थित कर सकता है। उसने अपने प्रकाशक को संगीत पर कापी राइट रखने मे आपत्ति की क्योंकि वह इस बात में विश्वास करता था कि कोई भी व्यक्ति उन गीतों के संगीत को अपना सकता है। लेकिन आखिरकार पूर्ववत् विधि के अनुसार उसे प्रकाशक की ही शर्त स्वीकार करनी पड़ी। फिर भी उसने कहा कि यदि उसके संगीत से कोई आय होगी तो उसे नवयुवक संगीतकारों के संगीत के प्रकाशन में काम में लाया जायेगा। उसके अध्यापक जिस प्रकार 'की' को रखते थे उसी प्रकार वह भी 'की' को 'हॉग' कर लिया करता था लेकिन उसने अपने संगीत या अधिकारों के लिये कभी संकोच नही किया।

उसे बीमा के काम से जब भी समय मिलता, उस समय को वह संगीत-रचना के लिये उपयोग में लाता था। उसने इस प्रकार कई वर्षों तक निष्ठाशील और दत्तचित्त होकर कार्य किया और उसके संगीत की रचनाओं की संख्या बहुत हो गई। उसने कई सिम्फनी, चेम्बर-कृतियाँ, कोरल-कृतियाँ, गीत

और पियानो की संगीत रचनाएं लिखीं। उनमें कुछ पद्यांशों को अवर्णनीय ढंग से सुन्दर ही बताया गया है और उनकी कृतियां उत्कृष्ट है, उनमें से बहुत सी राष्ट्रीय हैं जिन्हे वस्तुतः सुनकर ऐसा लगता है कि उनकी रचना अमरीकी ने ही की। उनके संगीत में संगीतकार का अपने देश के प्रति प्रगाढ़ प्रेम, आदर्शवादिता, अपने देश के अतीत के गौरव का वर्णन है और साथ-ही-साथ संगीत-क्षेत्र में उसके बचपन की मधुर स्मृतियों का उल्लेख है। उसने अपने संगीत में इन सभी बातों की चर्चा की है: उसके पिता ने उसे संगीत सिखाया, उस संगीत की स्मृति भी उसके साथ सुरक्षित थी। इसके अतिरिक्त उसने १८७० से लेकर लगभग बीस वर्षो तक कनेटिक्ट यांकी का संगीत और पुराने बार्न-नृत्यों का संगीत भी याद रखा। वह संगीत के पुनोरुद्धार करने के लिये बैठकों के आयोजन और मेमोरियल डे परेड, से भी परिचित रहा। उसने मिन्स्ट्रिल गीत, फसल कटाई के समय के गीत तथा स्लिप, स्लाइड और ऑफ पिच ट्यून करने वाले वृद्ध ग्रामीण फिडिल-वादक का संगीत, अपनी स्मृति का अविभाज्य अंग बनाया। उसे टाउन बैंड के उच्च स्वरों का वादन याद रहा जिनमें यदि कलाकार स्वतंत्र हो जाते या प्रेरित होते या कभी लापरवाह होते तो उनके स्वर बेतुके हो जाते और बैण्ड-वादन टाइम अथवा टोन के अनुसार न हो पाते थे। वह गिरजाघर के ओरगन या हारमोनियम की आवाज भी न भूल सका जिसमें ट्यून स्वर-संगत न हो पाती थी और उनके नोट कभी ऊँचा स्वर देते और कभी हल्का स्वर देते थे यदि धौंकनी में हवा भर जाती या निकल जाती। उसे किसी संगीत-समारोह में गायकों के गायन की आवाज भी याद रही जिसमें कुछ आवाजें खिंच-खिंच कर आगे बढ़ती, कुछ आवाजें जल्दी-जल्दी धुन पूरी कर लेती, कुछ आवाजे तीव्र-स्वर की होती और कुछ आवाजे एक से स्वर की होती लेकिन सभी पूर्ण आश्वस्त होकर तीव्र स्वर में गाते थे। इन सभी बातों और एअर-स्ट्रेचिंग अभ्यास से चार्ल्स आइव्ज के संगीत पर विशेष प्रभाव हुआ। चार्ल्स आइव्ज अमरीका का सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संगीतकार था।

[चार्ल्स एडवर्ड आइव्ज २० अक्तूबर १८७४ को कनेक्टीकट में पैदा हुआ। वे १९ मई १९५४ को न्यूयार्क में स्वर्गवासी हुये।]

सिद्धान्त और रचना का अध्ययन भी किया। उसकी रचनाओं के लिये अध्यापकों में से एक का नाम हम्पर्डिंक था जो **हेंसेल** और **ग्रेटेल** का संगीतकार था। ग्रिफ्स उन दिनों जर्मनी में था जब वेगनर के संगीत की धाक चारों ओर फैली हुई थी लेकिन वह स्पष्ट विचारों का व्यक्ति था। उसे वेगनर का संगीत पसन्द था लेकिन वह उससे अभिभूत होकर बह नहीं जाता था। जब वह बीस वर्ष का था, उसने बर्लिन में सार्वजनिक रूप से वाद्य-वादन किया और अपने पियानो पर एक सोनाटा बजाया जिसे उसने स्वयं लिखा था।

जब ग्रिफ्स जर्मनी में था, उसकी महत्वाकाक्षा में परिवर्तन हो गया। वह कंसर्ट के पियानो वादक के बजाय संगीतकार होना चाहता था। उसने अन्य विदेशी भाषाओं का अध्ययन किया लेकिन उसे जर्मन सबसे अधिक आती थी। उसने पाँच जर्मन कविताओं को संगीत बद्ध किया और उसकी ये प्रथम प्रकाशित रचनाएँ थी। ये रचनाएँ उस समय प्रकाशित हुई जब वह पच्चीस वर्ष का था और इन रचनाओं का प्रकाशन उसके अपने देश लौट आने पर हुआ था। उसने जर्मनी में चार वर्ष अध्ययन किया और वहाँ उसने अध्यापन कार्य किया।

जब वह घर लौटकर आया तब उसके लिये यह आवश्यक था कि वह कुछ काम खोजे क्योंकि उस समय गंभीर संगीतज्ञ के लिये यह संभव नहीं था कि केवल लिखने से ही गुजर हो सकती है। वह टेरी-टाउन में लड़कों के हेक्ले स्कूल में पियानो का अध्यापक और क्वायर मास्टर बन गया। वह अपने खाली समय में संगीत का अध्ययन करता था और उसे लिपिबद्ध किया करता था। वह आधुनिक फ्रेंच और रशियन सीखा करता था और अपनी रचनाएँ किया करता था। वह अपना सारा समय अध्ययन और रचना में लगाना चाहता था, इसलिये उसे अध्यापक का काम दुःख देने लगा और वह उसमें मन न लगा सका।

उसने तेरह वर्षों तक टेरीटाउन में पढ़ाया और ऐसी रचनाएँ की जिनके लिये वह आज भी याद किया जाता है। उसने पियानो के लिये **रोमन स्केचेज** नामक गीत लिखे जिनमें से **वी व्हाइट पीकाक** सबसे अधिक बजाया

जाता है। ग्रिफ्स स्वयं संगीत का प्रेमी था, उसने एक बेले लिखा जिसका शीर्षक था : **दी कैरन आफ कोरिडवेन** और इसे न्यूयार्क के नेबरहुड प्ले हाऊस में प्रस्तुत किया गया। उसका **शो-जो** नामक बेले जापान की पुरानी कथा पर आधारित है और उस बेले को न्यूयार्क, बोस्टन और अन्य नगरों में काफी लोकप्रियता मिली। वह अब भी ओरियण्ट विचारों के प्रति आकर्षित था उसने प्राचीन चीन और जापान की पाँच कविताओं को संगीतबद्ध किया। ये गीत पाँच-टोन और छः टोन स्केल पर लिखे गये।

चार्ल्स ग्रिफ्स केवल स्केल में ही नहीं बल्कि संगीत के प्रारूप (फार्म) में भी प्रयोग करना चाहता था। जब उसने अपने पियानो के लिये एक बड़ा सोनेटा लिखा तो उसने उस **सोनेटा** को मूल स्केल पर आधारित किया। वह **सोनेटा** बहुत कठिन था और वह कुशल पियानो वादक होने के कारण सोनेटा को बजा सका। उसने उस सोनेटा को पहिली बार न्यूयार्क के मेक्डो-वेल क्लब में प्रस्तुत किया।

बोस्टन सिम्फनी ओरकेस्ट्रा ने **दी प्लेजर डोम आफ कुबला खां** नामक कविता की धुन बजाने के लिये स्वीकार कर ली। इस कविता की इतनी अधिक प्रशंसा की गई कि आखिरकार ग्रिफ्स को इसमें सफलता ही नहीं मिली बल्कि उसे अन्य रचनाओं के लिये भी आमंत्रित किया गया। सभी संगीतकारों के जीवन में निर्विवाद सत्य है कि जब उनके संगीत को पसन्द किया जाता है तब वह अधिक उत्सुकता से लिखा करते हैं। किसी भी भटकते हुये संगीतकार को उत्साहित करना उसके प्रयत्न को बढ़ावा देना है और वह केवल इसलिये परिश्रम करता है कि कोई-न-कोई उसके संगीत को अवश्य सुनेगा। ग्रिफ्स ने अपनी एक कविता फ्लूट और ओरकेस्ट्रा के लिये लिखी और उसे एक बांसुरी वादक को भेजा। बांसुरी वादक का नाम जार्जेस बेरेरे था। उन्होंने उस कविता को अपने वाद्य-यंत्र पर प्रस्तुत किया और उस कविता को अत्यधिक ख्याति मिली।

चार्ल्स ग्रिफ्स विनोदी स्वभाव का था और वह अपने उन मित्रों के साथ प्रसन्न रहता था जो संगीत और कला-प्रेमी थे। लेकिन उसके जीवन के अन्तिम

अभी तक मिस्टर कर्न संगीत के यंत्रों का व्यापार नहीं करते थे लेकिन उनको पियानो सप्लाई करने के दो आर्डर मिले इसलिये उन्होंने पियानो की सप्लाई करने की इच्छा की। उन्होंने अपने पुत्र जेरोम को पियानो फैक्टरी देखने के लिये भेजा और कहा कि वह वहाँ से दो पियानो खरीद लाये। वह लड़का स्कूल से निकला ही था कि उसे न्यूयार्क में व्यापार करने के लिये भेजा गया, उसे यह अनुभव प्राप्त करने में आनन्द आया। पियानो फैक्टरी के मालिक बड़े मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होंने उसका अधिक आदर सत्कार किया और अपने यहाँ भोजन के लिये आमंत्रित किया। उनका व्यवहार और बात-चीत करने का ढंग इतना आकर्षक था कि वह लंच की टेबुल से उठते तक दो सौ पियानो खरीदने का आर्डर दे चुका था।

जब वह अपने पिता को दिन भर के काम की प्रगति बताने आया तब मिस्टर कर्न की यह हार्दिक इच्छा हुई कि अच्छा यही रहेगा कि वह जेरोम को संगीत के अध्ययन के लिये विदेश भेज दे। वह दो सौ पियानो खरीद लाया था और उन सभी पियानो का वह क्या करता? कई दिन तक चिन्ता और वाद-विवाद चलता रहा कि वह नये 'व्यापार' के अनुकूल बने फिर मिस्टर कर्न ने एक वेयर हाऊस किराये पर लिया और उसमें अपने शेष एक सौ अठानवे पियानो स्टोर कर दिये। उसने उन पियानो को उधार पर बेचना शुरू किया और किस्तों में उनकी कीमत वसूल की। उनकी असली कीमत से कम कीमत ही मिल सकी लेकिन वह उन्हे कई वर्षों में बेच सका। उसके कुछ समय बाद पियानो का बेचना एक प्रमुख व्यापार बना लेकिन अब जेरोम वहाँ काम नहीं कर रहा था। उसका पिता उसे संगीत सीखने के लिये बाहर भेजने में प्रसन्न था।

उसी वर्ष वह सत्रह वर्ष का हो गया और वह जर्मनी चला गया और उसे उस वर्ष के बाद संगीत का पहिला काम मिला! कुछ समय तक उसने न्यूयार्क और लंदन में काम किया और फिर अध्ययन करने के लिये वह जर्मनी चला गया। जब रैगटाइम संगीत एक नया उद्योग और नवीन कार्य था तब

वह एक 'म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस' में 'प्लगर' का काम करता था। नया नारा यह था "इसे अपने पियानो पर बजाकर देखें।"

दो सौ वर्षों से कुछ कम समय बीत गया जब न्यू इंग्लैण्ड में पहिली बार 'गायन-स्कूलों' का विकास हुआ था और सिंगिंग टीचर बनाना भी एक नया काम था। ये टीचर छात्रों को नोट पढ़ाना सिखाते थे। उसके बाद ऐसा समय आया जब योरुप के कलाकार नव-विकसित देश की दौलत को देखकर उसे पाने के लिए लालायित हुये और वे इस देश में आने लगे। उन्होंने धन के बदले में संगीत के ऊँचे स्टैंडर्ड की रुचि कायम की। नये देश के बसने और विकसित होने के बाद ही विनोद करने वाले संगीत पर जोर दिया जाने लगा। मनोविनोद करने वाला पहिला संगीत इतना बेतुका था जितना कि पहिला गंभीर संगीत। देश की दौलत और उद्योग ने संगीत के वाद्य-यंत्रों को प्रमुखता दी। जेरोम कर्न देश में उस समय लौटा जब वाद्य-वादन संगीत सारे देश में फैल चुका था। उसने मनोविनोद करने वाले संगीत में विशेष सौंदर्य लाने का प्रयत्न किया।

कर्न अठारह वर्ष का हो गया और उसी समय वह संगीत को अपनी आजीविका बना सका। वह एक प्रोड्यूसर के पास स्टाफ म्यूजिशियन के रूप में काम करने लगा था। वह प्रोडयूसर योरुप के संगीत को कुछ बदल कर प्रस्तुत करने में दक्ष हो गया था। उन दिनों में लंदन में यह रिवाज था कि संगीत के प्रदर्शनों में देर से पहुँचा जाय। मिस्टर कर्न का कहना है कि उसने संगीत का काम उस समय प्रारंभ किया जब अजीब रिवाज था। मनोविनोद के सभी कार्यक्रम फैशन के अनुकूल बनाये जाते थे। प्रदर्शन के पहिले भाग में संगीत काफी उबाने वाला होता था। जब तक वहाँ शाम को काफी अच्छे संगीतज्ञ जमा न हो जाते, दर्शक भी संगीत सुनने के लिये न पहुँच पाते। लेकिन अमरीका में अलग रिवाज था। जब न्यूयार्क में इस प्रकार की कामेडी का प्रदर्शन किया जाता तब अमरीकी श्रोताओं के लिये नई रचनाएँ लिखी जातीं। वे वहाँ समय पर पहुँचते और जैसे ही बत्तियाँ बुझा दी जातीं तथा कण्डक्टर अपना बेटन उठा लेता तो वे चुपचाप सुनते रहते। जेरोम कर्न की आयु

अठारह वर्ष की थी जब उसने लंदन से लाये गये एक शो के लिये नये गीत लिखे।

अगले वर्ष भी उसने वैसा ही किया। वह अपने काम से प्रायः लन्दन जाया करता था। जब वह इस प्रकार के संगीत के कार्य को करता रहता, तब दर्शक यह देखते कि शो के प्रारंभ में ही सर्वोत्तम संगीत है और उस संगीत की रचना जेरोम कर्न ने की है।

जब वह पच्चीस वर्ष का हो गया तब उसने एक पूरा स्कोर लिखा। उस वर्ष पतझड़ के मौसम में वह इंग्लैण्ड में था और वहाँ उसने एक अंग्रेज लड़की से अपना विवाह कर लिया।

उसके एक वर्ष बाद उसकी प्रथम मौलिक संगीत सम्बन्धी कोमेडी प्रस्तुत की गई। उसका **द रेड पेटीकोट** नाम रखा गया। वह अब एक प्रसिद्ध संगीतकार था, उसकी ख्याति ब्रोडवे में ही नहीं वल्कि पिकेडिली में भी थी। इसके बाद वह वर्ष में एक शो के लिये संगीत प्रस्तुत करता और कभी-कभी दो या तीन बार संगीत प्रस्तुत करता।। जेरोम कर्न के संगीत के शो न्यूयार्क, लंदन और पेरिस में एक साथ चला करते थे। उसके मन में अनगिनत ट्यून आती थीं, वह उन्हें लिखता रहता था। वह इस बात के लिये सचेत रहता था कि वह स्वयं उनकी कापी नहीं कर रहा है।

आगामी दस वर्षों में विश्व महायुद्ध चलता रहा। बीसवीं शताब्दी के १९११ से १९१९ तक का समय था। उन वर्षों में ओपेरा अपनी सफलता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। संगीतयुत खेल रोमांटिक और विदेशी होते थे। प्रायः 'कहानियां' ऐतिहासिक होती थीं। म्यूजिक में ट्यून होती थी और उसकी रिद्म मस्ती भरी होती थी। चार संगीतकार इस प्रकार का संगीत देने के लिये प्रमुख बन गये थे। उनमें से पहिले विक्टर हर्बर्ट थे जो आइरिश-अमरीकी थे और उन्होंने **बेबज इन टॉयलैण्ड** लिखा, दूसरे बबेरियन रुडोल्फ फ्रिम्ल थे जिन्होंने **केटिका** लिखा, तीसरे हंगरी निवासी सिगमण्ड रोमबर्ग थे जिन्होंने **इन ब्लासम टाइम** लिखा और चौथे न्यूयार्क के जेरोमे डेविड कर्न ही

थे जिसने **वेरी गुड एडी, हेव ए हार्ट, लीव इट टू जेन, दी बंच एण्ड जूडी, स्टेपिंग स्टोन्स** जैसी कुछ रचनाएँ की।

बहुत पहिले डैन एमिट के छोटे कार्यों से 'मिन्स्ट्रल शो' उदय हुये और तब "बिग फोर" दर्शकों का मनोविनोद कर देते थे फिर इन्हीं शो में बढ़ते-बढ़ते चालीस या साठ व्यक्ति भाग लेने लगे—यहाँ तक संगीत की कॉमेडी में भाग लेने वाले कलाकार बढ़ते ही गये कि वे अपने अधिक कलाकारों या व्यय की अधिकता से लगभग समाप्त ही हो गये। १९२१ से १९२९ तक प्रोड्यूसरों में आपस में होड़ होने लगी और व्यर्थ तड़क-भड़क के साथ अधिक खर्चीले खेलों का प्रदर्शन होने लगा। अब खेलों पर पचास हजार डालर खर्च करना मामूली बात हो गई और उन खेलों की संख्या भी बढ़ने लगी लेकिन उनकी गुणवत्ता (क्वालिटी) में अंतर न हो सका। अब बाक्स आफिस के लिये पचास लड़कियों की अपेक्षा सौ लड़कियों का कोरस संगीत आवश्यक था। अब दो कॉमेडियन के स्थान पर आठ कॉमेडियन काम करने लगे थे और एक नृत्य की टीम के स्थान पर नृत्य के लिये पूरा दल काम करने लगा था। लोकप्रिय संगीत के पटल पर परिवर्तन हो रहे थे।

लगभग सभी संगीतात्मक कॉमेडी की कहानियाँ या कथानक बहुत ही नगण्य और हीन हो चुके थे। 'नायक' परम्परा के साथ-साथ रोमांटिक कहानी भी समाप्त हो चुकी थी। अब चरित्र-चित्रण बिल्कुल नहीं होता था। संगीत किसी संगीत-शो के लिये नहीं लिखा जाता था, 'रंगमंच के जीवन' के दौरान में सर्वोत्कृष्ट गीतों को छांट लिया जाता था और उन्हीं गीतों को केन्द्र बनाकर जैसे भी कहानी और गीत संभव थे, वैसी कहानी और गीतों की रचना की जाती थी। जनता को यह बुरा भी न लगता था। यदि कोई खास कहानी भी नहीं होती तो भी वे इसपर विशेष ध्यान नहीं देते थे। उनके लिये यह पर्याप्त था कि कहानी का कुछ अंश यहाँ से लिया गया और कुछ वहाँ से लिया गया। जहाँ तक वाद्य-यंत्रों का प्रश्न था मुँह और थपकी से बजाये जाने वाले वाद्य-यंत्रों ने तारों के ललित वाद्य-यंत्रों का स्थान ले लिया था क्योंकि जाज संगीत प्रारंभ हो चुका था जिसके कारण कोलाहलपूर्ण रिद्म का प्रादुर्भाव हुआ। जो

भी मेलोडी बनती थीं, वे शीघ्र बनाई जाती थीं और टूटी-फूटी सी लगती थीं। इनका ध्येय प्रमुख रूप से गायन की ओर न होकर नाच की ओर होता था। सबके मन में बसी मेलोडी अब लोगों को प्रिय नहीं रह गई थी और वे इसे भूलने लगे थे। लेकिन जेरोम कर्न ने इसे नहीं भुलाया।

फोर्टिसिमो ब्लेयर की ओर परिवर्तन के बीच वह गीतकार कभी 'सर्वोत्कृष्ट गीत' लिखने के विचार से नहीं बैठा लेकिन स्वान्तः सुखाय ही गीत की रचना करना जिसका ध्येय था, उसने **ओल' मेन रिवर** के उन मधुर गीतों की रचना की जो उस वर्ष ही नहीं वरन कई वर्षों तक सर्व प्रिय गीत रहे।

मिस एडना फर्बर के **शो बोट** उपन्यास के प्रकाशन के बाद जब जेरोम कर्न ने उसका विज्ञापन एक अखबार में देखा तो उसने उसकी एक प्रति खरीदी लेकिन वह उसे पढ नहीं सका। लेखिका उसकी यह दशा सुनकर सचमुच बेचैन हो गयीं लेकिन जेरोम कर्न ने उनको बताया कि जैसे ही उसने उनके उपन्यास के पृष्ठ खोले, ट्यून के बाद ट्यून उसके दिमाग में छाती गई और उसे पढ़ना रोककर बार-बार पियानो पर बैठना पड़ा। उसने मिस फर्बर को बताया कि वह उस उपन्यास के आधार पर एक लाइट ओपेरा तैयार करेगा।

दोनों में करार हुआ। ओस्कर हेमरस्टीन ने गीत लिखे, जिसके बारे में मिस्टर कर्न ने कहा, "संगीत ने स्वयं इसे अपने आप रचा है।" दक्षिण के जीवन से अपरिचित होने के कारण उसने मार्क ट्वेन की लिखी **लाइफ आन दी मिसीसिपी** नामक प्रसिद्ध पुस्तक को पढ़ा और उससे 'मिसीसिपी रिवर नीग्रो' की अत्यन्त करुण लय को पकड़ा। इसी को उसने **ओल मैन रिवर** में रचा जो **शो बोट** का प्रसिद्ध सर्वोत्कृष्ट गीत हुआ। कुछ आलोचकों का कहना था कि यह सच्चे शास्त्रीय अर्थों में ओपेरा विधि पर बनी थी जो हर रूपों में अमरीकी थी।

मिस्टर कर्न ने बिना कोरस बालिकाओं की सहायता से गीतात्मक नाट्य प्रस्तुत करने की योजना बनाई। बाद में उसने यह समझा कि इनकी अब माँग नहीं है। उसे इस बात ने चिंतित किया कि जब वे न तो अच्छी तरह गा सकती थीं और न ही कहानी का उनसे विशेष सम्बन्ध होता था तो उनको

स्टेज पर फुदकने के लिये क्यों रखा जाय। **द कैट एण्ड द फिडिल** और **म्यूज़िक इन द एअर** दोनों ही अत्यन्त सफल रहे यद्यपि इनमें से किसी में एक भी कोरस बालिका न थी। **द कैट एण्ड द फिडेल** उन शहरों में खेला गया जहाँ लोगों ने वर्षों से संगीतात्मक खेल के बारे में सुना तक नहीं था।

जेरोम कर्न की हास्य और चरित्र-चित्रण की प्रतिभा तथा एक वास्तविक मेलोडी लिखने की क्षमता ने उसके खेलों को एक आदर का स्थान प्रदान किया। उसने प्रारंभ में जर्मनी में संगीत-रचना की ट्रेनिंग प्राप्त की। वह बदलते हुये युग की माँगों के अनुरूप लोकप्रिय संगीत देने के लिये परिवर्तन करते हुये भी अपनी शैली बनाये रहा। यह कहा जाता था कि कर्न मोज़ार्ट की तरह ही लिखना पसन्द करता था और वह ब्लूज़ भी रच सकता था। लोकप्रिय संगीत के कई रचियताओं के सामने इस प्रकार के आदर्श नहीं थे। उसे लोकप्रिय संगीत का पंडित समझा जाता था। जब उसने पी० जी० वोडहाउस के साथ इंग्लैण्ड में गीतात्मक कामेडी लिखी तो ऐसा लगता था कि वे गिल्बर्ट और सुलवियन के सर्वोत्कृष्ट रचनाओं के समान है।

केवल संगीत की रचना कर लेने से मिस्टर कर्न का काम समाप्त नहीं हो जाता था, वह अत्यन्त परिश्रमी था और खेल के तमाम रिहर्सलों के दौरान छोटी-से-छोटी बातों को वह स्वयं देखता था और जहाँ कहीं नई मेलोडी उसे मिलती थी, वह अभिनेता या इलेक्ट्रिशियन, जो कोई भी मिल पाता था, उसको बुला लेता और मुस्कराकर उससे कहता था, "मैंने तुम्हारे लिये कुछ रचा है।"

उन दिनों जब संगीतकार न्यूयार्क के बाहर रहकर **दे डिडिंट बिलीव मी** और **यू आर हियर एण्ड आई एम हियर** ऐसी प्रसिद्ध मेलोडी तैयार कर रहा था, मिस्टर कर्न कहता था कि उसमें किसी संगीतकार या कलाकार की सनक नही है, वह तो केवल एक परिश्रमशील नगर निवासी है जो केवल अपनी पत्नी और बच्चों का ध्यान रखता है। उसने कहा था, "मैंने बहुत से विचित्र कपड़े कभी नहीं खरीदे।" लेकिन ऐसा होने पर भी जब वे **म्यूज़िक इन द एअर** में काम कर रहे थे तो रिहर्सल के लिये उन्होंने कुछ बेवेरियन कपड़े खरीदे थे।

१९३१ से १९४० के बीच ध्वनि की प्रत्युत्पत्ति की विधा की उन्नति के बाद सुगम संगीत रचने वाले होलीवुड के अनुपम उद्योग की ओर खिच रहे थे। उस समय मिस्टर कर्न केलीफोर्निया में रहकर चल-चित्रों के लिये सरल ओपेरा और संगीतात्मक कामेडी रचकर हमें लगातार कुछ न कुछ देते ही जा रहे थे। उन्होंने लिली पोन्स, इर्ने ड्यूने और ग्रेस मूर आदि विभिन्न सितारों के लिये संगीतात्मक रोल तैयार किये।

मिस्टर कर्न को टेनिस, गोल्फ या ताश आदि खेल कभी पसन्द नहीं थे लेकिन उनकी भी अपनी एक बड़ी हॉबी थी। वे किताबों के बड़े-बड़े नीलामों में जाकर दुर्लभ पुस्तकों को एकत्रित करते थे। केवल एक अप्राप्य खण्ड के लिये कभी-कभी वे पन्द्रह से बीस हजार डालर तक खर्च कर देते थे। विशेष बात यह थी कि वे उसे पढ़ते थे। १९२९ में जब उनके वैभव के दिन समाप्त हुये, उन दिनों तक उन्होंने एक बहुत बड़ा संग्रह तैयार कर लिया था। उन सभी को उन्होंने नीलाम पर रखा। नीलाम कई दिनों तक चलता रहा, बहुत से ऐसे खरीदार नीलाम में आये जो मिस्टर कर्न को एक भोला ग्राहक समझते थे जब कभी वे उनकी दूकान पर जाते थे। कदाचित उनकी राय पुस्तक खरीदने के बारे में भी वैसी ही थी जैसी उसे पियानो फैक्टरी के मालिक और उनके पिता की राय थी जिसके यहाँ स्कूल से निकलने के बाद वे पियानो खरीदने गये थे। लेकिन जब नीलाम समाप्त हुआ तो संगीतकार को इससे लगभग दस लाख डालर का लाभ हुआ।

इसके अतिरिक्त उसे उन पुस्तकों को इतने दिनों तक अपने पास रखने का सुख भी मिला। अपनी दुर्लभ पुस्तकों की तरह उन्होंने अपनी पसन्द का परिचय दिया।

[जेरोम डेविड कर्न २७ जनवरी, १८८५ को न्यूयार्क शहर में पैदा हुये और ११ नवम्बर १९४५ को उनका वहीं निधन हुआ।]

जार्ज जर्शविन

"मैं प्रायः शोर में भी संगीत सुनता हूँ।"

यह उस समय की बात है जब अमरीकी आविष्कार अमरीकी जीवन को गति प्रदान कर रहे थे, और लोग अपने सुदूर बैठे मित्रों से टेलीफोन द्वारा बात करने की आशा कर रहे थे, उस समय रूस के नगर सेन्ट पीटर्सबर्ग से एक लड़की आकर न्यूयार्क में रहने लगी। उसका नाम रोज ब्रसकिन था। इसके कुछ समय बाद रूस के उसी शहर से एक युवक यहूदी जर्शविन भी न्यूयार्क में पहुँचा जहाँ गैस की बजाय सड़कों की बत्तियाँ बिजली से आलोकित होने वाली थीं। इन दोनों का विवाह हो गया। उस समय रोज की आयु सोलह वर्ष थी।

समय बीता और उनके चार बच्चे हुये। सबसे बड़े लड़के का नाम इसाडोर था जिसे इरा के नाम पुकारा जाता था। उसके दो वर्ष बाद एक दूसरा बच्चा हुआ जिसका नाम जेकोब था। इरा पूर्वी भाग में पैदा हुआ था लेकिन जेकोब का जन्म ब्रुकलियन में हुआ था। उसका नाम बाद में जार्ज पड़ गया। ब्रुकलियन नदी के पार स्थित था। जर्शविन के पिता ने उन वर्षों में कई काम शुरू किये और वह अपने परिवार के साथ कई बार इधर-उधर गये। वे न्यूयार्क में फिर वापिस आ गये जबकि जार्ज कुछ ही वर्षों का था। लेकिन जहाँ कहीं भी वे सपरिवार रहे, न्यूयार्क के सड़कों के किनारे के पैदल-मार्ग उन भाइयों के लिये खेल के स्थान थे।

जार्ज परिवार के सदस्य जहाँ रहते थे, उस स्थान के पड़ोस में जार्ज रोलर-स्केट का चेम्पियन हो गया। वह खिलाड़ी था और उसे खेल पसन्द थे। वह सदैव प्रसन्न चित्त रहता था। "शहर का बालक" होने पर भी वह यह कभी नहीं जान पाया कि अन्य व्यक्तियों की अवहेलना कैसे की जाय। वह अकेला नहीं चलता था और उसके साथ सदैव अन्य खिलाड़ी रहा करते थे। वह पब्लिक

स्कूल जाया करता था लेकिन उसके लिये अध्ययन करना एक जंजाल था। उसने पढ़ने की कभी चिन्ता नहीं की सिवाय इसके कि वह कभी-कभी परियों की कहानियाँ पढ़ लेता था। वह समझता था कि इरा पढ़ने के लिये है और इरा को रोमांचकारी साहित्य अच्छा लगता था। जब तक संगीत में कोई विशेष बात न हो तब तक संगीत का कोई अर्थ नहीं होता। उसके पिता ने सोचा कि जार्ज शायद आवारा बन जायेगा।

उन्होंने पब्लिक स्कूल २० में **ऐनी लारी** और **लाक लामण्ड** जैसे पुराने अच्छे गीत गाये। जार्ज को **लाक लामण्ड** और सर आर्थर सुलीवेन का **द लास्ट कॉर्ड** पसन्द आया लेकिन उसे संगीत का तनिक भी ज्ञान न था। उसने ट्रेनों के शोर को दबाने वाले बेतुके उच्च-स्वरों के गीत सुने थे जिन्हें हर्डी-गुर्डी (सारंगी की भांति एक बाजे) पर गाया जाता था, उसने सड़क पर गाने वाले या फिडिल बजाने वाले के गीत सुने थे जो रास्ते में आने-जाने वाले लोगों के शोर को दबाकर गाते हैं, उसने कोनी आइलैण्ड में मेरीगो राउंड से कृत्रिम संगीत सुना था और हंकी टांक के रैगटाइम सुने थे। यदि कोई लड़का पियानो या वायलिन सीखता तो जार्ज उसको "लिटिल मेगी" कहकर पुकार उठता। जार्ज ने सोचा कि 'सिसी' बनकर ही क्या लाभ है। उसके ऐसे मानने का कारण यह था कि वह संगीत से बिलकुल ही अपरिचित था और वह किसी भी संगीतज्ञ या किसी अन्य व्यक्ति से परिचित नही था जिससे कि वह उदार बन सके। यह याद रखना बहुत बड़ी बात है कि ऐसी भूलों के प्रति हम सदैव सतर्क रहें जो हमारे जीवन में हो जाती है। लेकिन हम प्रायः ऐसी बातों के प्रति सजग नहीं हो पाते जब तक कि हम बूढ़े न हो जायँ। जो जल्दी यह महसूस कर उठते हैं कि अधिक व्यक्तियों और चीजों में रुचियाँ बढ़ा लेने से जीवन में विशेष आनन्द मिलता है, वे प्रायः वही व्यक्ति होते हैं जिनको अपेक्षाकृत अधिक अवसर मिल जाते हैं। जार्ज जर्शविन बचपन में कुछ भी न सीख सका लेकिन बाद में उसने बहुत कुछ सीखा।

उन दिनों में बहुत से लोगों को संगीत के बारे में कुछ भी ज्ञान न हो पाया। लेकिन दूसरों को पियानो खरीदता हुआ देखकर वे एक पियानो जरूर

खरीदते थे। शायद आप भी यह जानते हैं कि कुछ लड़के या लड़कियाँ संगीत की शिक्षा इसलिये प्राप्त करते हैं कि उनके मित्र जैक या नैन्सी ने संगीत की शिक्षा ली है, और इसलिये वे संगीत की शिक्षा से वंचित नहीं होना चाहते। यह कितनी विचित्र बात है कि बहुत से व्यक्ति वैसा ही बनना चाहते हैं जैसे कि दूसरे व्यक्ति होते हैं। वास्तव में कुछ ही लोग स्वतंत्र विचार के होते हैं जो अपना अलग व्यक्तित्व बनाना चाहते हैं। जर्शविन परिवार के सदस्य भी अपने रिश्तेदारों की देखा-देखी एक पियानो खरीद लाये। यह तय हुआ कि इरा पियानो सीखेगा।

इरा ने पियानो सीखना शुरू किया लेकिन वह अधिक समय तक न सीख सका। इसके बजाय उसने पढ़ना पसन्द किया। उसने धुलाई घर के पीछे ब्रूम स्ट्रीट में एक सर्कुलेटिंग लाइब्रेरी (पुस्तकालय) ढूंढली। उस पुस्तकालय से प्रति सप्ताह २५ सेंट देकर साहसिक घटनाओं से सम्बन्धित उपन्यास मिल जाते थे। वह **लिबर्टी ब्वायज आफ '७६, प्लक एण्ड लक** और पश्चिमी जंगलों की कहानियाँ पढ़ने में डूबा रहता था। कभी-कभी उसने एक सप्ताह में दस या इससे अधिक भी हल्की-फुल्की रोमांचकारी कहानियों की पुस्तक पढ़ी। उसने कई ऐसी पुस्तकें पढ़ी जिन्हें उसे नहीं पढ़ना चाहिये थे। मना की गई पुस्तकों को पढ़ते समय अपने माता-पिता के आने की आहट को सुनने पर वह उन्हें कालीन के नीचे या दीवार पर टंगी किसी पारिवारिक तसवीर के पीछे तुरन्त छिपाने की कला भी सीख चुका था। नये पियानो के हाथी दाँत की खूंटियों के साथ खिलवाड़ करने की अपेक्षा उसे अपना यह अध्ययन कहीं अधिक उत्तेजक लगता था। जो कुछ भी हो, उसे यह जल्दी पता लग गया कि उसको पियानो बजाने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा क्योंकि इसके लिये अब एक दूसरा आदमी आ गया था। लोग उसकी तरफ से बेपरवाह हो गये थे। अब पियानो बजाने के लिये बैठने वाला उसका भाई जार्ज था।

जार्ज को पियानो ने बहुत आकर्षित किया। वही बालक जो 'छोटा मैगी' नहीं बनना चाहता था, तेरह वर्ष की आयु में पियानो सीखने के लिये एक अध्यापक की माँग करने लगा। वह अपने खोये समय को पूरा करने के लिये

ऐसा जुटकर पढ़ाई करने लगा कि अपनी निर्देशिकाओं को चाट डालता था। स्कूल की एक घटना ने जार्ज को बिलकुल बदल दिया।

किसी उत्सव में उसी स्कूल के एक रूमानियन बालक ने वायलिन बजाया। जार्ज ने हाल में जाने की परवाह नहीं की। वह बाहर ही रहा। मैक्सी रोज़ेन्जविग जो अब वायलिनस्ट मैक्सरोजन के नाम से प्रसिद्ध है, जार्ज से एक साल छोटा था और बहुत अच्छा वायलिन बजा लेता था। ड्वोरक्स ह्यमरेस्क की स्वर लहरियाँ हाल से निकल कर सीढ़ियों के नीचे तक पहुँच रहीं थीं और अनायास जार्ज उस मधुर संगीत की ओर उसी तरह खिंचा जा रहा था जैसे बत्तख पानी की ओर।

उसने बाद में कहा, "वह एक सौंदर्य की कौंधती हुई झलक थी। मैंने निश्चय किया कि मैं उन महोदय से परिचय करूंगा और मैं उनसे मिलने की आशा में, दोपहर में तीन से साढ़े चार बजे तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा। मूलसाधार वर्षा हो रही थी और मैं बुरी तरह भीग चुका था।"

वह युवक वायलनिस्ट नहीं दिखाई पड़ा और जब वह उससे मिलने के लिये स्कूल वापस गया तो वह जा चुका था। उसने मैक्स के घर का पता लगाया और पानी में तरबतर वह उसके पीछे चल पड़ा। पर उसका दुर्भाग्य ही रहा कि उसे मैक्स घर पर नहीं मिला। लेकिन मैक्स के माता-पिता ने भीगे हुए जार्ज को उत्सुकता से आल्हादित हो, उन दोनों की मुलाकात करवाई और शीघ्र ही दोनों जिगरी दोस्त हो गये। हाथ में हाथ डालकर वे साथ घूमने जाते थे। शनिवार और रविवार को एक दूसरे को पत्र लिखा करते थे।

जार्ज ने कहा 'मैक्स ने मेरे लिये संगीत-सृष्टि का घूंघट खोला। जब हम ताश भी खेलते थे यानी जब हम कुश्ती नहीं लड़ते थे तो चर्चा चिरंतन संगीत की ही होती थी।'

नये मित्र का विचार था कि जार्ज संगीत केरियर के लिये नहीं हैं और उसने जार्ज से कहा, "तुम मेरा विश्वास करो, जार्ज, मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम में संगीत की प्रतिभा नहीं है।"

लेकिन अब जार्ज जर्शविन को संगीत का अर्थ विदित होने लगा और वह

संगीत को ही सब कुछ समझने लगा था। वह संगीत को प्रमुखता देने लगा अपनी सर्व शक्ति से उसने संगीत सीखना प्रारंभ कर दिया। उसने थोड़े-थोड़े समय के लिये कई अध्यापक रखे. वह एक के बाद दूसरा अध्यापक बदलता रहा था और आखिरकार उसे एक उपयुक्त अध्यापक मिला। वह अध्यापक ऐसा था जिसने उसके जीवन को अधिक प्रभावित किया।

एक ही अध्यापक सभी के लिये उपयुक्त अध्यापक नहीं होता है। सभी छात्र एक से नहीं होते हैं। वैयक्तिक प्रवृत्तियों और योग्यताओं में भी अन्तर होता है। किसी छात्र को पढ़ाने के लिये क्या-क्या आवश्यकताएं होंगी, इस दृष्टि से ही केवल अन्तर नहीं होता है, बल्कि इस दृष्टि से भी अन्तर लगता है कि उसके साथ किस प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता है। यही बात मित्रों के साथ भी है। टॉम को डिक अच्छा लगता है और वह हेरी को भी पसन्द करता है लेकिन डिक और हेरी आपस में मित्र नहीं हो सकते।

जार्ज जर्शविन को चार्ल्स हैम्बिट्जर में एक आदर्श अध्यापक मिले। हैम्बिट्ज़र भी जार्ज जर्शविन को अपने अनुकूल छात्र समझते थे। वह उसको प्रतिभावान मानते थे। उन्होंने कहा :

"जर्शविन को संगीत की झक है और वह उस समय तक अधीर रहता है जब तक कि वह संगीत का पाठ पढ़ना न प्रारंभ कर दे। वह घड़ी की ओर बारबार नहीं देखता है। वह आधुनिक संगीत तथा जाज को सीखना चाहता है लेकिन मैं उसको ऐसा संगीत सीखने के लिये कुछ भी समय नहीं दूंगा। मेरी इच्छा है कि उसकी सबसे पहिले स्टैंडर्ड संगीत मे ठोस बुनियाद पड़ जाय।'

और जार्ज ने बाद में कहा, "मैं उस व्यक्ति को बहुत चाहता था। मैं बाहर गया.....और मैंने साथ के लिये दस छात्रों को इकट्ठा कर लिया। मैंने हेम्बिट्जर के सम्पर्क में चापिन, लीज़ और डे बसी सर्वप्रथम परिचय प्राप्त किया। मेरे अध्यापक ने मुझे लय (हारमोनी) के प्रति सजग बना दिया था।"

मिस्टर हेम्बिट्जर ने जार्ज को संगीत सिखाकर लय-ताल का ज्ञान करा दिया और उसे लय-ताल के सिद्धान्त को अलग से नहीं सिखाया। वे जर्शविन

को पियानो-वादक बनाना चाहते थे। वे एक ओरकेस्ट्रा में पियानो-वादक थे। उनके प्रपितामह रूस के जार बादशाह के दरबार में वायलिन वादक थे। हेम्बिट्जर युवावस्था में चल बसे, जार्ज ने यह महसूस किया कि उसे फिर कभी कोई ऐसा अध्यापक न मिल सकेगा जो उसके लिये इतना अच्छा हो। और उसे फिर वैसा अध्यापक न मिला। उसने बाद में अन्य पियानो-वादकों से भी पियानो बजाना सीखा और रूबिन गोल्ड मार्क से 'हार्मोनी' का ज्ञान अर्जित किया। मिस्टर हेम्बिट्ज़र ने उसे जो कुछ ज्ञान दिया था, उसके अतिरिक्त उसने अपने परिश्रम और अभ्यास से ही सब कुछ सीखा। उसने न्यूयार्क के कई कंसर्ट हॉल में अपनी शिक्षा पूरी की।

उसने अपने बचपन में इर्विंग बर्लिन और जेरोम कर्न को अपना आदर्श माना था। जब वह चौदह वर्ष का था, उसने पहिला गीत लिखा। वह टैंगो गीत था और उसने उसका कोई नाम नहीं दिया। उसका प्रथम गीत: **सिंस आई फाउंड यू** था। उनमें से कोई भी प्रकाशित नहीं हुआ।

जब वह पन्द्रह वर्ष का हो गया तब वह यथासंभव सभी कंसर्ट में जाने लगा। उसने लिखा है कि वह केवल अपने कानों से ही संगीत नहीं सुनता था बल्कि अपने तन, मन और हृदय से दत्त-चित्त होकर सुना करता था। वह संगीत से रस-सिक्त हो चुका था और जैसे स्पंज पानी को सोख लेता है, उसी प्रकार वह संगीत को आत्मसात कर लेता था। उसके बाद उसने यह भी लिखा है, "मैं अपने घर पर जाकर उस संगीत को अपनी स्मृति में सुना करता था। मैं पियानो पर बैठ जाता था और उन **मोटिफ** को बजाया करता था।"

जर्शविन ने अपने ग्रामर-स्कूल का डिप्लोमा प्राप्त किया और उसने हाई स्कूल ऑफ कामर्स में अपना दाखिला कराया लेकिन उसकी उसमें रुचि न थी। उसने कभी पढ़ना पसन्द नहीं किया और वह पढ़ने में आनन्द भी नहीं ले पाता था। जब वह बड़ा हो गया, जर्शविन ने अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया लेकिन यह अध्ययन कभी-कभी होता था। यदि उसे संगीत रचना के लिये कोई आर्डर मिलता और उसे उस विषय में कुछ भी न आता तो वह उसे सीखने के लिये बहुत परिश्रम करता था।

जार्ज सोलह वर्ष का हो गया। वह काम करने लगा किन्तु उसका काम में मन नहीं लगता था। यह जीवन उसके स्कूल के जीवन से भी बदतर था। लेकिन उसे एक सप्ताह में पन्द्रह डालर मिलने लगे थे जिसके कारण वह अपने को महत्वपूर्ण समझ रहा था और यह महसूस करता था कि अब वह बड़ा हो गया है और जब वह 'रेमिक म्यूज़िक पब्लिशिंग फर्म' में 'प्लगर' के रूप में काम करने लगा तब उसे महसूस होने लगा कि वह कुछ प्राप्त कर रहा है और आखिरकार टिन पैन ऐली के जाज़ी मार्ग में कुछ आगे बढ़ रहा है।

उसे महान संगीतकारों की जीवन-कहानियों के अध्ययन से यह विदित हुआ कि उन संगीतकारों के समय में लोगों के लिये उनका संगीत नवीन और विचित्र था लेकिन कई वर्षो तक उसकी प्रशंसा न की जा सकी; आपको यह विदित ही है कि महान संगीत केवल परिचित हो जाने पर ही स्वीकार किया जाता है। यदि आप संगीत को अधिक सुनें तो आप उसे अधिक पसन्द करेंगे। यदि आप संगीत के बारे में कुछ भी जानते हैं तो आप गीत को गुनगुना उठेंगे अथवा सीटी बजा उठेंगे। यह शायद इसलिये है कि आपको वह संगीत पहिले से ही प्रिय है। कई महत्वपूर्ण रचनाएँ बनाने में कठिन होती हैं क्योंकि तकनीकी ढंग से उनकी अपनी कठिनाइयाँ हैं अथवा उनके अर्थ लगाने के अलग-अलग तरीके हैं या वाद्य-यंत्रों की माँग बढ़ती जाती है (यदि रचना ओरकेस्ट्रा के लिये हुई) इसलिये पहिले पहल उन रचनाओं को प्रायः बजाना कठिन हो जाता है। आज रिकर्ड और रेडियो की सुविधाएँ हैं। ये सुविधायें हमारे पूर्वजों को नहीं थीं इसलिये हम नवीन संगीत से भली-भाँति परिचित हो जाते हैं। पुराने समय में ऐसे संगीतकारों की कहानियाँ भी हैं जिनकी कृतियों को लोग बहुत कम जान पाते थे और जिन्हें आदर भी नहीं मिल पाता था और वे इस संसार से उठ जाते थे।'

यह बात समझने में बहुत कठिन नहीं है क्योंकि आज भी बहुत से व्यक्ति यह नहीं सोचना चाहते कि वे अपने मनोविनोद के लिये क्या करें। वे सिनेमा जाना पसन्द करेंगे और संग्रहालय न जायेंगे क्योंकि सिनेमा में उन्हें बिना कुछ सोचे-समझे अपने मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं किन्तु संग्रहालय में ऐसा नहीं

है। वे वहाँ आराम से बैठ सकते हैं, आराम कर सकते हैं और मनोरंजन कर सकते हैं। संग्रहालय में कला या विज्ञान की वस्तुएँ एकत्र की जाती हैं और उन्हें देखकर बरबस विचार करना आवश्यक है।

लेकिन यह बात सोचने में भी आनन्द प्रिय है कि रैगटाइम जैसा विनोदी संगीत और लोकप्रिय गीतों को बार-बार इसलिये दोहराया जाता था कि वे अधिक परिचित हो जायें। अब इस कार्य को रेडियो, सिनेमा या विज्ञापन करने वाली कम्पनियाँ पूरा करती हैं लेकिन जर्शविन के बचपन के दिनों में केवल 'प्लगर' ही इस काम को करता था जो स्वयं संगीत का विक्रेता होता था। टिन पैन एली में संगीत प्रकाशकों के कार्यालय के "व्यावसायिक वार्तालाप कक्ष" खूब सजाये जाते थे (ऐसे मामूली स्थानों के वर्णन के लिये 'सज्जित' शब्द का उपयोग किया गया है।) और उनके कक्षों की विशेष सजधज होती थी तथा उन्हें अधिक रोचक नाम दिये जाते थे। इन छोटे कक्षों में मुश्किल से एक बड़ा, भद्दा पियानो रखा जा सकता था जिसे अधिक प्रयोग में लाना कठिन सा था। उसमें अव्यवस्थित रूप से कई कमरे आसपास 'व्यावसायिक वार्तालाप कक्ष' के रूप में बने हुये थे जिनमें हर एक में एक पियानो था। और हर पियानो पर एक पियानो बजाने वाला दिन भर लगातार हर रोज़ फर्म के प्रकाशित गीतों को बजाया करता था। जर्शविन का यह काम था कि वह रेमिक प्रकाशनों के बारे में जाने और बराबर बजाता रहे। बगल के कमरे में भी पियानो बजाने वाला यही काम करता था और इस तरीके से सुबह से शाम तक शोरगुल मचा रहता था। गायक और अभिनेता अपने अभिनय के लिये नये गानों की तलाश में ब्रोडवे से आते रहते थे। एक मसखरे को हँसी मजाक के गीत चाहिये, एक गायक को हृदय-स्पर्शी गीतों की तलाश होती थी, तो एक सुन्दरी को नये प्रेम गीत की खोज रहती थी। या एक छोटी सांवली नर्तकी को नृत्य के साथ के गीत की आवश्यकता होती थी और गीत-फरोश को इन सभी गीतों की जानकारी रखनी पड़ती थी।

बहुत से व्यंग गीतकार नोट तक नहीं पढ़ सकते थे और कई बार वायलिन बजाने वाले को बार-बार वही ध्वनि बजाकर सुनानी पड़ती थी जिससे वे

ध्वनियाँ उसके कानों में वस जायं और वह बाहर जाकर उन गीतों को गा सके। दोनों अर्थों में यह एक 'रेकिट' था।

लेकिन वाह री विचित्र शिक्षा ! अनेक वार ग्राहक के लिये गीत का कोई टुकड़ा बहुत ऊँची या बहुत नीची स्वर की 'की' के अनुसार लिखा होता था और जार्ज उन्हें अलग-अलग की पर तुरन्त बजाने में सिद्धहस्त हो गया था। चूँकि वह आठ दस घंटे रोज पियानो बजाता था इसलिये उसके हाथ कभी रुकते नहीं थे। और यही सब नहीं था। शाम होने पर पियानो बजाने वालों के ये दल न्यूयार्क के कैफे में गीत और नृत्य के कलाकारों की सहायता के लिये भेजे जाते थे जो स्वयं नई-नई ध्वनियाँ पियानो पर बजाकर जनता को सुनाते थे। जार्ज के मुख से अनायास नोट फूट पड़ते थ और ऐसा समां बन जाता था कि वह किसी नृत्य के अनुरूप बराबर वाद्य-रचना कर रहा हो।

जनता की रुचि का पता लगाना एक सुन्दर अध्ययन था। जार्ज को यह दिखलाई पड़ने लगा कि पुरानी प्रकाशित की हुई रूटीन ध्वनियों के अलावा नई ध्वनियाँ निकालना लोग खतरनाक सा समझते हैं। वे इस बात से डरते थे कि कहीं बिल्कुल नई चीज से नुकसान न हो जाय। इसलिये वे उन पुरानी ध्वनियों को उन्हीं पुराने तरीके की मेलोडीज को उन्हीं पुराने भावों के अनुसार दोहराते थे। जार्ज ने यह देखा कि जो लोग कैफे में अपनी शाम बिताने आते हैं वे कुछ नई चीज़ चाहते हैं और वे संगीत में डूबकर आनन्द उठाना चाहते हैं। वास्तव में 'पेप' शब्द उस समय प्रयोग में आने लगा था। धीरे-धीरे जार्ज को प्लगर (पियानो बजाने वाले) के कैदी जैसे जीवन से असंतोष होने लगा। ऐसी परिस्थितियों में उसका विकास हुआ जिससे उसमें आत्म विश्वास आ गया और वह प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के लिये जागरूक हो गया। यह ऐसा स्थान नहीं था कि जहाँ वह संवेदनशील होकर काम छोड़ बैठता। टिन पैन ऐली में परिश्रम के साथ काम करने से ही सफलता मिल सकती थी और उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ गई।

जब जार्ज ने अपनी कुछ नई ध्वनियाँ चलाई तो शुरू में उसके मालिकों ने इसके लिये आज्ञा नहीं दी। उसने उन्हें भविष्य के लिये रख छोड़ा।

कदाचित अचेतन अवस्था में वायलिन बजाने वाला लड़का जर्शविन अपने इस नीरस वातावरण के बीच ऐसे स्वच्छ और उन्मुक्त वातावरण की प्रतीक्षा में था और उस ओर बढ़ना चाहता था। उसने एक बहुत महत्वपूर्ण विधा का विकास किया, वह थी—अपने गीत की स्वयं समालोचना करना। उसने अपने बनाये हुए गीतों को ही फेंक दिया जिसे उसने अपनी पहिली बड़ी सफलता के लिये आवश्यक नहीं समझा। साथ ही उसने अपने प्रचलित संगीत को विकसित करने के लिये आलोचनात्मक प्रवृत्ति भी पैदा की।

ट्यून लिखने वाले धन कमा रहे थे, ऐसा ही वे भी कर रहे थे जो गीत लिखते थे। यद्यपि इसमें से कुछ ट्यून बनाने वाले इतने नौसिखिये थे कि वे पियानो को एक अंगुली से बजाते थे और कुछ गीतकार ऐसे भी थे जो व्याकरण तक नहीं जानते थे। गीतों में जगह-जगह पर 'एण्ट्स' और 'गोट्टाज' घुले मिले रहते थे और उनमें ऐसी ही अन्य अरुचिकर बातें होती थीं। लेकिन जर्शविन एक ऐसा संगीतकार था जो सदैव अधिक सीखने के लिये लालायित रहता था। उसकी इच्छा थी कि जो कुछ भी वह जानता था, उससे अधिक सीखे। 'टिन पेन ऐले' में इस जगह पर वह औरों से आगे रहा उसने पहिले ही अच्छी तरह पियानो बजाना सीख लिया था। एक अंगुली से पियानो बजाने वाली बात उसके साथ नहीं थी।

जब वह किसी होटल में शादी में शरीक था, उस समय जेरोम कर्न की '**आई एम हियर एण्ड यू आर हियर** और **दे विल नेवर बिलीव मी** आदि गीतों पर वाद्य-वादन हो रहा था। इन गीतों की मधुर ध्वनियों ने जार्ज को पूरी तरह से जीत लिया और वह उस दल के नायक के पास यह जानने के लिये भागा गया कि आखिर यह क्या है? उसने यह निश्चय किया कि वह कर्न के गीतों को सीखेगा और उस तरह उन्हें रचने की कोशिश करेगा। तब कुछ समय तक जर्शविन का संगीत कर्न के संगीत के समान लगता था। वह अंधेरे में अपना रास्ता ढूंढ़ रहा था और आगे बढ़ रहा था।

अन्त में जर्शविन की भेंट उसके आदर्श गीतकार इर्विंग बर्लिन से हुई जब उसने **ऐलेक्जेंडर का "रैगटाइम बैण्ड"** सुना तो उसे लगा कि यह कुछ वैसा

ही है जैसा वह स्वयं करना चाहता है। उसने अपने कुछ गीतों को मिस्टर बर्लिन के लिये रचकर सुनाया और उत्साह पाकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। एक अंगुली से पियानो बजाने वाले सर्वोत्कृष्ट गीतकार ल्युस म्यूर ने भी उसके उत्साह को बढ़ाया। उन्होंने **'वेटिंग फार दि राबर्ट ई० ली'** और **'प्ले देट बारबर शाप कार्ड'** गीत लिखे थे।

पियानो पर गीत बजाने के अनुभव ने जर्शविन की आकांक्षाओं को बदल दिया। वह महज़ एक पियानो-वादक के स्थान पर गीतकार होने की तैयारी करने लगा। रेमिक के पास दो वर्ष रहकर वह चला गया। जब वह अठारह वर्ष का था तो उसका पहिला गीत—**व्हेन यू वाण्ट एम, यू काण्ट गेट एम, व्हेन यू हैव गोट एम, यू डू नाट वाण्ट एम**—शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इन सबके लिये जर्शविन को कुल पाँच डालर मिले थे। जबकि जिस कलाकार ने उस गीत की रचना की, उसको अपने परिश्रम से अधिक लाभ हुआ था।

'मिस १९१७' के उत्सव के रिहर्सल के पियानो-वादक के रूप में जार्ज ने काम किया। इसका संगीत विक्टर हर्बर्ट और जेरोम कर्न ने लिखा था। इसके बाद चौदहवीं स्ट्रीट के व्यंग नाटकों के थियेटर में उसने पियानो-वादक की जगह के लिये आवेदन पत्र दिया था।

यहाँ पर उसको एक अत्यन्त अजीब सा अनुभव हुआ। आलोचनात्मक व्यंग नाट्य की प्रति में एक अंक में विशेष संगीत की रचना की जिसकी शब्दावली से वह अपरिचित था। पहिले ही प्रदर्शन में कई अंक सफलता पूर्वक खेले जाने के बाद जर्शविन ने आलोचनात्मक व्यंग संगीत के प्रारंभिक कोरस को खेलना शुरू किया लेकिन जब कोरस बालिका ने गाना आरंभ किया तो उसे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि जो कुछ भी गाया जा रहा है, वह वाद्य-यंत्रों से बिल्कुल बेसुरा है। उसे लगा कि वह कुछ मुख्य बातें भूल गया है। सबसे बड़ी गड़बड़ी उस समय हुई जब वह स्वयं इस बात से लजा रहा था कि उसके कुछ दोस्त और परिवार के लोग दर्शकों में बैठे होंगे कि विदूषक ने मंच पर आकर इस नये पियानोवादक के ऊपर और व्यंग करना शुरू किया। उसने हिकारत की नज़र से जार्ज की ओर देखा और कहा कि तुम्ह

किसने बताया कि तुम्हें पियानो बजाना आता है। तुम्हें तो ड्रम बजाना चाहिये।

कुछ समय के लिये वह एक गायक के साथ व्यंग संगीत के प्रदर्शन के लिये बाहर गया। जब वह लौटा तो उसे एक मौका फिर मिला। 'हार्म्स म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस' के अध्यक्ष मिस्टर ड्रेफ्स (जिन्होंने जेरोम कर्न का पता लगाया था) ने जार्ज से कहा :

"मुझे लगता है कि तुम्हारे अन्दर कुछ अच्छे गुण हैं। ये गुण उभरेंगे। यह भी हो सकता है कि इसमें महीनों लग जायें, एक वर्ष लगे। यह भी हो सकता है कि इसमें पाँच वर्ष बीत जायँ। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं क्या करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे ऊपर जुआ खेलूंगा। मैं तुम्हें बिना किसी निश्चित कार्य के ३५ डालर प्रति सप्ताह दूंगा। केवल हर सुबह आने के लिये, मात्र हेलो कहने के लिये—बाकी धीरे-धीरे होता रहेगा।"

एक किशोर के लिये सफलता पाना आश्चर्यजनक था। वह किशोर जानता था कि कैसे काम किया जाय और किस प्रकार समय का उपयोग किया जाय। उसे केवल अपने विचारों को व्यक्त करने के लिये और लिखने के लिये समय की आवश्यकता थी। शीघ्र ही कुछ ऐसा हुआ कि वह प्रसिद्ध हो गया। प्रसिद्ध और धनी केवल एक रात में। उसे बिल बोर्ड पर यह सूचना देखने का अवसर मिला कि एक खेल होने वाला है जिसका संगीत जार्ज जर्शविन ने दिया है। जब बोस्टन और न्यूयार्क में **लाला ल्यूसीले** खेला गया तो लोगों ने प्रसन्नता से इसका स्वागत किया लेकिन यह वह अवसर नहीं था जिसने उसे यकायक प्रसिद्धि दी।

जर्शविन ने एक गीत-**स्वानी**-लिखा। यद्यपि उस गीत की अधिक चर्चा नहीं हुई फिर भी लोगों ने उसे गाया और कुछ महीनों बाद कलूटे विदूषक एल जोलसन ने जब उसे सुना तो उसने उसे पसन्द किया और अपने खेल **सिनबैड** में गाया। जोलसन रूस में पैदा हुआ था और उसने अपने गोरे रूप में ही इस देश में पहिले पहल अभिनय किया था और बाद में जले हुए कार्क

से जब उसने चेहरे को काला कर लिया तो 'हब्शी गायक' और मजाकिया आदमी की तरह वह भी प्रसिद्ध हो गया। उसके बाद उसने सदैव अपना चेहरा काला रखकर ही अभिनय किया। जर्शविन का **स्वानी** गीत उसने गाया और इस गीत को जनता ने पसन्द किया। चारों ओर इस गीत की धूम हो गई। यह गीत लंदन में गाया गया। वहाँ भी उसकी धूम रही। जर्शविन को सिद्धि मिल गई।

फिर भी जार्ज पियानो के लिये संगीत-रचना के विचार ने अभिभूत रहा। उसको हमेशा यह लगता था कि संगीत में कुछ ऐसा है जिससे वह पूर्णतया अपरिचित है। उसके अन्दर वह इच्छा और शक्ति मौजूद है कि वह उसका पता लगा सके। अपनी पहिली सफलता के बाद वह लगातार अध्ययन करता रहा और बड़े होने के बाद भी इतने अधिक अध्यापकों से सीखा जैसे कि उसने पहिले बहुतेरे अध्यापकों से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। वह सदा प्रत्येक संभव अवसर को उपयोग करने के लिये तैयार रहता था और जब उसे पियानो पर रचना करने का निमंत्रण मिला, तो वह तुरंत अपने काम में लग गया। गीत एक के बाद एक रचे जाते रहे। प्रदर्शनों में 'जर्शविन द्वारा म्यूज़िक' लोगों के लिये एक आकर्षण हो गया। उसने मेलोडिक भावनात्मक ट्यूनें बनाई जिनमें से कुछ लिखने के वर्षों बाद तक प्रचलित नहीं हो पाई। लेकिन साथ ही **आई' ल बिल्ड ए स्टेयरवे टू पैराडाइज़** जैसे प्रसिद्ध जाजी नृत्य-गीत भी लिखे इसके लिये उसे तीन हज़ार डालर मिला जबकि पहिले गीत के लिये कुछ वर्ष पहिले उसे पांच डालर ही मिले थे। यह प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के आसपास की बात है जब रैगटाइम जाज में परिवर्तित हो रहा था और जर्शविन अमरीका और लंदन दोनों जगह अधिक-से-अधिक खेला जाता था और यह आभास देता था कि यह 'टिन पैन ऐले' से कुछ भिन्न है।

एक साधारण आदमी में वह उत्सुकता और जानने की इच्छा नहीं होती जिसकी वजह से वह कभी यह देखने या समझने में समर्थ नहीं हो पाता कि कौन सी चीज़ साधारण से भिन्न है। एक प्रतिभा सम्पन्न आदमी अपनी शक्ति से अपनी प्रतिभा को विकसित कर नई वस्तु को खोज लेता है ये वे

लोग है जो नया रास्ता दिखाते हैं और साधारण आदमियों का ध्यान न केवल कला और सांस्कृतिक विकास के कार्य की ओर आकर्षित करते हैं वरन् ध्यान देने लायक कुछ नई चीज भी सुझाते हैं।

जब जार्ज जर्शविन पच्चीस वर्ष का था तो एक सुन्दर गायिका और प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार इवा गॉथियर ने एक आश्चर्यजनक कार्यक्रम 'एयोलियन हाल' में प्रस्तुत किया। यह हॉल न्यूयार्क के कंसर्ट हाल में से एक था जहाँ सुन्दर-से-सुन्दर संगीत सुना जा सकता था। इस कलाकार का यह साहस था कि वह 'टिन पैन ऐली' के शास्त्रीय संगीत और योरुप के आधुनिक कलाकारों के गीतों के नमूने प्रस्तुत करे। यह कुछ इस प्रकार था कि सिण्ड्रिला को बाल (नृत्य) के लिये आमंत्रित करना और प्रश्न कुछ ऐसे थे : "उसने कैसा बर्ताव किया ? उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाय ? मिस गॉथियर ने इर्विंग बर्लिन और जेरोम कर्न के एक-एक गीत और जार्ज जर्शविन के तीन गीत गाये। इस अभूतपूर्व प्रोग्राम की घोषणा ने इस विशेष वर्ग के दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। मध्यवर्ग के संगीत-प्रेमी नहीं आये। दर्शकों में उच्च और निम्न-कोटि के संगीत प्रेमी थे—एक ओर विचारक थे तो दूसरी ओर "घटिया संगीत-प्रेमी।"

किसी ने यह लिखा है कि सिन्ड्रेला ने बाल (नृत्य) में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। वह अपने व्यवहार में सच्ची थी और ऐसा दिखावा नहीं करती थी कि वह जो कुछ नहीं है, वह है। उसने इतनी सुन्दरता से नृत्य किया जितनी भी उसकी क्षमता थी और उस शाम के अनुपम प्रदर्शन में ऐसा मन लगाया कि प्रिंस उसके प्रति मोहित हो गया और प्रिन्स ने अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उसे अपना प्रदर्शन देने के लिये फिर आमंत्रित किया गया। मिस गॉथियर को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने रसोई-घर के संगीत को बाल रूम के संगीत में बदल लिया। दर्शक गीतों की आत्मीयता, सच्चाई और व्यंगात्मकता से आल्हादित थे। वे गीत अच्छे समय के साथी थे। इन गीतों की आकर्षक रिद्म इतनी उम्दा थी कि इन्हें गाने के लिये बार-बार माँग की गई। ऐली के उस वायलिन वादक को मिस गॉथियर

के जाज़ गीतों के साथ वाद्य-वादन के लिये आग्रह किया गया, क्योंकि लोगों का यह विचार था कि वह उस प्रकार के संगीत के साथ वाद्य-वादन कर सकता है। पुराने संगीत हाल के रंगमंच से **इनोसेन्ट इन्जीनिवे, बेबी** और **हू इट अगेन** जैसे गीतों की ट्यून वायलिन के तारों पर झंकृत होने लगे। इस भव्य प्रदर्शन से सच्चे संगीत प्रेमियों के हृदय प्रसन्नता से पुलकित हो गये। और इसमें भी संदेह नहीं कि इस संगीत ने अन्दर कुछ श्रोताओं को क्षुब्ध कर दिया, लेकिन इससे घटिया संगीतकारों को प्रोत्साहन मिला।

जाज़ संगीत के सम्राट पाल व्हाइटमैन ने लगभग तीन महीने बाद एक कंसर्ट का आयोजन किया। उनकी यह इच्छा थी कि उसी संगीत के हाल में महान संगीतज्ञों और संगीत-आलोचकों के समक्ष अपने संगीत को जाज़ बैंड के साथ प्रस्तुत करें। वह उन लोगों की राय जानना चाहते थे कि उन्हें जाज़ संगीत कैसा लगता है, क्योंकि वे स्वयं जाज़ संगीत में विश्वास करते थे। उनके लिये यह संगीत नवीन संगीत था। यदि डैमरोश, हीफेट्ज, क्रिसलर, रैशमेनीनॉफ और अन्य संगीत आलोचक टिन पैन ऐली के कमरों तक इस संगीत को जानने के लिये न पहुँच सके तो व्हाइटमैन उन सभी को आमंत्रित करके जाज़ संगीत सुनाना चाहता था। इस कंसर्ट के अवसर पर उसकी यह इच्छा थी कि दर्शकों के समक्ष एक नई रचना प्रस्तुत की जाय। इस रचना के लिये किसे बुलायें। किस व्यक्ति से जाज़ संगीत की नवीनतम रचना मिल सकेगी? आखिर उसने जर्शविन से ही आग्रह किया।

जार्ज जर्शविन ने इस निवेदन को अस्वीकार कर दिया। वह उस समय बहुत व्यस्त था। मिस गॉथियर का कंसर्ट होने वाला था और जार्ज का सारा समय उस कंसर्ट में लग रहा था। उसे यह याद ही नहीं रहा कि व्हाइटमैन ने उससे संगीत रचना के लिए आग्रह किया है। जनवरी का प्रारम्भ था। वह समाचार-पत्र पढ़ रहा था उसमें यह था कि व्हाइटमैन एक सिम्फनी पर काम कर रहा है। उसके लिये एक नई खबर थी। वह खुद किसी सिम्फनी पर काम नहीं कर रहा था लेकिन इस समाचार ने उसे यह याद दिलाया कि मिस्टर व्हाइटमैन ने उसको नवीन रचना के लिए आमंत्रित किया था

और वह यह समाचार देखकर आश्चर्य चकित हो उठा। उसे महसूस होने लगा कि यह अच्छा होता कि वह व्हाइटमैन के आग्रह को न ठुकराता। शायद उसके जीवन के लिये यह अच्छा अवसर था। उसे आसानी से उस भव्य प्रदर्शन में अपने छोटे नियमित संगीतमय ब्लूज़ के प्रदर्शन का भी अवसर मिल जाना।

उसने इस बारे में जितना ही विचार किया, उतना ही वह विचार उसके मस्तिष्क में स्पष्ट आकृति बनकर उभर उठा। उस समय जाज़ संगीत के बारे में काफी चर्चा हुआ करती थी। लोग कहा करते थे कि जाज़ संगीत बहुत ही सीमित है और केवल नृत्य-रिद्म के लिये ही काम आ सकता है। उसे लगा कि शायद वह यह लिख सकता था कि यह बात निराधार है। उसने बाद में इस बात को व्यक्त किया कि रेपसोडी एक उद्देश्य लेकर प्रारम्भ हुई है, उसका उद्भव किसी प्लान के रूप में नहीं हुआ है।

जर्शविन को बोस्टन में एक नाटक के उद्घाटन के लिये आमंत्रित किया गया। उसने इस नाटक के संगीत की रचना की थी। वह जैसे ही जाने के लिये ट्रेन में बैठा, उसके मन में एक विचार आया कि एक महीने बाद एक कंसर्ट का आयोजन है जिसके लिये उसने एक नोट भी नहीं लिखा है। वह इस पर गम्भीर विचार कर रहा था और उसके विचारों में रेल के पहियों की अनवरत की धुन साथ दे रही थी। उसने बाद में लिखा।

'मुझे प्रायः शोरगुल में संगीत सुनाई देता है और मुझे ट्रेन में एकाएक संगीत सुनाई दिया, मैंने उसे कागज पर लिखा हुआ तक देखा। मुझे ऐसा लगा कि उस जोशीले (रेपसोडी) गान की पूरी रचना प्रारंभ से लेकर अन्त तक मेरे सामने प्रस्तुत है जिसे मैं अमरीका के विशाल संगीत के रंगमंच पर ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ। अमरीका का वह विशाल रंगमंच अपनी ऐसी संक्रान्त अवस्था में है जिसपर राष्ट्रीय पेप, ब्लूज और ट्यून से पागल बना देने वाले गीतों का पारस्परिक आदान-प्रदान हो रहा है। जैसे ही मैं बोस्टन पहुँचा, मुझे उस गीत की निश्चित **रूप-रेखा** समझ में आ गई और मेरे लिये यह गीत उस कल्पना से भिन्न था जो प्रारंभ में मुझे महसूस हुई थी।"

ज्यों-ज्यों उसने इसके बारे में सोचा, त्यों-त्यों इस विचार ने उसको अधिक

प्रसन्न किया। उसने इस गीत की रचना के लिये कुछ नृत्य की रिद्म उपयोग में लाई। चूँकि वह गीत जोश की भावना से ओत-प्रोत होता, इसलिये इस गीत के लिए समय और रूप में बाँधना उपयुक्त न था। यह गीत उसी तरह का था जैसे कि एक मिन्योट, वाल्ज या रोन्डो होता है। उसने महसूस किया कि इस गीत के सहारे वह अपने मन की बात सिद्ध कर लेगा।

उसके पास अब अधिक समय नहीं था। संगीत के बड़े पृष्ठ की पांडुलिपि कुछ ही क्षणों में तैयार नहीं की जा सकती। जर्शविन ने दो पियानो पर **रेपसोडी इन ब्ल्यु** के संगीत की रचना समाप्त ही की कि उस कार्यक्रम के व्यवस्थापक फर्डीग्राफे ने ओर्केस्ट्रा का प्रबन्ध किया जिसका कन्सर्ट में प्रदर्शन होने वाला था। अब इतना समय नहीं था कि पियानो के लिये पूरा का पूरा संगीत रचा जाय। विशेषकर कैडिन जाज के लिये इतनी शीघ्रता में संगीत की रचना करना सम्भव न था और जार्ज स्वयं ही उस कंसर्ट में पियानो-वादक था, इसलिये उसने इसकी अधिक चिन्ता भी नहीं की। उसने मिस्टर व्हाइटमेन को बार्स के नम्बर बता दिये और स्वयं इतना स्वतंत्र हो गया कि वह प्रदर्शन के अनुकूल पियानो-वाद्य प्रस्तुत करे। इस प्रकार के साहसिक कार्य से यह सिद्ध होता है कि जर्शविन में ध्यान केन्द्रित करने की अद्भुत शक्ति थी। सम्भवतः पियानो के स्टॉल पर वादक के रूप में उसने शोरगुल में सिर्फ मनन करना ही न सीखा था बल्कि पियानो बजाना भी सीखा था। इससे यह भी प्रगट होता है कि जब कभी वह पियानो के की बोर्ड पर बैठ जाता था तो सिद्ध वादक की तरह उसे कभी कोई घबराहट न होती थी।

कई लोगों को यह भी नहीं मालूम है कि एक कंसर्ट के प्रस्तुत करने में कितना परिश्रम करना पड़ता है। पियानो के छात्र प्रायः यह सोचते हैं कि उन्हें रंगमंच पर पहुँचकर वाद्य-वादन करना है और उन्हें वह सब धन मिल जायेगा जो दर्शकों को टिकट बेचकर इकट्ठा किया गया है। दुर्भाग्य से वस्तु-स्थिति इससे भिन्न है। कलाकार को अपने काम के अलावा, हाल का किराया देना पड़ता है और उसे हाल का प्रबन्ध करने वाले व्यक्तियों की फीस, रोशनी, टिकट और कार्यक्रम की छपाई तथा विज्ञापन के लिये व्यय करना पड़ता है।

इन सभी बातों पर बहुत खर्च होता है। मिस्टर व्हाइटमेन ने अपने कंसर्ट में सात हजार डालर व्यय किये। वह इसी कंसर्ट पर अपनी सारी आशायें केन्द्रित किये हुए थे। सारा हाल खचाखच भर गया था लेकिन उन्होंने सबसे अच्छी सीटें उन लोगों के लिये मुफ्त रक्खीं जिन्हें वे इस प्रदर्शन को दिखाना ही चाहते थे और उन्हें यह नहीं मालूम था कि वे अपने प्रयास में सफल होंगे या असफल। लेकिन, उन्हें उस प्रदर्शन में अभूतपूर्व सफलता मिली।

मिस्टर व्हाइटमेन इस प्रदर्शन के पूर्व अपने नये प्रयोग में रुचि लेने लगे थे। उन्होंने रिहर्सल के समय तीन संगीत आलोचकों को आमंत्रित किया। उन्होंने उन आलोचकों को यह समझाया कि वे जाज संगीत के कार्यक्रम मुझको शास्त्रीय संगीत में बदलकर प्रस्तुत करने का प्रोग्राम बना रहे हैं। उन्होंने उन आलोचकों का जर्शविन से परिचय कराया। जर्शविन ने जाज कंसर्ट के लिये ही संगीत रचना की थी और अब उसका प्रदर्शन करने के लिए लालायित थे। जैसे ही वे दोनों रंगमंच की ओर वढ़े कि दो आलोचकों ने आपस में काना-फूसी की।

यह जर्शविन कौन है......जी हाँ, यह जर्शविन कौन है ?

तीसरा आलोचक ब्राडवे में आयोजित कार्यक्रमों के बारे मे कुछ जानता था। ब्राडवे वहाँ से कुछ ब्लाक की दूरी पर था। उसने उन आलोचकों से यह कहा कि जर्शविन संगीत के रिव्यु और कामेडी के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय गीतों का रचयिता है। शायद उन दोनों आलोचकों की स्मृति का ही कुछ दोष हो, नहीं तो यह सच है कि तीन महीने पहले उन्होने गाँथियर के गाये हुए गीतों को सुना अवश्य था। यह एक केवल उदाहरण की बात है कि पियानो के सुरों का आरोह-अवरोह स्थिर करने वाला व्यक्त भी कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। फिर भी लोग उसे कितनी जल्दी भूल जाते हैं।

आलोचकों के सामने जब रेपसोडी खेला गया तो उनमें से दो बिल्कुल खो से गये। तीसरे ने अधिक चिन्ता नहीं की लेकिन उसने संगीत से प्रभावित होकर यह स्वीकार किया कि उसमें निश्चय रूप से 'ज़िप और पंच' है।

जब वह दिन आया जिसकी मिस्टर व्हाइटमैन ने इतनी योजना बनाई थी

तो उन्हें रंगमंच पर प्रदर्शन-संकोच होने लगा। यह इसलिये नहीं कि वे जाज़ बैण्ड का नेतृत्व कर रहे थे बल्कि उनके मन में उस संगीत के संबंध में अनायास आशंका हुई कि वह संगीत जिसे वह प्रस्तुत करने जा रहे हैं, सफल होगा या नहीं। वे दर्शकों से भयभीत हो उठे। वे ऐसे संगीत हाल में वाद्य-वादन करने के अभ्यस्त नहीं थे। वे मंच के सामने चारों ओर घूमकर आगन्तुक दर्शकों को देखने लगे। यद्यपि वे लोग भीषण हिमपात के बावजूद झुण्ड-के-झुण्ड में आ रहे थे फिर भी वह उत्साहित नहीं हुये। कला और शिक्षा के क्षेत्र में सुसंस्कृत लोग उस संगीत हाल को जाज़ की धुनों पर नाचते हुये देखने के लिये आये। क्या सचमुच वह प्रदर्शन इस योग्य था? उसने विक्टर हर्बर्ट को भीड़ में से आते हुये देखा।

जब वे लोग **रेपसोडी इन ब्लू** बजा रहे थे तो व्हाइटमैन ने बाद में कहा :—

"संगीत के बीच में मैं रोने लगा। जब मुझे होश आया तो मैं ग्यारह पृष्ठों तक साथ-साथ था और मैं आज तक यह नहीं बता सकता कि मैंने कैसे वह वाद्य-वादन पूरा किया। बाद में जार्ज ने मुझे बताया कि उसने भी ऐसा ही अनुभव किया था। वह मेरे साथ बजा रहा था और वह भी वैसे ही रो उठा था।"

हर एक आदमी यह जानता है कि ग्लिसेण्डो क्लेयरनेट के प्रादुर्भाव के साथ यकायक **रेपसोडी** कितनी शीघ्र लोकप्रिय हो गयी यदि जर्शविन ख्याति चाहता था तो अब उसे वह मिल गई थी। यह धुन तमाम अमरीका और योरुप में बजाई जाती थी। लंदन निवासियों के लिये गीतात्मक कामेडी लिखने के लिये उसको फिर इंग्लैण्ड बुलाया गया। उनके लिये बधाई स्वरूप उसने उनके प्रिय सर आर्थर सुलिवोन की परम्परा में संगीत रचा। वह ऐसा संगीत था जैसा कि लुभाने वाला आल्हाद पूर्ण संगीत होता है।

दो साल के अन्दर जर्शविन ने चार कामेडी के लिये संगीत लिखे। डाक्टर वाल्टर डेमरोश के निमंत्रण पर कार्नेगी हाल में सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के लिये भी उसने एक गीत रचा। जर्शविन एक ही समय में दोनों कार्य कर रहा था।

इन सभी बातों पर बहुत खर्च होता है। मिस्टर व्हाइटमेन ने अपने कंसर्ट में सात हजार डालर व्यय किये। वह इसी कंसर्ट पर अपनी सारी आशायें केन्द्रित किये हुए थे। सारा हाल खचाखच भर गया था लेकिन उन्होंने सबसे अच्छी सीटें उन लोगों के लिये मुफ्त रक्खीं जिन्हें वे इस प्रदर्शन को दिखाना ही चाहते थे और उन्हें यह नहीं मालूम था कि वे अपने प्रयास में सफल होंगे या असफल। लेकिन, उन्हें उस प्रदर्शन में अभूतपूर्व सफलता मिली।

मिस्टर व्हाइटमेन इस प्रदर्शन के पूर्व अपने नये प्रयोग में रुचि लेने लगे थे। उन्होंने रिहर्सल के समय तीन संगीत आलोचकों को आमंत्रित किया। उन्होंने उन आलोचकों को यह समझाया कि वे जाज़ संगीत के कार्यक्रम मुझको शास्त्रीय संगीत में बदलकर प्रस्तुत करने का प्रोग्राम बना रहे हैं। उन्होंने उन आलोचकों का जर्शविन से परिचय कराया। जर्शविन ने जाज़ कंसर्ट के लिये ही संगीत रचना की थी और अब उसका प्रदर्शन करने के लिए लालायित थे। जैसे ही वे दोनों रंगमंच की ओर बढ़े कि दो आलोचकों ने आपस में काना-फूसी की।

यह जर्शविन कौन है.....जी हाँ, यह जर्शविन कौन है ?

तीसरा आलोचक ब्राडवे में आयोजित कार्यक्रमों के बारे मे कुछ जानता था। ब्राडवे वहाँ से कुछ ब्लाक की दूरी पर था। उसने उन आलोचकों से यह कहा कि जर्शविन संगीत के रिव्यु और कामेडी के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय गीतों का रचयिता है। शायद उन दोनों आलोचकों की स्मृति का ही कुछ दोष हो, नहीं तो यह सच है कि तीन महीने पहले उन्होने गॉथियर के गाये हुए गीतों को सुना अवश्य था। यह एक केवल उदाहरण की बात है कि पियानो के सुरों का आरोह-अवरोह स्थिर करने वाला व्यक्त भी कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। फिर भी लोग उसे कितनी जल्दी भूल जाते हैं।

आलोचकों के सामने जब रेपसोडी खेला गया तो उनमें से दो बिल्कुल खो से गये। तीसरे ने अधिक चिन्ता नहीं की लेकिन उसने संगीत से प्रभावित होकर यह स्वीकार किया कि उसमें निश्चय रूप से 'ज़िप और पंच' है।

जब वह दिन आया जिसकी मिस्टर व्हाइटमैन ने इतनी योजना बनाई थी

तो उन्हें रंगमंच पर प्रदर्शन-संकोच होने लगा। यह इसलिये नहीं कि वे जाज़ बैण्ड का नेतृत्व कर रहे थे वल्कि उनके मन में उस संगीत के संबंध में अनायास आशंका हुई कि वह संगीत जिसे वह प्रस्तुत करने जा रहे हैं. सफल होगा या नहीं। वे दर्शकों से भयभीत हो उठे। वे ऐसे संगीत हाल में वाद्य-वादन करने के अभ्यस्त नहीं थे। वे मंच के सामने चारों ओर घूमकर आगन्तुक दर्शकों को देखने लगे। यद्यपि वे लोग भीषण हिमपात के बावजूद झुण्ड-के-झुण्ड में आ रहे थे फिर भी वह उत्साहित नहीं हुये। कला और शिक्षा के क्षेत्र में सुसंस्कृत लोग उस संगीत हाल को जाज़ की धुनों पर नाचते हुये देखने के लिये आये। क्या सचमुच वह प्रदर्शन इस योग्य था ? उसने विक्टर हर्बर्ट को भीड़ में से आते हुये देखा।

जब वे लोग **रेपसोडी इन ब्लू** बजा रहे थे तो व्हाइटमैन ने बाद में कहा :—

"संगीत के बीच में मैं रोने लगा। जब मुझे होश आया तो मैं ग्यारह पृष्ठों तक साथ-साथ था और मैं आज तक यह नहीं बता सकता कि मैंने कैसे वह वाद्य-वादन पूरा किया। बाद में जार्ज ने मुझे बताया कि उसने भी ऐसा ही अनुभव किया था। वह मेरे साथ बजा रहा था और वह भी वैसे ही रो उठा था।"

हर एक आदमी यह जानता है कि गिलसेण्डो क्लेयरनेट के प्रादुर्भाव के साथ यकायक **रेपसोडी** कितनी शीघ्र लोकप्रिय हो गयी यदि जर्शविन ख्याति चाहता था तो अब उसे वह मिल गई थी। यह धुन तमाम अमरीका और योरुप में बजाई जाती थी। लंदन निवासियों के लिये गीतात्मक कामेडी लिखने के लिये उसको फिर इंग्लैण्ड बुलाया गया। उनके लिये बधाई स्वरूप उसने उनके प्रिय सर आर्थर सुलिवोन की परम्परा में संगीत रचा। वह ऐसा संगीत था जैसा कि लुभाने वाला आल्हाद पूर्ण संगीत होता है।

दो साल के अन्दर जर्शविन ने चार कामेडी के लिये संगीत लिखे। डाक्टर वाल्टर डेमरोश के निमंत्रण पर कार्नेगी हाल में सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के लिये भी उसने एक गीत रचा। जर्शविन एक ही समय में दोनों कार्य कर रहा था।

देश में 'टिन पैम ऐली, में उसे पॉल्टिर हाल में गंभीर संगीत के लिये निमंत्रित किया जाता था। समाज में भी, पार्टियों में उसे बुलाया जाता था और वह वहाँ भी काम करता था। लेकिन यह उसे पसन्द था। मेज़बान महिलाओं के निरंतर आग्रह पर उसने कभी आपत्ति नहीं की और सदा उसने सूखी नीरस पार्टियों को सजीव और सरस बनाने का प्रयत्न किया। यद्यपि उसकी माँ ने उससे एक वार कहा कि ऐसे अवसरों पर उसे इतना अधिक वाद्य-वादन नहीं करना चाहिये। उसने अपनी माँ को समझाया कि यदि वह इतना अधिक वाद्य-वादन न करे तो उसका समय ही ठीक से न बीत पाये जितना उसके सुनने वाले उत्सुकता से उसके वाद्य-वादन का आनन्द उठाते हैं, उतना ही वह स्वयं भी आनन्द उठाता है।

जब फिलहार्मोनिक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के लिये एक जाज कंसर्टो लिखने और खेलने के लिये उससे करार किया गया तो उसे इसका ज्ञान भी न था कि कंसर्टो क्या होता है? सात कंसर्ट में अपना कंसर्टो खेलने के लिये करार करने पर भी उसे यह पता नहीं था कि कंसर्टो है क्या चीज? उसने बाहर जाकर संगीत विधाओं की एक पुस्तक खरीदी जिससे वह इस बात का पता लगा सके कि आखिर उसे लिखना क्या है? अपनी कुहनी के नीचे इस किताब को रखकर पियानो पर काम करने के लिये बैठ गया।

कुछ रूपों में जर्शविन प्यूसिनी की याद दिलाता है। दोनों ही आदमियों से भरे हुये कमरे मे बैठकर लिख सकते थे। वे लोगों के बोलने, हँसने और लगातार आने-जाने से बिल्कुल घबड़ाते नहीं थे। कभी-कभी जार्ज जर्शविन कुनमुनाने लगता था कि वह थोड़ा एकान्त चाहता है और तब उसने एक होटल में एक कमरा किराये पर लिया जहाँ वह अकेला रह सके और अपने उन दोस्तों से बच सके जो हमेशा ही आते रहते थे। लेकिन जब उन्होंने उसे देखा तो वे फिर उसके पास मंडराने लगे और वह उसी दशा में काम करता रहा।

एक दूसरे रूप में जर्शविन रिमस्की कोरसेकफ की याद दिलाता है। कोरसेकफ कभी फ्यूजी और काउंटर पाइंट का अध्ययन नहीं करता था जब

तक कि उसे यह विषय नहीं सिखाने होते थे। फिर अपने शिष्यों से अधिक जानने के लिये उसे पढ़ना होता था। इस पर वह हँसकर कहता था कि उसके शिष्य ही उसे पढ़ाते हैं। जैसा उसने बाद में स्वीकार किया कि कभी-कभी तो उसने बिना विषय-वस्तु को ठीक से समझे हुए लिखा था। उसने ओरकेस्ट्रेशन हार्मोनी और काउंटर प्वाइंट पर पाठ्य पुस्तकें लिखीं। जब तक वह नेवी डिपार्टमेण्ट में इन्स्पेक्टर आफ बैण्ड नियुक्त नहीं हो गया। उसने अध्ययन के लिये मुँह से बजाने वाले वाद्यों का सेट भी नहीं खरीदा। बाद में उसने मुँह से बजाने वाले वाद्यों की तकनीकी के बारे में एक पुस्तक भी लिखी।

जर्शविन की सीखने की उत्सुकता उसके नये क्षेत्र के कामों के साथ-साथ चलती थी। जब उसने **कंसर्टो** लिखा तो किसी और के द्वारा उसके ओरकेस्ट्रा बजाये जाने से संतुष्ट न होकर उसने स्वयं ओरकेस्ट्रेशन का अध्ययन शुरू किया। उसको यह भी जानने की आवश्यकता पड़ी कि वाद्य-यंत्रों के संगीत के सम्बन्ध में कैसे लिखा जाय। इस समय उसने रूबेन गोल्ड मार्क के साथ अध्ययन किया। कंसर्टो लिखने के बाद उसको सुनाने की भी आवश्यकता थी जिससे यह पता लग सके कि उसे कहाँ-कहाँ सुधारना है। इस काम को पूरा करने के लिये साठ संगीतज्ञों के एक ओरकेस्ट्रा को किराये पर बुलाया और एक दोपहर को एक थियेटर में खुद पियानो पर बैठकर अपने दोस्तों के साथ उसने अपनी कृति का मूल्यांकन किया। वह उसमें परिवर्तन और संशोधन करने में समर्थ हुआ।

वह दिन आया जब जर्शविन ने पहिली बार सचमुच एक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के साथ वाद्य-वादन किया तो कार्नेगी हाल बिल्कुल भरा हुआ था। एक जाज कम्पोजर ओरकेस्ट्रा पर खेल रहा था और उसके अन्दर एक भी करुण संगीत पैदा करने वाला सेम्सोफोन नहीं था। तीन वर्ष बाद जब जर्शविन पेरिस में था तो सम्मान में उसके रेपसोडी और कंसर्टो बजाये गये। योरुप के जिस केफे में वह गया, उसी के सामने उसका संगीत प्रस्तुत किया गया। जब वह तीस साल का था तो उसका ओरकेस्ट्रल संगीत, **एन अमेरिकन इन पेरिस,** न्यूयार्क में प्रस्तुत किया गया। इसकी परिकल्पना उसने पेरिस में की थी।

उसने अपने वाद्य-यंत्रों में टेक्सी-हार्न इस्तेमाल किया। इनमें से एक विषय-वस्तु को उस शताब्दी की 'सेस्यिस्ट ओरकेस्ट्रल थीम' कहा गया।

इसके बाद हालीवुड और ओपेरा उसके जीवन में आये। जर्शविन अकेला जाज लेखक था जो हर प्रकार के संगीत में अपना हाथ रख सकता था। वह अपने ओपेरा **पोर्जी एण्ड बैस** के लिये संगीत लिखकर अत्यन्त आनन्दित हुआ। उसको अपना ओपेरा बड़ा प्रिय था और वह अपनी आँखें मूँदकर अपनी संगीत-रचना को बार-बार मंत्र मुग्ध होकर बजाता था। जब यह ओपेरा प्रस्तुत किया गया तब उसकी आयु सैंतीस वर्ष की थी।

इस नवयुवक के जीवन में दो और महत्वपूर्ण सफलताएँ थीं जो उसके जीवन में एक से एक अनोखे अनुभव के बाद आती गई। उसको एक ओरकेस्ट्रा स्वयं संचालन करने का संतोष था। उसकी रचना को सुनने के लिये सत्रह हजार आदमी 'लिवीसोन स्टेडियम' में एकत्र हुये थे जिसको सुनने में उनकी पूरी शाम लग गई। चार हज़ार से अधिक आदमी उस अवसर पर बाहर से ही वापिस कर दिये गये। अगले दिन समाचार-पत्रों में यह निकला कि जार्ज जर्शविन ने पिछली रात वैसी सफलता पाई जैसी केवल बीथॉवन और वेगनर को मिली थी। उसका सारा कार्यक्रम उसका अपना था।

वह जब छोटा था तब 'लिटिल मेगीज़' को देखकर नाक-भौं सिकोड़ता था और स्कूल में संगीत सुनने के लिये जाने को तैयार नहीं था। आश्चर्य होता है कि ऐसे आदमी को अब कौन सी सफलता प्राप्त करना शेष रह गया था। वह इस तेजी से उन्नत के शिखर पर चढ़ता चला गया कि वह ओपेरा की चोटी तक पहुँच गया और यही पटाक्षेप भी था। क्योंकि **पोर्जी और बैस** के लिखने के कुछ दिनों बाद वह हालीवुड में बीमार पड़ा और कुछ सप्ताह के बाद काल कवलित हो गया।

किसी ने जर्शविन के बारे में लिखा है कि उसने एक गीत गाया—नगर का गीत, संगीत हाल का गीत और यंत्रिकी युग का गीत। स्टीफेन फॉस्टर ने भावपूर्ण गीत लिखे लेकिन वे दकियानूसी थे और जर्शविन ने जो संगीत की रचना की वह आडम्बरों को चतुरता से खण्डन करने वाली थी। यह उस

समय था जब लोग 'हूपी' बनाने में अधिक रुचि रखते थे और वे मूल भावनाओं की ओर ध्यान नहीं देते थे। लेकिन जो पुराना है और सुन्दर तथा सच्चा है, तो वह कभी समाप्त नहीं होता। फैशन बदलते हैं लेकिन रीति बनी रहती है। उसके दोस्त उसे एक हँसमुख मनोविनोदी के रूप में याद करते हैं क्योंकि जब वह पियानो पर बैठकर अपने दोस्तों के बीच गाता था तो उसे सबसे अधिक सुख महसूस होता था। कुछ गीत जो उन्हें सबसे अधिक पसन्द थे, वे कभी प्रकाशित तक न हुये और वे उसके अपने मनोरंजन के लिये थे। एक था—**मिशा या शा तोशा साशा**-जिसे उसने वायलिनिस्ट हीफेट्ज के घर की पार्टी के लिये तैयार किया था।

जर्शविन को जैसे अपने संगीत में कुछ करने को था ही नहीं, उसने एक बार ड्राइंग और चित्रकला सीखी। वह कला में अधिक रुचि रखने लगा, संग्रहालयों को देखता और चूँकि उसके पास काफी सम्पत्ति थी, सुन्दर चित्रों को खरीदकर सुख पाता। एक बार आदमी की अकेली प्रदर्शनी के रूप में उसके चित्रों का प्रदर्शन न्यूयार्क की आर्ट-गैलरी में किया गया।

जर्शविन एक खिलाड़ी था। उसे गोल्फ, टेनिस और कुश्ती पसन्द थी। उसके अपने घर में एक जमनेज़ियम था जिसे उसने उस समय बनवाया था जब उसके लिये ऐसा करना संभव हो पाया था। उसे ताश के खेल पसन्द नहीं थे। 'बैकगेयन' से उसका बड़ा मनोरंजन होता था। उसकी सबसे प्रिय स्मारिका इंग्लैण्ड के प्रिंस से प्राप्त हस्ताक्षरशुदा फोटो था। जो बाद में ड्यूक ऑफ केण्ट हो गये। उस आटोग्राफ में लिखा था—जार्ज को जार्ज से।

स्टीफेन फॉस्टर के विपरीत जर्शविन स्वयं अपने गीतों की रचना नहीं करते थे। 'टिन पैन एली' में सदैव गीतों के शब्दकार के साथ-साथ ट्यून व्यवस्थापक और ट्यून बनाने वाले होते थे। जैसे-जैसे समय बीता, उसके भाई इरा ने उसके गीतों को शब्द दिये। इरा वही लड़का था जो बचपन में दर्जनों सस्ते उपन्यास पढ़ता था। कितने ही प्रदर्शन ऐसे थे जिनमें संगीत जार्ज जर्शविन की होती थी और गीत इरा जर्शविन के। ये दोनों भाई एक-दूसरे पर बड़ा गर्व करते थे और समय के साथ बड़ी अच्छी तरह साथ-साथ काम

करते थे। चूँकि वे एक दूसरे से बहुत भिन्न थे इसलिये लगातार एक दूसरे का मनोरंजन कर खुश करते थे।

जर्शविन ने कभी किसी स्त्री को अपना हृदय नहीं दिया लेकिन एक बार उसने कुत्ते को प्यार किया था। नन्हा कुत्ता उसके साथ खेलने के लिये लालायित रहता था, वह कुछ भी क्यों न करता रहा हो, चाहे वह शीघ्र ही किसी गीत को रचकर पूरी करने की बात हो, वह अपने काम को रोककर उसकी ओर ध्यान देता था।

जार्ज जर्शविन के दोस्तों ने यह महसूस किया कि उसके चरित्र का यह गुण जो सदा उसकी सहायता करता रहा, वह था उसका अडिग आत्म-विश्वास। वह जो कुछ भी प्रयत्न करता था, उसके बारे में उसे यह विश्वास था कि वह उसे कर सकेगा। फिर प्यूसिनी याद आते हैं जिन्होंने यह कहा था—अपने में विश्वास रखो और परिश्रम करो।

[जार्ज जर्शविन २६ सितम्बर, १८९८ में न्यूयार्क के ब्रुकलिन में पैदा हुआ। वे ११ जुलाई, १९३७ को हॉलीवुड में स्वर्गवासी हुये।]

इर्विंग बर्लिन

"मैंने स्वयं अपने लिये ही संगीत की खोज की है।"

मेनहटन टापू के दक्षिणी सिरे पर बेटरी में आकर जहाज़ रुका। इस टापू में न्यूयार्क शहर का मुख्य भाग स्थित है। अभी तक मोटर-गाड़ियों का प्रयोग नहीं हो पाया था और सड़कों पर गिट्टी और रोड़ी बिछाई जाती थी। इन्हीं गिट्टी-रोड़ी की सड़क पर घोड़ा-गाड़ियाँ चलाई जाती थीं। ऐसी ही गाड़ी में हमारे देश में एक नया परिवार आया। वे लोग रूस से आये थे। उस परिवार में छः बच्चे थे, उनके माता-पिता थे और वे अपने साथ कपड़े, फर्नीचर और रसोईघर के बर्तन लाये थे। वे अधिक समय तक अशान्त सागर पर जहाज में यात्रा करते ऊब चुके थे इसलिये बच्चों को ज़मीन पर चलती गाड़ी में यात्रा करने में बहुत प्रसन्नता थी। उन्होंने चारों ओर देखा और शहर की सड़कों के नये दृश्य देखे। उस शहर में अब उनके लिये अपना घर बनाया जाना था। सबसे छोटे बच्चे का नाम इस्राइल बेलाइन था, उसकी आयु चार वर्ष की थी। इसी लड़के की कहानी में हमारी रुचि है क्योंकि वह सिण्ड्रेला-लड़का के समान बन गया। उसने परिश्रम किया और अपनी चतुरता से दीनता से उभरकर धनी बन गया। उसका जन्म साइबेरिया के सीमान्त प्रदेश में हुआ था।

वह आठ भाई-बहिन में सबसे छोटा था। सबसे बड़ा भाई रूस में ही रह गया था और दूसरे लड़के का पहिले ही विवाह हो गया था। इसराइल को 'इज़ी' कहते थे, वह कद में छोटा था लेकिन उसकी डार्क-ब्राउन आँखें बड़ी-बड़ी थीं और उसके काले तथा घुंघराले बाल थे। उसके पिता यहूदी धर्म के अनुयायी थे और जब यहूदियों को सताया गया तो उसका परिवार वहाँ से भाग उठा। पहिले वह परिवार एक गाँव से दूसरे गाँव को गया लेकिन

उनके इधर-उधर भागने का कोई अन्त ही नहीं था और आखिरकार उन्होंने अमरीका की गन्दी बस्तियों में रहने के लिये समुद्र पार किया।

इसमें अधिक समय नहीं लगा कि पूरा बेलाइन परिवार आजीविका कमाने में लग गया। चार लड़कियों ने गुरिया पिरोने का काम किया। मझले लड़के ने हलवाई का काम किया। यहूदी परिवार को एक सा काम न मिलकर अनियमित काम मिला और वे कसाई की दूकान (बूचर स्टोर) में कोशर खाद्य के प्रमाणित करने वाले का काम करने लगे। यहूदियों की छुट्टियाँ आने पर उन्होंने यहूदी उपासना-गृह में क्वायर मास्टर का काम किया। जैसे ही कुछ आय होने लगी, वे अपने गोदाम से निकल कर चेरी स्ट्रीट के एक आवास-स्थान (फ्लेट) में जाकर रहने लगे। वे अब भी छोटे घर में थे लेकिन अब ऊपर की मंजिल पर थे जहाँ ज्यादा हवा आती रहतो था। इज़ी बेलाइन दो वर्ष पब्लिक स्कूल नं० १४७ में पढ़ने गया। वह ड्राइंग के काम में रुचि रखता था लेकिन उसे स्वाभाविक रूप से संगीत आता था। उसकी मधुर, करुण और सुरीली आवाज़ थी। उसका पिता उस समय गायक दल का नेता था। उसका पिता उससे हेब्रू शब्दों में यहूदी सर्विस कराता था। गायकों में कई लोग यहूदी थे। वे सभी गा सकते थे।

बेलाइन पिता यह देखने के लिये जीवित नहीं रह पाया कि उसका पुत्र वास्तव में अच्छा संगीतज्ञ होगा। जब इज़ी आठ वर्ष का था उसके पिता का देहान्त हो गया। अब उसके परिवार में उसकी मां सबसे बड़ी थी इसलिये उन्हें परिवार का उत्तरदायित्व उठाना पड़ा। इज़ी अपने परिवार में सबसे छोटा था, उससे यह आशा नहीं की जाती थी कि वह परिवार की सहायता के लिये कोई काम करे; लेकिन उसके मन में यह विचार उठने लगा था कि वह आजीविका के लिये कुछ नहीं कर रहा है। वह शहर तेजी बढ़ रहा था और योरुप से प्रति सप्ताह नये आप्रवासियों की सामान से लदी नौकाएँ आ रही थीं और वह भी अपनी आजीविका कमाने के लिये संघर्ष कर उठा। उसे जो कुछ भी मिल पाता, वह अपनी माँ को ले जाकर दे आता। उसके

मन में यह भी विचार रहता था कि परिवार का प्रत्येक सदस्य उससे अधिक धन कमा लेता है और यह विचार उसके मन को दुःखी कर देता था।

ग्रीष्म ऋतु थी, एक दिन अधिक गर्मी और तपन थी और उसने उस दिन यह निश्चय किया कि वह स्वयं अपना काम शुरू कर देगा। वह अपने घर से कुछ दूर ब्लाकों में पहुँचा और वहाँ उसने **ईवनिंग जर्नल्स** (शाम के अखबार और पत्रिकाएँ) लिये और शहर के गंदे और नंगे पैर वाले लडकों में रिक्रूट की तरह जाकर शामिल हो गया।

इर्वी बेलाइन ने अपने बचपन में उस बड़े शहर के शोरगुल में कई मिली-जुली आवाजें सुनी : कल-कल निनाद करती हुई सरिता कोलाहल भरे नौका-घाट को छूकर बह रही थी; किनारों पर जहाजों को कुहरे का संकेत करने के लिये हार्न और नौकाओं की सीटियों की आवाज़ इधर-उधर आने जाने वाले ऐसे लोगों की हलचल में इस प्रकार मिल गई थी जैसे अनेक चीटियाँ इकट्ठी हो जाती हैं; ट्रेनों के चलने का शोर था; सड़कों पर कार दौड़ रही थी; फायर इंजिनों की सीटियाँ वज रही थीं; सड़कों पर आमदरफ्त बढ़ती जा रही थो; फल बेचने वाले और हाथ से गाड़ी चलाने वाले आवाजें लगा रहे थे: यहूदी उपासना-गृहों में गीत हो रहे थे, समीप के चाइना टाउन से शोरगुल उठ रहा था; बावेरी सेलून में कर्कश स्वर उठ रहे थे और इन सभी आवाजों में कभी-कभी रिवालवर की ठांय-ठांय भी हो जाती थी। इन्हीं आवाजों को इर्वी बेलाइन ने सुना था। वह अपनी जाति की दुर्दशा से आहत होकर दुखी हो चुका था इसलिये उसकी आवाज में दर्द था। उसके पिता को अपने देश से भागना पड़ा था। यहूदियो की यह करुण कहानी वहुत पुरानी है क्योंकि उन्हें शुरू से ही वहुत तंग किया गया है। इस अन्याय और दुर्घटना से इर्वी वेलाइन का मन दुःखी हुआ।

वास्तव में न्यूयार्क अमरीकी शहर नही है। यह विश्व-नगर है जहाँ संसार के सभी भागों से सभी जातियों के लोग इकट्ठे हुये हैं। उसके निचले पूर्व भाग में बावरी नाम का प्रसिद्ध क्वार्टर है जिसमें चाइना टाउन सम्मिलित है। नगर के उत्तर में यहूदियों की बस्ती है, उस बस्ती का नाम घेटो है। यहूदियों

के परिवार अब भी वहाँ रह रहे हैं जब इज्ञी बेलाइन एक लड़का था लेकिन अब उन घरों की शक्ल बदल गई है। वे घर अब बहुत स्वच्छ हैं, अधिक व्यवस्थित हैं और मजबूत बने है। अब उन घरों में पुराने समय की अव्यवस्था समाप्त हो चुकी है। यह कौन सोच सकता था कि बावरी अमरीकी लोकप्रिय गीतों की नर्सरी हो जायेगी ?

सौ वर्ष से अधिक समय की बात है, जार्ज वाशिंगटन का समय था, और उस समय बावरी एक छोटा ग्राम था तथा न्यूयार्क के एक कोने पर बाहर की ओर अलग बसा था। इसमें सन्देह नहीं कि वाशिंगटन और उनके अफसरों ने बुल्स हेड टेवर्न में कई बार टोडी लोगों की शुभ कामना करते हुये मनोरंजन के कार्यक्रम बनाये। बुल्स रेड टेवर्न बाबरी थियेटर के पास ही स्थित था। आज हम जिसे ऊँचा बसा हुआ नगर कहते हैं, वहाँ खेत और जंगल थे। अभी तक वहाँ चाइना टाउन नहीं बना था।

बेलाइन परिवार के बच्चों के लिये कुछ-न-कुछ भोजन का प्रबन्ध रहता है, उनकी माँ यह प्रबंध किया करती थीं, लेकिन इज्ञी को यह महसूस होने लगा कि वह कुछ भी नहीं कमा पाता जिससे उसके परिवार को सहायता मिले। यदि वह अधिक नहीं कमा सकता तो कम-से-कम उसे कुछ कमाना ही चाहिये। वह अपने घर के सामने बैठ गया, उसने अपने घुटनों को कसकर दबा लिया और सड़क पर बराबर आने-जाने वाले लोगों को देखने लगा। उसने उदास, प्रसन्न, व्यस्त और सुस्त आदमी आते-जाते देखे। उन लोगों में सभी प्रकार के लोग थे लेकिन धनी लोग नहीं थे। शहर के उस भाग में धनी लोग नहीं रहते थे। यदि उस भाग में कोई धनी व्यक्ति हुआ भी हो तो वह सेलून या केफे का मालिक होगा। ये ऐसे लोग होंगे जो एक दिन धनी और दूसरे दिन कदाचित निर्धन होंगे।

वह लड़का अपने द्वार पर बैठा-बैठा यह महसूस करने लगा कि उसका जीवन निरर्थक है। वह अपने परिवार के लिये किसी प्रकार भी उपयोगी नहीं है। वह अनुपयुक्त है। उसके लिये यह अच्छा होगा यदि वह अपने घर से निकल जाय। वह घर से निकलकर अपनी आजीविका कमाये अथवा भूखे रहकर

किसी-न-किसी काम की चेष्टा करे। एक दिन शाम के भोजन के बाद बिना कुछ कहे इज़ी बिली घर से बाहर निकल गया और फिर लौटकर नहीं आया।

उन दिनों वहाँ पर ऐसी घटनाएँ प्रायः हो जाया करती थीं। इज़ी बेलाइन केवल तेरह वर्ष का था जब उसने अपना घर छोड़ दिया। उसकी गरीब माँ उसकी प्रतीक्षा करती रही और उसने उसे चारों ओर खोजा। यदि पड़ोस का कोई बच्चा उसकी माँ को यह सूचना दे जाता कि उसने इज़ी को अमुक सड़क पर देखा है तो इज़ी की माँ दिन भर प्रतीक्षा करने के बाद शाम को अपने सिर पर शाल ओढ़कर घर से बाहर निकल जाती और भीड़ में अपने बच्चे को खोजने के लिये इधर-उधर भटका करती। उसके साथ सदा ऐसा ही होता था और वह प्रतीक्षा करते-करते उसे न पाकर निराश रह जाती थी।

कई वर्ष बीत गये और इज़ी अपनी माँ के पास लौटकर न आया। अन्त में वह अपनी माँ के पास लौट ही आया। वह ऐसे समय लौटा जब वह अपने माता-पिता को बहुत आराम से रख सकता था क्योंकि अब वह धनी हो गया था और अमरीका के लोग उसके गीतों को खरीद रहे थे। वृद्धा माँ ने नई भाषा नहीं सीखी थी और वह यह कभी नहीं समझ सकी कि उसका इज़ी किस प्रकार ऐसे गीत लिख सका जिन्हें अमरीका चाहता था। उसे देखकर उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई। उसे कितनी अधिक चिन्ता रहती थी लेकिन उसने शिकायत में इज़ी से एक शब्द भी कभी नहीं कहा।

आप यह जानने के उत्सुक होंगे कि जिस लड़के को किसी दिन गीतकार बनना था, उसने उस शाम को क्या किया जब उसने अपना पहिली बार घर छोड़ा था। उसे सोने के लिये जगह की आवश्यकता थी और उसे यह जगह का पता था जहाँ कि उसे दस सेण्ट में एक चारपाई और बिस्तर मिल सकता था। वह ऐसी जगह गया जहाँ अधिक रात हो जाने पर भी शोर होता था—वह स्थान बावरी की ओर था। उस स्थान को निचली पूर्वी किनारे का 'गे व्हाइट वे' भी कहते थे। यह वह स्थान था जहाँ लड़के अपना घर

छोड़कर पहले-पहल अपनी आजीविका कमाने के साधन खोजते थे। वह मटरगश्ती करता हुआ एक खुशनुमा सेलून में जा घुसा और उसने वहाँ उस समय का लोकप्रिय भावना-प्रधान 'बैलेड' गाना शुरू कर दिया। वह स्थान दुःखियों का आवास-स्थान '**(दी मेन्शन आफ ऐकिंग हार्ट्स)** कहलाता था।

इन दिनों में घूमने फिरने वाले गायकों को गीत गाने के लिये एक पेनी भी कठिनाई से मिल पाती थी जब तक लोगों को उस गीत को सुनकर आनन्द न आने लगे। परन्तु उस समय लोग ऐसे गीत सुनकर प्रसन्न हो जाते थे और अश्रु-प्रवाह से गीतों की प्रशंसा प्रकट करते थे तथा उन गीतों को सुन्दर कहते थे। यह सदैव बदलती हुई फैशन का उदाहरण है। यह फैशन कपड़ों और संगीत दोनों में ही अपनाया जाता है। उस साहसी गायक ने कुछ ही समय में अपने रात के ठहरने के लिये धन कमा लिया।

वह बावरी 'बस्कर', (भावना प्रधान गीत गाने वाला) बन गया और सैलून, नृत्य तथा संगीत भवनों में गीत गाने लगा। इन स्थानों को हंकी-टांक कहते थे। इन स्थानों में मल्लाह और पथिक कुछ समय आराम करने के लिये आ जाते थे। वे खाते-पीते थे और अपना मन बहलाते थे। नगर के ऊँचे भागों में मनोरंजन के लिये शराब-खाने थे। अब इन स्थानों को नाइट क्लब (रात्रि-क्लब) के नाम से पुकारते हैं। यह कोई नहीं कह सकता कि इज्री लोकप्रिय गीत गाते-गाते पुराने गीतों से ऊब गया हो लेकिन वह ट्यून के अनुसार अपने गीत देने में कुशल हो गया था। वह श्रोताओं को समझने लगा था और यह जान गया था कि किस गीत से लाभ हो सकता है। वह यह सीख गया था कि दर्शकों को क्या अच्छा लगता है और यह ऐसी सफलता थी जिससे वह आगे धनी भी हुआ। लेकिन उसे उस समय इस बात का पता नहीं था। वह गाया करता था और दिन भर के गीतों की पेरोडी बनाया करता था।

जब वह सोलह वर्ष का हुआ उसे एक नियमित काम मिल गया। वह चाइना टाउन में १२ पेल स्ट्रीट में निगर माइक में सिंगिंग वेटर हो गया।

वह वास्तव में पेलहेम केफे थी लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उसे निगर माइक्स

कहा करता था। निगर माइक एक गोरा व्यक्ति था। वह रूस का यहूदी था और उसका यह उपनाम पड़ गया था क्योंकि उसका रंग काला था। चाइना टाउन में दृश्य देखने लोग जाया करते और उसके स्थान को भी देखने जाते थे।

एक बार योरुप से एक राजकुमार न्यूयार्क देखने आया, उसे अनेक स्थान दिखाये गये और उसे निगर माइक का स्थान भी दिखाया गया जिससे वह मानव-जीवन की एक नवीन झांकी देख सके। अतिथि के आने पर माइक को बहुत प्रसन्नता हुई और उसने दिल खोलकर यह घोषित किया कि उसके यहाँ पीने की दावत है। राजकुमार वहाँ से जाने से पूर्व सद्भाव से वेटर को कुछ देने लगे। वेटर को कुछ घबराहट हुई, वह पीछे हट गया क्योंकि उसके मन में यह विचार था कि यदि उसने टिप स्वीकार कर लिया तो उसके देश में आतिथ्य सत्कार की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। यह वेटर इज्जी था। रिपोर्टर हर्वर्ट स्वोप वेटर को टिप लेने से इन्कार करते देखकर आश्चर्य चकित हुआ और उसने अपने अखबार के लिये एक कहानी लिखी। यह पहिला अवसर था जब इज्जी का नाम अखबार में छपा। कई वर्ष बाद इज्जी ईविंग बर्लिन नाम से प्रसिद्ध संगीतकार हो गया, उसने कभी-कभी न्यूयार्क या लन्दन के रेस्ट्रां में उस चेहरे को देखा जिसे उसने निगर माइक के यहाँ देखा था।

ग्राहक सारी रात आते और चले जाते। इज्जी को रात में काम करने की आदत पड़ गई और वह दिन में सो लेता था। सुबह हो जाती और ग्राहक एक-एक करके चले जाते फिर वेटर सभी मेज़ और कुर्सियों को ठीक करते तथा दूसरे दिन रात के लिये रेस्ट्रां ठीक करते। रेस्ट्रां के पिछले कमरे में एक बेटर्ड पियानो था और रात तथा दिन के बीच जब समय मिलता इज्जी पियानो पर अभ्यास करता। वह एक अंगुली से ट्यूनें निकाला करता। वे ट्यून ऐसी थीं जिन्हें उसने बाद में चाइना टाउन में सुना था।

मिस्टर बर्लिन का कहना है कि उसने अपना पहिला गीत स्पर्धा से लिखा है लेकिन वास्तव में यह ठीक नहीं है क्योंकि उसके मन में ही संगीत भरा था और वही संगीत मुखरित हो गया। उसने जब यह सुना कि दूसरे कोवे के केफे में एक वेटर और पियानो-वादक ने एक गीत की रचना की है और वह

गीत छप चुका है फिर उसने और माइक के पियानोवादक निक ने यह सोचा कि वे भी गीत लिखेंगे। इज्ज़ी को गीत लिखना था और निक को ट्यून बनानी थी। उन्होंने उस गीत का नाम **मेरी फ्रोम सनी इटली** रखा था। फिर उन्हें एक धक्का लगा। उनमें से किसी को नहीं मालूम था कि किस प्रकार लिखना चाहिये ? आखिर क्या किया जाय ? जब तक कागज पर कुछ लिखा न हो तो वे प्रकाशक को क्या दिखायें।

वे बाहर चले गये और उन्हें वहाँ फिडलर जॉन मिले। फिडलर बोवरी जूता बनाने का काम करते थे। वह हर शाम को वायलिन बजाया करते थे। परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम था कि संगीत किस प्रकार लिखा जाता है। अन्त में उन्हें एक नवयुवक पियानो-वादक मिला जो यह जानता था कि गीत कैसे लिखा जाय और तब गीत की रचना हो सकी। वह गीत टिन पैन एली में पहुँच गया। उसे स्वीकार कर लिया गया और वह प्रकाशित कर दिया गया। इज्ज़ी बेलाइन को इससे तेंतीस सेण्ट मिले। यह गीत उसके लिये बहुत महत्व-पूर्ण था। मिस्टर बर्लिन को यही महसूस हुआ और इससे उसे जीवन में अच्छा अवसर मिल गया।

लेकिन अब उसे इज्ज़ी बेलाइन नहीं कहते थे। जब भी संगीत के आलेख पर उसका नाम लिखा जाता, वह अपने नाम को उसी प्रकार बेलाइन कहा करता था जैसा कि उसके पड़ोसी लोग उसे पुकारते थे और इस प्रकार उसे बर्लिन पुकारा जाने लगा। जहाँ तक उसका पहिला नाम था, वह इज़राइल नाम नहीं चाहता था, उसे यह बात गंभीर लगती थी और वह अपने नाम को इज्ज़ी कहकर भी नहीं पुकारता था क्योंकि ऐसा नाम लेना मूर्खता था। वह स्वयं इर्विंग कहलाना चाहता था लेकिन उसको इस बात का डर था कि उसे निगर माइक में इस नाम से पुकारने में हँसी आ जायेगी। उन संगीत रचनाओं पर लिखा रहता था—"आई बर्लिन द्वारा लिखित और एम० निकलसन द्वारा संगीत।" वह गीतों के लिये शब्द चुना करता था और पियानो पर एक अंगुली की सहायता से ट्यून निकाला करता था।

तीन वर्ष बाद एक सुबह उस पर विपत्ति आ गई। उसे छः बजे प्रातः

काल दो घण्टे के लिये केफे का इंचार्ज बना दिया गया। उस समय व्यापार मद्धिम था। उसे सिर्फ कमरा स्वच्छ करने के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं था, सुबह से काम करने वाले के लिये केवल बियर निकालने का काम करना था और उसे तिजोरी का ध्यान रखना था जिसमें पच्चीस डालर थे। वह बार के सहारे खड़ा था, अपना सिर अपनी बाँह पर रखे हुये वह सो गया। उसे फिर यही पता लगा कि निगर माइक उसकी बाँह हिला रहा है। उसने आँख खोली, सूरज चढ़ आया था और माइक कह रहा था कि उसने तिजोरी में रखे हुये पच्चीस डालर चुरा लिये हैं। माइक ने उसको बाहर निकलने के लिये कहा और फिर लौटने के लिये नहीं कहा। वह चला गया। बाद में उसे यह पता लगा कि स्वयं माइक ने तिजोरी से वह धन निकाल लिया था। माइक ने उसके साथ ऐसा व्यवहार इसलिये किया था कि वह अपने काम के दौरान कभी नहीं सोये।

अब उसकी आयु उन्नीस वर्ष की थी। वह बावरी आवास स्थान में एक आवारा व्यक्ति की भाँति सो जाने में डरने लगा था। वह शहर में घूमने लगा और उसे गायक वेटर का काम फिर मिल गया। उसे यह काम यूनियन स्क्वैर के जिमी केली स्थान पर मिला। वह उत्तर में गया और चौदहवीं सड़क पर पहुँचा। केली में आने वाले लोग चाइना टाउन के माइक के यहाँ आने वाले लोगों से भिन्न थे। थियेटर सेक्शन में आने वाले बहुत से लोग व्यावसायिक मनोविनोद करने वाले थे—वे वाडेविले में कोमेडियन, जादूगर, गीत और नृत्य-कलाकार थे।

केली में पियानोवादक के साथ बर्लिन ने कुछ अधिक गीत लिखे। उस समय तक इस बात की अधिक चर्चा थी कि डोरेंडो नाम का इटली का मेराथान रनर इण्डियन रनर लोंगबोट के साथ दौड़ कर रहा था। यह दौड़ मेडीसन स्क्वैर गार्डन में हुई। इसमें इण्डियन जीत गया। उसी समय बर्लिन के पास एक कोमेडिन आया और उससे कुछ कविताएँ लिखने के लिये निवेदन करने लगा। वह चाहता था कि "बेलेड" लिखा जाय जिसे वह इटली की बोली में सुना सकता था जबकि समीपवर्ती वाउडेविले थियेटर के एक ऐक्ट और

दूसरे ऐक्ट के बीच में समय हुआ करता था। र्बालन-दौड़ में नाइयों के तौर तरीके, हब्शियों की गुमटियों और इटली के उन फल बेचने वालों को देखकर प्रसन्न हो जाता था जो उस बड़े दिन डोरेण्डो में बाजी लगाकर धन प्राप्त करने की आशा किया करते थे। इसी समय उसने अपनी कहानी को कविताबद्ध किया और उस समय कोमेडियन ने वायदा के अनुसार उसे दस डालर देने से इन्कार कर दिया। अतः र्बालन टिन पैन ऐली जिले के ब्रोडवे में गया और वहाँ उसने यह कोशिश की कि क्या वह उस कविता को बेच सकता है। एक म्यूज़िक पब्लिशिंग फर्म के कार्यालय में मैनेजर ने र्बालन-कविता का कुछ अंश सुना और उन्होंने उससे कहा कि वह उसे कुछ गाकर सुनाये तथा उसे एक छोटे कमरे में जाने के लिये कहा जिससे अरेंजर उसकी ट्यून को सीख सके।

इसमें कुछ भी नहीं करना था बल्कि उस ट्यून को दुहराना था। अरेंजर अपनी पेंसिल और म्यूज़िक पेपर लेकर बैठ गया और वह संगीत लिखने के लिये तैयार था। यह कैसा संगीत है ? र्बालन ने फिर शब्दों को दुहराया और जैसे-जैसे वह शब्द दुहराता गया, वैसे-वैसे कुछ गुनगुनाता गया। वह एक नया गीत बन गया और उसे उसके लिये पच्चीस डालर मिल गये। उसे वैसे ही गीत के लिये पहिले तैंतीस सेण्ट ही मिलते थे। उसके बहुत से गीत अधिक लोकप्रिय हो गये जिनमें **माई वाईफ्स गोन टू दी कण्ट्री** गीत भी शामिल है।

इसमें अधिक समय नहीं हुआ कि वह इस फर्म के लिये गीतकार बन गया। प्रकाशक उसकी प्रति कापी के बिकने पर रायल्टी दे देते थे और जिन दिनों में वह गीत लिखने का विचार करता था, उसे पच्चीस डालर मिला करते थे। उसकी आयु अब भी उन्नीस वर्ष की थी और अब उसने गायक वेटर का काम करना छोड़ दिया और टिन-पैन ऐली में आकर काम करने लगा। कई वर्षों के कठोर परिश्रम और असफलताओं के बाद उसे अच्छा अवसर मिला।

कण्ट्री में कभी नहीं गया था और वह शहर में रहकर ही बड़ा हुआ अतः उसे शहर के शोरगुल का ही पता था। उसने रोलिकिंग गीत ही लिखा :

ओह्, हाऊ आई विश अगेन
आई वाज इन मिशीगन,
डाउन आन दी फार्म।

स्टीफेन फॉस्टर ने स्वानी नदी देखी तक न थी। वह दो स्वरों के शब्दों को ही सीख सका था और मानचित्र में उसने देखा था कि दक्षिण में एक नदी है जिसका नाम उसके गीत के लिये आवश्यक है।

उसने अपने जीवन में कभी भी संगीत का पाठ नहीं पढ़ा और उसके पास अपना पियानो भी नहीं था लेकिन उसके हृदय में संगीत सीखने की उत्कट अभिलाषा थी। वह आधी रात उठ बैठता और अपने आफिस चला जाता। वहाँ चारों ओर सुनसान रहता था और वह रेटल-टी-बैंग पियानो बजाने का प्रातःकाल तक अभ्यास किया करता था। आखिरकार उसने पियानो बजाना सीख लिया और वह पियानो दसों अंगुलियों से बजाने लगा लेकिन वह एक की से अधिक की पर बजाना न सीख सका। उसके लिये यह आसान था कि वह ब्लेक की का प्रयोग करे क्योंकि वह अपनी अंगुलियों को फ्लेट रखता था और किसी ने उसकी अंगुलियाँ टेढ़ी करते हुये नहीं देखा। इसलिये उसने सदैव एफ शार्प और जी० फ्लेट की से पियानो बजाया लेकिन इसके लिये आप कुछ भी सोच सकते हैं। बाद में जब उसे धन की प्राप्ति हो गई, उसके पास लीवर से बना एक पियानो था जिसे धक्का देकर वह की बोर्ड हटा लेता था और यांत्रिक रूप से उसे दूसरी की मिल जाया करती थी।

उसने अपने काम से यह महसूस किया कि उसे दिन में कई गीत लिखना चाहिये। कुछ समय तक उसने कई गीत लिखे। उसके प्रकाशकों ने सोचा कि इन गीतों को अन्य गीतकारों के नाम देकर छपाया जाय और उन प्रकाशकों ने उसके कुछ अन्य नाम रख लिये। बर्लिन के लिये यह संभव नहीं था कि वह गीत पूरा करके उसे अपने ही तक सीमित रख सके। उसे जो कोई भी पहिला व्यक्ति मिलता, वह उसे सुना देता था। वह सोचा करता था कि यह कितनी अच्छी बात होगी यदि वह अपने गीतों को ब्रोडवे में गा सके। कुछ ही वर्ष

बाद यह बात सच निकली और उसने न्यूयार्क में ही गीत नहीं गाये बल्कि लंदन में भी अपने गीत प्रस्तुत किये।

इस समय से बहुत पूर्व वह अपनी माँ के पास घर लौट आया उसने अपने लड़के का बहुत स्वागत किया और उसे इस बात पर तनिक भी न झिड़का कि वह क्यों भाग गया था। परन्तु उसकी माँ को यह सदैव रहस्य ही लगता रहा कि वह छोटा इज्ञी गीतकार कैसे बन गया। जब वह बहुत धनी हो गया और अपनी माँ के लिये सुन्दर और मंहगे उपहार लाया तो उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि उसका बेटा गीतकार कैसे बन गया। उन उपहार की वस्तुओं में रोकिंग चेयर भी थी जिसे पाने के लिये उसकी माँ की उत्कट इच्छा थी। उसने सबसे पहिले रोकिंग चेयर ही अपनी माँ को लाकर दी। वह उस कुर्सी को कभी नहीं छोड़ सकी जबकि उसके स्थान पर अच्छी और नई कुर्सी भी आ सकती थी।

वह तेईस वर्ष का हो गया। वह बहुत प्रसन्न रहता था। आखिरकार वह इर्विंग बर्लिन ही बन गया। वह अपने घर से तेरह वर्ष की आयु में भाग गया था, उस समय वह हृदय से बहुत दुःखी और निराश था, वह बावरी में निर्धन घूमा करता था और किसी प्रकाशक को ट्यून सुनाता तो उसकी हँसी उड़ाई जाती थी। वही लड़का दस वर्ष बाद टिन पैन एली में गीतकार बन गया। टिन पैन ऐली ब्रोडवे के थियेटरों के लिये प्रसिद्ध हो चुका था। वह 'दी फ्राइस' क्लब में एक्टर चुन लिया गया।

अब हंकी-टांक के पियानोवादक पुरानी परम्परा से हटकर अलग मेलोडी निकाल रहे थे जिससे रिद्म में कभी-कभी हिचकी जैसे स्वर आ जाते थे और उस रिद्म को कभी कभी इतना तेज़ कर दिया जाता था कि वह रिद्म नीग्रो नर्तकों को कंधे हिलाते समय और शरीर में बल खाते समय मेल खा सके। यह नई रिदम रैगटाइम थी और इसकी धूम सारे संसार में मच गई तथा इसे अमरीका की नवीन कृति समझा गया।

एक दिन फ्रायर्स एक बड़ी पार्टी देने जा रहे थे जिसे वे अपना फ़ोलिक कहा करते थे। उन्होंने अपने नये सदस्य को यह नई बात पूरी करने के लिये

बाद यह बात सच निकली और उसने न्यूयार्क में ही गीत नहीं गाये बल्कि लंदन में भी अपने गीत प्रस्तुत किये।

इस समय से बहुत पूर्व वह अपनी माँ के पास घर लौट आया उसने अपने लड़के का बहुत स्वागत किया और उसे इस बात पर तनिक भी न झिड़का कि वह क्यों भाग गया था। परन्तु उसकी माँ को यह सदैव रहस्य ही लगता रहा कि वह छोटा इज्जी गीतकार कैसे बन गया। जब वह बहुत धनी हो गया और अपनी माँ के लिये सुन्दर और मंहगे उपहार लाया तो उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि उसका बेटा गीतकार कैसे बन गया। उन उपहार की वस्तुओं में रोकिंग चेयर भी थी जिसे पाने के लिये उसकी माँ की उत्कट इच्छा थी। उसने सबसे पहिले रोकिंग चेयर ही अपनी माँ को लाकर दी। वह उस कुर्सी को कभी नहीं छोड़ सकी जबकि उसके स्थान पर अच्छी और नई कुर्सी भी आ सकती थी।

वह तेईस वर्ष का हो गया। वह बहुत प्रसन्न रहता था। आखिरकार वह इर्विंग बर्लिन ही बन गया। वह अपने घर से तेरह वर्ष की आयु में भाग गया था, उस समय वह हृदय से बहुत दुःखी और निराश था, वह बावरी में निर्धन घूमा करता था और किसी प्रकाशक को ट्यून सुनाता तो उसकी हँसी उड़ाई जाती थी। वही लड़का दस वर्ष बाद टिन पैन एली में गीतकार बन गया। टिन पैन ऐली ब्रोडवे के थियेटरों के लिये प्रसिद्ध हो चुका था। वह 'दी फ्राइस' क्लब में एक्टर चुन लिया गया।

अब हंकी-टांक के पियानोवादक पुरानी परम्परा से हटकर अलग मेलोडी निकाल रहे थे जिससे रिद्म में कभी-कभी हिचकी जैसे स्वर आ जाते थे और उस रिद्म को कभी कभी इतना तेज़ कर दिया जाता था कि वह रिद्म नीग्रो नर्तकों को कंधे हिलाते समय और शरीर में बल खाते समय मेल खा सके। यह नई रिदम रैगटाइम थी और इसकी धूम सारे संसार में मच गई तथा इसे अमरीका की नवीन कृति समझा गया।

एक दिन फ्रायर्स एक बड़ी पार्टी देने जा रहे थे जिसे वे अपना फ्रोलिक कहा करते थे। उन्होंने अपने नये सदस्य को यह नई बात पूरी करने के लिये

कहा। उसने उन्हें अपनी नई रचना सुनाई। उसने अपने कंधे हिलाये, पैर थपथपाये, गीत गाया और ऐसे मुस्करा उठा कि वह सभी को आमंत्रित कर रहा है :

कम ऑन एण्ड हियर,
कम ऑन एण्ड हियर
एलेग्जेंडर्स रेगटाइम बैण्ड।

वह एक हिट था। प्रत्येक व्यक्ति ने उस गीत को गया। वह गीत सारे संसार में फैल गया। कुछ ही समय में उस रचना की डेढ़ लाख प्रतियाँ बिक गईं। शायद इससे भी अधिक प्रतियाँ ही बिकी हों। संयुक्त राज्य अमरीका में शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें पियानो न हो और उस पियानो पर **एलेक्जेण्डर्स रैगटाइम बैण्ड** की धुनें न बजी हों।

अब बर्लिन को जीवन मिल गया। उसे अब चिन्ता करने की आवश्यकता न थी। वह अच्छे कमरों में रह सकता था और अब उसे अपने सोने के लिये फायर-एस्केप जैसे कुछ स्थानों को खोजने की आवश्यकता न थी। उसके कठोर दिन बीत चुके थे। वह सड़क पर घूमने-फिरने वाला छोटा लड़का अपनी आयु के बीस वर्षों के बाद संसार का सबसे अधिक लोकप्रिय गीतकार हो गया। उसे अपने परिश्रम से ही यह सफलता मिली थी। उसका ऐसा कोई धनी चाचा नहीं था जो उसकी सहायता करता। उसका कोई भी सहायक न था। वह अपने आप ही कठोर जीवन से उभर कर आगे आया था।

उसने अपने बचपन के दिन और रात केबेरेट्स और म्यूज़िक हाल में बिताये और वहाँ उसने ऐसा संगीत सुना जिसे लोग अपने मनो-विनोद के लिये सुना करते थे। वह प्रत्येक वस्तु देखने में कुशल था। वह वस्तुओं को देखा करता और अपने से पूछा करता कि कुछ ट्यून ही क्यों लोकप्रिय हैं। इस प्रकार वह ऐसी ट्यून को समझने का आदी हो गया जिन्हें अधिक पसन्द किया जाता था और बाद में वह संगीत का प्रकाशक भी बन गया। वह इस प्रकार की भावनाओं को जान गया था जिससे भीड़ को अपनी ओर आकर्षित किया

जाय, चाहे गीत हास्य पूर्ण या कामिक का हो, प्यार का हो अथवा ऐसा गीत हो जिसे सुनकर आँखों से आँसू बह उठें।

वह निगर माइक के यहाँ सिंगिंग-वेटर रहा था और अब दस वर्ष बाद वह इंग्लैण्ड आया। वह लंदन के थियेटर और संगीत के सर्किल का सदस्य ही नहीं बना बल्कि 'स्मार्ट सोसाइटी' ने भी उसे अपना लिया। जब वह लंदन में था तो एक दिन चार बजे वह उठा और **दी इण्टरनेशनल रैग** नामक गीत की रचना करने लगा। उसी दिन दोपहर के बाद वह थियेटर में नई ट्यून गा रहा था।

कई लोगों ने उसे बधाई दी, बर्लिन की बहुत प्रशंसा की गई लेकिन उसे उस बच्चे द्वारा की गई प्रशंसा सबसे अधिक अच्छी लगी जिसे इस बात का पता भी न था कि वह उसकी प्रशंसा कर रहा है। लंदन की पहिली यात्रा पर अखबार बेचने वाले लड़के ने उसकी गाड़ी का दरवाजा इस आशा में खोला कि शायद उसे यहाँ से एक पेनी मिल जाय। वह यह कभी नहीं जान सका कि अमरीकी महाशय इतने मुक्त हाथों से उसे पाँच डालर के लगभग क्यों दे रहे हैं। कारण था—उस लड़के का **ऐलेग्जण्डर रैगटाइम बैण्ड** की धुन का गुनगुनाना।

मिस्टर बर्लिन ने कभी नोट के साथ गीत का पाठ करना नहीं सीखा। संगीत उसके दिमाग पर छाया रहता था। वह उसे अपने कानों से सुनकर समझ लेता था। वह जिस गीत की रचना कर लेता था, उसकी धुन बना लेता था और उसे किसी अरेंजर को लिखने के लिये दे देता था। उसे यह पता था कि वह कहाँ तक संगीत में काम कर सकता है और कहाँ उसकी असमर्थता है। इसीलिये वह संगीतकार के रूप में अपने मार्ग में नहीं भटका बल्कि एक गीतकार ही बना रहा, लेकिन उसने ब्रोडवे में ही नहीं अपितु सारे संसार में सबसे अधिक गीतों की और लोकप्रिय गीतों की रचना की।

किसी संगीत अध्यापक ने उसे कभी 'की' नहीं बताई। उसे यह कभी भी पता नहीं था कि संगीत में एक की से दूसरी की में परिवर्तन हो सकता

है। उसे यह एक दिन तब पता लगा जब वह स्वयं चिन्तन कर रहा था। उसने कहा :

"मैंने इसे अपने लिये खोजा है और मुझे यह इतना प्रिय है कि मुझे जहाँ अवसर मिलता है, मैं इसका प्रयोग करता हूँ और मैंने हजारों डालर इसके द्वारा कमाये हैं।"

जब वह बीस वर्ष से ऊपर हो गया, उसे अपने जीवन के कदाचित सबसे मधुर क्षण मिले और आप अनुमान लगायें कि उसे न जाने कितनी बार सुखद क्षण मिले होंगे।

सूर्य डूबने के बाद एक संध्या को वह टेक्सी में बैठकर अपनी माँ से मिलने उसकी फ्लेट पर गया। वहाँ वह उस समय भी एक कमरे के घर में रह रही थी। उसे यकायक अपनी माँ से संकोच और लज्जा लगी क्योंकि वह एक बड़ी बात करने जा रहा था। उसने अपनी माँ को धीरे से बताया कि वह दूसरे बहिन और भाइयों को लेकर उसके साथ गाड़ी में बैठकर चले। माँ ने आपत्ति की कि उसे रात का भोजन तैयार करना है और टेक्सी में घूमना अत्यन्त महंगा होता है। और वह ऐसी व्यर्थ की बातों को सोच भी नहीं सकती। लेकिन उसने इतनी अधिक ज़िद की कि माँ को मानना पड़ा और सारा परिवार कैब में बैठ गया। वे कोलाहल पूर्ण सड़कों पर एक ब्लाक से दूसरे ब्लाक को पार करते हुये शहर की ओर बढ़े। अंत में वे एक सुन्दर रोशनी से जगमगाते नये मकान के सामने रुके। वे अन्दर गये और खूब सजे-सजाये एक सुन्दर हाल से होकर एक सुन्दर खाने के कमरे में पहुँचे। यहाँ पर खाने का सारा प्रवन्ध हो चुका था और एक महिला प्रतीक्षा कर रही थी।

बेचारे इर्वी ने भाषण देना चाहा। उसने इसके लिये तैयारी की थी कि उसे कुछ कहना है लेकिन वह कुछ कह नही सका। वह भावनाओं से इतना विभोर हो चुका था कि उसका गला भर आया। वह केवल माँ के लिये कुर्सी खींच सका जिससे उसका परिवार यह जान सके कि यह नया घर उनका अपना है जो उसने एक गीत लिखकर खरीदा था। उसने उस दिन की याद

जाय, चाहे गीत हास्य पूर्ण या कामिक का हो, प्यार का हो अथवा ऐसा गीत हो जिसे सुनकर आँखों से आँसू बह उठें।

वह निगर माइक के यहाँ सिंगिंग-वेटर रहा था और अब दस वर्ष बाद वह इंग्लैण्ड आया। वह लंदन के थियेटर और संगीत के सर्किल का सदस्य ही नहीं बना बल्कि 'स्मार्ट सोसाइटी' ने भी उसे अपना लिया। जब वह लंदन में था तो एक दिन चार बजे वह उठा और **दी इण्टरनेशनल रैग** नामक गीत की रचना करने लगा। उसी दिन दोपहर के बाद वह थियेटर में नई ट्यून गा रहा था।

कई लोगों ने उसे बधाई दी, बर्लिन की बहुत प्रशंसा की गई लेकिन उसे उस बच्चे द्वारा की गई प्रशंसा सबसे अधिक अच्छी लगी जिसे इस बात का पता भी न था कि वह उसकी प्रशंसा कर रहा है। लंदन की पहिली यात्रा पर अखबार बेचने वाले लड़के ने उसकी गाड़ी का दरवाजा इस आशा में खोला कि शायद उसे यहाँ से एक पेनी मिल जाय। वह यह कभी नहीं जान सका कि अमरीकी महाशय इतने मुक्त हाथों से उसे पाँच डालर के लगभग क्यों दे रहे हैं। कारण था—उस लड़के का **ऐलेक्जण्डर रैगटाइम बैण्ड** की धुन का गुनगुनाना।

मिस्टर बर्लिन ने कभी नोट के साथ गीत का पाठ करना नहीं सीखा। संगीत उसके दिमाग पर छाया रहता था। वह उसे अपने कानों से सुनकर समझ लेता था। वह जिस गीत की रचना कर लेता था, उसकी धुन बना लेता था और उसे किसी अरेंजर को लिखने के लिये दे देता था। उसे यह पता था कि वह कहाँ तक संगीत में काम कर सकता है और कहाँ उसकी असमर्थता है। इसीलिये वह संगीतकार के रूप में अपने मार्ग में नहीं भटका बल्कि एक गीतकार ही बना रहा, लेकिन उसने ब्रोडवे में ही नहीं अपितु सारे संसार में सबसे अधिक गीतों की और लोकप्रिय गीतों की रचना की।

किसी संगीत अध्यापक ने उसे कभी 'की' नहीं बताई। उसे यह कभी भी पता नहीं था कि संगीत में एक की से दूसरी की में परिवर्तन हो सकता

है। उसे यह एक दिन तब पता लगा जब वह स्वयं चिन्तन कर रहा था। उसने कहा :

"मैंने इसे अपने लिये खोजा है और मुझे यह इतना प्रिय है कि मुझे जहाँ अवसर मिलता है, मैं इसका प्रयोग करता हूँ और मैंने हजारों डालर इसके द्वारा कमाये हैं।"

जब वह बीस वर्ष से ऊपर हो गया, उसे अपने जीवन के कदाचित सबसे मधुर क्षण मिले और आप अनुमान लगायें कि उसे न जाने कितनी बार सुखद क्षण मिले होंगे।

सूर्य डूबने के बाद एक संध्या को वह टेक्सी में बैठकर अपनी माँ से मिलने उसकी फ्लेट पर गया। वहाँ वह उस समय भी एक कमरे के घर में रह रही थी। उसे यकायक अपनी माँ से संकोच और लज्जा लगी क्योंकि वह एक बड़ी बात करने जा रहा था। उसने अपनी माँ को धीरे से बताया कि वह दूसरे बहिन और भाइयों को लेकर उसके साथ गाड़ी में बैठकर चले। माँ ने आपत्ति की कि उसे रात का भोजन तैयार करना है और टेक्सी में घूमना अत्यन्त महंगा होता है। और वह ऐसी व्यर्थ की बातों को सोच भी नहीं सकती। लेकिन उसने इतनी अधिक ज़िद की कि माँ को मानना पड़ा और सारा परिवार कैब में बैठ गया। वे कोलाहल पूर्ण सड़कों पर एक ब्लाक से दूसरे ब्लाक को पार करते हुये शहर की ओर बढ़े। अंत में वे एक सुन्दर रोशनी से जगमगाते नये मकान के सामने रुके। वे अन्दर गये और खूब सजे-सजाये एक सुन्दर हाल से होकर एक सुन्दर खाने के कमरे में पहुँचे। यहाँ पर खाने का सारा प्रबन्ध हो चुका था और एक महिला प्रतीक्षा कर रही थी।

बेचारे इज़ी ने भाषण देना चाहा। उसने इसके लिये तैयारी की थी कि उसे कुछ कहना है लेकिन वह कुछ कह नहीं सका। वह भावनाओं से इतना विभोर हो चुका था कि उसका गला भर आया। वह केवल माँ के लिये कुर्सी खींच सका जिससे उसका परिवार यह जान सके कि यह नया घर उनका अपना है जो उसने एक गीत लिखकर खरीदा था। उसने उस दिन की याद

दिलाई जब उसकी माँ ने रात का खाना नहीं बनाया था और वह **अपने घर** से भाग गया था। वह अपना टोप पहिने सड़कों पर सारी रात आवारा घूमता रहा जब तक सूर्य उदय न हुआ। उसे उस दिन रात का भोजन न मिला, उसके मन में उस कठोर जीवन की याद बार-बार आ रही थी कि उसने कैसे सड़कों पर इधर-उधर भटक कर अपना समय बिताया है और केवल गीत का सहारा लेकर वह जिन्दगी में आगे बढ़ सका और खुश रहा।

जिस वर्ष **एलेक्जेण्डर रैगटाइम** का बैण्ड संसार में अपना स्थान बना रहा था, उसी वर्ष इर्विन बर्लिन एक लड़की के प्रेम में फंस गया और उसकी सगाई हो गई। वह और उसकी पत्नी बहुत कम आयु की थी, उनकी प्रसन्नता के लिये सभी कुछ आदर्शपूर्ण था। दुलहन सुहागरात के दिन बहुत बीमार हो गई और उसी बीमारी के कारण कुछ दिन बाद वह परलोक सिधार गई। अब गीतकार दुःखी था और उसके गीत भी दुःख से भरे थे। उसने अपने दुःख को भुलाने के लिये योरुप की यात्रा की, अब वह लोकप्रिय गीतों की रचना नहीं कर पाता था और एक ऐसा दिन आया कि उसने अपनी उदासी को अभिव्यक्त करके एक गीत लिखा तथा उसे अपने प्रकाशक. को दे आया। गीत की पंक्ति थी—**व्हेन आई लॉस्ट यू**। कुछ ही समय में वह गीत सभी के मन को अच्छा लगने लगा। उस गीत की दस लाख प्रतियाँ बिकीं। उस गीत से उसको पर्याप्त धन मिला लेकिन सबसे अधिक महत्व की बात यह थी कि उसे अपने दुःख से मुक्ति मिल गई। इसके बाद वह फिर गीत लिखने लगा। कई वर्ष बाद उसने फिर विवाह कर लिया।

कुछ वर्ष बाद विश्व-महायुद्ध में वर्लिन की फौज में भरती हो गया। उसे अपना सुखदायक घर छोड़ना पड़ा। उस घर में उसके पास एक रसोइया, वेलेट और शॉफर था और यॉपहैंक के केम्प अपटोन में डफ बाय के समान 'पील पोटेटोज़' भी थे। वह विदेश जाना चाहता था तथा सैनिकों के लिये गीत गाना चाहता था और उनका उसी प्रकार मनोरंजन करना चाहता था जैसा कि कुछ अभिनेताओं और अभिनेत्रियों ने उनका मनोविनोद किया हो लेकिन ऐसा करने की अनुमति नहीं दी गई। उसने बचपन से ही कठिनाइयों

का सामना किया था और वह प्रयत्न करके धनी बना था लेकिन धन से वह बिगड़ा नहीं था। वह युवक ऐसी दुःखद घटना से अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहता था। जब उसे इस बात का पता लगा कि जनरल को अपने सैनिकों और अतिथियों के लिये अधिक सुखद कैम्प बनाने के लिये प्रचुर धन की आवश्यकता है तो इर्विंग बर्लिन ने नये खेल **यिप-यिप-याफांक** के लिये गीत लिखे और वह खेल न्यूयार्क में खेला गया। बर्लिन के गीत अधिक लोकप्रिय हुए। उसकी माँ ने यह आग्रह किया कि वह अपने लड़को को वर्दी में देखे। बर्लिन विशाल रंगमंच पर आया, उस समय वह अकेला, था, वह खाकी बर्दी पहिने था और 'पेल' के सहारे झुका हुआ था। उसने अपने को अकिंचन अदना बताया और गीत गाया। उस गीत में सैनिक के जीवन की कठिनाइयों का वर्णन किया है। उसके गीत से हाल के सभी दर्शक मुग्ध हो गये। उस शो से अस्सी हजार डालर मिले और उसने अपने गीत के लिये एक सेण्ट भी नहीं लिया।

उसी शो में एक अन्य गीत लोकप्रिय बन गया—**ओह, हाऊ आई हेट टू गेट अप इन दी मोर्निंग**। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि उस गीत का प्रभाव कैम्प के प्रत्येक बच्चे पर हुआ। वे सभी सुबह नहीं उठना चाहते थे। लेकिन बर्लिन के गीत से विचित्र ही प्रभाव पड़ा। वह जब निगर माइक के यहाँ काम करता था तभी से सारी-सारी रात काम करने का अभ्यासी हो गया था और काम करते-करते सुबह कर देता था।

जब उसने पहिली बार **दी बेगर्स ओपेरा** देखा तो उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और स्वयं शो के लिये संगीत रचना के लिये लालायित हो उठा। उसका एक मित्र था जिसका नाम सेम हेरिस था। वह खेल दिखाने का व्यवसाय किया करता था। सेम हेरिस ने अपने थियेटर का नाम म्यूजिक बॉक्स रखा था। वह वचपन से थियेटर का यही नाम रखना चाहता था। उसने 'म्यूज़िक बाक्स' के लिये एक के बाद दूसरे 'रिव्यू' की रचना की और वह बराबर गीत लिखता रहा। वह कभी भागा नहीं। वह अब भी गीत

लिख रहा है और यदि आप न्यूयार्क जायं तो आप यही सुनेंगे कि खेल का संगीत इर्विंग बर्लिन ने तैयार किया है।

उसके गीत उसके समकालीन गीतकारों की अपेक्षा बहुत बिके। लेकिन उसने बहुत परिश्रम किया था। मिस्टर बर्लिन ने अपनी गीत-रचना विधि के बारे में यह बताया है कि उसके मस्तिष्क में एक विचार आता है और तभी वह उसके शीर्षक के बारे में विचार करता है। वह शीर्षक को बहुत महत्व देता है। उसके बाद वह मुख्य संगीत का विचार करता है और उसके लिये शब्द चुनता है कभी-कभी वह एक गीत के लिये सप्ताहों तक काम करता है और उसके बाद कुछ लिखता है। उसकी अद्भुत स्मरण शक्ति केवल संगीत तक ही सीमित नहीं है।

गीतकार की कोई हॉबी नहीं थी, वह कहता है कि उसकी हॉबी ही उसका काम है। वह गाने और गीत-रचना का समस्त श्रेय अपने पिता को देता है। वह जेरोम कर्न के संगीत का महान प्रशंसक है। उसका प्रथम आदर्श संगीतकार तथा नर्तक जार्ज एम० कोहन था। अब यदि उसे कोई यह पूछे कि उसे कौन से अपने गीत सबसे अधिक प्रभावित करते हैं तो वह यह उत्तर देता है **"गाड ब्लेस अमेरिका।"**

संगीतकार जॉन एलडन कारपेंटर ने एक बार कहा, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि वर्ष २००० में संगीत का ऐतिहासकार एक ही दिन अमरीका के संगीत और इर्विंग बर्लिन का जन्म दिन समझेगा।" जेरोम कर्न ने कहा, "इर्विंग बर्लिन का अमरीकी संगीत के क्षेत्र में स्थान नहीं है, वह स्वयं अमरीकी संगीत है।" कर्न ने ही **एनी गेट योर गन** के लिये संगीत की रचना की थी। लेकिन उसका निधन हो गया और फिर **ओकलाहोमा के** ख्याति प्राप्त एजर्स और हेयरस्टीन ने बर्लिन से संगीत-रचना के लिये कहा। बर्लिन ने कहा कि वह उस प्रकार के संगीत की रचना नहीं कर सका, वह संगीत कठिन ही था। शायद वह यह भूल गया था कि उसने भी पहिली बार उसी प्रकार के संगीत की रचना की थी। उन्होंने शुक्रवार को बात की, राजर्स ने बर्लिन के पास पुस्तक छोड़ दी और उससे कहा कि सोमवार को वह उसके साथ दोपहर का भोजन करे

ग्रौर उसे यह ग्राशा है कि उस समय तक उसके मन में वैसे संगीत की रचना का विचार ग्रा जायेगा। सोमवार तक र्बालन ने उस पुस्तक को केवल पढ़ा ही नहीं बल्कि यह लिखा, "वह पुस्तक वस्तुतः सुन्दर है।" ग्रौर यू काण्ट गेट ए मैन व्हिद ए गन का एक भाग है। बाद में वह इस संगीत-शो को ग्रपने जीवन का सबसे ग्रधिक व्यावसायिक कार्य समझने लगा।

र्बालन ने 'गाड ब्लेस ग्रमेरिका' फण्ड की स्थापना की ग्रौर उसमें ग्रपने इस गीत की ग्राय जमा करा दी। इस फण्ड का मुख्य उद्देश्य यही था कि ग्रमरीका के स्काउटों ग्रौर गर्ल गाइडों को लाभ मिले। लाखों डालर वितरित कर दिये गये। उसने प्रथम विश्व महायुद्ध में इस उद्देश्य के लिये गीत लिखा था लेकिन उसे यह महसूस हुग्रा कि जनता का मन सहानुभूतिपूर्ण नहीं है ग्रतः उसने १९३८ तक इस गीत को प्रकाशित नहीं किया। उसने उस गीत को पूर्णतया समयबद्ध कर लिया था।

उसके जीवन में एक ग्रन्य गौरवपूर्ण ग्रवसर ग्राया। ग्रंकल साम ने उसके **दिस इज द ग्रार्मी** गीत को प्रस्तुत किया। र्बालन ने ग्रार्मी इमर्जेंसी रिलीफ फण्ड के लिये संगीत-शो का विचार किया था ग्रौर इससे जो ग्राय हुई वह उसी फण्ड में जमा कर दी गई। गीतकार ने उस खेल के साथ ग्रपने देश ग्रौर विदेश में तीन वर्ष बिताये वह फिर १९१७ में डफ व्वाय यूनीफार्म में रंगमंच पर ग्राया ग्रौर उसने बीस वर्ष पुराना लोकप्रिय गीत **यिप यिप याफांक** गाया। दर्शकों को प्रसन्नता हुई ग्रौर उन्होंने उसे मन से चाहा। रोजर्स ग्रौर हेमर्स्टीन ने १९४८ में उसकी षष्ठी जन्म-दिवस तथा संगीतकार के चालीसवें वर्ष के मनाने के उपलक्ष में जूलियर्ड स्कूल ग्रॉफ म्यूजिक में इर्विन र्बालन छात्र-वृत्ति की घोषणा की। उसके गीतों को उसके देशवासी सदा गाने के इच्छुक रहते थे।

[इर्विग र्बालन ११ मई, १८८८ में रूस में पैदा हुग्रा। जब वह चार वर्ष का था, ग्रमरीका ग्राया ग्रौर १९५८ से न्यूयार्क में रह रहा है।]

रॉय हेरिस

"हमारी संगीत की पसन्द सुनने से बढ़ती है...विवेक से नहीं।"

गत शताब्दी के अन्त में संयुक्त राज्य अमरीका के सीमान्त प्रदेश का जीवन समाप्त हो रहा था। तीन सौ वर्षों से भी कम अवधि में हमारा महान देश मूल निवासियों के अदन के बाग जैसे प्राकृतिक वनों के जीवन से उभरकर सभ्यता के विविध कार्यों में लगा हुआ था। इस शताब्दी के प्रारंभ होने के कुछ समय पूर्व सीमान्त प्रदेश में अन्तिम बार काफी लोग आये। उसी समय सबसे पहिले हेरिस भी अपनी पत्नी के साथ बैलों की गाड़ी में बैठकर ओक-लाहोमा पहुँचा। वे लिंकन काउंटी में शैंडली के समीप आकर बस गये। उस दम्पत्ति के पास बैंग और गाड़ी के अलावा कुल्हाड़ी, कुछ आटा और शक्कर थी। उन्होंने कुल्हाड़ी से पेड़ काटे और लट्ठे बनाये। फिर उन्होंने अपनी केबिन तैयार की। वे बन्दूक से शिकार करके अपना भोजन जुटाने लगे। उन्होंने सरकारी घर को स्वीकार नहीं किया बल्कि सिमेरन सीमान्त प्रदेश में अपने फार्म पर खेती करने के लिये कुछ वर्षों के लिये बस गये।

पहिले वर्ष उस केबिन में उनके पुत्र का जन्म हुआ। बाप-दादे स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम रॉय रखा। लट्ठे की केबिन में किसी संगीतकार का जन्म स्थान होना इतनी आश्चर्यजनक बात है जितना कि ऐसी ही केबिन में प्रेसीडेंट का जन्म होना। रॉय हेरिस उसी दिन पैदा हुआ था जिस दिन लिंकन का जन्म हुआ। आखिरकार वह एक संगीतकार हो गया।

कुछ वर्षों में हेरिस परिवार को यह लगा कि उन्हें कहीं अन्यत्र जाना पड़ेगा क्योंकि वहाँ की जलवायु रॉय की माँ के अनुकूल न थी। जब वह बालक पाँच वर्ष का हो गया, उसके पिता ने अपना सारा सामान बाँध लिया और परिवार के साथ वेगन से केलीफोर्निया को चल दिये। वहाँ रॉय बड़ा हुआ।

उन्हीं दिनों में उसके चारों ओर देश की प्रगति हुई। उसने छोटी-छोटी बस्तियों को एक बड़े शहर में बदलते हुये देखा और बड़े-बड़े हरे-भरे खेत छोटे-छोटे फार्मों में बदले जाने लगे। सेन गेब्रील वेली में संतरों और वालनट के बाग बन गये।

रॉय की माँ सिर्फ सुनकर भी पियानो बजा सकती थीं। उन्होंने अपने लड़के को बहुत कम आयु में पियानो बजाना सिखाया। जब वह दस वर्ष का हुआ तो वह पियानो इतना अच्छा बजा लेता था कि उसे उस प्रदेश के स्थानीय मनोरंजक-कार्यक्रमों में प्रमुख वादक के रूप में भाग लेने के अवसर मिलने लगे। उसने पब्लिक स्कूल जाना शुरू किया। उस स्कूल के लड़कों को संगीत नहीं आता था। उन्होंने रॉय की सफलताओं की मज़ाक बनाई क्योंकि संगीत को 'सिसियश' माना जाता था। अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिये यह आम बात है। चाहे युवक हो या वृद्ध, लोग उन सभी बातों की मज़ाक बनाते हैं जिन्हें वे नहीं जानते हैं। जब किसी लड़के की माँ कोई बात कहती है और स्कूल के अन्य सभी लड़के उससे उल्टी बात करते हैं तो यह स्वाभाविक है कि लड़का अन्य लड़कों की बताई बात को सही माने। इस बात के पता लगाने में लड़के को प्रायः कुछ एक वर्ष लग जाते हैं कि माता की कही हुई बातें ही सही थीं। खैर उस भावी संगीतकार ने संगीत छोड़ दिया और उसकी जगह पर वह बेस-बाल और टेनिस खेलने में लगा। सही मानों में पुरुष होने की ख्याति उसने अर्जित की। यह तब हो पाया जब उसकी नाक, बायाँ हाथ और दाहिने हाथ की तर्जनी टूट गई।

जब हाई स्कूल के प्रथम वर्ष में उसके 'सिसी' कहकर चिढ़ाये जाने की संभावना नहीं रही तो उसने क्लेयरनेट सीखना शुरू किया। कुछ ही समय में वह बैण्ड भी बजाने लगा और उसे सिम्फनी ओरकेस्ट्रा में स्थान मिलने लगा। अठारह वर्ष की आयु में उसने अपना फार्म खोल लिया जिसमें वह बेरियाँ और आलू बोता था।

इस अग्रणी ग्राम-बालक के असाधारण चरित्र की विशेषता यह थी कि वह अनोखे विषयों को पढ़ने के लिये उत्सुक रहता था। उसका मस्तिष्क बड़ा

जिज्ञासु था और वह स्वयं इतना परिश्रमी था कि वह चीजों की खोज कर सके। जब वह फार्म पर काम करता था तो वह उस समय ग्रीक दर्शन भी अध्ययन करता था और साथ ही क्लेयरनेट भी बजाता था।

प्रथम महायुद्ध में रॉय हेरिस ने निजी सेवक के रूप में कार्य किया। एक वर्ष बाद केलीफोर्निया में लौट आने पर मक्खन और अंडे को प्रतिदिन वितरण करने के लिये वह एक ट्रक का ड्राइवर हो गया। इस समय तक यह निश्चित कर लेने के बाद कि वह संगीत के बारे में अधिक जानने को इच्छुक है, उसने रात में हारमोनी का अध्ययन करना शुरू किया और केलीफोर्निया यूनिवर्सिटी की दक्षिण शाखा के सायंकाल कक्षा में भी जाने लगा। उसने हिन्दू नीति-शास्त्र भी पढ़ा।

कुछ दिनों तक **लास एन्जिल्स इलेस्ट्रटेड डेली न्यूज** में हेरिस ने संगीत की समालोचनाएं लिखीं लेकिन अपना समय रचना के लिये देने के हेतु उसने समालोचना करना छोड़ दिया। उसने बाद में यह कहा था कि एक प्रथम श्रेणी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण उतना ही दुर्लभ है और उतना ही प्रशिक्षण चाहता है जितना कि प्रथम श्रेणी के सृजनात्मक प्रतिभा को।

सेन्स फ़ान्सिस्को सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के चालक एलबर्ट हट्‌र्ज ने जब रॉय हेरिस का सिम्फोनिक कार्य देखा जो उसने उस समय रचा था जब उसने उसके बारे में कोई अध्ययन भी नहीं किया था तो एलबर्ट हट्‌र्ज ने उस किसान को यह सलाह दी कि वह शेष सारे कार्यों को छोड़कर एक रचियता बन जाय। मिस्टर हेरिस उस समय तक बीस वर्ष की आयु से अधिक हो चुके थे जब उन्होंने संगीत को अपना व्यवसाय बनाने का निश्चय किया। हर्ष का विषय है कि उसको आर्थर फ़ारविल के रूप में एक योग्य अध्यापक मिल गये जिन्होंने उसे दो वर्ष तक गीत-रचना करना सिखाया और जो यह महसूस करते थे कि हेरिस के रूप में उन्हें एक ऐसा शिष्य मिला है जो एक दिन सारे संसार को चुनौती देगा। इस अध्यापक के साथ रॉय हेरिस ने अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रगति की। स्ट्रिंग क्वार्टेट के लिये उसने एक **सूट** की रचना की और ओरकेस्ट्रा के लिये एक **एन्डेन्टे** रचा जो न्यूयार्क के फिलार्मोनिक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा

के स्टेडियम कंसर्ट में न्यूयार्क में बजाये जाने वाले कार्यक्रमों में चुना गया था। रचिबता की आयु उस समय अट्ठाईस वर्ष थी। वह अपनी रचनाओं को सुनने के लिये भागता हुआ देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचा।

पश्चिमी देश के नवीन संगीत ने देश के लोगों का ध्यान आकर्षित किया और एक दयालु सज्जन ने हेरिस को अध्ययन के लिये विदेश जाने में सहायता की। एक वर्ष बाद स्ट्रिंग क्वार्टेट के लिये उसके **कंसर्टो** पियानो और क्लेरिनियेट का वाद्य-वादन पेरिस में हुआ। कुछ ही दिन बाद उसका **पियानो सोनेटा** भी बजाया। ये रचनाएँ निश्चित रूप से उसकी पहिली रचनाओं से अधिक श्रेष्ठ और उन्नत थीं। इन्हीं के कारण उसे दो वर्षों के लिये गोगिनहेम फलोशिप मिली। उसने नाडिया बोलंगर के साथ भी अध्ययन किया जो अनेक आधुनिक रचियताओं की अध्यापिका रह चुकी थीं।

उसकी आयु ३१ वर्ष की हो गई। विदेश में वह अपने अन्तिम वर्ष रह रहा था कि उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई जिसके कारण उसे अस्पताल में ६ महीने रहना पड़ा। निदान उसका योरुप में अध्ययन कार्य समाप्त हो गया। वह आपरेशन के लिये अपने देश लौट आया और वहाँ स्वस्थ होने के लिये बहुत दिन तक घर ही रहा। उसने इन दिनों में **स्ट्रिंग क्वार्टेट** के लिये रचनाएँ कीं।

उसके जीवन में यह पहला अवसर था जबकि उसने प्यानो की सहायता से रचनाएँ की थीं। इसके पूर्व वह रचनाओं को लिख लिया करता था। और उन्हें फिर भी बोर्ड पर सेट किया करता था। अब उसे अपनी इच्छानुसार लिखने के लिये समय मिल गया था जब वह अच्छा हो गया उसने नेपसेक लेकर जंगलों में विचरण किया। वे जंगल बहुत खामोश थे जहाँ वह अपने संगीत की रचना कर सकता था। इसके अतिरिक्त वह पहिले की अपेक्षा दस गुनी तेजी से लिख सकता था। उसके लिखने की टेक्नीक मंज चुकी थी। उसकी शैली में लय की अपेक्षा अधिक प्रभाव था। संगीतकार को यह महसूस हुआ कि उसके जीवन में उस दुर्घटना से अनायास दस वर्ष की कलात्मक अभिरुचि और पैदा हो गई है।

एक संगीत के लेखक और संगीतकारों* ने एक बार यह लिखा कि स्ट्रिंग क्वार्टेट, पियानो और क्लेरेनेट (जिसे संगीतकार सरलता से **सेस्टेट** कहा करता था) के लिये **कन्सर्टो** तैयार करते समय मधुर लय इतनी स्वाभाविक प्रतीत होती थी कि कोई काउब्वाय स्वाभाविक रूप से लड़खड़ाता हुआ चल रहा हो। यह ऐसा कन्सर्टो था जो कुछ वर्षों बाद ब्राडकास्ट किया जाने लगा जिसको सुनने के बाद रेडियो अधिकारियों के पास अनेक प्रशंसात्मक पत्र पहुँचे। हैरिस ने अपनी संगीत की रुचि को आगे बढ़ाने में कभी साहस नहीं खोया और कोलम्बिया फोनोग्राफ कम्पनी के पास उसकी प्रशंसा में अनेक पत्र आये जिनमें अधिकतर यही लिखा होता था कि उन्होंने हैरिस के सबसे अधिक लोक-प्रिय गीत की प्रतिलिपि तैयार कर ली है। उन्हें इस बात को जानकर प्रसन्नता होती थी कि जितने भी रिकर्ड तैयार किये जाते थे वे सभी रिकर्ड तीन महीने में ही बिक जाया करते थे।

हैरिस प्रथम अमरीकी संगीतकार था जिसे विशेषकर रिकार्डिग के लिये आमंत्रित किया जाता था। जब आर० सी० ए० विक्टर कम्पनी ने उसे एक आर्डर दिया तो यह शर्त ठहराई कि जब तक उसका रिकर्ड तैयार होकर बिकने न लगे तब तक वह उस गीत को किसी अन्य ओरकेस्ट्रा में नहीं गा सकता लेकिन उसे यह भी अनुमति दी गई कि वह शर्मर प्रकाशन हाउस को अपनी रचनाएँ बेच सकता था। इस प्रकार उसने **अमेरिकन ओवरचर** की रचना की जिनकी मुख्य टेक यह थी—व्हेन जानी कम्स मार्चिग होम। हैरिस अपने **ओवरचर** को 'माई जानी' कहा करता था। वह यह बताया करता था कि यह ओवरचर एक ऐसी ट्यून है जिसे मेरे पिता बहुत पसन्द करते थे। जब कभी मेरे पिता खेत पर काम करने जाते तो इस ट्यून को सीटी बजाकर निकाला करते थे और शाम को जब थककर घर लौटते तो अपने घोड़ों को हांकते हुए यही ट्यून सीटी से बजाया करते थे।

---

*पाल रोजन फील्ड : एन ऑवर विद्‌ह अमेरिकन म्युजिक, जे० बी० लिपिनकाट कम्पनी १९२९.

संगीतकार पाँच वर्ष तक प्रिंसटन के वेस्ट मिन्स्टिर क्वायर स्कूल में थियोरी और कम्पोजीशन का अध्यापक रहा और उसने क्वायर के लिये **सिम्फनी फार वॉयसेज** लिखी। उसी क्वायर ने **सांग फॉर आक्यूपेशन्स** लिखा जिसे लीग ऑफ कम्पोजर्स ने माँग लिया।

हेरिस ने छात्रवृत्तियों, पुरस्कारों और अनुरोधों से उत्साहित होकर बराबर रचनाएँ कीं और उसकी रचनाएँ बड़ी-बड़ी होती थीं। कौसेविट्ज़की इस बात के इच्छुक थे कि बोस्टन सिम्फनी ओरकेस्ट्रा अपने उद्‌घाटन में हेरिस की **थर्ड सिम्फनी** प्रस्तुत करे क्योंकि उन्होंने कहा, "अमरीका में सबसे पहले यह एक महान सिम्फोनिक कार्य है।" टोस्केनिनी ने अमरीकी संगीतकारों की बहुत कम रचनाएँ वाद्य-यन्त्रों पर प्रस्तुत की हैं फिर भी उन्होंने हेरिस की थर्ड सिम्फोनी को नेशनल ब्राड-कास्टिंग ओरकेस्ट्रा और आर० सी० ए० विक्टर में रिकार्ड कराया। उस समय संगीत के आलोचकों ने कहा कि अग्रणी अमरीका की स्वाभाविकता और शक्ति इस नई सिम्फनी में आ गई है और उस पर उसी प्रकार योरुप का प्रभाव नहीं है जैसा कि प्रेरी के घास के मैदानों का अपना ही प्रातःकाल होता है। हेरिस ने डोर्सी के जाज ओरकेस्ट्रा के लिये **फोर्थ सिम्फोनी** लिखी, कोरस और ओरकेस्ट्रा के लिये **एक फेयरवेल टू पायनियर्स** और **एक फोक-सांग सिम्फनी** लिखे और फिल्म के संगीत के अतिरिक्त अन्य रचनाएं कीं।

हेरिस के मन में दूसरे सेलो के लिये पांचवीं सिम्फनी और कंसर्टो गूंज उठा लेकिन हेरिस का अपना अधिक समय देश में यात्रा करने और अपने संगीत को सुनने में लग जाता था। किसी संगीतकार के अपने जीवन में ही इतनी ख्याति मिले, यह अपना जैसा ही अनुभव है और दो दिन तक केवल उसी का संगीत सुनाया जाय। डेट्राइट नगर में दो दिन तक हेरिस-फेस्टिवल आयोजित किया गया और ओकलाहोमा में तीन राज्यों के बैण्ड की प्रतियोगिता की गई जिसमें उसकी सिमेरोन नाम की टोन पोइम बजाई गई।

संगीतकार की पत्नी जोहना हेरिस पियानो बजाना जानती थी। उसने

अपने पियानो पर अपने पति के गीतों के रिकर्ड तैयार किये। दोनों मिलकर अपने कार्यक्रम आयोजित करते थे, हेरिस भाषण देता था उसकी पत्नी उदाहरण देते समय उसके गीतों की ट्यून पियानो पर बजाया करती थी। वे कुछ समय न्यूयार्क के ज्यूलियार्ड स्कूल आफ म्यूजिक की फैकल्टी में काम करते रहे और १९४९ से नेशविले के अध्यापकों को पढ़ाने के लिये जार्ज पी बाडी कालेज में काम करने लगे। ओकलाहामा के संगीतकार का कद लम्बा, तड़ंगा और स्वस्थ था तथा बोलने में ऐसा लगता था जैसे कोई दक्षिण पश्चिम का व्यक्ति हो उसमें मनोविनोद करने की अद्भुत क्षमता थी और वह अत्यन्त ध्यान से सुनने का आदी था। उसे टेनिस और शतरंज के खेलों में बहुत रुचि थी।

उसने मध्यकालीन संगीत का विशेष अध्ययन किया था। उसने एक बार कहा था, बीथॉवन के बाद संगीत की अवनति ही होती गई। वैगनर, वेरलिओज, लिज और रिचर्ड स्ट्रास उसे पसन्द नहीं थे लेकिन उसे भावी संगीत की शास्त्रीयता में विश्वास था। इन संगीतकार के मतानुसार, "आधुनिक संगीत सिस्टम और यंत्रों द्वारा हम एक बार संगीत को अवश्य अच्छी तरह विकसित करेंगे यदि हम अपने स्केल्स और वाद्य-यंत्रों में परिवर्तन भी न करें।

प्रारम्भिक अमरीकी समाज में चर्च में गाये जाने वाले हिम ट्यून से विषय-वस्तु को विकसित किया। उसे ऐसा महसूस होता था कि आरम्भ के प्रोटेस्टेन्ट चर्च की संगीत का हमारे बैलेड और नृत्य संगीत पर बड़ा प्रभाव था।

वह एक पाइनियर का पुत्र था, इसलिये पाइनियर जीवन के सम्बन्ध में उसने जो लिखा है वह पढ़ना रुचिकर होगा :

"जिन दिनों लोग अमेरिका में आकर बस रहे थे, सीमा प्रदेश के लोगों की सामाजिक अभिरुचियों और क्रियाकलापों का केन्द्र चर्च था। चर्च में लोग मिलकर गाते-बजाते और प्रार्थना करते थे। उनके गाने और प्रार्थना में सच्चाई और सादगी थी। ग्रीष्म के निर्मम आकाश के नीचे जब उनकी फसल झुलसने लगती थी तो वे वर्षा के लिये प्रार्थना करते थे। जाड़े की नीरव शान्ति में भोजन और आवास के लिये भी वे धन्यवाद देते थे। वे बर्फ की

गाड़ी में या घोड़ों पर सवार होकर दूर-दूर से आते थे और एक स्थान पर एकत्रित होते थे। लम्बे एकान्तवास के कारण वे अजीब सा संकोच महसूस करते थे और गानों में उनके हृदय की दबी हुई भावनाएँ मुखरित हो उठती थीं। जब कठोर भूमि पर वे काम करते थे तो साथ गाते हुए हिम की याद मन में ताज़ा हो उठती थी। **ओल्ड ब्लैक जो, स्वानी रिवर, आई हैव बीन वर्किंग आन दी रेले रोड, देयर इज ए लॉग लॉग ट्रेन** गाने हुए प्रसिद्ध गीत हैं। इससे यह लगता है कि अमरीकियों के हृदय में अमरीकी हिम की भावना जैसे बस गई हो। और आज भी उत्सवों के अन्त में इन गीतों को सामूहिक रूप से गाने में भी यही भावना परिलक्षित होती है। एरन कोपलैंड का कथन है कि हेरिस का प्रादुर्भाव अपने निज की शैली के साथ हुआ था। जब हम हेरिस और कोपलैंड की संगीत रचना की ओर देखते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि अमरीकी संगीत में वे गुण प्रकट होने लगे हैं जिनका मैक्डोवेल ने अनुमान किया था।

नैशविले के संगीत क्षेत्र में मि० हेरिस बड़ा क्रियाशील रहा है। वह केवल संगीत-सिखाने में ही नहीं रहा। रेडियो में काम करने, अखबारों में संगीत पर लेखादि लिखने, और लोगों को यह समझाने में कि उसका संगीत वे कैसे सुनें इनमें भी वह लगा रहा। उसकी छटी सिम्फनी पहले-पहल सन् १९४४ में प्रस्तुत की गई। यह कहा गया है कि उसका संगीत किसी-न-किसी भावना को सदा व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ उनकी टोन को व्यक्त करने वाली सायकिल, लोगों के विकास को, उसका संगीत ऐसा चक्षु संगीत है कि वह मात्र सौंदर्य की अनुभूति के लिए नहीं वरन्, चतुरतापूर्वक गुत्थियों से ऐसा रचा होता है कि उसके स्कोर को अत्यधिक प्रशिक्षित संगीतज्ञ ही मनन के उपरान्त सह सकते हैं। अस्तु जनसाधारण के लिए उसका सुनना और समझना भी मुश्किल है। हो सकता है, बिना 'की बोर्ड' की सहायता से रचने का यह स्वाभाविक प्रतिफल हो, यद्यपि एक 'बीथॉवन' भी वज्र बहरा होने के बाद सुन्दरतम संगीत का सृजन कर सका।

[राय हेरिस ओकलाहामा के लिंकन काउन्टी में १२ फरवरी १८९८ को पैदा हुआ।]

एरन कोपलैंड

"ध्यानपूर्वक, मन लगाकर अच्छी तरह समझते हुए सुनना उस कला को विकसित करने के लिए कम से कम योगदान है जो मानव जाति के गौरवों में से एक है।

—एरन कोपलैंड : **व्हाट टु लिसेन फॉर इन म्युजिक**

रूसी वर्णमाला अंग्रेजी वर्णमाला से भिन्न होती है। कभी-कभी उन वर्णों की ध्वनियों को अंग्रेजी अक्षरों में बिल्कुल सही-सही व्यक्त करने में कठिनाई होती है। एक बार एक रूसी यहूदी इंग्लैण्ड आया। उसने आवास अधिकारी को अपना नाम बताया। उन्होंने उसका कोपलैंड हिज्जे किया यद्यपि वह उस रूसी नाम की तरह था जिसे प्रायः हम अंग्रेजी में 'केपलेन' लिखते हैं। जब १९ वीं शताब्दी शुरू हो रही थी, वह आदमी न्यूयार्क के ब्रुकलियन में सपत्नीक रह रहा था। वहीं उसके बालक एरन का जन्म हुआ जो आगे चलकर संगीतकार हुआ।

जब एरन कोपलैंड का जन्म हुआ, उस समय जार्ज जर्शविन और रॉय हेरिस दो साल के थे। इरविंग बर्लिन बारह वर्ष का था और स्कूल की साधारण पढ़ाई-लिखाई के साथ अखबार बेचता था और चिट्ठियाँ लगाता था। जेरोम कर्न और डीम्स टेलर पन्द्रह वर्ष के थे और उन्हें यह पता नहीं था कि वे संगीतकार होंगे।

एरन पब्लिक स्कूल में अध्ययन के लिए गया। जब वह तेरह वर्ष का हो गया तो उसने पियानो सीखना शुरू किया। लेकिन जल्दी ही उसकी यह जानने की इच्छा होने लगी कि संगीत कैसे रचा जाता है। ब्वायज़ हाई स्कूल से पास होकर निकलने के एक वर्ष बाद उसने हारमोनी और काउन्टर-पाइन्ट का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। उसने रियुबिन गोल्डमार्क से

शिक्षा पाई जिसके पास हारमोनी और ओरकेस्ट्रेशन सीखने के लिए जर्शविन कई साल बाद पहुँचा था। जिस वर्ष 'जाज़' का फैशन' शुरू हुआ था उसी वर्ष एरन कोपलैंड ने हारमोनी सीखना आरम्भ किया।

चार वर्ष बाद, अमरीकी संगीत के विद्यार्थियों का दल फ़्रांस फाउंटिनेब्लो में अमरीकी कन्ज़रवेटरी में भाग लेने के लिये गया उनमें एरन भी था। उसके बाद उसने नाडिया बौउ लंगर के साथ अध्ययन किया। इसके थोड़े ही वर्षों बाद रॉय हेरिस भी उसके पास अध्ययन के लिये गया था।

जब मिस्टर कोपलैण्ड ने अपनी पढ़ाई फ़्रांस में आरंभ की उस समय तक वह पियानो के लिये **शेरज़ो ह्यूमरिस्टिक** की रचना कर चुका था जिसका नाम **दी कैट एण्ड द माऊस था**। यह गीत फ़्रांस में प्रकाशित हुआ था और फाउंटेने ब्लो में बजाया गया था।

यह युवक संगीतज्ञ तीन साल तक फ़्रांस में रहा और वास्तव में बड़ी प्रगति की। क्योंकि अध्ययन समाप्त करने तक वह एक विशद योजना के बारे में सोचने लगा था। उसके दिमाग में **सिम्फनी फॉर आरेगन एण्ड ओरकेस्ट्रा** से कम की चीज़ नहीं थी। जून के महीने में जब वह चौबीस साल का था, कोपलैण्ड अमरीका लौटा और वह वहाँ पेन्सिलवेनिया मिलफोर्ड के एक होटल में लोगों के मनोरंजन के लिये तीन पियानो-वादकों में से एक था। इस तरह उसने गर्मी के दिनों के लिये यह नौकरी कर ली थी लेकिन उसकी ड्यूटी उसके रचना-कार्य में बाधक थी। वह ओरगन सिम्फनी के ऊपर काम करने के लिये अत्यन्त उत्सुक था, विशेषरूप से इसलिये कि उसकी अध्यापिका मेडम बोलंगर अमरीका आ रही थीं और अत्यन्त कुशल ओरगेनिस्ट होने के नाते उसकी इच्छा उनके कार्यक्रमों में भाग लेने की थी। वह इस अवसर को छोड़ना नहीं चाहता था। वह युवक संगीतज्ञ ट्रायो में पियानो बजाना छोड़कर ओरगन सिम्फनी को पूरा करने में लग गया।

जब मैडेम बोलंगर ने बोस्टन में वाद्य-वादन किया तो एक अत्यन्त मनोरंजक घटना घटी। घटना दर्शकों के लिये हास्यजनक थी लेकिन कलाकारों के लिये नहीं। सिम्फनी हाल का मंच बोस्टन सिम्फनी ओरकेस्ट्रा से भरा हुआ

था जिनके पीछे ओरगेन बजाने वालों की एक लाइन दिखाई पड़ती थी। कोसे विट्ज़की उसका संचालन कर रहा था। मेडम बोलंगर ओरगेन वाद्य-यंत्र का नियंत्रण कर रही थीं। दर्शकों ने कार्यक्रम में यह पढ़कर कि एक अमरीकी युवक संगीतज्ञ भी इसमें है, सादर ध्यानपूर्वक नवीन संगीत को सुनने को उत्सुक थे। यकायक एक अविस्मरणीय घटना घटित हुई। ओरगन का टोन धीमा होने को ही नहीं आता था। जब अन्य संगीत हार्मोनी के साथ हो रहा था तो वह धीरे-धीरे अधिक तीव्र होता जाता था और तमाम हाल में गूंज रहा था। इसके बाद सब यकायक रुक गया और उस टोन या ध्वनि के अलावा कोई भी बाजा नहीं बज रहा था। मेडम बोलंगर ने कोसे विट्ज़गी को इशारा किया। क्या किया जाय? कुछ-न-कुछ अवश्य और शीघ्र करना है। इस ध्वनि का धीरे-धीरे असर हो रहा था, स्पष्ट रूप से या प्रकट रूप से उस पाइप के यंत्र में कोई-न-कोई गड़बड़ी हो गई थी। कोसे विट्ज़गी शान से मंच पर खड़े रहे। मेडम बोलंगर बेंच से उठकर मंच से धीरे से खिसक गई और कुछ क्षण उपरान्त वह टोन या ध्वनि बन्द हो गई तथा उस ध्वनि की तीव्रता के समान यकायक चारों ओर अधिक शान्ति छा गई। मेडम बोलंगर मंच पर लौटीं और ओरगन वाद्य-यंत्र को बजाने लगीं। यह तुमुलवाद का अवसर था। सिम्फनी फिर शुरू हुई। कोई नहीं जानता कि उस क्षण संगीतकार के हृदय में कैसी उथल-पुथल हो रही थी। लेकिन जब सिम्फनी समाप्त हुई तो उसे बड़ा यश मिला।

अधिक समय नहीं बीता जब उसे और अधिक ख्याति प्राप्त हुई। वह पहिला संगीतकार था जिसे दो साल के लिये गोगेनहेम फेलोशिप प्रदान की गई थी, उसके बाद गीत-रचना के अनेक कार्य उसे मिले और वह एक के बाद एक उन्हें रचता गया।

उसके संगीत पर जाज़ का प्रभाव दिखाई पड़ने लगा था। वीमेन्स युनिवर्सिटी ग्ली क्लब से एक कमीशन ने दो कोरल रचनाओं को प्रस्तुत किया जिनमें से एक कोपलैंड के प्रथम ख्याति-जाज़ की रचना थी। उसी वर्ष ग्रीष्म ऋतु में वह योरुप से लौटा था और उस समय वह न्यु हेमरशायर के पीटर

बोठो नगर में मेकडोवेल कालोनी में रहने लगा। वहाँ उसने **म्युजिक फॉर द थियेटर** नाम से छोटे-छोटे आर्केस्ट्रा के लिए रचनाएँ कीं। यह काम उसे लीग ऑफ कम्पोज़र से मिला था। इसके कुछ समय बाद उसने पियानो के लिये **जाज कन्सर्टो** की रचनाएँ की जिन्हें बोस्टन सिम्फनी आर्केस्ट्रा ने प्रस्तुत किया और इन रचनाओं के साथ संगीतकार ने स्वयं पियानो बजाया।

इन रचनाओं से कोपलैंड की ख्याति चारों ओर फैल गई। संगीत के क्रिया-कलापों के सम्बन्ध में लिखने वाले उत्साही लोगों ने यह कहा कि कोपलैंड ही सच्चा अमरीकी है। एक आलोचक ने तो यहाँ तक महसूस किया कि कोपलैंड का अमरीका में वही स्थान है जैसा कि रूस में स्ट्राविन्सकी ने नौमेज़ लोक-गीतों की रचना करके अपना स्थान बनाया था, मज़ुरका के साथ चॉपिन प्रसिद्ध हो गया और गेवोटीज़ के लिए बैश की ख्याति हो गई और कोपलैंड का नाम भी ऐसे फैल गया जैसे कि उन दिनों में मिनुएट की चारों ओर चर्चा होती थी। उसने जाज़ संगीत को उच्च स्तर पर ला दिया।

आर० सी० ए० विक्टर कम्पनी ने उसकी सिम्फनी रचनाओं के लिये २५००० डालर का पुरस्कार घोषित किया जिससे अनेकों अमरीकी संगीनकारों को अनवरत परिश्रम करने की प्रेरणा मिली। आरों कोपलैंड ने अपनी **सिम्फानिक ओड** की रचना में यह महसूस किया कि वह अपनी रचना को ऐसे नही सेट कर पाता कि प्रतियोगिता की अवधि में वे रचनाएँ समाप्त हो जायँ। इसके अलावा भी उसकी कुछ रचनाएँ ऐसी थीं जिन्हें उसने बाहर रहकर तैयार किया था और इन रचनाओं को इस प्रकार व्यवस्थित किया था कि वह उन्हें **डान्स सिम्फनी** करने लगा। इसके लिये उसे पुरस्कार का पाँचवाँ भाग मिला जबकि अन्य चार पुरस्कार अर्नस्ट ब्लाक, लुई ग्रून वर्ग, रसल बेनेट को मिले जिनमें से अन्तिम दो संगीतकारों को पुरस्कार का $\frac{2}{5}$ भाग मिला। लेकिन वह **सिम्फोनिक ओड** की रचना बहुत बाद में पूरी की गई और उसे सबसे पहले बोस्टन सिम्फनी आर्केस्ट्रा ने प्रस्तुत किया था। संगीतकार को इस रचना को पूरा करने में दो वर्ष लग गये। उसने इस रचना का कार्य जर्मनी, न्यु मेक्सिको, फ़ान्स, मेक्डोवेल कॉलोनी और न्यूयार्क शहर में रहकर पूरा

किया था। उसने बताया कि पियानो और वायलिन के लिये **नोकटन ही ओड** के संगीत का कारण है।

मेक्सिको की यात्रा से **एल सेलों मेक्सिको** के लिखने की प्रेरणा मिली। लोकप्रिय खेल-कूद में नर्तकों को देखकर और गायकों को सुनकर यात्रियों को जैसा मेक्सिको लगता है, उसकी छाप उसके संगीत में अभिव्यक्त हुई। उसने अपनी स्केचबुक में कोई विषय वस्तु को दर्ज नहीं किया क्योंकि उसने बतलाया "जो संगीत उसने सुना था, उससे वह आकर्षित नहीं हुआ था बल्कि उसकी आत्मा ने उसे प्रभावित किया था।"

यह सोचकर कि यदि कोई संगीतकार युवकों को अच्छे लगने वाले गीत लिखे तो उसका भविष्य सुरक्षित है। एस० कोपलेण्ड ने **दी सेकेण्ड हरीकेन** नामक ओपेरेटा के संगीत की रचना बच्चों के लिये की। यह विशेष रूप से स्कूल में गाने वाले आठ से उन्नीस वर्ष के बच्चों द्वारा खेले जाने के लिये थी और पहिले पहल न्यूयार्क में सफलतापूर्वक प्रदर्शित की गई।

एरन कोपलेण्ड उन संगीतकारों में से था जिन्होंने अधिक शक्ति और समय अपने साथी संगीतकारों के संगीत खेले जाने में उनके उत्साह को बढ़ाने के लिये लगाया। एक संगीतकार अत्यन्त सुन्दर संगीत की रचना उस समय तक कर सकता है, जब तक उस पर मौत की काली घटाएँ नहीं छातीं। लेकिन इसका उसके लिये क्या लाभ यदि वे कभी नहीं खेली गई और किसी कान में उनकी ध्वनि नहीं पड़ी। एक दूसरे संगीतकार रोजर सेशन्स के साथ मिस्टर कोपलैण्ड ने कंसर्ट प्रस्तुत करने का नया कार्यक्रम बनाया जिससे लोग उन संगीतकारों को सुन सकें जो गंभीर संगीत की रचना कर रहे हैं।

आजकल सबसे अधिक सुनने वाले रेडियो और मूवी के दर्शक है। मिस्टर कोपलैण्ड की **एल सेलों मेक्सिको** पहिले-पहल एन० बी० सी० ओरकेस्ट्रा के साथ रेडियो पर सुनी गई। यह वही ओरकेस्ट्रा था जिसने संगीतकार के पहिले बेलेट संगीत **बिली, दी किड** के कंसर्ट को रेडियो से ब्राडकास्ट किया था। उसने **द सिटी, अवर टाउन** और **ऑफ माइस एण्ड मैन** फिल्मों की संगीत रचना की थी।

ऐसा लगता है कि रेडियो और फिल्म व्यावसाय हमारे देश के संगीतज्ञों को वह संरक्षण दे रहे हैं जिसकी कमी विक्टर हर्बर्ट (जैसा कि संगीत ऐतिहासकारों) ने अनुभव किया था जो उनके विचार से संगीत के विकास की शिथिलता का कारण था।

कोसे विट्ज़की ने १९४६ में जब एरन कोपलैण्ड की **थर्ड सिम्फनी** का प्रथम संचालन किया तो उसने कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह अमरीका की सबसे अच्छी सिम्फनी है।" एक अन्य अमरीकी संगीतकार वर्जिल टॉमसन ने इसको महान संगीत बताया। लेकिन यह बात सत्य सिद्ध न हुई। कोसे विट्ज़की ने पहली बार कोपलैण्ड के **जाज़ कंसर्टो** का संचालन किया। उस समय बहुत से लोगों ने सीटी बजाई। कुछ लोगों ने संचालक का यह कहकर अपमान किया कि उन्हें व्यर्थ ही ऐसे स्वर सुनाने के लिये बुलाया गया। कोपलैण्ड ने स्वयं यह महसूस किया कि नई हार्मोनी या संभवतः डिसोनेन्सेज़ श्रोताओं को विचित्र ही लगे हैं। उनके लिये यह स्वाभाविक हो लेकिन समय के बीतने के साथ ऐसे स्वर भी अच्छे लगने लगते हैं। मोज़र्ट पर इन स्वरों का गहरा प्रभाव हुआ। इन नवीन और डिस्कोर्डेण्ट स्वरों ने हमारे लोकप्रिय संगीत को अधिक लोकप्रिय और गंभीर बना दिया।

मिस्टर कोपलैण्ड को अपने बैलेट संगीत **एपेलेशियन स्प्रिंग** के लिये पुलिट्ज़र पुरस्कार प्राप्त हुआ। उसका बच्चों का गीत **द रेड पोनी**—हॉलीवुड में एक फिल्म की प्रेरणा बन गया।

जब वह छोटा था और उसे शिक्षा दी जानी थी, उसकी माँ इसके लिये धन व्यय करना नहीं चाहती थी क्योंकि उससे बड़े चार बच्चों ने संगीत क्षेत्र में कुछ भी नहीं किया था। यही कारण था कि एरन तेरह वर्ष की आयु से पहिले संगीत न सीख सका और बाद में वह संगीत का अध्ययन कर सका। परन्तु कई वर्ष बाद उसकी माँ ने यह देखा कि उसने अपने सबसे छोटे बच्चे के लिये संगीत-शिक्षा पर जो धन व्यय किया है, वह व्यर्थ नहीं गया है।

[एरन कोपलैण्ड १४ नवम्बर १९०० में ब्रुकलिन, न्यूयार्क में पैदा हुआ।]

अन्य संगीतकार

जॉन एल्डन कारपेण्टर

जॉन एल्डन कारपेन्टर का जन्म सन् १८७६ में इलीन्योस के पार्क रिज में हुआ था। वह एक व्यापारी था। इस शताब्दी के आरम्भ के तीस वर्ष में जब उसकी रचनायें प्रस्तुत की जा रही थीं उस समय उसको अमेरिका का अग्रणी संगीतज्ञ कहा जाता था। प्रथम जान एल्डन नवम्बर सन् १६२० में किसी दिन प्लीमथ पहुँचे थे। यह उनका उत्तराधिकारी था। इसने संगीत का प्रेम अपनी माँ से पाया। उसी ने इसको संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा दी। संगीत रचना का अध्ययन आरम्भ करने के पूर्व वह बड़े प्रयास के बाद मुश्किल से किसी प्रकार संगीत रच पाता था।

जब उसकी अवस्था बढ़ रही थी और वह स्कूल जाने लगा तो उसे संगीत के कुशल अध्यापक मिले और उसने १७ वर्ष की आयु में हार्वर्ड कालेज का सारा पाठ्यक्रम सीखना शुरू कर दिया। वहाँ पर उसने जान नोल्स पेन अध्यापक संगीतकार से संगीत रचना सीखी फिर संगीत में सर्वोच्च आनर्स के साथ संगीत की डिग्री प्राप्त की और घर लौट आया। वह घर पर आकर अपने पिता के साथ व्यापार में लग गया। जार्ज बी० कारपेण्टर कम्पनी एक ऐसी फर्म थी जो मिल, रेलवे और जहाजों की सप्लाई का काम करती थी।

यद्यपि कारपेण्टर अपने व्यापार में सफलतापूर्वक काम कर रहा था लेकिन वह सदा संगीत का अध्ययन और संगीत रचना भी साथ-साथ करता रहा। उसको दोनों ही कार्यों के लिये समय मिल जाता था। एक बार जब वह रोम गया, वहाँ उसे अंग्रेजी संगीतकार सर एडवर्ड एलगर मिले। वे भी वहीं थे। उनसे मिलकर कारपेण्टर को बड़ी खुशी हुई। वह सदा एलगर के संगीत का बड़ा प्रशंसक रहा। उसने एलगर को इस बात के लिये राजी कर लिया कि

वह उसे शिक्षा दे और सुझाव दे यद्यपि सर एडवर्ड यह खुद नहीं सोचते थे कि वे एक अध्यापक हैं। जब कारपेंटर ३२ वर्ष का हुआ, उसकी भेंट बर्नहार्ड ज़ीन से हुई। ज़ीन एक अध्यापक और हारमोनी तथा संगीतशास्त्र के लेखक थे। उसने अब तक जिन-जिन लोगों से जो कुछ सीखा था, उससे कहीं अधिक ज़ीन महोदय से सीखा और उनसे प्रेरणा प्राप्त की।

कारपेंटर को पहिली सफलता उस समय मिली जब उसकी शुरू की रचनाओं की ओर जी० शिरमर के संगीत प्रकाशन-गृह का ध्यान कर्ट शिंडलर वायलिन वादक और संगीत सम्पादक द्वारा आकर्षित किया गया। उस समय उसके छः संगीत जो भारत के कवि रवीन्द्र टैगोर की **गीतांजलि** की कविताओं पर बनाये गये थे, प्रकाशित हुये और लोगों ने उन्हें बहुत पसन्द किया। दूसरे वर्ष उसका पहला और सबसे अच्छा ओरकेस्ट्रा संगीत प्रस्तुत हुआ। **एडवेन्चर्स इन पेरम्बुलेटर** के हास्य से हर एक आल्हादित हुआ। यह संगीत का ऐसा कार्यक्रम था जिसमें एक ऐसे बेबी की ध्वनियों और संवेगों को दिखाया गया था जो अपनी नर्स द्वारा शहर के पार्क में चारों ओर गाड़ी पर बैठकर घुमाई जा रही थी। इसके बाद उसने बड़ी-बड़ी रचनाएँ कीं और अनेक गीत लिखे।

टिन पैन ऐली से जाज़ संगीत प्रारंभ हो चुका था, यद्यपि कारपेण्टर रैगटाइम का लिखने वाला नहीं था लेकिन इस शक्तिशाली और सही माने में अमरीकी संगीत ने उस पर भी अपनी छाप लगा दी थी जैसा कि वास्तव में अन्य संगीतकार भी इस संगीत से प्रभावित हुये थे।

ल्यूपोल्ड स्टोकोविस्की, संचालक ने कारपेण्टर को **मेफ्लोर** जहाज की तीसरी शती मनाने के उपलक्ष में एक गीत रचने के लिये आमंत्रित किया और १९२० में फिलेडलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा ने **ए पिलग्रिम विज़न** प्रस्तुत किया।

बेलेट संगीत के रचने में अभिरुचि हो जाने पर कारपेंटर ने हास्य-अखबारों को दूसरे बैलेट की विषय-वस्तु ढूँढ़ने के लिये पढ़ा। फलस्वरूप **क्रेज़ी केट** की रचना की गई जो अत्यन्त सफल हुई। यह बैलेट उस समय प्रस्तुत किया

गया जब कई रूसी नर्तक और कलाकार उस देश में १९१७ के बोलशिविस्ट क्रान्ति के कारण भाग कर आये थे। सुन्दर बैलटों के रूसी निर्माता डायागिलेफ 'क्रेज़ी' के नृत्य से जिसे एडोल्फ बाम ने किया था, अत्यन्त प्रभावित हुए। इसके बाद उन्होंने संगीतकार से अपने लिये एक बैलेट लिखने को कहा जिसमें वह अमरीकी जीवन के 'शोरगुल और हलचल' को फैशनेबल लोकप्रिय संगीत के रूप में दिखला सके। 'शोरगुल और हलचल' जो उसके दिमाग में था, वह न्यूयार्क के बारे में था, न कि अमरीका के, और दो साल बाद कारपेंटर ने जब उस बैलेट **स्काई स्क्रेपर्स** को समाप्त किया तो वह योरुप और अमरीका दोनों स्थानों में बड़ी सफलता के साथ प्रदर्शित किया गया।

कारपेंटर के संगीत में "अमरीकियों की असीम शक्ति" परिलक्षित होती थी जो एडवर्ड मेक्डोवेल के अनुमान से अमरीकी संगीत का गुण था। कारपेण्टर का कथन था, "मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि हमारा समकालीन संगीत (कृपया ध्यान दें, उसने इसे 'जाज़' नहीं कहा) अत्यन्त सहज, निजी, विशेष प्रकार का है। इन्हीं गुणों के कारण अमरीका में संगीत ने यह अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त की।

मिस्टर कारपेन्टर पच्चहत्तर वर्ष की आयु पर १९५१ में मर गये। उनका संगीत अब अक्सर नहीं प्रस्तुत किया जाता है लेकिन उनके समय में वह संगीत बहुत महत्वपूर्ण था। तमाम संगीत के इतिहास में संक्रान्ति काल दिखलाई पड़ते हैं जब अमर शैलियाँ एक से दूसरे में परिवर्तित होती रहीं। यदि इस काल के संगीत की रचनाओं को अन्तिम रूप में लाइब्रेरी में ही सजाना है तो भी इसका यह अर्थ नहीं कि उनका कोई मूल्य ही नहीं या उन्होंने अपने समय के संगीत में अपना कोई योगदान नहीं दिया।

कारपेन्टर ने अपने मरने के कुछ वर्ष पूर्व यह कहा था, "अमरीकी संगीत अब अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है और अब ऐसे कोई चिन्ह नहीं दिखाई पड़ते कि वह विदेशी या शरणार्थियों द्वारा प्रभावित होगा।"

डीम्स टेलर

मिस्टर टेलर एक ऐसा संगीतकार है जिसने संगीत-रचना के साथ अन्य कार्यों को सम्मिलित किया है। वह न्यूयार्क में पैदा हुआ और वहीं बड़ा हुआ। उसने अपने कालेज जीवन में ही चार कोमिक ओपरा के लिये संगीत रचना की थी जबकि उसने हारमोनी और संगीत रचना का अध्ययन भी नहीं किया था। उस समय तक उसने केवल थोड़ा पियानो बजाना सीखा था। वह एक पत्रकार हो गया और ओरकेस्ट्रेशन तथा संगीत रचना का स्वयं अध्ययन करने लगा। उसकी संगीत शिक्षा कुल दस महीने की थी जिसमें उसने हारमोनी और काउंटर प्वाइंट सीखा। दो साल बाद वह कालेज से बाहर निकल आया। चार वर्ष बाद एक सिम्फोनिक कविता **द साइरिन सांग** ने उन्हें जनता में ख्याति दिला दी।

जिस समय देशी संगीतज्ञ यह अनुभव कर रहे थे कि उनके संगीत को सुने जाने का अवसर नहीं मिल पाता क्योंकि ओरकेस्ट्रा के संचालक विदेशी संगीत को देना अधिक पसन्द करते थे और नये अमरीकी संगीत को प्रस्तुत करने का जोखिम उठाने को तैयार नहीं थे। टेलर अपने नये संगीत को सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने में सफल हो सका। ओरकेस्ट्रा के संचालक ही इसमें पूर्ण-रूपेण दोषी नहीं थे क्योंकि अमरीकी दर्शक भी विदेशी संगीत पसन्द करते थे। इसका अंशतः कारण यह था कि हमारा संगीत योरोपियन संगीत से आया था और हमें अपने कलात्मक काम के ऊपर विश्वास भी कम था। प्रथम दो शताब्दी तक अमरीकी लोग प्रमुख रूप से एक ऐसे बड़े देश को ऊँचे पैमाने पर बनाने में संलग्न थे जिसकी तुलना दुनिया में न हो सकी। यह स्वाभाविक था कि वहाँ के लोगों ने शुरू-शुरू में कला ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी अभिरुचि पर पूरा विश्वास नहीं किया। विशेषरूप से इसलिये कि हमें सदैव इस बात का ध्यान रहता था कि अभी हमारा बहुत कम समय

का इतिहास है। लेकिन बीसवीं शती में एक नया जागरण हुआ। अमरीकियों को यह ज्ञात हुआ कि उनके संगीतज्ञ, कलाकार और लेखक भी बहुत कुछ दे सकने में समर्थ हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से अमरीकी लेखकों ने ख्याति प्राप्त की और फिर इस शताब्दी में बराबर प्रगति होती गई और अमरीकी संगीत कलाकारों का महत्व बढ़ता गया।

टेलर ने **थ्रू दि लुकिंग ग्लास** आरकेस्ट्रल सूट तैयार किया। यह सूट सिम्फनी आर्केस्ट्रा के लिये उपयुक्त रहा और लंदन तथा पेरिस में प्रस्तुत किया गया। उसने थियेटर, फिल्म और बड़े-बड़े ओपेरा के लिये संगीत तैयार किया। १९२७ में न्यूयार्क में मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस में '**दि किंग्स हेंचमैन** प्रस्तुत किया गया। यह वर्ष का सबसे अच्छा कार्यक्रम था। टेलर ने इस ओपेरा को उस समय लिखा जब अमरीकी अपने संगीत के बारे में सजग हो रहे थे और जनता अमरीकी ओपेरा की माँग कर रही थी। मेट्रोपोलिटन बोर्ड के डाइरेक्टरों ने टेलर को ओपरा तैयार करने के लिये चुना। संगीतकार ने हमारी गीतकार स्वर्गीय ऐडना सेन्ट विन्सेन्ट से भेंट की और उनसे विचार विमर्श किया। उन्होंने 'लिब्रेटो' दिया जो मध्यकाल की एक कथा पर आधारित था।

मिस्टर टेलर पत्रिकाओं के सम्पादक थे। अखबारों में संगीत आलोचक थे। रेडियो कमन्टेटर थे। वह गद्य और पद्य के अनुवादक थ और साथ ही-साथ संगीतकार थे। "मैं समझता हूँ कि यह देश कुछ घटिया संगीतकार बनायेगा लेकिन कुछ संगीतकार बहुत ही महान होंगे। घटिया संगीतकारों का होना इसलिये है कि यहाँ संगीतकार आसानी से लोकप्रिय हो जाता है। आप एक स्तर प्राप्त करके कई लोगों को प्रसन्न कर सकते हैं और यह स्तर कुछ ही बातों से मिल जाया करता है।

अमरीकी संगीत-कला और साहित्यिक कार्यों की रुचि में अभी बहुत सुधार होना है।

वाल्टर पिस्टन

वाल्टर १८९४ में मेन के राकलैण्ड में पैदा हुआ और जब वह ११ वर्ष का हुआ तो उसे बोस्टन ले गये। वहाँ वह स्कूल गया और उसने मैकेनिकल विषयों का अध्ययन किया। हाई स्कूल के बाद उसकी कला की ओर जितनी अधिक रुचि थी संगीत की ओर उतनी नहीं थी। उसने १९१६ में मेसाच्यु-सेट्स नार्मल आर्ट स्कूल में ड्राइंग और चित्रकला में ग्रेजुएट की उपाधि ली। उसने अपने बचपन में संगीत के अध्ययन की शिक्षा नहीं ली थी। लेकिन उसे पियानो और वायलिन इतना अच्छा बजाना आता था कि वह रेस्ट्रां और नृत्य-भवनों में इन वाद्य-यंत्रों को बजाकर अपनी आजीविका कमा सकता है। इसके बाद उसने इन दोनों वाद्य-यंत्रों का सीखना शुरू किया। प्रथम महायुद्ध में उसने नौ सेना में काम किया और बैंड के साथ सेक्साफोन बजाया। युद्ध के बाद उसने यह चाहा कि वह संगीत में पारंगत हो जाय। वह हारवर्ड गया और उसने १९२४ में संगीत के **सुम्मा कम लॉड** के साथ ग्रेजुएशन किया।

उसे फेलोशिप मिल गई। वह पेरिस गया। और उसने नाडिया बोलंगर से संगीत रचना सीखनी शुरू कर दी। नाडिया बोलंगर हमारे संगीतकारों की अध्यापिका रही हैं। इसके बाद वह केम्ब्रिज लौट आया और हारवर्ड में अध्यापक हो गया तथा संगीत रचना करने लग गया। कोसे विट्जकी ने १९२८ में पिस्टन का **सिम्फनिक पीस** प्रस्तुत किया। उसने चेम्बर और बैलेट संगीत दिया। उसकी **दूसरी सिम्फनी** को संगीत-आलोचकों के सर्किल (म्यूजिक क्रिटिक सर्किल) से पुरस्कार मिला। कोसे विट्जकी म्यूजिक फाउन्डेशन ने उसकी **तीसरी सिम्फनी** को अपनाया और १९४८ में उसे शुरू किया। जिसके लिये उसे पुलिटजर प्राइज़ मिला।

मिस्टर पिस्टन ने हारमोनी, काउन्टर प्वाइन्ट और हारमोनिक विश्लेषण पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं। संगीतकार उसका बहुत आदर करते हैं और उसने अमरीकी संगीतकारों में एक प्रमुख स्थान बना लिया है। एरन कोप-लैंड ने एक बार कहा था कि पिस्टन के संगीत में विशेषकर अमरीकी विषय-

वस्तु नहीं है क्योंकि उन गीतों की विषय वस्तु योरोपीय स्रोतों से ग्रहण की गई है लेकिन उसकी कृतियाँ संगीत के ज्ञान से भरपूर हैं और यह ज्ञान शुद्ध अमरीकी वातावरण पर आधारित है तथा जाज़ से प्रभावित है।

रिचर्ड रोजर्स

रिचर्ड रोजर्स का जन्म न्यूयार्क में सन् १९०२ में हुआ था। उसके पिता एक डाक्टर थे और माता पियानोवादिका। जब वह चार वर्ष का शिशु था, उसी समय से उसके संगीत-प्रेम और प्रतिभा का आभास मिलने लगा था। संगीत के प्रति प्रेम और प्रतिभा उसने अपनी माता से प्राप्त की थी। उस छोटी सी आयु में ही वह सुनकर ही गीत गा सकता था। जब वह ठीक से बातचीत भी नहीं कर सकता था, उस समय उसने छोटी-छोटी नई धुनें बनाई जो बहुधा संगीतात्मक होती थीं। उसकी माता ने उसको पियानो सिखाना शुरू किया जिसे उसने रुचि लेकर सीखा। चौदह वर्ष की आयु में उसने अपना पहला गीत लिखा।

यह युवक गीतकार दो वर्षों के लिए कोलम्बिया यूनिवर्सिटी गया। वहाँ कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में होने वाले एक शो के लिए उस ने और उसके मित्र लोरेंज़ हार्ट ने गीत और संगीत रचे। होटल एस्टर के ग्रैंडबाल में यह खेल बड़ी सफलता के साथ दिखाया गया। जीवन पूरा करने के बाद रिचर्ड ने कुछ गीत लिखे और उन्हें टिन पैन एली में बेचना चाहा पर उसे वहाँ निराशा ही मिली।

संगीत कला के संस्थान में दाखिल होकर उसने फ्रैंक डेमरोश, एच० ई० क्रेहबियल और जार्ज वेज से शिक्षा पाई। ये लोग उन दिनों न्यूयार्क के संगीत जगत के जाने-माने संगीतज्ञ थे। उसने टेक्नीक और हारमोनी को सीखा और साथ-ही-साथ आत्म विश्वास को भी समझा। संस्थान के वार्षिक प्रदर्शन के लिये संगीत लिखने के लिये उससे कहा गया क्योंकि वह प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। उसने एक एकांकी ओपेरा, बैलेट स्कोर और सिम्फोनिक टोन कविता भी लिखी। वह अपने हृदय में समझता था कि उसका संगीत कंसर्ट हाल के

उपयुक्त नहीं है बल्कि ब्रोडवे के थियेटरों के लिये है। तीन वर्ष बाद उसने लोकप्रिय गीत लिखना फिर शुरू कर दिया और हार्ट के साथ एमेच्युर (शौकीनी) खेलों को प्रस्तुत किया। वह उनके गीत लिखा करता था।

न्यू गिल्ड थियेटर के लिये धन एकत्र करना था अतः उससे यह आग्रह किया गया कि वह एक छोटा रेव्यू प्रस्तुत कर दे। निदान उसने और हार्ट ने सिर्फ रविवार की रात को प्रदर्शित करने के लिये **गेरिक गेटीज़** की रचना की। उन्हें इस कार्य के लिये कोई पारिश्रमिक नहीं मिला। उन्होंने केवल लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये यह खेल लिखा था। और इसमें उन्हें सफलता मिली। लोगों ने इसे इतना पसन्द किया कि यह अगले रविवार को फिर प्रस्तुत करना पड़ा और उसके बाद भी रविवार को इसे प्रस्तुत करना पड़ा। स्पेशल मैटिनी शो आयोजित किये गये जिनमें समालोचकों को भी बुलाया गया। समालोचकों ने जब इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की तो **गैरिक गेटीस** देखने के लिये हड़बड़ी मच गई। यह खेल डेढ़ वर्ष तक बराबर चलता रहा। यह उनका भाग्योदय था।

उनके पास जल्दी-जल्दी काफी काम आने लगा। सन् १९२६ में एक ही समय में राजर्स और हार्ट के तीन खेल शहर की प्रमुख नाट्य-शालाओं में खेले गये। अगले साल लंदन में भी कई खेल दिखाये गये। राजर्स और हार्ट का खेल हमेशा निश्चित रूप से लोकप्रिय होता रहा है। १९३० ई० में राजर्स ने हालीवुड के लिये संगीत रचना शुरू कर दी। सन् १९४३ में गीतकार ने ऑस्कर हैमरस्टीन द्वितीय के लिखे **ओकला होमा** के गीतों के लिये संगीत रचा क्योंकि हार्ट का उस समय तक निधन हो चुका था। इस मनोहर संगीत-खेल के कारण इसके रचियता को विशेष पुलिटज़र पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह खेल अन्य खेलों की अपेक्षा अधिक दिन तक चलता रहा। हर्ष की बात है कि ब्राडवे में कोई-न-कोई खेल ऐसा चलता रहता है जिसका संगीत रिचर्ड रोजर्स का रचा होता है और जो बिल्कुल अमरीकी होता है।

सेम्युल बारबर

सेम्युल बारबर के पिता डॉक्टर और माता पियानो-वादिका थी। वह संगीत-कार बन गया। लेकिन उसने एक अलग प्रकार के संगीत की रचना की। पिनसिलवेनिया के पश्चिमी चेस्टर में सेम्युल बारबर का जन्म सन १९१० में हुआ। उसकी चाची लुइस होमर अपने समय की एक अच्छी गायिका थीं जो मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस में केरुसो, सेम्ब्रिक, स्कोटी आदि जगत प्रसिद्ध गायकों के साथ गाती थीं। ६ वर्ष की आयु में ही सेम्युल पियानो सीखने लगा और उसने ७ वर्ष की अवस्था से ही संगीत रचना प्रारंभ कर दी। बारह वर्ष की आयु में ही सेम्युल चर्च में ओरगेनिस्ट हो गया। वह तेरह वर्ष की अवस्था में बर्टिस इन्स्टीट्यूट में दाखिल हुआ और वह वहाँ पियानो और स्वर-ताल का अधिक अध्ययन करने लगा तथा इसके साथ ही उसने वहां संगीत-रचना और अन्य उन सभी चीजों को सीखना शुरू कर दिया जो एक संगीतज्ञ के लिये आवश्यक होती हैं। वह ग्रेजुएट हो गया और उसके बाद उसने परिश्रम से इतना अधिक काम किया कि उसे १९३५ में 'प्रिक्स डी रोम' पुरस्कार मिला, और वह अधिक अध्ययन के लिये विदेश गया। उसको उस वर्ष और अगले वर्ष भी 'पुलिटज़र पुरस्कार' मिला। पहली बार एक संगीतकार को पुरस्कार मिला था। बारबर उस समय लगभग २५ वर्षों का था। उसने आर्केस्ट्रा, पियानो, चैम्बर संगीत, बैलेट सूट और गानों के लिये संगीत-रचनाएँ कीं। युद्ध के पूर्व सैल्ज़बर्ग में आयोजित उत्सव (सैल्ज़बर्ग फेस्टिवल) में प्रस्तुत की जाने वाली उसकी प्रथम अमरीकी रचना **सिम्फनी इन वन मूवमेन्ट** थी।

उसे बत्तीस वर्ष की आयु में फौज में नौकरी के लिये बुला लिया गया। फोर्ट वर्थ, टेक्साज़, आर्मी एयरफोर्स में काम करते हुए कारपोरल बारबर ने अपनी **सेकन्ड सिम्फनी** की रचना आरम्भ कर दी थी। अपनी इस वृत्ति को उसने आर्मी एयर कोर को समर्पित किया। जब यह सन् १९४४ में खेला गया

तो लोगों ने इसे बहुत पसन्द किया। बारबर को अनेक पुरस्कार और पारितोषक मिले। उसे संगीत रचना के बहुत से नये काम मिले।

मि० बारबर स्वयं गाता भी है और अपनी चीजों को ही प्रस्तुत भी करना पसन्द करता है। उसने कंसर्ट और रेडियो पर भी गाया है। उसने इंग्लैंड में अपनी संगीत-रचनाओं का स्वयं संचालन किया। **एडेगियो फॉर स्ट्रिंग्स** की वहाँ बड़ी मांग थी। उसको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पेरिस रेडियो सुगंधि के बारे में बतलाते समय उसके संगीत का उपयोग करता है।

एक बार यह जानकर कि घंटिकाओं से मधुर ध्वनियाँ पैदा हो सकती है उसकी रुचि उस ओर हुई। इसके लिये फ्लोरिडा में बर्ड सेंक्चुअरी नामक स्थान पर उसने एन्टोन ब्रीस के यहाँ कैरिलोन का अध्ययन किया। उसने लियेडर गायक के रूप में वियना में सबसे पहिले ख्याति प्राप्त की। उसने कर्टिस इन्स्टीट्यूट में भी सिखाया। यह उसका सौभाग्य था कि बाइस से बत्तीस वर्ष की आयु में युवक को जीवित दिग्गजों से इतनी ख्याति और प्रतिष्ठा मिली जितनी किसी संगीतज्ञ को सारे जीवन में नहीं मिल पाती है।

जनवरी १९५८ में न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस में मिस्टर बारबर का ओपेरा "**वेनिस्सा**" पहली बार प्रदर्शित किया गया।

विलियम श्युमैन

एक और लड़का जो सन १९१० में पैदा हुआ था यह भी संगीतज्ञ बना। उसका संगीत में प्रवेश करने का मार्ग बिल्कुल भिन्न था। विलियम श्युमैन न्यूयार्क में पैदा हुआ पर उसकी पृष्ठ-भूमि मिस्टर बारबर की तरह संगीत की नहीं थी। जब वह ग्यारह वर्ष का था तभी उसने वायलिन सीखना चाहा। उसने वायलिन इसलिये सीखना चाहा कि उसकी इच्छा थी कि वह स्कूल आर्केस्ट्रा के साथ विथॉवन की **मिनुयेट इन जी** बजाने में भाग ले सके। हाई स्कूल में उसने जाज़ बैंड का आयोजन किया। यद्यपि उसे हारमोनी का ज्ञान नहीं था फिर भी उसने लोकप्रिय गीत रचने का प्रयास किया। पन्द्रह वर्ष की आयु के लगभग वह एक व्यावसायिक बाल प्लेयर बनने की बात सोचने लगा

लेकिन हाई स्कूल में जब उसने अपना पहला कंसर्ट सुना तो उस अनुभव के कारण सब कुछ बदल गया। वहाँ उसने एक नई दुनिया देखी। उसने सभी कंसर्टों में जाना शुरू कर दिया जिनमें उसका भाग लेना सम्भव था। छोटे-मोटे काम करते हुये वह शेष समय में हारमोनी सीखने का सदा ध्यान रखता रहा। रॉय हेरिस के साथ काउन्टर प्वाइन्ट का अध्ययन करते समय उसे इस बात का बोध हुआ कि उसका मार्ग कौन-सा है।

श्युमैन इसके बाद अध्यापक बनने के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ। १९३५ में वह सेल्ज़बर्ग के एक संगीत उत्सव में भाग लेने के लिये गया। उसे मोज़ार्टियम के लिये एक स्कालरशिप प्राप्त हुआ। जहाँ उसने अपनी पहली सिम्फनी लिखनी शुरू की। अपनी रचनाओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने के कारण उसने अपने अनेक संगीत रचनाओं को इसलिये निकाल लिया जिससे वे तब तक प्रदर्शित न किये जा सकें जब तक वह उन्हें संतोषजनक रूप से सुधार न लें। जब १९४१ में कोसे विट्ज़की ने उसकी **तीसरी सिम्फनी** को प्रस्तुत किया तो संगीत जगत में उसकी ख्याति बढ़ने लगी। उस समय से उसे कई पुरस्कार और इनाम प्राप्त हो चुके हैं। १९४५ में वह न्यूयार्क के संगीत के जूलियर्ड स्कूल का सभापति निर्वाचित किया गया।

प्रतिनिधि रिकर्ड

रिकर्डों की यह सूची इस तात्पर्य से तैयार की गई है कि इस पुस्तक में दिये गये प्रत्येक संगीतकार के संगीत के नमूने की ओर संकेत किया जा सके। अलबत्ता इस सूची में उस सारे संगीत का उल्लेख नहीं हो सका है जो पुस्तक में दिया गया है। इस पुस्तक के १९४१, १९५३ और १९५८ के संस्करणों में रिकर्डों की जो सूची दी गई थी, उस सूची के अधिकांश रिकर्ड अब उपलब्ध नहीं हैं और यह बताना संभव नहीं है कि सूची में दिये गये सभी रिकर्ड कब तक प्राप्त होंगे। सभी कलाओं में जो कुछ भी सबसे शीघ्र लोकप्रिय होता है, वही सबसे पहिले विस्मृत होता है। एथेलवर्ट नेविन के निधन के बाद दो दशाब्दियों में देश के लगभग प्रत्येक पियानो पर उसके कुछेक गीत जरूर बजाये जाते थे। और उन दिनों में जब लोग केवल बटन घुमा कर संगीत नहीं सुन पाते थे, अच्छे माता-पिता के लिये यही उपयुक्त था कि वे अपने बच्चों को संगीत के पाठ सीखने के अवसर प्रदान करें और उन दिनों में अध्यापक घर पर आकर संगीत सिखाया करते थे। प्रत्येक घर में एक पियानो होता था यदि माता-पिता की सामर्थ्य होती कि वे अपने बच्चों के लिये एक पियानो खरीद सकें। शाम के समय सभी युवक लोग पियानो के पास इकट्ठे हो जाते थे और गाते थे तथा संगीत की रचना करते थे।

आजकल छोटे-छोटे घरों में बड़े-बड़े परिवार रहने लगे हैं। पियानो पहले से छोटे कर दिये गये हैं और बहुत से घरों में पियानो रखा ही नहीं जाता। इसके बजाय नौजवान लोग स्कूल में बैन्ड के कुछ वाद्य-यन्त्र बजाना सीखते हैं। अतः बदलती हुई रीति-रिवाज और रुचि के साथ-साथ जो गीत कभी सबसे अधिक लोकप्रिय था वह केवल अतीत की स्मृति मात्र रह जाता है। नेविन का नाम अब रिकर्ड की किताबों में नहीं मिलता है और न डब्ल्यू० सी० हैन्डी का नाम उन किताबों में मिल पाता है, जबकि वह सब सिर्फ चार

वर्ष पहले ही स्वर्गवासी हुये। तथाकथित लोकप्रिय संगीत गम्भीर संगीत की अपेक्षा अधिक शीघ्रता से नई शैलियों को जन्म देता है लेकिन हैन्डी के **"ब्लूज़"** का उस समय स्थान था जब नीग्रो रिद्म, मैलोडी और इन्टरप्रेटेशन **को** अमरीकी रैगटाईम में स्थान मिलने लगा था।

इस सूची के सभी रिकर्ड डब्लू० श्वैन, इन्कोपोरेटेड, बास्टन, मेसाचुसेट्स द्वारा **लांग प्लेइंग रिकर्ड केटोलौग,** वाल्यूम १३, नं० ८ में प्रकाशित हुये हैं। ये केटोलाग मासिक प्रकाशित होते हैं और इन्हें किसी भी रिकर्ड-स्टोर में देखा जा सकता है।

न्यू हैविन के लूमिस टेम्पिल ऑफ म्यूज़िक की मिस थेल्मा रीशवेगन ने इस सूची के चैक करने में सहायता दी है। उनके प्रति आभार प्रकट करने में प्रसन्नता है।

प्रारंभिक अमरीकी संगीत और प्यूरिटन के गिरजाघर की सामोडी के नमूनों के रिकर्ड उपलब्ध नहीं हैं। इस समय भी जबकि यह पुस्तक लिखी जा रही है, रिकर्ड किया गया सभी संगीत की पूरी क्रमानुसार सूची किसी भी स्टोर में नहीं मिल सकती। इसलिये उदाहरण स्वरूप यदि हमारे प्रथम अमरीकी संगीतकार फ़्रांसिस हापकिन्स के गीत **माई डेज़ हैव बीन सो वंडरस फ्री** का प्रतिदिन बिकने वाले रिकर्डों में एक रिकर्ड हो, फिर भी वह क्रमानुसार सूची में सम्मिलित नहीं किया गया है।

अमरीकी लोक संगीत

सी-शैंटीज़।

सांग्स आफ द सी। नार्मन लुबाफ क्वायर। **शैनैनडोह, रियो ग्रेंडे, ब्लो दि मैन डाउन, लो लैण्ड्स, दी डार्क-आईड सेलर और** अन्य गीत सम्मिलित हैं।

सी० एल०—९४८

वाटर ब्वाय का रिकर्ड है जिसे गार्डन मेकरे ने लिखा है, **इन कंसर्ट** में मुख्यतया अमरीकी संगीत-कामेडी के संगीतकारों की गीतों का संकलन है।

आल मैन रिवर, बिगिन दि बिग्वायन, सो इन लव, समर टाइम, और अन्य गीत सम्मिलित हैं। स्टेरियो, एस टी—९८०; केप-टी-९८०.

काऊ ब्वाय सांग्स। सांग्स आफ द पाइनियर्स। साण्टे फि ट्रेल, लास्ट राउंड-अप, स्वीट बेट्सी फ्रोम पाइक, द यलो रोज़ आफ टेक्साज़ सम्मिलित किये गये हैं। विक एल पी एम—११३०

सांग्स आफ दि काऊ ब्वाय।

नार्मन लुबॉफ क्वायर द्वारा गाये गये।

द काऊ ब्वाय प्रेयर, लास्ट राउंड-अप और अन्य गीत सम्मिलित किये **गये हैं।** काल, सी एल ११८७; स्टेरिओ सी एस—८२७८

दक्षिण पश्चिम के अमरीकी इण्डियनों का संगीत।

फोक (लोकप्रिय संगीत)—४४२०

गास्पेल हिम्स :

गास्पेल हिम्स। सालवेशन आर्मी। **जस्ट एज़ आई एम, ब्लेसेड एश्योरेंस, व्हाट ए फ्रेण्ड वी हैव इन जीसस, गाड बी विद यू, 'टिल वी मीट अगेन,** सम्मिलित किये गये हैं। लं० ५३९१

बिली ग्रेहम क्रूसेड। विक० एल पी एम—१४०६

ग्रेस गास्पेल सिंगर्स। स्टीरियो। रॉन०-लेट ११५

नीग्रो स्प्रिच्युअल्स। ग्रेहम जैक्सन क्वायर द्वारा गाये गये। स्टीरियो। वेस्ट—१५०२९

नीग्रो स्प्रिच्युअल्स। टस्केगी इन्स्टीट्यूट क्वायर द्वारा गाये गये। स्टीरियो। वेस्ट—१८०८०

सेम्युल बारबर

कमाण्डो मार्च। इस रिकर्ड में वाल्टर पिस्टन, विलियम श्युमैन और राबर्ट रसेल बेनेट का **सूट आफ ओल्ड अमेरिकन डांसेज़** है। मर०—५००७९

इर्विंग बर्लिन

म्यूजिक ऑफ इर्विंग बर्लिन । कोस्टेलेंज़ और ओरकेस्ट्रा । **आलवेज़, टाप हैट, ह्वाइट टाई एण्ड टेल्स, दिस इज़ द आर्मी, गॉड ब्लेस अमेरिका** और अन्य गीत सम्मिलित हैं । कोल० सी एल—७६८

जान एल्डन कार्पेन्टर

एडवेंचर्स इन ए-पेरम्बुलेटर ।
ईस्टमैन—रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा ।
मर० ५०१ । ३६; स्टीरियो: ९०१३६

एरन कापलैण्ड

एपालशियन स्प्रिंग और बेलेट सूट **बिली दि किड ।**

आरमेण्डी द्वारा संचालित फिलडेलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया । कोल० एम–एल—५१५७

स्टीफेन कालिन्स फॉस्टर

सोंग्स आफ स्टीफेन फॉस्टर । शा कोरेल कोरस द्वारा गाये गये ।
विक० एल एम—२२९५;
स्टीरियो—एल एस सी—२२९५

जार्ज जर्शविन

एन अमेरिकन इन पेरिस और **रेपसोडी इन ब्लू ।** लियोनार्ड बर्नस्टीन और न्यूयार्क फिलहार्मोनिक ओरकेस्टा । कोल० एम-एल—५४१३;
स्टीरियो एम एस—६०९

पोर्जी एण्ड बेस (उद्धरण) । मूल रचना
दिस० ९०२४; स्टीरियो—७९०२४

प्लेज़र डेम, क्लाउड्स; बेकेनेल। रिकर्ड की एल्टी और उसके पियानो पर बजी धुन' **'द व्हाइट पीकाक'** है। हैनसन ने ईस्ट मैन-रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा संचालन किया। मर०—५००८५

विक्टर हर्बर्ट

म्यूज़िक आफ हर्बर्ट। कास्टेलेनेट्ज़ और ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया। **आह ! स्वीट मिस्ट्री आफ लाइफ़, मार्च आँफ दि ट्वाइज़, व्हेन यू आर अवे, आई एम फालिंग इन लव विद् सम वन** सम्मिलित हैं।

कोल० सी एल० ७६५

चार्ल्स आइव्ज़

थ्री प्लेसेज़ इन न्यू इंग्लैण्ड और **सिम्फनी नं० ३** हैन्सन ईस्टमैन—रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा का संचालन करते हुये।

मर०—५०१४९; स्टीरियो—९०१४९

जेरोम कर्न

एलबम आफ जेरोम कर्न। पाल वेस्टन। दो रिकर्ड।

कोल० सी २ एल; स्टीरियो, सी० एस—८०४९ और ८०५०

कोस्टेलेनेट्स और ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया **कर्न का संगीत।**

कोल० सी एल०—७७६

एडवर्ड मेक्डोवेल

वुडलैण्ड स्केचेज़, पियानो सोनेटा नं० ४ "केल्टिक"। सेकेण्ड पियानो कंसर्टो। पियानो वादक मार्ज़ोरी मिचेल के साथ अमेरिकन आर्ट्स ओरकेस्ट्रा। **टू ए वाइल्ड रोज़, टू ए वाटर लिली** को सम्मिलित करते हुये।

वेंगार्ड वी आर एस—१०११

वाल्टर पिस्टन

इन्क्रेडिबल फ्लूटिस्ट, एक बैले सूट। रिकर्ड के उल्टी और डगलेस मू का **पेजेण्ट ऑव पी० टी० बारनम।** हैन्सन ईस्टमैन-ऐचेस्टर, सिम्फनी ओर- केस्ट्रा का संचालन करते हुये। मर० ५०२०६; स्टीरियो ९०२०६

रिचर्ड रोजर्स

म्यूजिक ऑफ रिचर्ड रोजर्स—कोस्टेलेनेट्ज़ और ओरकेस्ट्रा। **माई हार्ट स्टुड स्टिल, इट माइट एज़ वेल बी स्प्रिंग, इफ आई लव्ड यू** और अन्य गीत सम्मिलित हैं। कोल०, सी एल०—७८४

विलियन श्युमैन

सिम्फनी नं० ६। पिस्टन **सिम्फनी नं० ४** के साथ (रिकर्ड के उल्टी ओर)। फिलेडलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया और इस ओर- केस्ट्रा का संचालन ओरमेण्डी ने किया।

कोल० एम एल० ४९९२

जान फिलिप सूज़ा

मार्चेज़। ग्रेनेडियर गार्डस बैण्ड द्वारा बजाया गया।

लंदन एल एल—१२२९; स्टीरियो १३९